राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, बुधवार, 6 अगस्त 2025

हिरोशिमा दिवस विशेष

शहर की शांतिपीठ संस्था चालीस साल से लगातार दे रही शांति का संदेश

उदयपुर में फल-फूल रही तबाही के बाद फूटी 'शांति की कोपलें'

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

उदयपुर. 6 अगस्त 1945 का दिन। संयुक्त राज्य अमेरिका ने जापान के हिरोशिमा शहर पर परमाणु बम गिराया था। परमाणु बम से यह दुनिया की सबसे बड़ी तबाही मानी गई है। तबाही के बाद 7 दशक में दुनियाभर में शांति की कोपलें फूटीं। इसी तरह से उदयपुर की भी संस्था पिछले 4 दशक से शांति के बीज बो रही है। भले ही हिरोशिमा और उदयपुर का सीधा संबंध नहीं, लेकिन एक रिश्ता भाईचारे और मानवता का है, जिसे मिशन के रूप में लेकर हिरोशिमा दिवस मनाया जाता है। संस्था के माध्यम से उदयपुर के अलावा दिल्ली, अहमदाबाद, साबरमती में भी आयोजन किए। खास बात यह है कि संस्था के कार्यों से प्रभावित बॉलीवुड एक्टर सुनील दत्त सहित कई नामी हस्तियां उदयपुर में आयोजन का हिस्सा बन चुकी है। आज देश में हिरोशिमा दिवस पर शांति का संदेश देने वालों की प्रथम सूची में उदयपुर की संस्था पहले पायदान पर है। बीते चार दशक में हजारों लोग आयोजनों से जुड़े, वहीं बच्चों ने लाखों चिट्ठियां राजदूतों को भेजकर शांति का संदेश दिया। माना जाता है कि त्रासदी के बाद शांति का संदेश देने के लिए जैसी प्रेरणा हिरोशिमा में है, उसके बाद सर्वाधिक उदयपुर से दिखती है।



संस्थापक सचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी

इसलिए मनाया जाता है दिवस: संयुक्त राज्य अमरीका ने 6 अगस्त 1945 को जापान के हिरोशिमा पर परमाणु बम गिराया, जिससे हिरोशिमा में 2 लाख 80 हजार नागरिक, 43 हजार सैनिक मारे गए थे। बमबारी के परिणामस्वरूप 5 साल के दरमियान 2 लाख से ज्यादा लोग और मरे। तबाही के बाद दुनियाभर में शांति की अपील की जाने लगी। इसलिए 6 अगस्त को हिरोशिमा दिवस मनाया जाता है।

कभी हिरोशिमा नहीं देखा, लेकिन संवेदनशील

सलूम्बर के ईटालीखेड़ा में जन्मे और उदयपुर में पले-बढ़े संस्थापक सचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी को शांति वाहक माना जाता है। हिरोशिमा दिवस पर जापान से न्योता आया, लेकिन कभी नहीं गए। इसके बावजूद हिरोशिमा त्रासदी को लेकर संवेदनशील रहे। शांति के प्रति विचारधारा के बारे में बताते हैं कि बचपन से ही भाईचारा और शांति के लिए काम करना चाहते थे। इसके लिए इंजीनियर और सिविल सेवा में जाने का विचार त्याग दिया। वे देश के महान वैज्ञानिक डॉ. डीएस कोठारी से प्रभावित थे, जो उदयपुर मूल के थे। उनकी प्रेरणा से ही शांतिपीठ की शुरुआत हुई। सन 1984 में रामकृष्ण परमहंस जयंती पर स्थापना की।

उदयपुर मेयर को अंतरराष्ट्रीय संस्था से जोड़ा: जापान के हिरोशिमा और नागासाकी के मेयर्स ने 1982 में 'मेयर्स फॉर पीस' संस्था की शुरुआत की। संस्था में दुनियाभर से 8500 मेयर सदस्य हैं, जो शांति का संदेश देने के लिए कार्यरत हैं। शांतिपीठ की पहल पर उदयपुर के मेयर को भी सदस्यता मिली। संभवतया राजस्थान में पहले मेयर हैं, जिनको 'मेयर्स फॉर पीस' की सदस्यता मिली हुई है।

स्थापना, उद्देश्य और कार्य

शांतिपीठ उदयपुर में 1984 में स्थापित संगठन है, जिसकी स्थापना अनन्त गणेश त्रिवेदी ने की। संस्था पर्यावरण एवं विरासत संरक्षण, मानव मूल्य, शांति शिक्षा और परमाणु निरस्त्रीकरण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से समर्पित है।

संस्था विज्ञान और अहिंसा के बीच सामंजस्य स्थापित करके समाज में प्रेम, सत्य, शांति एवं मानव मूल्यों को बढ़ावा देती है। युवाओं में शांति, विश्व सौहार्द, मानवाधिकार और जिम्मेदार नागरिकता के प्रति जागरूकता के लिए कार्यरत है।

दैनिक भास्कर, उदयपुर, शनिवार 15 अगस्त, 2026

शांतिपीठ का संवाद • 2 करोड़ लोगों का विस्थापन और 20 लाख निर्दोषों की मौत मानवता को कंपा देने वाली घटना

विभाजन की त्रासदी अनमिट दर्द, अब राष्ट्र योग अपनाने की जरूरत

उदयपुर | विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस के अवसर पर शांतिपीठ संस्थान की ओर से संवाद कार्यक्रम हुआ। वक्ताओं ने वर्ष 1947 के विभाजन की भीषण त्रासदी, भड़की हिंसा, निर्मम हत्याओं और दर्दनाक विस्थापन की पीड़ा को याद किया। सबने एक स्वर में सामाजिक सद्भाव, भाईचारे और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने का आह्वान किया।

वक्ताओं ने कहा कि विभाजन के समय दो करोड़ लोगों का विस्थापन और 20 लाख से अधिक निर्दोष नागरिकों की जान जाना ऐसा अनमिट दर्द है, जिसकी स्मृति मात्र से संवेदनशील मानवता कांप उठती है। इस अकल्पनीय त्रासदी के बाद भी भारत अपनी वसुधैव कुटुंबकम की प्राचीन ऋषि-परंपरा को कायम रखे हुए है और अखंड राष्ट्र की संकल्प-ज्योति के साथ निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर है। विषय-प्रवर्तन करते हुए

जल्दबाजी में लिया फैसला और अधूरी नीतियां बनीं त्रासदी का कारण

नगर निगम के पूर्व आयुक्त दिनेश कोठारी ने कहा कि औपनिवेशिक ब्रिटेन की नीतियों और तत्कालीन नेताओं की जल्दबाजी के कारण देश का विभाजन स्वीकार किया गया। धर्म के आधार पर हुआ यह विभाजन न केवल अधूरा रहा, बल्कि देश के टुकड़े होने के बाद भी समस्याएं जस की तस बनी रहीं। इसी की परिणति थी कि वर्ष 1990 में कश्मीर में एक बार फिर धर्म के नाम पर लोगों को निशाना बनाया गया और उन्हें अपनी ही मातृभूमि से बेदखल होना पड़ा। अब हमें पूर्ण विश्वास, सद्भाव और एकजुटता के साथ राष्ट्र धर्म का पालन करना होगा। संवाद में डॉ. इंद्र जोशी, एडवोकेट उमेशचंद्र शर्मा सहित कई गणमान्य लोगों ने विचार रखे। अंत में मौन रखकर विभाजन त्रासदी में जान गंवाने वाले निर्दोषों और शहीदों को श्रद्धांजलि दी गई।

बीएन विवि के फार्मेसी विभागाध्यक्ष डॉ. कमल सिंह राठौड़ ने कहा कि यह स्मृति दिवस हमें इतिहास से सीख लेकर सौहार्द, शांति और राष्ट्रीय अखंडता को मजबूत करने का संदेश देता है। शांतिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि राष्ट्र के प्रति हमारे दायित्व शहीदों की प्रेरणा और आत्म-बोध से तय होने चाहिए। मैं राष्ट्र के लिए क्या योगदान दे सकता हूं...' इस भाव से ही राष्ट्र-बोध क्रियाशील होगा। कर्म योग, ज्ञान योग और भक्ति योग की ही तरह आज देश को राष्ट्र योग अपनाने की सख्त जरूरत है। यह पहल युवाओं को करनी होगी।

विभाजन सिंधी समाज से अपनी जन्मभूमि छीन सका, पर पहचान और हौसला नहीं : राजानी

उदयपुर | सिंधी अकादमी के पूर्व अध्यक्ष हरीश राजानी ने कहा कि विभाजन ने सिंधी समाज से जन्मभूमि तो छीन ली, लेकिन सांस्कृतिक पहचान, स्वाभिमान और हौसले को नहीं छीन सका। यह त्रासदी बेहद गहरी थी। सिंध की वह धरती, जहां सदियों से सिंधी सभ्यता, साहित्य और व्यापार फला-फूला, वह रातों-रात सीमा पार चली गई। लाखों परिवारों को घर, जमीन, कारोबार और रिश्ते छोड़ने पड़े। भारत आए सिंधी परिवार अपने साथ समृद्ध संस्कृति, भाषा, संतों की वाणी, भगवान झूलेलाल के प्रति आस्था और कड़ी मेहनत लेकर आए थे। इस दिवस का उद्देश्य इतिहास से सीख लेकर देश की एकता, अखंडता और सद्भाव को मजबूत करना है।



दैनिक भास्कर
गुरुवार, 13 अगस्त, 2026

युवा दिवस पर सुविवि में परिचर्चा : पर्यावरण संरक्षण व राष्ट्र निर्माण में भागीदारी पर मंथन

सिटी रिपोर्टर | उदयपुर



मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के पर्यावरण विज्ञान विभाग और शांतिपीठ संस्थान के साझे में अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस पर 'अलग परिस्थितियाँ, समान आकांक्षाएं' विषय पर परिचर्चा आयोजित हुई।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलगुरु प्रो. कैलाश डागा ने की। कला संकाय अधिष्ठाता प्रो. नीरज शर्मा और शांतिपीठ संस्थान के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी मुख्य वक्ता रहे। संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि हर युवा की परिस्थितियां अलग हो सकती हैं, लेकिन बेहतर भविष्य और सम्मानजनक जीवन की आकांक्षा समान होती है। युवा शक्ति सकारात्मक सोच, अनुशासन और संवेदनशीलता से राष्ट्र निर्माण में बड़ी भूमिका निभा सकती है। कुलगुरु प्रो. कैलाश डागा ने कहा कि युवा केवल देश का भविष्य नहीं, बल्कि वर्तमान के परिवर्तनकारी नेतृत्व की शक्ति हैं। उन्होंने विद्यार्थियों और शोधार्थियों से सीधा संवाद कर उनकी आकांक्षाएं और विचार जाने।

प्रो. नीरज शर्मा ने शिक्षा और रोजगार के साथ-साथ सामाजिक व पर्यावरणीय चुनौतियों के प्रति संवेदनशील रहने पर बल दिया। विभागाध्यक्ष डॉ. अनुया वर्मा ने अतिथियों का स्वागत किया। डॉ. देवेन्द्र सिंह राठौड़ ने कहा कि जलवायु परिवर्तन, जल संकट और जैव विविधता संरक्षण में युवा निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं।

कार्यक्रम में डॉ. गिरिराज सिंह चौहान, दिनेश कोठारी, डॉ. कुंजन आचार्य, जयश्री सिंह, राजकुमार मेनारिया, राजनंदिनी मेनारिया और मानसी सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित रहे। संचालन डॉ. सोनिका जैन ने किया। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, गुरुवार, 13 अगस्त, 2026

युवा देश का भविष्य ही नहीं, आज का नेतृत्व भी

उदयपुर@पत्रिका. सुखाड़िया विश्वविद्यालय के पर्यावरण विज्ञान विभाग और शांतिपीठ संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में युवा दिवस पर अलग परिस्थितियां, समान आकांक्षाएं पर संगोष्ठी हुई। अध्यक्षता करते हुए कुलगुरु प्रो. कैलाश डागा ने कहा कि युवा केवल देश का भविष्य ही नहीं, बल्कि वर्तमान के परिवर्तनकारी नेतृत्व की वास्तविक शक्ति हैं। उन्होंने विद्यार्थियों से संवाद करते हुए उनके विचारों और भविष्य की योजनाओं की जानकारी ली। मुख्य वक्ता एवं शांतिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने युवाओं से मेवाड़ की शौर्य व त्याग की गौरवशाली परंपरा से प्रेरणा लेते हुए पर्यावरण विघटन जैसी गंभीर चुनौतियों से निपटने का आह्वान किया। अधिष्ठाता प्रो. नीरज शर्मा ने कहा कि शिक्षा और रोजगार के साथ-साथ युवाओं को पर्यावरणीय व सामाजिक चुनौतियों के प्रति संवेदनशील होना आवश्यक है।



सुविवि व शांतिपीठ के तत्वावधान में आयोजित संगोष्ठी में चर्चा करते हुए।

उदयपुर, गुरुवार 13 अगस्त, 2026
प्रातःकाल

युवाओं की ऊर्जा से बनेगा सतत भविष्य

अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस पर आयोजन



उदयपुर (वि)। मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के पर्यावरण विज्ञान विभाग एवं शांतिपीठ संस्थान, उदयपुर के संयुक्त तत्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर 'अलग परिस्थितियाँ, समान आकांक्षाएँ' विषय पर एक प्रेरणादायी एवं विचारोत्तेजक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में युवाओं की ऊर्जा, प्रतिभा, आकांक्षाओं और सामाजिक एवं पर्यावरणीय जिम्मेदारियों को सकारात्मक दिशा देने पर विशेष जोर दिया गया। अध्यक्षता मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. कैलाश डागा ने की। इस अवसर पर कला संकाय के अधिष्ठाता प्रो. नीरज शर्मा तथा शांतिपीठ संस्थान के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित रहे। अनंत गणेश त्रिवेदी ने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि प्रत्येक युवा की परिस्थितियाँ भले ही अलग हों, लेकिन बेहतर भविष्य, सम्मानजनक जीवन और समाज में सकारात्मक परिवर्तन की आकांक्षा सभी युवाओं में समान होती है। कुलगुरु प्रो. कैलाश डागा ने अपने ने कहा कि युवा केवल देश का भविष्य नहीं, बल्कि वर्तमान के परिवर्तनकारी नेतृत्व की महत्वपूर्ण शक्ति हैं। उन्होंने विद्यार्थियों से अपने ज्ञान, कौशल और ऊर्जा का उपयोग समाज एवं राष्ट्र की बेहतरी के लिए करने का आह्वान किया। कला संकाय के अधिष्ठाता प्रो. नीरज शर्मा ने युवाओं की बहुआयामी भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज की युवा पीढ़ी को शिक्षा और रोजगार के साथ-साथ सामाजिक, सांस्कृतिक एवं पर्यावरणीय चुनौतियों के प्रति भी संवेदनशील होना आवश्यक है। पर्यावरण विज्ञान विभाग की इंचार्ज हेड डॉ. अनुया वर्मा ने सभी अतिथियों का आत्मीय एवं गरिमापूर्ण स्वागत किया। डॉ. गिरिराज सिंह चौहान, दिनेश कोठारी एवं डॉ. कुंजन आचार्य सहित अन्य शिक्षक एवं गणमान्यजन उपस्थित रहे।

दैनिक भास्कर
शुक्रवार, 7 अगस्त, 2026

शांति सम्मेलन • विशेषज्ञों बोले- वैश्विक तनाव से बढ़े परमाणु युद्ध के आसार, संवाद से ही संभव है शांति

युद्ध नहीं, बुद्ध चाहिए... परमाणु हथियार और आधुनिक होड़ से दुनिया पर फिर मंडराया महाविनाश का खतरा





सम्मेलन में उपस्थित सभी लोगों ने दो मिनट का मौन रखा और परमाणु हमले में मारे गए लोगों को श्रद्धांजलि दी और मौजूद पदाधिकारी।

सिटी रिपोर्टर | उदयपुर

हिरोशिमा आज केवल एक पीड़ित शहर नहीं, बल्कि दुनिया भर के लिए शांति और परमाणु मुक्त विश्व का सबसे बड़ा प्रतीक बन चुका है। वर्तमान समय में परमाणु हथियारों का खतरा कम होने के बजाय और अधिक जटिल हो गया है।

यह विचार हिरोशिमा स्मृति दिवस पर शांतिपीठ संस्थान और क्षेत्रीय रेलवे प्रशिक्षण संस्थान के साझा तत्वावधान में आयोजित युवा शांति सम्मेलन में सामने आए। कार्यक्रम का विषय 'आणविक मुक्त भविष्य को आकार देते युवा : यादों से क्रियान्वित तक' रखा गया था। सम्मेलन में मुख्य वक्ता आईआईएमयू के निदेशक प्रो. अशोक बनर्जी ने कहा कि दुनिया के हालात मानवीय वसूलों से बाहर निकल चुके हैं। क्या हम एक और विश्व युद्ध की ओर बढ़ रहे हैं? बड़े देश सुरक्षा के नाम पर भारी बजट खर्च कर रहे हैं, जबकि जहां जरूरत है वहां गैर-जिम्मेदार बने हुए हैं।

उन्होंने संयुक्त राष्ट्र संघ और सुरक्षा परिषद की गिरती साख पर अफसोस जताया। क्षेत्रीय रेलवे प्रशिक्षण संस्थान के प्राचार्य जय प्रकाश ने कहा कि तकनीक ने विश्व समुदाय को अभूतपूर्व खतरे तक पहुंचा दिया है। शक्ति और जिम्मेदारी साथ चलनी चाहिए, वरना निरंकुश शक्ति तबाही लाती है।

शांतिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि युद्ध नहीं, बुद्ध की राह अपनाकर ही शांति संभव है। उन्होंने युवाओं से डिजिटल तकनीक के जरिए शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व का संदेश फैलाने का आह्वान किया। राजनीति शास्त्र के प्रो. आरबी कुमार और सेवानिवृत्त डीएसओ सुहेल मजबूर ने कहा कि सौहार्दपूर्ण वातावरण बनाने के लिए वाद-विवाद नहीं, बल्कि संवाद की आवश्यकता है। कार्यक्रम में सेंट्रल एकेडमी सरदारपुरा के छात्रों ने संगीत गुरु रफीक अहमद के निर्देशन में शांति गीत प्रस्तुत किया।

सेंट एंथोनी की बालिकाओं ने लघु नाटिका पेश की। इसके अलावा शहीद हुसैन, ममता लोहार, कुलदीप श्रीवास्तव, कमलसिंह राठौड़ और डॉक्टर लक्ष्मीनारायण दशोरा ने भी अपने विचार व्यक्त किए। सम्मेलन में उपस्थित सभी लोगों ने खड़े होकर दो मिनट का मौन रखा और परमाणु हमले में मारे गए निर्दोष लोगों को श्रद्धांजलि दी। कार्यक्रम का संचालन शांतिपीठ के डॉक्टर भूपेंद्र शर्मा ने किया और मुकेश जांगिड़ ने आभार व्यक्त किया।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, शुक्रवार, 7 अगस्त, 2026

हिरोशिमा स्मृति दिवस पर युवा शांति सम्मेलन



उदयपुर@पत्रिका. हिरोशिमा स्मृति दिवस पर शान्तिपीठ संस्थान एवं क्षेत्रीय रेलवे प्रशिक्षण संस्थान की ओर से 'आणविक मुक्त भविष्य को आकार देते युवा : यादों से क्रियान्विति तक' विषय पर युवा शांति सम्मेलन हुआ। मुख्य अतिथि आईआईएम उदयपुर के निदेशक प्रो. अशोक बनर्जी ने कहा कि दुनिया अस्थिर दौर से गुजर रही है और परमाणु हथियार मानवता के लिए बड़ा खतरा बने हुए हैं। उन्होंने युवाओं को बेहतर भविष्य की सबसे बड़ी उम्मीद बताया। अध्यक्षता करते हुए रेलवे प्रशिक्षण संस्थान के प्राचार्य जय प्रकाश ने कहा कि तकनीक विकास का माध्यम है, लेकिन उसका जिम्मेदारी से उपयोग आवश्यक है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने प्रधानमंत्री के संदेश 'युद्ध नहीं, बुद्ध' को आत्मसात करने का आह्वान किया। प्रो. आर.बी. कुमार और सेवानिवृत्त डीएसओ सुहेल मजबूर ने भी संवाद और सौहार्द को विश्व शांति का आधार बताया। हिरोशिमा-नागासाकी के पीड़ितों को मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की।

दैनिक भास्कर • उदयपुर
सोमवार 18 मई 2026 | 12

हिरोशिमा की वो तस्वीरें देख भर आईं उदयपुर के दल की आंखें; पीस पार्क में दी श्रद्धांजलि, जापानी जज्बे को सलाम



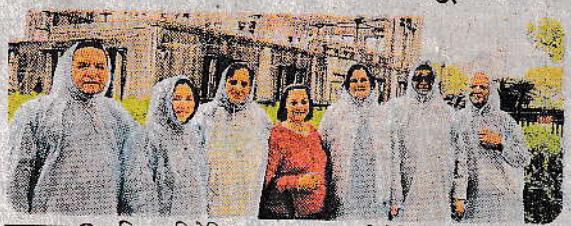
उदयपुर | हिरोशिमा का नाम लेते ही परमाणु त्रासदी का खौफनाक मंजर सामने आ जाता है। दुनिया भले ही सबक न ले, लेकिन इस विभीषिका की चेतावनी को भूल नहीं सकती।

हाल ही शांतिपीठ संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष और पायरोटेक इंटरनेशनल के प्रमुख डॉ. पी.एस. तलेसरा के नेतृत्व में उदयपुर का एक दल जापान के हिरोशिमा पहुंचा। दल ने हिरोशिमा पीस मेमोरियल पार्क जाकर निर्दोष मृतकों को श्रद्धांजलि दी। संस्थान के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी के आग्रह पर यह समूह वहां गया था। म्यूजियम में रखी तस्वीरें और अवशेष देखकर लोग भावुक हो गए। कुछ तो डर के मारे देख भी नहीं पाए। डॉ. तलेसरा ने बताया कि 30 एकड़ में फैले इस पार्क को देखने रोज सैकड़ों भारतीय आते हैं।

जापानी लोगों ने अपनी कड़ी मेहनत, अनुशासन और राष्ट्रभक्ति से तबाह हो चुके हिरोशिमा को फिर से नया बना दिया है। दल में श्रीचंद खतुरिया, रमेश सिंघवी, डॉ. एस. एल. सरणोत और शीला तलेसरा शामिल थे। सभी ने विश्व शांति की कामना की।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, सोमवार, 18 मई 2026

हिरोशिमा मेमोरियल में श्रद्धांजलि



उदयपुर @ पत्रिका. हिरोशिमा का नाम मात्र लेने से ही आणविक त्रासदी की तस्वीर उभर आती है। दुनिया ने इस त्रासदी से सबक लिया हो या नहीं किन्तु हिरोशिमा विभीषिका की चेतावनी को अनसुना नहीं किया जा सकता। ये उद्गार हिरोशिमा पीस मेमोरियल पार्क में पहुंच कर त्रासदी में मारे निर्दोष लोगों को श्रद्धांजलि देते हुए व्यक्त किए। शान्तिपीठ संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष एवं पायरोटेक इन्टरनेशनल के प्रमुख डॉ पीएस तलेसरा के नेतृत्व में उदयपुर का एक दल हिरोशिमा पहुंचा और पीस मेमोरियल पार्क में श्रद्धा सुमन अर्पित किए। संस्थान संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी के आग्रह पर वे यहां पहुंचे। डॉ तलेसरा ने बताया कि यहां दुनिया भर के लोग म्यूजियम देखने आते हैं। यह मेमोरियल 30 एकड़ में है। समूह ने जापानी लोगों की सराहना की, जिनके परिश्रम, अनुशासन एवं राष्ट्रभक्ति ने हिरोशिमा को फिर खड़ा कर दिया। समूह में श्रीचंद खतुरिया, रमेश सिंघवी, डॉ एसएल सरनोट, शीला तलेसरा शामिल रहे।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, सोमवार, 18 मई, 2026

हिरोशिमा पीस मेमोरियल पार्क में उदयपुर समूह ने दी श्रद्धांजलि



नवज्योति,उदयपुर। शान्तिपीठ संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष एवं पायरोटेक इंटरनेशनल के प्रमुख डॉ. पीएस तलेसरा के नेतृत्व में उदयपुर का एक चयनित समूह जापान के हिरोशिमा पीस मेमोरियल पार्क पहुंचा, जहां आणविक त्रासदी में मारे गए निर्दोष लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। समूह ने म्यूजियम में रखे त्रासदी से जुड़े स्मारक, तस्वीरें और अवशेष देख भावुक होकर विश्व शांति का संदेश दिया। डॉ. तलेसरा ने कहा कि हिरोशिमा की विभीषिका मानवता के लिए स्थायी चेतावनी है। समूह ने जापान के अनुशासन, राष्ट्रभक्ति और पुनर्निर्माण क्षमता की सराहना करते हुए शांतिपूर्ण विश्व निर्माण की कामना की।

दैनिक भास्कर
शनिवार, 25 अक्टूबर, 2025

संगोष्ठी • संयुक्त राष्ट्र संघ स्थापना दिवस पर देश-दुनिया के मुद्दों और हालात पर चिंतन

हम आयातित सामान लेना बंद करें, केवल भारतीय उत्पाद खरीदें तो अमेरिका जैसे टैरिफ अर्थहीन हो जाएंगे : प्रो. शर्मा

सिटी रिपोर्टर | उदयपुर

संयुक्त राष्ट्र संघ के स्थापना दिवस पर शांति पीठ संस्थान की ओर से शुक्रवार को संगोष्ठी हुई। वक्ताओं ने कहा कि अराजकता, अनिश्चितता व आर्थिक असंतुलन के दौर से गुजर रहे विश्व के लिए साझा मंच की आवश्यकता को नकारा नहीं जा सकता। लेकिन संयुक्त राष्ट्र संघ अपने अस्तित्व को बरकरार रखने के लिए अपूर्व संघर्ष कर रहा है। आवश्यकता है लोकतांत्रिक मूल्यों के आधार पर इसके रूपांतरण की।

संगोष्ठी की अध्यक्षता यूनेस्को महात्मा गांधी शांति व स्थायी विकास कार्य समिति के प्रो. बी.पी. शर्मा ने की। उन्होंने कहा कि आज संयुक्त राष्ट्र को उन्हीं संदर्भों में पुनर्स्थापित करने की आवश्यकता है। उन्होंने भारत की बढ़ती शक्ति के



संयुक्त राष्ट्र संघ स्थापना दिवस पर संगोष्ठी में वक्ताओं ने रखे विचार।

संदर्भ में दोहा सम्मेलन का हवाला देते हुए कहा कि सिंगापुर मुद्दे पर भारत अकेला पड़ने पर भी न्याय के लिए अपनी बात पर डटा रहा, तब अगले द्वितीय सम्मेलन में मुद्दे को घोषणा में से ही हटा दिया गया। परिवर्तन के लिए सामर्थ्य का होना आवश्यक है। उन्होंने जोर देकर कहा कि हम आयातित सामान लेना बंद कर दें, केवल भारतीय उत्पाद ही खरीदें तो अमेरिका जैसे टैरिफ वॉर स्वतः अर्थहीन हो जाएंगे।

शांति पीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने चिंता प्रकट करते हुए कहा कि आज संयुक्त राष्ट्र अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत है। बेहतरीन गठन किये जाने के पूर्व इसे नकारना विश्व समाज में अराजकता पैदा करेगा। आवश्यकता है यह जन चेतना और जन भागीदारी का केंद्र बने।

अंतरराष्ट्रीय संबंधों के विशेषज्ञ डॉ. आर.बी. कुमार ने संयुक्त राष्ट्र के पुनर्गठन की आवश्यकता बताते हुए कहा कि सुरक्षा परिषद में हर महाद्वीप के प्रभावी भूमिका वाली अर्थव्यवस्था एवं मानव मूल्यों के संरक्षक राष्ट्रों को शामिल करना होगा। पूर्व मुख्य वन संरक्षक डॉ आर के जैन ने कहा कि सभी राष्ट्रों को एक साथ लाने के योगदान में यू एन की भूमिका कभी अप्रासंगिक नहीं हो सकती। बारां के पूर्व कलेक्टर सुमति लाल बोहरा ने कहा कि भारतीय नागरिकों ने विदेशों में आधुनिक तकनीकी में जो मुकाम हासिल किया है, वह भी कालांतर में राष्ट्रों को एक साथ लाने में महती भूमिका अदा करेगा।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, रविवार, 26 अक्टूबर, 2025

संयुक्त राष्ट्र संघ : दशा और दिशा विषयक संगोष्ठी

लोकतांत्रिक मूल्यों के आधार पर बच सकता है संयुक्त राष्ट्र संघ का अस्तित्व

उदयपुर @ पत्रिका. अराजकता, अनिश्चितता व आर्थिक असंतुलन के दौर से गुजर रहे विश्व के लिए साझा मंच की आवश्यकता को तो नकारा नहीं जा सकता, किन्तु इस बात से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि संयुक्त राष्ट्र संघ अपने अस्तित्व को बरकरार रखने के लिए अभूतपूर्व संघर्ष कर रहा है। आवश्यकता है लोकतांत्रिक मूल्यों के आधार पर इसके रूपांतरण की। ये विचार संयुक्त राष्ट्र संघ स्थापना दिवस के अवसर पर शान्तिपीठ संस्थान की ओर से आयोजित संयुक्त राष्ट्र संघ : दशा और दिशा विषयक संगोष्ठी में वक्ताओं ने व्यक्त किए। अध्यक्षता



करते हुए यूनेस्को - महात्मा गांधी शांति व स्थायी विकास के अध्यक्ष प्रो. बीपी शर्मा ने कहा कि भारतीय संस्कृति में प्रत्येक अनुष्ठान के बाद पुष्पांजलि मंत्र से जिस तरह विश्व राष्ट्र के सारे आयामों का नमन किया जाता है, आज आवश्यकता है संयुक्त राष्ट्र को उन्हीं संदर्भो में पुनर्स्थापित करने का सामर्थ्य पैदा किया जाए। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने इस बात पर चिंता जताई कि आज संयुक्त राष्ट्र अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत है। बेहतरीन गठन किए जाने के पूर्व इसे नकारना विश्व समाज में अराजकता पैदा करेगा। आवश्यकता है यह जन चेतना ओर जन भागीदारी का केंद्र बनें। अंतरराष्ट्रीय संबंधों के विशेषज्ञ डॉ. आरबी कुमार ने कहा कि सुरक्षा परिषद् में सभी महाद्वीप के प्रभावी भूमिका वाली अर्थव्यवस्था एवं मानव मूल्यों के संरक्षक राष्ट्रों को शामिल करना होगा। पूर्व मुख्य वन संरक्षक डॉ. आरके जैन ने कहा कि सभी राष्ट्रों को एक साथ लाने के योगदान में यूएन की भूमिका कभी अप्रासंगिक नहीं हो सकती। संगोष्ठी में सुमति लाल बोहरा, डॉ. भगवती अहीर, दिनेश कोठारी, डॉ. जयश्री सिंह, यासीन पठान, पीएम श्रीमाली ने भी विचार व्यक्त किए। डॉ. उदय लाल पालीवाल ने आभार व्यक्त किया।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, शनिवार, 25 अक्टूबर 2025

संयुक्त राष्ट्र संघ के स्थापना दिवस पर संगोष्ठी

अस्तित्व को बरकरार रखने संघर्ष कर रहा संयुक्त राष्ट्र संघ



ब्यूरो नवज्योति/उदयपुर। अराजकता, अनिश्चितता व आर्थिक असंतुलन के दौर में संयुक्त राष्ट्र संघ अपने अस्तित्व को बरकरार रखने के लिए अभूतपूर्व संघर्ष कर रहा है। लोकतांत्रिक मूल्यों के आधार पर इसके रूपांतरण की आवश्यकता है। यह विचार शुक्रवार को संयुक्त राष्ट्र संघ के स्थापना दिवस पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में आयोजित संगोष्ठी में वक्ताओं ने व्यक्त किए।

संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए यूनेस्को - महात्मा गांधी शान्ति व स्थाई विकास कार्य एवं पेसिफिक विश्व विद्यालय समूह के अध्यक्ष प्रो बी पी शर्मा ने कहा कि परिवर्तन किए सामर्थ्य का होना आवश्यक है। उन्होंने जोर देकर कहा कि हम आयातित सामान लेना बंद कर दें, केवल भारतीय उत्पाद ही खरीदें तो अमरीका जैसे टैरिफ तो स्वतरू अर्थहीन हो जाएंगे। यह आत्म निर्भरता की कामयाब कुंजी है। उन्होंने छोटे देशों की भी यू एन में सशक्तिकरण की आवश्यकता बताई। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि आज संयुक्त राष्ट्र अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत है। आवश्यकता है यह जन चेतना ओर जन भागीदारी का केंद्र बनें। इसके द्वारा प्रदत्त विशेषाधिकार शक्ति के आधार पर नहीं नैतिक सिद्धांत के विचाराधारित हो तथा निर्णय आम सहमति से हों और उनका अनुपालन भी सुनिश्चित किया जाए। डॉ आर बी कुमार ने संयुक्त राष्ट्र के पुनर्गठन की आवश्यकता बताते हुए कहा कि सुरक्षा परिषद् में हरेक महाद्वीप के प्रभावी भूमिका वाली अर्थव्यवस्था एवं मानव मूल्यों के संरक्षक राष्ट्रों को शामिल करना होगा। पूर्व मुख्य वन संरक्षक डॉ आर के जैन ने कहा कि सभी राष्ट्रों को एक साथ लाने के योगदान में यू एन की भूमिका कभी अप्रासंगिक नहीं हो सकती। पूर्व कलक्टर सुमति लाल बोहरा ने कहा कि भारतीय नागरिकों ने विदेशों में आधुनिक तकनीकी में जो मुकाम हासिल किया है, वह भी कालान्तर में राष्ट्रों को एक साथ लाने में महती भूमिका अदा करेगा।

डॉ भगवती अहीर ने जिम्मेदार नागरिकता को सुनिश्चित किए जाने की आवश्यकता प्रतिपादित की। देव स्थान विभाग एवं नगर परिषद के पूर्व आयुक्त - कलाविद् दिनेश कोठारी, बी एन विश्वविद्यालय में अंग्रेजी विभागाध्यक्ष डॉ जयश्री सिंह, पूर्व ए डी एम , नगर यासीन पठान, गांधी महाविद्यालय के डा सुथार, लेफ्टिनेंट एन सी सी पी एम श्रीमाली आदि ने भी विचार व्यक्त किए। डॉ. उदय लाल पालीवाल ने आभार व्यक्त किया।

प्रातःकाल
उदयपुर, शनिवार 25 अक्टूबर, 2025

संयुक्त राष्ट्र संघ स्थापना दिवस पर हुई संगोष्ठी



उदयपुर (वि.)। अराजकता, अनिश्चितता व आर्थिक असंतुलन के दौर से गुजर रहे विश्व के लिए साझा मंच की आवश्यकता को तो नकारा नहीं जा सकता किन्तु इस बात से भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि संयुक्त राष्ट्र संघ अपने अस्तित्व को बरकरार रखने के लिए अभूतपूर्व संघर्ष कर रहा है। आवश्यकता है लोकतांत्रिक मूल्यों के आधार पर इसके रूपांतरण की। यह विचार शुक्रवार को संयुक्त राष्ट्र संघ स्थापना दिवस के अवसर पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में संयुक्त राष्ट्र संघरूदशा और दिशाश् विषयक आयोजित संगोष्ठी में मुख्य वक्ता ने व्यक्त किए।

संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए यूनेस्को - महात्मा गांधी शान्ति व स्थाई विकास कार्य एवं पेसिफिक विश्व विद्यालय समूह के अध्यक्ष प्रो. बी पी. शर्मा ने कहा कि भारतीय संस्कृति में प्रत्येक अनुष्ठान के पश्चात पुष्पांजलि मंत्र द्वारा जिस तरह विश्व राष्ट्र के सारे आयामों का नमन किया जाता है, आज आवश्यकता है संयुक्त राष्ट्र को उन्हीं संदर्भो में पुनर्स्थापित करने का सामर्थ्य पैदा किया जाय। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने चिंता प्रकट करते हुए कहा कि आज संयुक्त राष्ट्र अपने अस्तित्व के लिए संघर्षरत है। बेहतरीन गठन किये जाने के पूर्व इसे नकारना विश्व समाज में अराजकता पैदा करेगा।

आवश्यकता है यह जन चेतना ओर जन भागीदारी का केंद्र बनें। इसके द्वारा प्रदत्त विशेषाधिकार शक्ति के आधार पर नहीं नैतिक सिद्धांत के विचाराधारित हो तथा निर्णय आम सहमति से हों और उनका अनुपालन भी सुनिश्चित किया जाए।

महात्मा गांधी बेसिक महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ भगवती अहीर ने जिम्मेदार नागरिकता को सुनिश्चित किए जाने की आवश्यकता प्रतिपादित की। देव स्थान विभाग एवं नगर परिषद के पूर्व आयुक्त - कलाविद् दिनेश कोठारी, बी एन विश्वविद्यालय में अंग्रेजी विभागाध्यक्ष डॉ जयश्री सिंह, पूर्व ए डी एम , नगर यासीन पठान, गांधी महाविद्यालय के डा सुथार, लेफ्टिनेंट एन सी सी पी एम श्रीमाली आदि ने भी विचार व्यक्त किए। नामीबिया विश्व विद्यालय के पूर्व कुलपति एवं निरमा विश्व विद्यालय गुजरात के डा उदय लाल पालीवाल ने आभार व्यक्त किया।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, गुरुवार, 07 अगस्त 2025

हिरोशिमा त्रासदी की 80 वीं वार्षिकी पर युवा शान्ति सम्मेलन

दुनिया में जब तक निर्दोष मरते रहेंगे, शान्ति संदिग्ध

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

उदयपुर. हिरोशिमा त्रासदी की 80 वीं वार्षिकी के अवसर पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में राजकीय रेजीडेंसी कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय में युवा शान्ति सम्मेलन हुआ। मुख्य अतिथि ग्रामीण विधायक फूल सिंह मीणा ने विचार व्यक्त किए । शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि दुनिया में जब तक निर्दोष मरते रहेंगे, शान्ति संदिग्ध बनी रहेगी।

अध्यक्षता करते हुए नगर परिषद् के पूर्व आयुक्त दिनेश कोठारी ने कहा कि परमाणु ऊर्जा विनाशकारी भी है और सृजनात्मक भी। हमें विवेकपूर्ण उपयोग किये जाने का वातावरण निर्मित करना चाहिए ।



कार्यक्रम में संकल्प लेते विद्यार्थी। पत्रिका

समिधा संस्था के प्रमुख एवं समाज सेवी चंद्रगुप्त सिंह चौहान ने भी विचार रखे। रेजीडेंसी की प्राचार्य रंजना मिश्रा,बी एन विश्वविद्यालय के डॉ जयश्री सिंह ने भी विचार व्यक्त किए। सेंट एंथोनी के छात्र- छात्राओं ने नाटिका प्रस्तुत की। संत तरेसा, स्कालर एरेना आदि के छात्रों ने भी अपनी बात रखी। सेंट्रल एकेडमी के छात्रों ने शान्ति गीत प्रस्तुत किया। आलोक पंचवटी, एमएमएएस राज नवल कॉलेज के एनसीसी कैडेट, राजकीय रेलवे ट्रेनिंग स्कूल आदि रैली में आयोजन स्थल पहुंचे। विद्यार्थियों ने प्रतिज्ञा की। मौन रख कर दिवंगत को श्रद्धांजलि दी।

विश्व में शांति एवं अहिंसा स्थापित हों

विद्या भवन गांधी शिक्षा अध्ययन संस्थान रामगिरि बड़गांव में व्याख्यान हुआ। मुख्य अतिथि शिक्षाविद् प्रो. श्रीनिवासन अय्यर ने कहा कि हमें विश्व में शांति एवं अहिंसा की भावना स्थापित करनी चाहिए। विशिष्ट अतिथि प्रो. जी एल. मेनारिया ने कहा कि यह दिवस और घटना मानव जाति के लिए कलंक है। महाविद्यालय की प्राचार्य डॉ भगवती अहीर ने कहा कि हमें परमाणु शक्ति का प्रयोग रोकना चाहिए एवं उस पर चिंतन करना चाहिए। कार्यक्रम की संयोजिका दुर्गा कुमावत व डॉ मीना कलरा ने भी विचार रखे।

धर्म . समाज . संस्था

दैनिक भास्कर, उदयपुर, गुरुवार 7 अगस्त, 2025

हिरोशिमा दिवस पर युवा शांति सम्मेलन का आयोजन
रैली निकाली गई, वक्ताओं ने दिया शांति का संदेश





हिरोशिमा दिवस पर रेजीडेंसी स्कूल में युवा शांति सम्मेलन मंचासीन अतिथि। नागरिक तथा जन संगठनों के साझा मंच की ओर से रैली निकाली गई।

सिटी रिपोर्टर | उदयपुर

हिरोशिमा त्रासदी की 80 वीं वार्षिकी के अवसर पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में रेजीडेंसी स्कूल में युवा शांति सम्मेलन का आयोजन हुआ। मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए उदयपुर ग्रामीण विधायक फूल सिंह मीणा ने कहा कि समाज शान्ति चाहता है।

ऋषि मुनियों व दार्शनिकों ने जो शान्ति का मार्ग दिखाया, वह सर्वकालिक प्रासंगिक है। उन्होंने शान्तिपीठ के जियो और जीने दो की कार्यप्रणाली से युवाओं को जुड़ने का आह्वान किया। संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि भारतीय ऋषि परम्परा ने विश्व समुदायों व राष्ट्रों में पारस्परिक विश्वास व एकता का बुनियादी आधार प्रस्तुत किया जो सर्वमान्य हल खोजने की सामर्थ्य पैदा करता है।

उन्होंने कहा दुनिया में जब तक निर्दोष मरते रहेंगे, शान्ति संदिग्ध बनीं रहेगी। अध्यक्षता करते हुए नगर परिषद के पूर्व आयुक्त एवं कला विद् दिनेश कोठारी ने दुखांतिकाओं की विस्तृत विवेचना करते हुए कहा कि परमाणु ऊर्जा विनाशकारी भी है और सृजनात्मक भी। हमें विवेकपूर्ण उपयोग किये ज का वातावरण निर्मित करना चाहिए। इधर, नागरिक तथा संगठनों के साझा मंच की ओर से रैली निकाली गई। संयोज मन्नाराम डांगी ने फिलिस्तीन की जनता के नरसंहार को रोकने, उनके लिए राहत पहुंचाने तथा सभी युद्धों का शांति समाधान करने की मांग की। सभा में विश्व मानव कल्याण के राष्ट्रीय संयोजक रामदयाल मीणा ने हिरोशिमा व नागास के पीडितों को श्रद्धांजलि अर्पित की तथा परमाणु हथियारों खतरों से आगाह किया व निशस्त्रीकरण की आवश्यकता बत

दैनिक भास्कर, उदयपुर, शुक्रवार, 25 अक्टूबर 2024

समसामयिक विश्व एवं यूएन पर संवाद, वक्ता बोले- संघ व्यापक व समावेशी बने



उदयपुर | सुविवि के सहायक अधिष्ठाता छात्र कल्याण कार्यालय एवं शांति पीठ के साझे में समसामयिक विश्व एवं संयुक्त राष्ट्र संघ पर संवाद हुआ। सहायक अधिष्ठाता छात्र कल्याण डॉ. गिरिराज सिंह चौहान ने संघ की पृष्ठभूमि, वर्तमान विश्व के हालात और भारत के संबंधों के बारे में बताया।

शांति पीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने बदले विश्व परिदृश्य में संयुक्त राष्ट्र संघ की संरचना में बदलाव की आवश्यकता प्रतिपादित करते हुए कहा कि इसे व्यापक और समावेशी होने की जरूरत है। हार-जीत के फैसलों के इतिहास पर आधारित बुनियाद अब जनचेतना आधारित बननी चाहिए। संयुक्त राष्ट्र को नया रूप देने में विश्व शान्ति के लिए प्रतिबद्ध भारत को पहल करनी चाहिए क्योंकि इसके पास अहिंसा, सहिष्णुता और वसुधैव कुटुम्बकम की गहरी विरासत है। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र के सार्वभौमिकरण की आवश्यकता पर बल दिया। विशिष्ट अतिथि के रूप में बोलते हुए संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. नीरज शर्मा ने शक्ति संतुलन की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा कि शक्तिशाली राष्ट्रों की बजाय सभी राष्ट्रों को लोकतांत्रिक तरीके समान स्थान मिलना चाहिए।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, शनिवार, 26 अक्टूबर 2024

संयुक्त राष्ट्र को नया रूप देने में भारत को पहल करनी चाहिए

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com



उदयपुर. सुखाड़िया विवि के कला महाविद्यालय के सहायक अधिष्ठाता छात्र कल्याण कार्यालय एवं शांतिपीठ संस्थान के विस्तार कार्यक्रम विभाग के तत्वावधान में महाविद्यालय सभागार में "समसामयिक विश्व एवं संयुक्त राष्ट्र संघ" विषयक संवाद एवं परिचर्चा हुई। सहायक अधिष्ठाता छात्र कल्याण डॉ. गिरिराज सिंह चौहान ने संघ की पृष्ठभूमि, वर्तमान-विश्व के हालात और भारत के सम्बन्धों पर चर्चा की।

शांतिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र को नया रूप देने में विश्व शांति के लिए प्रतिबद्ध भारत को पहल करनी चाहिए, क्योंकि इसके पास अहिंसा, सहिष्णुता और वसुधैव कुटुम्बकम की गहरी विरासत है। विशिष्ट अतिथि संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. नीरज शर्मा ने कहा कि शक्तिशाली राष्ट्रों की बजाय सभी राष्ट्रों को लोकतांत्रिक तरीके से समान स्थान मिलना चाहिए। अध्यक्षता करते हुए कला महाविद्यालय के अधिष्ठाता प्रो. हेमन्त द्विवेदी ने कहा कि यदि हमें सुरक्षा के लिए खर्च ना करना पड़े तो दुनिया के सकारात्मक विकास की दिशा में कई पंख लग जाएंगे। डॉ. आरबी. कुमार, डॉ. विजया दीक्षित, डॉ. कमल सिंह राठौड़, डॉ. भूपेन्द्र शर्मा, दिनेश कोठारी ने विचार रखे।

पत्रिका

जयपुर महानगर टाइम्स
उदयपुर, 25 अक्टूबर, 2024

संयुक्त राष्ट्र को नया रूप देने में विश्व शान्ति की भारत को पहल करनी चाहिए : अनंत गणेश

महानगर संवाददाता



उदयपुर। मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के कला महाविद्यालय के सहायक अधिष्ठाता छात्र कल्याण कार्यालय एवं शान्तिपीठ संस्थान के विस्तार कार्यक्रम विभाग के तत्वावधान में महाविद्यालय के सभागार में समसामयिक विश्व एवं संयुक्त राष्ट्र संघ विषयक संवाद, परिचर्चा हुई।

प्रारम्भ में सहायक अधिष्ठाता छात्र कल्याण डॉ. गिरिराजसिंह चौहान ने संघ की पृष्ठभूमि, वर्तमान विश्व के हालात और भारत के सम्बन्धों पर विस्तार से बताया। शान्तिपीठ संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने बदले विश्व परिदृश्य में संयुक्त राष्ट्र संघ की संरचना में बदलाव की आवश्यकता प्रतिपादित करते हुए कहा कि इसे व्यापक और समावेशी होने की जरूरत है। हार-जीत के फैसलों के इतिहास पर आधारित बुनियाद अब जनचेतना आधारित बननी चाहिए। संयुक्त राष्ट्र को नया रूप देने में विश्व शान्ति के लिए प्रतिबद्ध भारत को पहल करनी चाहिए क्योंकि इसके पास अहिंसा, सहिष्णुता और वसुधैव कुटुम्बकम की गहरी विरासत है। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र के सार्वभौमिकरण की आवश्यकता पर बल दिया। विशिष्ट अतिथि संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. नीरज शर्मा ने शक्ति संतुलन की आवश्यकता पर कहा कि शक्तिशाली राष्ट्रों की बजाय सभी राष्ट्रों को लोकतांत्रिक तरीके से समान स्थान मिलना चाहिए। अध्यक्षता करते हुए कला महाविद्यालय अधिष्ठाता प्रो. हेमन्त द्विवेदी ने अपनी कल्पना के ईशारे से कहा कि यदि हमें सुरक्षा के लिए खर्च ना करना पड़े तो दुनियाँ के सकारात्मक विकास की दिशा में कई पंख लग जायेंगे। उन्होंने साहित्य और कला से जुड़े लोगों को शान्ति की दिशा में पहल करने की जरूरत बताई। मुख्य अतिथि पूर्व जिला कलक्टर सुमतिलाल बोहरा ने महासंघ में आम आदमी की संवेदनशील भूमिका को दर्ज किये जाने की नई व्यवस्था बनाने की मांग की। संवाद में अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्धों के विशेषज्ञ डॉ. आरबी कुमार, डॉ. विजया दीक्षित, डॉ. कमलसिंह राठौड़, डॉ. भूपेन्द्र शर्मा आदि ने भी विचार व्यक्त किये। इस दौरान महाविद्यालय के छात्र-छात्राएँ, पीएचडी स्कॉलर, शिक्षक उपस्थित रहे। देवस्थान विभाग के पूर्व आयुक्त डॉ. दिनेश कोठारी ने आभार व्यक्त किया।

राजस्थान पत्रिका patrika.com
उदयपुर, सोमवार, 22 सितम्बर 2025

बिना शक्ति के शांति स्थापित करना दुष्कर

उदयपुर@पत्रिका. इतिहास साक्षी है कि जिन महापुरुषों ने शान्ति का मार्ग प्रशस्त किया, उन्होंने शक्ति की साधना की। बिना शक्ति के समाज में शान्ति के आदर्शों की स्थापना करना अत्यंत दुष्कर है। यह बात रविवार को अंतरराष्ट्रीय शान्ति दिवस पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में संस्थान सभागार में आयोजित संगोष्ठी में वक्ताओं ने कही।वर्तमान की आवश्यकता है युवा समुदायों को शक्ति और शान्ति के आदर्शों से संस्कारित किया जाए। अध्यक्षता महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. उमाशंकर शर्मा ने की। प्रमुख वक्ता सेवानिवृत्त आइएएस सुमति लाल बोहरा ने कहा, भारतीय संस्कृति में भेद किए बिना मानव मात्र के कल्याण के भाव निहित हैं। सनातन संस्कृति में वे सारे सूत्र समाहित हैं जो विश्व कुटुम्ब के आदर्शों को पूर्ण करते हैं। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा, विश्व शान्ति का मूल मंत्र भारतीय दर्शन में प्रतिपादित हैं, जो समय स्थान और परिस्थितियों के अनुसार संतुलन स्थापित करता है। शक्ति, शान्ति एवं सभी आदर्श गुण सम्पन्न देवियां अभिन्न हैं, हमें शक्ति पूजन से स्वयं को व राष्ट्र को अधिक सामर्थ्यवान बनाने की अभिप्सा करनी चाहिए।

दैनिक भास्कर, उदयपुर सोमवार, 22 सितंबर , 2025

भारतीय दर्शन में शक्ति-शांति का संतुलन : त्रिवेदी

उदयपुर| अंतरराष्ट्रीय शांति दिवस के अवसर पर शांति पीठ संस्थान के तत्वावधान में संस्थान सभागार में संगोष्ठी हुई।

अध्यक्षता महाराणा प्रताप कृषि विवि के पूर्व कुलपति डॉ. उमाशंकर शर्मा ने की। प्रमुख वक्ता बारां के पूर्व कलेक्टर सुमति लाल बोहरा ने भारतीय संस्कृति में मानव कल्याण और विश्व कुटुंब के आदर्शों पर प्रकाश डाला। संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि शक्ति और शांति का संतुलन भारतीय दर्शन में निहित है। शक्ति पूजन से स्वयं और राष्ट्र को अधिक सामर्थ्यवान बनाया जा सकता है। डॉ. के.बी. जोशी ने नई पीढ़ी की उपभोक्तावादी प्रवृत्ति पर चिंता जताई। अंतरराष्ट्रीय संबंध विशेषज्ञ प्रो. आर.बी. कुमार ने वैश्विक दृष्टिकोण से शांति की वास्तविकता पर बल दिया। इतिहासविद डॉ. श्रीकृष्ण जुगनू ने भारतीय संस्कृति में सहअस्तित्व और कुटुम्ब भाव की विशिष्टता बताई। पर्यावरणविद जी.पी. सोनी, मार्शल आर्ट विशेषज्ञ राजकुमार मेनारिया, गोपाल नागदा और उद्योगपति मांगीलाल ने भी विचार व्यक्त किए।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, सोमवार, 22 सितंबर 2025

भारतीय संस्कृति हमेशा शान्ति मूलक रही है: जुगनू

नवज्योति/उदयपुर। इतिहास साक्षी है कि जिन महापुरुषों ने शान्ति का मार्ग प्रशस्त किया, उन्होंने शक्ति की साधना की। बिना शक्ति के समाज में शान्ति के आदर्शों की स्थापना करना अत्यंत दुष्कर है। आज विश्व में भय, हिंसा, आतंक,लालच और युद्ध प्रणीत संस्कृति की अराजकता व्याप्त है, ऐसे में अधिभौतिक, आधिदैविक तथा आध्यात्मिक शक्ति को अर्जित करना आवश्यक हो जाता है। आज देश आत्म निर्भरता की ओर द्रुतगति से अग्रसर है। आत्मनिर्भरता से आत्म दर्शन में समाहित विश्व शान्ति के मंत्र को नई ऊर्जा प्राप्त होगी। आवश्यकता है युवा समुदायों को शक्ति और शान्ति के आदर्शों से संस्कारित किया जाए। अंतरराष्ट्रीय शान्ति दिवस के अवसर पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में संस्थान सभागार में संगोष्ठी में कई वक्ताओं ने व्यक्त किए।संगोष्ठी की अध्यक्षता महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ उमाशंकर शर्मा ने की। प्रमुख वक्ता के रूप में बोलते हुए पूर्व बारां कलक्टर सुमति लाल बोहरा ने कहा कि भारतीय संस्कृति में किसी भी प्रकार से भेद किये बिना मानव मात्र के कल्याण के भाव निहित हैं। सनातन संस्कृति में वे सारे सूत्र समाहित हैं जो विश्व कुटुम्ब के आदर्शों को पूर्ण करते हैं। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि विश्व शान्ति का मूल मंत्र भारतीय दर्शन में प्रतिपादित है जो समय स्थान और परिस्थितियों के अनुसार संतुलन स्थापित करता है। इतिहासविद एवं पुरा विशेषज्ञ डॉ श्री कृष्ण जुगनू ने कहा कि भारतीय संस्कृति हमेशा शान्ति मूलक रही है। सह अस्तित्व, पारस्परिकता और कुटुम्ब जैसे गुण इस संस्कृति में मणि कांचन की तरह विद्यमान हैं ।

जयपुर महानगर टाइम्स
उदयपुर, 13 अगस्त, 2025

युवाओं को वैश्विक चुनौतियों के मुकाबले के लिए स्वयं के अस्तित्व को देना होगा औचित्य

महानगर संवाददाता

उदयपुर। समर्पण प्रतिदान नहीं चाहता। राष्ट्र के प्रति समर्पण से व्यक्ति निःसंदेह दिव्यता को प्राप्त होता है। इसीलिए कहा गया है राष्ट्र हृदय का विस्तार है। आज का युवा अद्वितीय वैश्विक चुनौतियों के सामने खड़ा है और इनका मुकाबला करने के लिए उसे दिव्यता की अग्नि में प्रकाशित होकर स्वयं के अस्तित्व को औचित्य प्रदान करना होगा। तब ही वह समावेशी विकसित भारत का स्वप्न द्रष्टा सिद्ध होगा।

यह विचार अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस पर शान्तिपीठ संस्थान की संगोष्ठी में वक्ताओं ने व्यक्त किए। विषय प्रवर्तन करते हुए बीएन कालेज फार्मेसी विभागाध्यक्ष डॉ कमलसिंह राठौड़ ने युवा समुदाय को सुखद भविष्य निर्माण की कामना करते हुए कहा युवा शक्ति किसी भी समाज की रीढ़ होती है। युवाओं के पास वो क्षमता है, जिससे वे स्वप्नों को हकीकत में बदल सकें और ऊंचाइयों को छुएं। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्तगणेश त्रिवेदी कहा 21वीं सदी को उल्लास की सदी बनाने हेतु युवा आगे आएं। युवा विज्ञान और ज्ञान में संतुलन कायम रखते हुए समावेशी विकास की ओर अग्रसर हों ।

भाषावाद, जातिवाद, क्षेत्रियता से उठकर एकजुटता के साथ राष्ट्र को समर्पित हों और वसुधैव कुटुम्बकम् को नूतन गति दें। उपस्थित परिस्थितियों में विवेक मात्र ही उनके व्यक्तित्व का उन्नयन कर सकता है और अवनत होने से रोक सकता है। सुविवि में पर्यावरण विभागाध्यक्ष डॉ डीएस राठौड़ ने वर्तमान के अस्तित्व संकट का हवाला देते हुए कहा आज की विकास गतिविधियों ने प्रकृति व पर्यावरण में जो असंतुलन पैदा किया, उससे जलवायु परिवर्तन सबसे बड़ी चुनौती बन चुका है। युवा आगे आएं और योद्धा की तरह मुकाबला करें और वर्तमान मे अपेक्षित कर्तव्य को अपना धर्म समझें। गोष्ठी में कैलाश पालीवाल, कपिल साहू आदि ने भी विचार व्यक्त किए। जीएल पाटीदार ने आभार व्यक्त किया।

जयपुर महानगर टाइम्स
उदयपुर, 7 अगस्त, 2025

हिरोशिमा त्रासदी की 80वीं वार्षिकी पर युवा शांति सम्मेलन

आत्मा में छिपी शान्ति की खोज प्रक्रिया आज का विश्व धर्म हो सकता है : अनंत गणेश त्रिवेदी

महानगर संवाददाता

उदयपुर। हिरोशिमा नागासाकी जनसंहार के 8 दशक बीत जाने के बाद भी शान्ति का सर्वमान्य हल न खोज पाना मानव सभ्यता की हार है। असल में तो मानवता कभी पराजित नहीं होती और इसीलिए आज विश्व कल

याण और प्राणी मात्र के योग क्षेम की चिंता प्रत्येक प्रज्ञाशील उत्तरदायी मानव को हुई है। किन्तु विश्व के राजनीतिकों पर विश्व जनता जनार्दन के मत, सम्मत का न्यूनतम भी प्रभाव नहीं है। जब तक लोकमत का असर इन राजनीतिकों पर नहीं होगा, युद्ध की भीषण सम्भावना बनी रहेगी।

यह विचार हिरोशिमा त्रासदी की 80वीं वार्षिकी पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में राजकीय रेजीडेंसी कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय के सभागार में हुए युवा शान्ति सम्मेलन में वक्ताओं ने व्यक्त किए। मुख्य अतिथि उदयपुर ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा ने कहा भारत हमेशा शान्ति चाहता है। सारा समाज शान्ति चाहता है। ऋषि, मुनियों व दार्शनिकों ने जो शान्ति का मार्ग दिखाया, वह सर्वकालिक प्रासंगिक है। उन्होंने शान्तिपीठ के जियो और जीने दो की कार्यप्रणाली से युवाओं को जुड़ने का आह्वान किया और कहा एक पेड़ मां के नाम अभियान से जुड़कर वृक्षावली विकसित करना



चाहिए जो शान्ति का ही कार्य है। शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा भारतीय ऋषि परम्परा ने विश्व समुदायों व राष्ट्रों में पारस्परिक विश्वास व एकता का बुनियादी आधार प्रस्तुत किया जो सर्वमान्य हल खोजने की सामर्थ्य पैदा करता है। दुनिया में जब तक निर्दोष मरते रहेंगे, शान्ति संदिग्ध बनीं रहेगी। उन्होंने पर्यावरण प्रणीत त्रासदियों पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा आज दुनिया दहशत में जीवनयापन करने को बाध्य है और यह भी एक पराधीनता है, जिससे मुक्त होने के लिए आत्मा में छिपी शान्ति की खोज प्रक्रिया आज का विश्व धर्म हो सकता है। अध्यक्षता करते हुए नगर परिषद् के पूर्व आयुक्त एवं कलाविद दिनेश कोठारी ने दुखान्तिकाओं की विस्तृत विवेचना करते हुए कहा परमाणु ऊर्जा विनाशकारी भी है और सृजनात्मक भी। हमें विवेकपूर्ण उपयोग का वातावरण निर्मित करना चाहिए। समिधा संस्था के प्रमुख एवं समाजसेवी चंद्रगुप्तसिंह चौहान ने युवाओं को इंगित करते हुए कहा वे अपनी पसंद की नई दुनिया बनाएं, जहां हिंसा, आतंक और अस्तित्व पर संकट की चिंता न हो।

रेजीडेंसी स्कूल प्राचार्या रंजना मिश्रा, बीएन विवि में अंग्रेजी विभागाध्यक्ष डॉ जयश्रीसिंह ने भी विचार व्यक्त किए। सेंट एंथोनी स्कूल के छात्र छात्राओं ने नाटिका प्रस्तुत की। सेंट टेरेसा, स्कालर एरिना आदि के छात्रों ने भी विचार व्यक्त किए। सेंट्रल एकेडमी के छात्रों ने शान्ति गीत सुनाया। आलोक पंचवटी, एमएमपीएस, राज नवल कालेज के एनसीसी कैडेट, राजकीय रेलवे ट्रैनिंग स्कूल आदि रैली में कार्यक्रम स्थल पहुंचे। प्रारंभ में मां शारदा की मूर्ति के समक्ष अतिथियों ने दीप प्रज्वलन किया। प्रतिभागियों ने खड़े होकर राष्ट्रीय एकता, पर्यावरण संरक्षण, न्याय, विश्व शान्ति एवं आणविक निःशस्त्रीकरण के लिए अपनी प्रतिबद्धता जताकर प्रतिज्ञा ली। मौन रखकर दिवंगत आत्माओं को शान्ति मंत्र से श्रद्धांजलि दी। राष्ट्रगान से समापन हुआ। डा भूपेंद्र शर्मा ने संचालन किया। बीएन विवि फार्मेसी विभागाध्यक्ष डॉ कमलसिंह राठौड़ ने धन्यवाद दिया।

प्रातःकाल
उदयपुर, गुरूवार 7 अगस्त, 2025

मानवता की रक्षा के लिए संवाद, सहयोग और शांतिपूर्ण समाधान ही एकमात्र रास्ता



उदयपुर (वि.)। हिरोशिमा - नागासाकी जन संहार के 8 दशक बीत जाने के बाद भी शान्ति का सर्वमान्य हल न खोज पाना मानव सभ्यता की हार है। असल में तो मानवता कभी पराजित नहीं होती और इसीलिए आज विश्व कल्याण और प्राणी मात्र के योग क्षेम की चिंता प्रत्येक प्रज्ञा शील उत्तरदायी मानव को हुई है, किन्तु विश्व के राजनीतिकों पर विश्व जनता जनार्दन के मत सम्मत का न्यूनतम भी प्रभाव नहीं है। जब तक लोकमत का असर इन राजनीतिकों पर नहीं होगा, युद्ध की भीषण सम्भावना बनी रहेगी। उक्त विचार आज हिरोशिमा त्रासदी की 80 वीं वार्षिकी के अवसर पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में राजकीय रेजीडेंसी कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय के सभागार में आयोजित युवा शान्ति सम्मेलन में बोलते हुए कई वक्ताओं ने व्यक्त किये।

मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए उदयपुर ग्रामीण विधायक फ़ूल सिंह मीणा ने कहा कि भारत हमेशा शान्ति चाहता है, सारा समाज शान्ति चाहता है। ऋषि मुनियों व दार्शनिकों ने जो शान्ति का मार्ग दिखाया, वह सर्वकालिक प्रासंगिक है। उन्होंने शान्तिपीठ के जियो और जीने दो की कार्यप्रणाली से युवाओं को जुड़ने का आह्वान किया। उन्होंने कहा एक पेड़ मां के नाम अभियान से जुड़ कर वृक्षावली विकसित करना चाहिए जो शान्ति का ही कार्य है। समिधा संस्था के प्रमुख एवं समाज सेवी चंद्रगुप्त सिंह चौहान ने युवा प्रतिभागियों को इंगित करते हुए कहा कि वे अपनी पसंद की नई दुनिया बनाएं जहां हिंसा, आतंक और अस्तित्व पर संकट की चिंता न हो। दो मिनट का मौन रख कर दिवंगत आत्माओं को शान्तिमंत्र के साथ श्रद्धांजलि दी। राष्ट्र गान के साथ समापन हुआ। डा भूपेंद्र शर्मा ने कार्य क्रम का संचालन किया तथा बी एन विश्व विद्यालय में फार्मेसी विभागाध्यक्ष डॉ कमल सिंह राठौड़ ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, गुरुवार, 7 अगस्त 2025

शान्ति का सर्वमान्य हल न खोज पाना मानव सभ्यता की हार



ब्यूरो नवज्योति/उदयपुर। हिरोशिमा - नागासाकी जन संहार के 8 दशक बीत जाने के बाद भी शान्ति का सर्वमान्य हल न खोज पाना मानव सभ्यता की हार है। यह विचार हिरोशिमा त्रासदी की 80 वीं वार्षिकी पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में रेजीडेंसी सभागार में आयोजित युवा शान्ति सम्मेलन में वक्ताओं ने व्यक्त किए।

मुख्य अतिथि उदयपुर ग्रामीण विधायक फूल सिंह मीणा ने कहा कि भारत हमेशा शान्ति चाहता है, सारा समाज शान्ति चाहता है। ऋषि मुनियों व दार्शनिकों ने जो शान्ति का मार्ग दिखाया, वह सर्वकालिक प्रासंगिक है। शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि दुनिया में जब तक निर्दोष मरते रहेंगे, शान्ति संदिग्ध बनी रहेगी। उन्होंने पर्यावरण प्रणीत त्रासदियों पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि आज दुनिया दहशत में जीवनयापन करने को बाध्य है और यह भी एक पराधीनता है जिससे मुक्त होने के लिए आत्मा में छिपी शान्ति की खोज प्रक्रिया आज का विश्व धर्म हो सकता है।

अध्यक्षता करते हुए नगर परिषद् के पूर्व आयुक्त एवं कला विद् दिनेश कोठारी ने कहा कि परमाणु ऊर्जा विनाशकारी भी है और सृजनात्मक भी। हमें विवेकपूर्ण उपयोग किये जाने का वातावरण निर्मित करना चाहिए। समिधा संस्था के प्रमुख चंद्रगुप्त सिंह चौहान, रेजीडेंसी स्कूल की प्राचार्या रंजना मिश्रा, बी एन विश्वविद्यालय में अंग्रेजी विभागाध्यक्ष डॉ जयश्री सिंह ने भी विचार व्यक्त किए। सेंट एंथोनी स्कूल के छात्र छात्राओं ने नाटिका प्रस्तुत की। सेंट टेरेसा, स्कालर एरेना आदि के छात्रों ने भी विचार व्यक्त किए। सेंट्रल एकेडमी के छात्रों ने शान्ति गीत प्रस्तुत किया। प्रतिभागियों ने राष्ट्रीय एकता, पर्यावरण संरक्षण, न्याय, विश्व शान्ति एवं आणविक निरू शस्त्रीकरण के लिए अपनी प्रतिबद्धता को लेकर प्रतिज्ञा की। दो मिनट का मौन रख कर दिवंगत आत्माओं को शान्ति मंत्र के साथ श्रद्धांजलि दी। संचालन डॉ. भूपेंद्र शर्मा ने जबकि धन्यवाद डॉ कमल सिंह राठौड़ ने ज्ञापित किया।

जयपुर महानगर टाइम्स
उदयपुर, 29 मार्च, 2025

आज राष्ट्रीय चरित्र गठन की प्राथमिक आवश्यकता : डा. कर्णसिंह



आज विश्व अशान्ति के दौर से गुजर रहा है। युद्ध की निरंतर आशंका रहती है। स्थिति चाहे लेटिन अमेरिका की हो, यूरोपीय यूनियन या अन्य देशों की हो, ईजराइल, हमास एवं गाजा के संघर्ष की हो। विश्व शान्ति का प्रश्न निरंतर एक चुनौती बनकर खड़ा हुआ है, जिससे वसुधैव कुटुम्बकम की भावना प्रतिक्षण आहत हो रही है।

यह विचार शान्तिपीठ संस्थान के सभागार में पूर्व केन्द्रिय मंत्री एवं वेदान्तविद् डॉ. कर्णसिंह ने व्यक्त किए। वे संध्याकाल शान्तिपीठ पहुंचे। वहां उनका अभिनंदन हुआ। वे शान्तिपीठ के मुख्य संरक्षक हैं। संवाद में डॉ. सिंह ने कहा आज राष्ट्रीय चरित्र के गठन की प्राथमिक आवश्यकता है। हमें चरित्र गठन के साथ विकसित भारत के लक्ष्यों को उपलब्ध करना है। उन्होंने चिंता जताई कि वर्तमान में समाज के तबको में वैमनस्य फैला है। नागरिको एवं राजनेताओं की संयुक्त जिम्मेदारी से ही समाज में सौहार्द्र बना रह सकता है। उन्होंने जोर देते हुए कहा संवादों, अभिव्यक्ति मे जिम्मेदारी के साथ मर्यादित भाषा का उपयोग होना चाहिए। उन्होंने स्वयं को हिमालय पुत्र कहते हुए पहाड़ों की निरंतर कटाई और पर्यावरण के विघटन पर चिंता व्यक्त की। उत्तराखण्ड के देवस्थानों में फोरलेन आदि मार्गो के लिए निर्माण को अनावश्यक बताया। यद्यपि उन्होंने केन्द्रिय मंत्री गडकरी एवं उनके मंत्रालय के कार्यो की प्रशंसा की। किन्तु प्रकृति की कीमत पर इसे उचित नहीं माना। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्तगणेश त्रिवेदी ने शारदा देश भारत भारती के वरदपुत्र, वरेण्य चिंतक एवं वरिष्ठ राजनेता के रूप में रहकर भारतीय संस्कृति और उसके कालजयी मूल्यों के संरक्षण व संवर्धन में अमिट अवदान हेतु संस्थान की ओर से उनका अभिनंदन किया। पण्डित वृन्द ने स्वस्तिवाचन किया। उन्होंने कहा शान्तिपीठ को डॉ. कोठारी और वेदान्तविद् डॉ. कर्णसिंह का प्रारम्भ से ही संरक्षत्व प्राप्त है। विज्ञान और वेदान्त के समन्वय से ही शान्ति के शाश्वत मार्ग का पथ प्रदर्शन हुआ है। प्रारम्भ में डॉ. कर्णसिंह ने दीप प्रज्वलित किया। संस्था कार्यो, भावी योजनाओं पर विमर्श किया। इस दौरान जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति प्रो. कर्नल शिवसिंह सारंगदेवोत, शान्तिपीठ के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. पीएस तलेसरा, पूर्व कलक्टर सुमतिलाल बोहरा, पूर्व देवस्थान आयुक्त एवं कलाविद् दिनेश कोठारी, वरिष्ठ अभियंता एके शर्मा, जीपी सोनी, उच्च न्यायालय के अधिवक्ता उमेशचन्द्र शर्मा, डॉ. सुरेन्द्र द्विवेदी, बीएन विवि के डॉ. कमलसिंह राठौड़, रामचरित मानस संघ अध्यक्ष नारायण त्रिवेदी, जीडी शर्मा, आदि उपस्थित थे।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, रविवार, 22 सितम्बर, 2024

शस्त्रों के निर्माण की नहीं बल्कि शांति निर्माण के उपाय की आवश्यकता



उदयपुर. दुनिया को शस्त्रों के निर्माण की नहीं, शांति निर्माण के कारगर उपाय करने की आवश्यकता है। जरूरत है हमारे शिक्षा केन्द्र हिंसा नहीं शान्ति संस्कृति निर्माण के केन्द्र बनें।

ये विचार अंतरराष्ट्रीय दिवस के अवसर पर शांतिपीठ संस्थान के विस्तार कार्यक्रम एवं राजस्थान महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय के साझे में आयोजित सेमिनार में कई व्यक्ताओं ने व्यक्त किए। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए पूर्व कलक्टर बारां सुमति लाल बोहरा ने कहा कि आदर्शों की ऊंचाई पर पहुंचने के लिए शुरुआत हमेशा नीचे से की जाती है और इसके लिए आवश्यकता है कि शांति यात्रा की शुरुआत स्वयं से हो। शांतिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि युवा शिक्षक बदलते परिवेश में जीवन के बुनियादी सिद्धांतों से विचलित न हों और विश्व शान्ति के लिए भारत की पहचान को पुनर्स्थापित करें। कार्यक्रम में डॉ. आर.बी.कुमार, दिनेश कोठारी, डॉ. प्रभा वाजपेयी, डॉ. अंकुर कपूर आदि ने भी विचार किए।

दैनिक भास्कर 22 सितम्बर, 2024

दुनिया को शांति निर्माण के उपाय की आवश्यकता

उदयपुर| अंतरराष्ट्रीय शांति दिवस पर शनिवार को शान्तिपीठ संस्थान की ओर से सेमिनार हुआ। सेमिनार में वक्ताओं ने कहा कि आज दुनिया को शस्त्रों के निर्माण की नहीं, शान्ति निर्माण के कारगर उपाय करने की आवश्यकता है। जरूरत है हमारे शिक्षा केन्द्र हिंसा नहीं शान्ति संस्कृति निर्माण के केन्द्र बनें। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए पूर्व कलेक्टर सुमति लाल बोहरा ने कहा कि आदर्शों की ऊंचाई पर पहुंचने के लिए शुरूआत हमेशा नीचे से की जाती है और इसके लिए आवश्यकता है कि शान्ति यात्रा की शुरूआत स्वयं से हो।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, रविवार, 22 सितंबर 2024

पूर्वाग्रहों से मुक्त संवादों से ही समाधान संभव



ब्यूरो नवज्योति/ उदयपुर। आज दुनियां को शस्त्रों के निर्माण की नहीं, शान्ति निर्माण के कारगर उपाय करने की आवश्यकता है। व्यक्तिगत साधना और सामूहिक प्रत्यनों से ही हम वैश्विक लक्ष्यों को उपलब्ध कर सकते है लेकिन इसकी शुरूआत हमेशा स्थानीय स्तर के सामाजिक सरोकारो की समृद्धि से ही संभव है। जरूरत है हमारे शिक्षा केन्द्र हिंसा नहीं शान्ति संस्कृति निर्माण के केन्द्र बनें। ये विचार वक्ताओं ने शनिवार को अन्तरराष्ट्रीय शान्ति दिवस पर शान्तिपीठ एवं राजस्थान महिला शिक्षक-प्रशिक्षण महाविद्यालय के तत्वावधान में आयोजित सेमिनार में व्यक्त किए।

अध्यक्षता करते हुए पूर्व कलक्टर बारां सुमति लाल बोहरा ने कहा कि दूसरों की जरूरत के लिए जीने का भाव व्यक्ति परिवार से ही सीखता है और समाज को सकारात्मक दिशा देता है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि युवा शिक्षक बदलते परिवेश में जीवन के बुनियादी सिद्धांतो से विचलित न हों और विश्व शान्ति के लिए भारत की पहचान को पुनर्स्थापित करें। उन्होंने कहा पूर्वाग्रहों से मुक्त संवादों से ही समाधान संभव है। अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्धों के विशेषज्ञ डॉ. आर.बी.कुमार ने कहा कि वैश्विक स्तर पर शान्ति प्रयास शुरू से ही शक्ति और वर्चस्व की लड़ाई की वेदी पर कमजोर होते रहे हैं। राष्ट्र अध्यक्ष और अन्तरराष्ट्रीय संस्थाएं यदि सच्चे मन से पंचशील के सिद्धान्तों का अनुसरण करें तो आने वाली पीढ़ी के लिए हम बेहतर विश्व और माहौल उत्पन्न कर सकेगें। देवस्थान विभाग के पूर्व आयुक्त दिनेश कोठारी ने भी विचार व्यक्त किए। अतिथियों का स्वागत महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. प्रभा वाजपेयी ने किया। संचालन डॉ. भूपेन्द्र शर्मा ने किया। आभार डॉ. पूजा शर्मा ने जताया।

आज का दिन विश्व में शांति को बढ़ावा देने के लिए समर्पित

रोटरी इंटरेक्ट क्लब यूनिवर्सल ने मनाया इंटरनेशनल पीस डे



उदयपुर। फतहपुरा स्थित दयूनिवर्सल स्कूल में रोटरी इंटरेक्ट क्लब यूनिवर्सल की ओर से इंटरनेशनल पीस डे रोटरी के असिस्टेंट गवर्नर संदीप सिंघटवाडिया की अध्यक्षता में मनाया गया। सिंघटवाडिया ने कहा कि आज का दिन विश्व भर में शांति को बढ़ावा देने के लिये समर्पित हैं। यह एक वैश्विक उत्सव है, इसे मनाने का मुख्य उद्देश्य विश्व में शांति और अहिंसा को बढ़ावा देना हैं, इसे युद्ध और हिंसा के खिलाफ एकजुटता के लिये सन्देश देना, लोगों को शांति के महत्व के प्रति जागरूक करना हैं।

कार्यक्रम समन्वयक दीपा जेठी ने बताया कि छवि पालीवाल ने सफेद पोशाक में एक तू ही भरोसा पर नृत्य की प्रस्तुति दी जबकि लविश शर्मा ने शांति का महत्व पर कविता पाठ किया। कुणाल सेन, हरी रावल, रेहान शेख, मेहरनाज, मीनाक्षी, हार्दिक शर्मा ने समूह गीत साथ रहे हम में की प्रस्तुति दी। बोया बीज बबूल का कविता अलविरा कुरैशी ने गाने के अंदाज में सुनाई।

दैनिक भास्कर उदयपुर, मंगलवार, 13 अगस्त, 2024

सतत विकास के लिए युवा डिजिटल विषय पर संगोष्ठी



उदयपुर| अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस सोमवार को शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में आयोजित किया गया। इस बार आयोजन का विषय था, क्लिक से प्रगति तक सतत विकास के लिए युवा डिजीटल रास्ता। इस दौरान नगर के विद्यालय- महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं के साथ विशिष्ट अतिथियों ने विमर्श किया। संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए महाराणा प्रताप कृषि एवं तकनीक विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. उमाशंकर शर्मा ने कहा कि देश में आज युवाओं ने कौशल विकास के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित कर यह प्रमाणित किया है कि भारत युवाओं का देश है। विश्व के हर कोने में भारत के युवाओं ने नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं। शान्तिपीठ प्रमुख अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि दूसरे के हित साधने की भाव प्रेरणा जब यौवन की प्रचण्ड की आंधी बन जाए तो समाज में बदलाव अवश्य बन जाता है, आवश्यकता है जीवन में मर्यादा कायम की जाए। पूर्व कलेक्टर सुमति लाल बोहरा ने कहा कि खुद का काम खुद करना आत्मानुशासन की पहली कड़ी है। मार्शल आर्ट के अन्तर्राष्ट्रीय प्रशिक्षक राज कुमार मेनारिया ने युवाओं की शिथिलता और कॅरियर के पीछे भागने की मानसिकता पर चिंता प्रकट की। इस अवसर पर मीरा कन्या महाविद्यालय की श्रुति डबगर, समाजसेवी सुनील शर्मा, भगवती लाल चौबीसा,जीएल पाटीदार आदि मौजूद रहे।

जयपुर महानगर टाइम्स
उदयपुर, 13 अगस्त, 2024

जीवन में मर्यादा की पुनर्स्थापना के लिए युवा आगे आएं : अनंत गणेश

महानगर संवाददाता

उदयपुर। अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में क्लिक से प्रगति तकः सतत विकास के लिए युवा डिजिटल रास्ते विषयक संवाद हुआ। इसमें शहर के विद्यालय, महाविद्यालयी विद्यार्थियों के साथ अतिथियों ने विमर्श किया। अध्यक्षता करते हुए एमपीयूएटी के पूर्व कुलपति डॉ. उमाशंकर शर्मा ने कहा देश में युवाओं ने कौशल विकास के क्षेत्र में नये आयाम स्थापित कर प्रमाणित किया है कि भारत युवाओं का देश है। उन्होंनें चिंता जताई कि लोग कई प्रकार के नशे के आदि होकर यौवन खो रहे हैं। शान्तिपीठ प्रमुख अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा जीवन में मर्यादा की पुनर्स्थापना के लिए युवा आगे आएं। हृदय में शाश्वत रामत्व को जाग्रत करने से ही आज की चुनौतियों को अवसरो में बदल पाएंगे। पूर्व कलेक्टर सुमतिलाल बोहरा ने कहा खुद का काम खुद करना आत्मानुशासन की पहली कड़ी है।

पूर्व देवस्थान आयुक्त एवं कलाविद दिनेश कोठारी ने कहा डिजिटल सिस्टम और सामाजिक मीडिया एक साथ चलने के सक्रिय साधन बन चुके हैं किन्तु फ्रॉड से मुक्त रहने के लिए कौशल विकसित करना ही आवश्यक है।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, मंगलवार, 13 अगस्त 2024

युवा दिवस पर संवाद कार्यक्रम



उदयपुर. अन्तरराष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में 'क्लिक से प्रगति तकः सतत विकास के लिए युवा डिजिटल रास्ते' विषयक पर संवाद कार्यक्रम हुआ। जहां नगर के विद्यालयों व महाविद्यालयों के छात्र-छात्राओं के साथ अतिथियों ने चर्चा की। अध्यक्षता करते हुए महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. उमाशंकर शर्मा ने कहा कि देश में आज युवाओं ने कौशल विकास के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित कर यह प्रमाणित किया है कि भारत युवाओं का देश है। शान्तिपीठ प्रमुख अनन्त गणेश त्रिवेदी नें कहा कि दूसरे के हित साधने की भाव प्रेरणा जब यौवन की प्रचण्ड की आंधी बन जाए, तो समाज में बदलाव अवश्यमभावी बन जाता है। आवश्यकता है जीवन में मर्यादा की पुनर्स्थापना के लिए युवा आगे आएं। पूर्व कलक्टर सुमति लाल बोहरा, पूर्व देवस्थान आयुक्त दिनेश कोठारी, मार्शल आर्ट के अन्तरराष्ट्रीय प्रशिक्षक राज कुमार मेनारिया, मीरा कन्या महाविद्यालय की श्रुति डबगर, समाजसेवी सुनील शर्मा, भगवती लाल चौबीसा आदि ने विचार व्यक्त किए। जी.एल. पाटीदार ने आभार व्यक्त किया।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, मंगलबार, 13 अगस्त, 2024



युवा दिवस पर संवाद कार्यक्रम

ब्यूरो नवज्योति/ उदयपुर। अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर शांतिपीठ संस्थान के तत्वावधान में 'क्लिक से प्रगति तकः सतत विकास के लिए युवा डिजिटल रास्ते' विषयक आयोजित संवाद कार्यक्रम हुआ। अध्यक्षता करते हुए एमपीयूएटी के पूर्व कुलपति डॉ. उमाशंकर शर्मा ने कहा कि देश में आज युवाओं ने कौशल विकास के क्षेत्र में नए आयाम स्थापित कर यह प्रमाणित किया है कि भारत युवाओं का देश है।

शांतिपीठ प्रमुख अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि दूसरे के हित साधने की भाव प्रेरणा जब यौवन की प्रचण्ड की आंधी बन जाए तो समाज में बदलाव अवश्यमभावी बन जाता है। इस मौके पर पूर्व कलेक्टर सुमति लाल बोहरा, पूर्व देवस्थान आयुक्त एवं कलाविद दिनेश कोठारी, राज कुमार मेनारिया, श्रुति डबगर, सुनील शर्मा, भगवती लाल चौबीसा आदि ने भी विचार व्यक्त किए। जीएल पाटीदार ने आभार व्यक्त किया।

प्रातःकाल





'शान्ति संस्कृति में युवा पहल' विषय पर संवाद व शांति सभा का आयोजन

हिरोशिमा स्मृति दिवस की 179वीं वार्षिकी

उदयपुर (वि)। हिरोशिमा स्मृति दिवस की 79 वीं वार्षिकी के अवसर पर शांति पीठ संस्थान के तत्वावधान में सूचना केन्द्र सभागार में 'शान्ति संस्कृति में युवा पहल'' विषयक संवाद एवं शान्ति सभा का आयोजन हुआ। युवा सम्मेलन को संबोधित करते हुए साहित्यकार प्रो. श्रीनिवास अय्यर ने कहा कि एक ओर सर्वशक्तिमान बनने की होड़ मानावता की दुश्मन है, दूसरी ओर ग्लोबेलाईजेशन आज के परिवेश में वाणिज्यिक लाभ पहुंचाने का द्योतक बन गया है। बाजार हावी है, ब्राण्ड जो विदेशी है उन्हें युवाओं के मध्य लाकर एक सतरंगी अंधेरा बरसाया जा रहा है। उन्होंने कहा हर आयोजन छात्रों की क्लास है केवल चित्र बनाना रचनात्मकता नही, मानवता को गढ़ना रचनात्मकता है।

शान्तिपीठ प्रमुख अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि हिरोशिमा की विभीषिका से सबक न लेकर विनाश के हालात ने भस्मासुर पैदा किये है और सन्निकट सामूहिक आत्मघात को आमंत्रित किया है। जरूरत है आदमी में समायी वैष्णवी शक्ति जागरण की। उन्होंने हिरोशिमा से पैदा हुए जापान के अकल्पनीय क्षति का हवाला देते हुए वर्तमान हालात की गंभीरता की ओर इशारा करते हुए कहा कि सेटेलाईट की नई होड़ के चलते शान्तिपूर्ण अंतरिक्ष कार्यक्रम पर भी ग्रहण लग चुका है। आर्टिफिशियल इन्टेलीजेंस, स्पेस और थर्मो न्यूक्लियर त्रिकोण अत्यन्त चिंता का विषय है।

डॉ. अशोक जैतावत ने कहा कि विज्ञान के आधुनिक विस्तार से सजग रहते हुए शान्ति की ओर अग्रसर होना है। एनसीसी अधिकारी राजेश कुमार ने भी विचार रखे। सेंट एंथनी की योगिता ने कविता व सिद्धार्थ एवं अंजली ने नाटिका प्रस्तुत की। राजस्थान महिला परिषद की लक्ष्मी राठौड़, एनसीटी मुस्कान सोलंकी, जयदीप विद्यालय के नरेश सुथार ने भी विचार व्यक्त किये। रिटायर्ड डीएफओ सोहेल मजबूर सहित बड़ी संख्या में प्रबुद्धजन मौजूद रहे। प्रारम्भ में विद्यालयों के छात्र-छात्राएँ हाथों में तख्ती, बैनर, चार्ट आदि लेकर आयोजन स्थल पर पहुँचे। कार्यक्रम के अंत में सभी ने खड़े होकर पर्यावरण-प्रकृति संरक्षण, आणविक नि:शस्त्रीकरण, न्याय और मानवीय आदर्शो के लिए प्रतिबद्धता की शपथ ली। संचालन डॉ. भूपेन्द्र शर्मा ने किया। प्रो. डी.एस.राठौड़ ने आभार व्यक्त किया।

हिरोशिमा स्मृति दिवस की वार्षिकी पर शांति शान्ति सभा का आयोजन : सद्भाव,

सर्वशक्तिमान बनने की होड़ मानावता की दु

महानगर संवाददाता



उदयपुर। हिरोशिमा स्मृति दिवस की वार्षिकी पर शांतिपीठ संस्थान के तत्वावधान में सूचना केन्द्र सभागार में शान्ति संस्कृति में युवा पहल विषयक संवाद एवं शान्ति सभा का आयोजन हुआ।

युवा सम्मेलन में साहित्यकार प्रो श्रीनिवास अय्यर ने कहा एक ओर सर्वशक्तिमान बनने की होड़ मानावता की दुश्मन है तो दूसरी ओर ग्लोबेलाइजेशन आज के परिवेश में वाणिज्यिक लाभ पहुंचाने का द्योतक बन गया। बाजार ह्यवी है, ब्राण्ड जो विदेशी हैं, उन्हें युवाओं के मध्य लाकर एक सतरंगी अंधेरा बरसाया जा रहा है। उन्होंने कहा हर आयोजन छात्रों की क्लास है। केवल चित्र बनाना रचनात्मकता नहीं, मानवता को गढ़ना रचनात्मकता है। शान्तिपीठ प्रमुख अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा हिरोशिमा की विभीषिका से सबक न लेकर विनाश के हालात ने भस्मासुर पैदा किये हैं और सन्निकट सामूहिक आत्मघात को आमंत्रित किया है। जरूरत है आदमी में समायी वैष्णवी शक्ति उ उन्होंने हिरोशिमा से पैदा हुए अकल्पनीय क्षति का हवाला देते हालात की गंभीरता की ओर इशार

नीतीश कैबि

महानगर संवाददाता

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की अध्यक्षता में मंगलवार हुई कैबिनेट की बैठक में कुल 36 एजेंडों पर मुहर लगी है। नीतीश कैबिनेट ने उद्योग, ऊर्जा, योजना एवं विकास, कला संस्कृति एवं युवा, खान एवं भूतत्व, खेल, श्रम संसाधन, पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन, परिवहन, पर्यटन, पंचायती राज, राजस्व एवं

भूमि सुधार
अभियंत्रण, वि
एवं तकनीकी
कर, स्वास्थ्य
जुड़े प्रस्तावों

पीएमसी
पर होगी नि

बैठक
परिवहन विभा
फैसला लिया
में राष्ट्रीय आ
दिल्ली के

जय राजस्थान दिनांक : 7 अगस्त, 2024

हिरोशिमा स्मृति दिवस की 79वीं वार्षिकी

''शान्ति संस्कृति में युवा पहल'' विषय पर संवाद व शांति सभा का आयोजन: केवल चित्र बनाना रचनात्मकता नही, मानवता को गढ़ना रचनात्मकता है, शांति, सद्भाव व पर्यावरण संरक्षण के लिए जताई प्रतिबद्धता

उदयपुर, 6 अगस्त (सूजस)। हिरोशिमा स्मृति दिवस की 179 वीं वार्षिकी के अवसर पर शांति पीठ संस्थान के तत्वावधान में सूचना केन्द्र सभागार में 'शान्ति संस्कृति में युवा पहल'' विषयक संवाद एवं शान्ति सभा का आयोजन हुआ।

युवा सम्मेलन को संबोधित करते हुए साहित्यकार प्रो. श्रीनिवास अय्यर ने कहा कि एक ओर सर्वशक्तिमान बनने की होड़ मानावता की दुश्मन है, दूसरी ओर ग्लोबेलाईजेशन आज के परिवेश में वाणिज्यिक लाभ पहुंचाने का द्योतक बन गया है। बाजार हावी है, ब्राण्ड जो विदेशी है उन्हें युवाओं के मध्य लाकर एक सतरंगी अंधेरा बरसाया जा रहा है। उन्होंने कहा हर आयोजन छात्रों की क्लास है केवल चित्र बनाना रचनात्मकता नही, मानवता को गढ़ना रचनात्मकता है।

शान्तिपीठ प्रमुख अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि हिरोशिमा की विभीषिका से सबक न लेकर विनाश के हालात ने भस्मासुर पैदा किये है और सन्निकट सामूहिक आत्मघात को आमंत्रित किया है। जरूरत है आदमी में समायी वैष्णवी शक्ति जागरण की। उन्होंने हिरोशिमा से पैदा हुए जापान के अकल्पनीय क्षति का हवाला देते हुए वर्तमान हालात की गंभीरता की ओर इशारा करते हुए कहा कि सेटेलाईट की नई होड़ के चलते शान्तिपूर्ण अंतरिक्ष कार्यक्रम पर भी ग्रहण लग चुका है। आर्टिफिशियल इन्टेलीजेंस, स्पेस और थर्मो न्यूक्लियर त्रिकोण अत्यन्त चिंता का विषय है। उन्होंने कहा दो राह पर खड़े आदमी को एक रास्ता चुनना है; मानवीय आदर्शों का



आध्यात्मिक रास्ता अथवा सर्वनाश का। जरूरत है संवादों की सच्चाई और वसुधैव कुटुम्बकम के निहितार्थ खोजने की। डॉ. अशोक जैतावत ने कहा कि विज्ञान के आधुनिक विस्तार से सजग रहते हुए शान्ति की ओर अग्रसर होना है। एनसीसी अधिकारी राजेश कुमार ने भी विचार रखे। सेंट एंथनी की योगिता ने कविता व सिद्धार्थ एवं अंजली ने नाटिका प्रस्तुत की। राजस्थान महिला परिसर की लक्ष्मी राठौड़, एनसीटी मुस्कान सोलंकी, जयदीप विद्यालय के नरेश सुथार ने भी विचार व्यक्त किये कार्यक्रम में रिटायर्ड डीएफओ सोहेल मजबूर सहित बड़ी संख्या में प्रबुद्धजन मौजूद रहे। प्रारम्भ में विद्यालयों के छात्र-छात्राएँ हाथों में तख्ती, बैनर चार्ट आदि लेकर आयोजन स्थल प पहुँचे। कार्यक्रम के अंत में सभी ने खड़े होकर पर्यावरण-प्रकृति संरक्षण आणविक नि:शस्त्रीकरण, न्याय औ मानवीय आदर्शों के लिए प्रतिबद्धत की शपथ ली। हिरोशिमा नागासाक नरसंवार में दिवंगत आत्माओं तथ केरल में प्राकृतिक आपदा में मृ लोगों की शांति के लिए दो मिनट क मौन रखा गया। राष्ट्रगान के सा समापन हुआ। कार्यक्रम का संचाल डॉ. भूपेन्द्र शर्मा ने किया। प्रो डी.एस.राठौड़ ने आभार व्यक्त किया



राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, बुधवार, 07 अगस्त 2024

हिरोशिमा स्मृति दिवस

सर्वशक्तिमान बनने की होड़ मानवता की दुश्मन: प्रो.अय्यर

उदयपुर. हिरोशिमा स्मृति दिवस की 179वीं के अवसर पर शांतिपीठ संस्थान के तत्वावधान में स्थानीय सूचना केन्द्र के सभागार में 'शान्ति संस्कृति में युवा पहल'' विषयक संवाद हुआ। साहित्यकार प्रो. श्रीनिवास अय्यर ने कहा कि एक ओर सर्वशक्तिमान बनने की होड़ मानवता की दुश्मन है दूसरी ओर ग्लोबलाइजेशन आज के परिवेश में वाणिज्यिक लाभ पहुंचाने का द्योतक बन गया है। बाजार हावी है। शांतिपीठ प्रमुख अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि हिरोशिमा की विभीषिका से सबक न लेकर विनाश के हालात ने भस्मासुर पैदा किए हैं और सन्निकट सामूहिक आत्मघात को आमंत्रित किया है। कार्यक्रम में डॉ. अशोक जैतावत, राजेश कुमार,



योगिता, मुस्कान सोलंकी आदि ने विचार रखे।

इधर, डॉक्टर अंबेडकर जयंती समारोह समिति की ओर से हिरोशिमा दिवस पर समिति के अध्यक्ष इंजीनियर शैलेंदर चौहान की अध्यक्षता में हाथी पोल स्थित कार्यालय पर विचार गोष्ठी संपन्न हुई। गोष्ठी में संयोजक पीएस खींची ने मुख्य वक्ता के रूप में कहा कि अमरीका ने जापान के खिलाफ आर्थिक एवं व्यापारिक प्रतिबंध लगा दिए थे, उसके खिलाफ जापान ने 7 दिसंबर 1941को पर्ल हार्बर अमेरिकी नेवी बेस पर हमला करके कई जहाज नष्ट कर दिए जिसमें अमरीकी सैनिक समेत कई लोग मारे गए, जिसमें जान और माल का नुकसान हुआ था। इसका बदला लेने के लिए अमरीका ने 6 दिसंबर 9 दिसंबर 1945 को हिरोशिमा नागासाकी पर परमाणु बम से हमला किया। गोष्ठी में मेगाराम मोबारसा,भानु प्रकाश दायमा ,देवीलाल दाना, दीपेश चौहान, कंनवर निमावत, ओपी खोईवाल, अंबालाल मेघवाल, भंवर लाल मघवाल, गीता बाई आदि मौजूद रहे।

विश्व शांति का आह्वान

इधर, आलोक संस्थान, सेक्टर-11 में डॉ. प्रदीप कुमावत के मुख्य आतिथ्य में हिरोशिमा और नागासाकी परमाणु बमबारी दिवस पर आयोजन हुआ। इसमें विश्व शांति का आह्वान किया गया। इस अवसर पर दिवंगत सभी लोगों की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की गई।

दैनिक भास्कर
उदयपुर, बुधवार, 07 अगस्त, 2024 dainikbhaskar.com

हिरोशिमा स्मृति दिवस की 79वीं बरसी पर शांति पीठ की व्याख्यानमाला

विकास की होड़ के कारण भस्मासुर पैदा हो गए हैं, इनसे बच पाना दुनिया के लिए बड़ी चुनौती: त्रिवेदी

सिटी रिपोर्टर | उदयपुर

हिरोशिमा स्मृति दिवस की 79वीं बरसी पर शान्तिपीठ संस्थान की ओर से मंगलवार को सूचना केंद्र पर व्याख्यानमाला हुई। वक्ताओं ने कहा कि विकास की होड़ के कारण भस्मासुर पैदा हुए हैं। इनसे बच पाना दुनिया की चुनौती बन गई है। यदि वर्तमान नजरिये से देखे तो न तो रूस जीतेगा और न ही यूक्रेन हारेगा। यदि हारेगी तो सिर्फ मानवता ही हारेगी।

'शांति संस्कृति में युवा पहल' विषयक इस कार्यक्रम में चयनित विद्यालय-महाविद्यालय के छात्रों, शिक्षकों की मौजूदगी में शांति, सद्भाव व पर्यावरण संरक्षण के लिए के लिए संकल्प दोहराया गया। साहित्यकार प्रो. श्रीनिवास अय्यर ने कहा कि एक ओर सर्वशक्तिमान बनने की होड़ है, दूसरी तरफ ग्लोबलाइजेशन आज के परिवेश में वाणिज्यिक लाभ पहुंचाने का द्योतक बन गया है। शांति पीठ प्रमुख अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि हिरोशिमा की विभीषिका से सबक नहीं लिया गया। इसलिए आज विनाश के हालात ने भस्मासुर पैदा किए हैं।



शान्तिपीठ संस्थान की ओर से मंगलवार को सूचना केंद्र पर व्याख्यानमाला में मंचासीन अतिथि।

सेटेलाइट की नई होड़ से शांतिपूर्ण अंतरिक्ष कार्यक्रम पर भी ग्रहण लगा दिया है। डॉ. अशोक जैतावत ने कहा कि विज्ञान के आधुनिक विस्तार से सजग रहते हुए शांति की ओर अग्रसर होना है। एनसीसी अधिकारी राजेश कुमार, सेंट एंथोनी स्कूल की योगिता ने कविता के जरिए कहा कि न रशिया जीतेगा, न यूक्रेन हारेगा। हारेगी तो मानवता। सिद्धार्थ एवं अंजलि ने नाटिका प्रस्तुत की। संचालन डॉ. भूपेंद्र शर्मा व आभार ज्ञापन प्रो. डी.एस. राठौड़ ने किया।

मानवाधिकारों के रक्षा सूत्र के व्यापक पैमाने पुनर्स्थापित हों : चिंतक

महानगर संवाददाता

11 Dec 01, 2024



उदयपुर। आज विश्व समुदाय के सामने ज्वलंत प्रश्न है कि तनाव से मुक्ति का मार्ग क्या हो। युद्ध और शस्त्रों के व्यापार से कामयाबी अस्तित्व का मानवीय विकल्प क्या हो। जब तक शक्ति असंतुलन का निर्णायक विकल्प न होगा तब तक मानवाधिकारों का हनन थम नहीं सकता। जरूरत है एकता की। मानवीय संस्कृति के धरातल पर मानवाधिकारों के रक्षा सूत्र के व्यापक पैमाने पुनर्स्थापित हों। यह विचार विश्व मानवाधिकार दिवस पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में हुई संगोष्ठी में वक्ताओं ने व्यक्त किए। प्रमुख वक्ता संयुक्त राष्ट्र से कई वर्षों से जुड़े रहे तथा पुलिस अकादमियों के विजिटिंग प्रोफेसर राजेन्द्र जोशी ने कहा मानवाधिकारों की रक्षा हेतु विश्व में शक्ति संतुलन आवश्यक है। यूएनओ इस दिशा में कई बार सफल रहा है किन्तु तानाशाहों और आतंककारियों के कारण मानवाधिकारों पर प्रश्न खड़ा हो चुका है। राजनीति शास्त्र के प्रो कुमार ने कहा मानवाधिकारों का दावा करने और उनकी रक्षा करने के लिए नागरिक समाज की जवाबी रणनीतियों को मजबूत करने की आवश्यकता है। अध्यक्षीय उद्बोधन में चिंतक मोहनसिंह कोठारी ने कहा मानवाधिकारों की अनुपालना मानव सभ्यता और संस्कृति की अनुकृति है, जिसका अनुसरण सर्व जन हितार्थ आवश्यक है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा नैतिक मूल्यों के ह्रास के चलते मानवाधिकारों के संरक्षण का स्वप्न संदिग्ध है। उन्होंने युवा समुदाय को इंगित करते हुए कहा कर्तव्य निष्ठा के आलोक में ही मानवाधिकारों को देखा जाना चाहिए और इसके सच्चे विज्ञान सम्मत निहितार्थ भगवद्गीता में उपलब्ध है। प्रो एसआर व्यास ने कहा मानवाधिकारों के रक्षा की शुरुआत घर से हो तो स्वस्थ समाज का निर्माण अवश्यंभावी है। पूर्व जिला कलेक्टर सुमतिलाल बोहरा ने कहा युवा पीढ़ी को संविधान की अनुपालना कर उन्हें बेहतर समाज निर्माण का सेतु बनना चाहिए। प्रो जयश्री सिंह ने मानवाधिकारों की शिक्षा की आवश्यकता बताते हुए कहा मानवाधिकारों का अंतिम लक्ष्य मानवता की स्थापना है। कैलाश पालिवाल, कुमार दुष्यन्त, भूपेन्द्र, चंदन, नरेश, वैदिक आदि ने भी विचार व्यक्त किए।

दैनिक भास्कर बुधवार 11 दिसंबर, 2024

विश्व मानवाधिकार दिवस • मानवाधिकार गीता के प्रकाश के विषय पर शान्तिपीठ संस्थान की ओर से संगोष्ठी, अन्य आयोजन भी

वक्ता बोले- हमें आत्मसंयमी एवं श्रद्धावान होना होगा, तभी हम समझ पाएंगे कि जो सत्य को समर्पित है, उसके अधिकारों की रक्षा स्वयं नारायण करते हैं

उदयपुर। श्रीमद्भगवद गीता जयंती की पूर्व संध्या पर मंगलवार को शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में 'मानवाधिकार गीता के प्रकाश में' विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस मौके पर वक्ताओं ने कहा कि हमें आत्मसंयमी एवं श्रद्धावान होना होगा। तभी हम समझ पाएंगे कि जो सत्य को समर्पित है, उसके अधिकारों की रक्षा स्वयं नारायण करते हैं। उक्त विचार में कई वक्ताओं ने व्यक्त किए।

संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए संस्कृतविद् डॉ. सुरेंद्र द्विवेदी ने कहा कि मन, वचन व कर्म से शुद्ध होकर कर्तव्य परायणता से अधिकारों का संरक्षण संभव है। उन्होंने कहा कि धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का मार्ग, इसका विज्ञान प्रस्तुत करता है। संतोष दीदी ने गीता के एकादश अध्याय की व्याख्या करते हुए कहा कि जीवन में रस प्रधानता की आवश्यकता है। श्रद्धा तत्व को रेखांकित करते हुए कहा कि जीवन में श्रद्धा है तो व्यक्ति संशयों से मुक्त है। उन्होंने उपनिषदों में निहित श्रेय और प्रेयस पर विस्तार से बताते हुए कहा कि गीता आध्यात्मिक वाङ्मय का अवतार है। शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि आज मानवता खुद से हार रही है। मानवता के विरुद्ध शक्तियों का विनाश और जाग्रत समाज के परित्राण की आवश्यकता है। इस अवसर पर लक्ष्मणपुरी गोस्वामी, प्रो. आरबी कुमार, जयश्री सिंह, पूर्व आईएएस सुमति लाल बोहरा, तिब्बती समाज के शाओ, पूर्व वन संरक्षक ओंकारलाल मेनारिया, पूर्व सिंचाई मुख्य अभियंता जीपी सोनी, पूर्व देवस्थान आयुक्त दिनेश कोठारी, कैलाश पालीवाल, सुविवि के पर्यावरण विभागाध्यक्ष डॉ. डीएस राठौड़ आदि मौजूद रहे।



शान्तिपीठ संस्थान की ओर से आयोजित संगोष्ठी में मौजूद लोग।

मीरा कन्या कॉलेज में परिचर्चा

उदयपुर। अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ (उच्च शिक्षा) राजस्थान, इकाई राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय की ओर से मंगलवार को विश्व मानवाधिकार दिवस मनाया। कार्यक्रम 'बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों के मानवाधिकारों के हनन तथा लोकतांत्रिक समाज के दायित्व' विषय पर परिचर्चा एवं विद्यार्थी जागरण पर आयोजित हुआ।

इकाई अध्यक्ष और प्राचार्य प्रो. दीपक माहेश्वरी ने विद्यार्थियों को समकालीन सामाजिक एवं राष्ट्रीय समस्याओं तथा मानवाधिकार उल्लंघन की घटनाओं से अवगत कराने के इस प्रयास को सार्थक बताया। प्रदेश संयुक्त सचिव प्रो. अशोक सोनी ने बताया कि विश्व मानवाधिकार दिवस के अवसर पर बांग्लादेश के संदर्भ में व्यापक जन जागृति की आवश्यकता है। महाविद्यालय के संकाय सदस्य डॉ. सुनील खटीक ने बांग्लादेश की पृष्ठभूमि, वहां अल्पसंख्यकों पर अत्याचारों की घटनाओं का उल्लेख किया। सचिव डॉ. राम सिंह भाटी ने बताया कि संगठन के विभाग सह संयोजक डॉ. सुदर्शन सिंह राठौड़, जिला सचिव भव शेखर एवं महाविद्यालय के संकाय सदस्यों ने परिचर्चा में हिस्सा लिया।

विद्यार्थियों के साथ मानव अधिकार दिवस मनाया

इधर, राजकीय पशुपालन प्रशिक्षण संस्थान ने उपनिदेशक डॉ. सुरेन्द्र छंगाणी के नेतृत्व में मंगलवार को पशुपालन डिप्लोमा के विद्यार्थियों के साथ मानव अधिकार दिवस मनाया।

डॉ. छंगाणी ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए बताया कि मानव अधिकार हमें समानता, स्वतंत्रता और सम्मान का जीवन जीने का अधिकार देते है। जब हम एक दूसरे के अधिकारों का सम्मान करते है तो एक शांतिपूर्ण और समृद्ध समाज का निर्माण करते है।

डॉ. सुरेश शर्मा ने कहा कि स्वतंत्रता, समानता, शिक्षा, स्वास्थ्य सहित अन्य कुछ अधिकार हैं जो हम सभी मानव जाति को मिलने चाहिए।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, गुरुवार,
26 अक्टूबर 2023

संयुक्त राष्ट्र संघ दिवस पर गोष्ठी



उदयपुर . शांतिपीठ संस्थान के तत्वावधान में संयुक्त राष्ट्र संघ दिवस के अवसर पर बुधवार को 'वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में संयुक्त राष्ट्र' विषयक गोष्ठी हुई। अध्यक्षता करते हुए जनार्दन राय नागर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.शिवसिंह सारंगदेवोत ने कहा कि सुरक्षा और विश्व शान्ति संघ का प्राथमिक ध्येय है और इसमें नाकामयाबी चिन्ता का विषय है। अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्धों के विशेषज्ञ प्रो.आर.बी. कुमार ने कहा कि यु.एन.ओ. के चार्टर के परे दर्जनों क्षेत्रों में इसके कार्य और क्षेत्र में इजाफा हुआ है, परन्तु माइन्ड सेट विशेषकर सुरक्षा परिषद के सदस्यों में नहीं हुआ है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि संवेदनहीन और प्रकृति विमुख होती विकास की व्यवस्थाओं में संयुक्त राष्ट्र को ऐसी सामाजिक संरचना की पहल करने की आवश्यकता है, जिसका आधार नैतिक सिद्धान्त और आध्यात्मिक मूल्य हों। बारां के पूर्व जिला कलक्टर सुमतिलाल बोहरा ने कहा कि कई आयामों पर उपलब्धियों और मानव मूल्यों की गरिमा के कारण सारा विश्व भारत की ओर देख रहा है। गोष्ठी में डॉ.जयश्री सिंह, प्रो.विमल शर्मा, पूर्व वन संरक्षक ओंकारलाल मेनारिया, डॉ.कमल सिंह राठौड़, दुष्यन्त त्रिवेदी आदि ने भी विचार व्यक्त किए।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, बुधवार, 25 अक्टूबर 2023



प्रासंगकिता खोता जा रहा संयुक्त राष्ट्र

ब्यूरो नवज्योति/ उदयपुर। नए विश्व निर्माण में संयुक्त राष्ट्र आशा की किरण अवश्य है किन्तु दुनियां को भय, असुरक्षा, आतंक और हिंसा से मुक्त होने में कामयाब न होने से संयुक्त राष्ट्र अपनी प्रासंगिकता खोता जा रहा है। यह विचार वक्ताओं ने मंगलवार को संयुक्त राष्ट्र संघ दिवस पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में संयुक्त राष्ट्र विषयक आयोजित गोष्ठी में व्यक्त किए। अध्यक्षता करते हुए राजस्थान विद्यापीठ कुलपति प्रो. शिवसिंह सारंगदेवोत ने कहा कि सुरक्षा और विश्व शान्ति संघ का प्राथमिक ध्येय है, और इसमें नाकामयाबी चिन्ता का विषय है। प्रो. आर.बी. कुमार ने कहा कि बिना माइंड सेट बदले निरन्तर बदलते परिदृश्य में यूएनओ लडखडा रहा है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि संवेदनहीन और प्रकृति विमुख होती विकास की व्यवस्थाओं में संयुक्त राष्ट्र को ऐसी सामाजिक संरचना की पहल करने की आवश्यकता है, जिसका आधार नैतिक सिद्धान्त और आध्यात्मिक मूल्य हों। पूर्व कलक्टर सुमतिलाल बोहरा, बी.एन. विश्वविद्यालय में अंग्रेजी विभागाध्यक्ष डॉ. जयश्री सिंह, प्रो. विमल शर्मा, पूर्व वन संरक्षक ओंकारलाल मेनारिया, डॉ. कमल सिंह राठौड़, दुष्यन्त त्रिवेदी आदि ने विचार व्यक्त किए।

प्रातःकाल
उदयपुर, बुधवार 25 अक्टूबर, 2023

अपनी प्रासंगिकता खोता जा रहा है संयुक्त राष्ट्र संघ



उदयपुर (वि)। नये विश्व निर्माण में संयुक्त राष्ट्र आशा की किरण अव
है, किन्तु दुनिया को भय, असुरक्षा, आतंक और हिंसा से मुक्त होने
कामयाब न होने से संयुक्त राष्ट्र अपनी प्रासंगिकता खोता जा रहा है। जरू
है वर्तमान परिवेश के सापेक्षित विश्व संस्था के बुनियादी ढांचे का ऐ
बदलाव हो कि सत्य और इंसानियत को विजय हासिल हो पाये।
विचार संयुक्त राष्ट्र संघ दिवस के अवसर पर शान्तिपीठ संस्थान
तत्वावधान में वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में संयुक्त राष्ट्र विषयक आयोजि
गोष्ठी में बोलते हुए कई वक्ताओं ने व्यक्त किए। गोष्ठी की अध्यक्षता क
हुए जनार्दन राय नागर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. शिवसिंह सारंगदेव
ने कहा कि सुरक्षा और विश्व शान्ति संघ का प्राथमिक ध्येय है, और इस
नाकामयाबी चिन्ता का विषय है। आज भारत की बात को दुनिया
स्वीकार किया जा रहा है, केवल कुछ अपवाद हैं जो मात्र अहंकार
समर्थक न भी हों, पीस किपिंग फेर्स में भारत का योगदान विश्व में प्रमु
है। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के विशेषज्ञ प्रो. आर.बी. कुमार ने कहा
यु.एन.ओ. के चार्टर के परे दर्जनो क्षेत्रों में इसके कार्य और क्षेत्र में इजा
हुआ है, परन्तु माईन्ड सेट विशेषकर सुरक्षा परिषद के सदस्यों में नही हु
है। बिना माईन्ड सेट बदले निरन्तर बदलते परिदृश्य में यु.एन.ओ. लड़ख
रहा है। शान्तिपीठ संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि संवेदनह
और प्रकृति विमुख होती विकास की व्यवस्थाओं में संयुक्त राष्ट्र को ऐ
सामाजिक संरचना की पहल करने की आवश्यकता है, जिसका आध
नैतिक सिद्धान्त और आध्यात्मिक मुल्य हों। ऐसा वैश्विक समुदाय जहाँ यु
और विनाश के सारे ताम जाम व्यर्थ सिद्ध हो। बुराईयों व नकारात्म
ताकतों को निर्मूल कर सत्य की स्थापना का केन्द्र बने, तभी यह मानव
के विजय का विश्व प्रतिष्ठान बनने में कामयाब होगा। पूर्व जिला कलेक
सुमतिलाल बोहरा ने कहा कि कई आयामों पर उपलब्धियों और मान
मुल्यों की गरीमा के कारण सारा विश्व भारत की ओर देख रहा है। भा
ने मित्र राष्ट्रों के साथ मानव गरीमा का पूरा सम्मान रखा है। भारत अप
आप में समरसता का संदेश है। बी.एन. विश्वविद्यालय में अंग्रेज
विभागाध्यक्ष डॉ. जयश्री सिंह ने संयुक्त राष्ट्र संघ को एक नूतन विश्व संगठ
में रूपान्तरण करने की आवश्यकता प्रतिपादित की। प्रो. विमल शर्मा, पू
वन संरक्षक ओंकारलाल मेनारिया, डॉ. कमल सिंह राठौड़, दुष्यन्त त्रिवे
आदि ने भी विचार व्यक्त किए।

दैनिक भास्कर उदयपुर, रविवार 06 अगस्त, 2023

हिरोशिमा स्मृति दिवस : छात्र और छात्राओं ने निकाली रैली



उदयपुर| हिरोशिमा स्मृति दिवस की पूर्व संध्या पर शनिवार को शांतिपीठ संस्थान के तत्वावधान में राजकीय गुरु गोविंद सिंह स्कूल के सभागार में युवा शांति सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में शामिल होने से पहले सरकारी व गैर सरकारी स्कूलों के छात्र-छात्राओं ने शिक्षकों के साथ रैली निकाली।

इस मौके पर शांतिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि आग के जखीरे पर बैठकर आग बुझाने की बातें बेईमानी है। विद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों का नैतिक दायित्व बनता है कि वे इंसान में इंसानियत का नजरिया पैदा करें और सारे जहां को एकता के सूत्र में बांधें। प्रख्यात रंगकर्मी विलास जानवे ने अभिनय के माध्यम से शांति और खुशहाली की व्यवहारिकता बताई। इस मौके पर अंतरराष्ट्रीय संबंधों के विशेषज्ञ डॉ. आरबी कुमार, कवि श्रेणीदान चारण, प्रो. विमल शर्मा, पंकज पटेल, मो. रफीक आदि मौजूद रहे।

प्रातःकाल
उदयपुर, रविवार 6 अगस्त, 2023

हिरोशिमा स्मृति दिवस की पूर्व संध्या पर शांति सम्मेलन



हिरोशिमा स्मृति दि

उदयपुर (वि)। युद्ध इंसान के दिमाग की उपज है, जबकि शान्ति प्रकृ का वरदान। विकास की रफ्तार से चाहे हम खुश होलें किंतु इस सच्चाई मुख नहीं मोड़ सकते कि यही रफ्तार विनाश के भण्डारण में इजाफा लिये हैं। हिरोशिमा स्मृति दिवस की पूर्व संध्या पर आज शान्तिपीठ संस्थान तत्वावधान में राजकीय गुरूगोविन्द सिंह स्कूल के सभागार में आयोजित यु शान्ति सम्मेलन में उक्त वैचारिक प्रश्न बाल प्रतिभागियों के माध्यम से सा आए। सम्मेलन में नगर की चुनिंदा सरकारी व गैर सरकारी स्कूलों के छा छात्राएँ शिक्षको के साथ रैली के रूप में पहुंचकर सम्मिलित हुए। अन्तरराष्ट्र सम्बन्धों के विशेषज्ञ डॉ. आर.बी.कुमार ने कहा कि हिरोशिमा-नागासाकी भयावहता भी महत्वाकांक्षी विश्व नेताओं को विनाशक क्षमता विकसित क से नहीं रोक सका और 1990 के दशक में प्रति व्यक्ति 5 टी.एन. विस्फोटक क्षमता उपलब्ध थी जिससे दुनिया को कई बार नष्ट किया सकता था। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि अ के ज़खीरे पर बैठकर आग बुझाने की बातें बेईमानी हैं। प्रख्यात रंगक विलास जानवे ने अभिनय के माध्यम से शान्ति और खुशहाली व्यवहारिक ईबारतें सम्प्रेषित की और युवा समुदाय को सुखद भविष्य राह को अपनाने का संदेश दिया। कवि श्रेणीदान चारण ने विश्व बन्धुत्व एकता को कविताओं से नया आयाम दिया। प्रो. विमल शर्मा ने विचार व्य किए। सम्मेलन की अध्यक्षता विद्यालय के प्राचार्य पंकज पटेल ने की। प्रार में संगीताचार्य, मो. रफीक के निर्देशन में सेन्ट्रल एकेडमी व सेंट एंथोनी छात्र-छात्राओं ने शान्ति गीत प्रस्तुत किए। जयदीप विद्यालय, सेंट एंथो आदि स्कूलों के प्रतिभागियों ने अपने विचार भी व्यक्त किए। संचालन भूपेन्द्र शर्मा ने किया। दो मिनट का मौन रखकर दुःखान्तिका में मारे निर्दोष लोगों को श्रद्धांजलि दी। प्रथम चौहान ने आभार व्यक्त किया।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, रविवार, 6 अगस्त, 2023

युद्ध इंसान के दिमाग की उपज, जबकि शांति प्रकृति का वरदान



ब्यूरो/नवज्योति, उदयपुर। युद्ध इंसान के दिमाग की उपज है, जबकि शांति प्रकृति का वरदान है। विकास की रफ्तार से चाहे हम खुश हो लें, किंतु इस सच्चाई से मुख नहीं मोड़ सकते कि यही रफ्तार विनाश के भंडारण में इजाफा लिए हुए है। दुनिया के शासकों ने हिरोशिमा से क्या यही सबक लिया कि दुष्परिणाम स्वरूप विनाशकारी जखीरा कई लाख गुना बढ़ गया, जिससे सारी दुनियां को कई बार खत्म किया जा सके। हिरोशिमा स्मृति दिवस की पूर्व संध्या पर शांतिपीठ संस्थान के तत्वावधान में राजकीय गुरुगोविंद सिंह स्कूल के सभागार में आयोजित युवा शांति सम्मेलन में ये वैचारिक प्रश्न बाल प्रतिभागियों के माध्यम से सामने आए।

अंतरराष्ट्रीय संबंधों के विशेषज्ञ डॉ. आरबी कुमार ने कहा कि हिरोशिमा-नागासाकी की भयावहता भी महत्वाकांक्षी विश्व नेताओं को विनाशक क्षमता विकसित करने से नहीं रोक सका। 1990 के दशक में प्रति व्यक्ति 5 टीएनटी विस्फोटक क्षमता उपलब्ध थी, जिससे दुनिया को कई बार नष्ट किया जा सकता था।

शांतिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि आग के जखीरे पर बैठकर आग बुझाने की बातें बेइमानी हैं। इस मौके पर रंगकर्मी विलास जानवे, कवि श्रेणीदान चारण, प्रो. विमल शर्मा, कार्यक्रम अध्यक्ष विद्यालय के प्राचार्य पंकज पटेल आदि ने भी संबोधित किया।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, रविवार, 06 अगस्त 2023

हिरोशिमा स्मृति दिवस पर युवा शांति सम्मेलन



उदयपुर. हिरोशिमा स्मृति दिवस की पूर्व संध्या पर शनिवार को शान्तिपीठ संस्थान की ओर से गुरु गोविन्द सिंह स्कूल सभागार में युवा शान्ति सम्मेलन का आयोजन किया गया। वैचारिक प्रश्न बाल प्रतिभागियों के माध्यम से सामने आए। आयोजन में चुनिंदा स्कूलों के विद्यार्थी शामिल हुए। अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्धों के विशेषज्ञ डॉ. आरबी कुमार ने कहा कि हिरोशिमा-नागासाकी की भयावहता भी महत्वाकांक्षी विश्व नेताओं को विनाशक क्षमता विकसित करने से नहीं रोक सका। संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि आग के जखीरे पर बैठकर आग बुजाने की बातें बेमानी है। रंगकर्मी विलास जानवे, कवि श्रेणीदान चारण, प्रो. विमल शर्मा ने विचार व्यक्त किए। अध्यक्षता प्राचार्य पंकज पटेल ने की। मो. रफीक के निर्देशन में सेन्ट्रल एकेडमी व सेंट एंथोनी के विद्यार्थी ने शान्ति गीत प्रस्तुत किए। मौन रख दुःखान्तिका में मारे गए लोगों को श्रद्धांजलि दी। संचालन डॉ. भूपेन्द्र शर्मा ने किया। संयोजक प्रथम चौहान ने आभार जताया।

दैनिक भास्कर, उदयपुर, सोमवार, 11 दिसंबर, 2023

मानवाधिकारों की रक्षा के लिए शक्ति संतुलन आवश्यक : जोशी



उदयपुर| शांतिपीठ संस्थान की ओर से रविवार को विश्व मानवाधिकार दिवस पर संगोष्ठी हुई। संगोष्ठी में वक्ताओं ने कहा कि जब तक शक्ति असंतुलन का निर्णायक विकल्प न हो तब तक मानवाधिकारों का हनन थम नहीं सकता। संयुक्त राष्ट्र से कई वर्षों से जुड़े रहे प्रो. राजेंद्र जोशी ने कहा कि मानवाधिकारों की रक्षा के लिए विश्व में शक्ति संतुलन आवश्यक है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि नैतिक मूल्यों के ह्रास से मानवाधिकार संरक्षण का स्वप्न संदिग्ध है।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, सोमवार, 11 दिसंबर 2023

...ाक प्रभारी डा.देवेन्द्र सिंह राव,

जगह-जगह मनाया मानवाधिकार दिवस

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

उदयपुर. जिला विधिक सेवा प्राधिकरण और ह्यूमन राइट सेल व राष्ट्रीय महिला जागृति मंच ने मानवाधिकार दिवस तारा संस्थान की द्रौपदी आनंद आश्रम के वृद्धजनों के साथ मनाया। राष्ट्रीय अध्यक्ष सुरभि मेनारिया धिंग ने बताया कि अतिथि तुलसीराम वशिष्ठ, मेनारिया और प्रेमलता मेनारिया रहे। वरिष्ठ नागरिकों की सभी विधिक समस्याओं को सुनकर विधिक जानकारी और समाधान दिए गए। प्रमुख वक्ता अधिवक्ता राजेश शर्मा, पैनलिस्ट ह्यूमन राइट्स सेल ने सभी को विधिक प्रक्रिया बताई।

वहीं विश्व शांति और मानवाधिकार दिवस तिब्बती बाजार में रविवार को मनाया गया। इस अवसर पर समोरबाग स्थित तिब्बतियन बाजार में पूजा- अर्चना की गई। धर्मगुरु दलाई लामा की तस्वीर पर स्कार्फ चढ़ाकर विश्व शांति की दुआ की गई। आयोजकों ने बताया कि आज ही के दिन धर्मगुरु दलाई लामा को विश्व शांति का नोबेल पुरस्कार मिला था, इसलिए विश्व मानवाधिकार दिवस के रूप में यह दिन मनाया जाता है। कार्यक्रम में तिब्बत समाज के लोगों के साथ संघ के कार्यकर्ताओं ने धर्म गुरु दलाई लामा व महात्मा बुद्ध की पूजा-अर्चना की। जिसमें भारत तिब्बत समन्वय संघ के चित्तौड़ प्रांत जिला उदयपुर के प्रांत अध्यक्ष दिनेश गुप्ता, प्रांत महामंत्री वीरेंद्र जैन, प्रांत उपाध्यक्ष राजेश सोनी, क्षेत्रीय महामंत्री संजय सोनी, बाल विभाग के जिला अध्यक्ष माधव सोनी, महामंत्री दिवाकर तम्बोली आदि ने दलाई लामा की तस्वीर पर स्कार्फ भेंट कर विश्व शांति की कामना की। इस अवसर पर तिब्बत बाजार के अध्यक्ष शाओ धूंडूप ने विचार व्यक्त किए।



तिब्बती बाजार में मानवाधिकार दिवस मनाते हुए। पत्रिका



शांतिपीठ संस्थान में संगोष्ठी में चर्चा करते हुए। पत्रिका

इधर, विश्व मानवाधिकार दिवस पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में संगोष्ठी हुई। पुलिस अकादमियों के विजिटिंग प्रो.राजेन्द्र जोशी, राजनीति शास्त्र के प्रो कुमार, मोहन सिंह कोठारी, शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी, प्रो.एसआर व्यास, पूर्व जिला कलक्टर सुमति लाल बोहरा, कैलाश पालिवाल, कुमार दुष्यन्त, भूपेन्द्र, चंदन, नरेश, वैदिक आदि ने विचार व्यक्त किए।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, सोमवार, 11 दिसंबर 2023

मानवाधिकारों की रक्षा के लिए विश्व में शक्ति संतुलन आवश्यक

मनाया विश्व मानवाधिकार दिवस, किया जागरूक

ब्यूरो नवज्योति/उदयपुर। रविवार को विश्व मानवाधिकार दिवस मनाया गया। इस मौके पर आयोजित कार्यक्रमों में आमजन को मानवाधिकारों की जानकारी दी गई।

विश्व मानवाधिकार दिवस पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में आयोजित संगोष्ठी के प्रमुख वक्ता संयुक्त राष्ट्र से कई वर्षों से जुड़े रहे तथा पुलिस अकादमियों के विजिटिंग प्रोफेसर राजेन्द्र जोशी ने कहा कि मानवाधिकारों की रक्षा के लिए विश्व में शक्ति संतुलन आवश्यक है । उन्होंने कहा कि यू एन ओ इस दिशा में कई बार सफल रहा है किन्तु तानाशाहों और आतंक कारियों के कारण मानवाधिकारों पर प्रश्न खड़ा हो चुका है ।

राजनीति शास्त्र के प्रो कुमार ने कहा कि मानवाधिकारों का दावा करने और उनकी रक्षा करने के लिए नागरिक समाज की जवाबी रणनीतियों को मजबूत किए जाने की आवश्यकता है । चिंतक मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि मानवाधिकारों की अनुपालना मानव सभ्यता और संस्कृति की अनुकृति है जिसका अनुसरण सर्व जन हितार्थ आवश्यक है । शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने युवा समुदाय को इंगित करते हुए कहा कि कर्तव्य निष्ठा के आलोक में ही मानवाधिकारों को देखा जाना चाहिए और इसके सच्चे विज्ञान सम्मत निहितार्थ भगवद्गीता में उपलब्ध हैं । प्रो एस आर व्यास, पूर्व जिला कलक्टर सुमति लाल बोहरा, प्रो जय श्री सिंह, कैलाश पालिवाल, कुमार दुष्यन्त, भूपेन्द्र ,चंदन, नरेश, वैदिक ने भी विचार व्यक्त किए ।

भारत विकास परिषद भामाशाह ने धाकड़ गार्डन बेदला में मानव





कर्तव्य दिवस मनाया। मुख्य अतिथि समाजसेवी डी पी धाकड़ ने सदस्यों को अपने कर्तव्यों के निर्वहन की शपथ दिलाई। सचिव एन के कोठारी ने बताया कि अध्यक्षता भाविप के पूर्व नेशनल वायस चेयरमैन डॉ एम जी वार्ष्णेय ने की। कार्यक्रम में जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी के एक्जीक्युटिव इंजीनियर अखिलेश शर्मा ने भी विचार व्यक्त किए। मानव कर्तव्य संभाषण प्रतियोगिता में हरीश शर्मा प्रथम, एल एल नाहर द्वितीय एवं सुशीला तातेड तृतीय रहे। इधर भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय के विधि संकाय द्वारा मानवाधिकार दिवस पर मानवाधिकारों के क्रियान्वयन में न्यायालयों की भूमिका विषय पर एक प्रसार व्याख्यान आयोजित हुआ। मुख्य अतिथि मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट प्रवीण कुमार वर्मा तथा अतिरिक्त मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट डॉ. पीयूष जेलिया थे। वर्मा ने भारतीय संविधान के मौलिक अधिकारों तथा मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा के महत्त्व पर प्रकाश डाला और मानवाधिकारों के रक्षा के लिए सर्वोच्च न्यायालय के विभिन्न निर्णयों को समझाया। डॉ. पीयूष जेलिया ने समाज के विभिन्न प्रकार वर्गों के मानवाधिकारों की चर्चा की। अतिथियों का स्वागत विधि संकाय के अधिष्ठाता डॉ आशुतोष पितलिया ने किया। धन्यवाद डॉ अनिला ने ज्ञापित किया। संचालन पदम कुंवर कृष्णावत द्वारा किया गया। कार्यक्रम में डॉ. पुष्प लता डांगी, डॉ. किरण चौहान, डॉ.विष्णुप्रिया दाधीच ,डॉ. शिखा नागोरी, डॉ. कृष्णा राणावत, चंद्रभान सिंह राणावत व मुकेश कोठारी उपस्थित रहे। विधिक सेवा प्राधिकरण सचिव एडीजे कुलदीप शर्मा ने विश्व मानवाधिकार दिवस पर उपकारागृह सलूंबर का निरीक्षण कर बंदियों को निःशुल्क विधिक सहायता, अपील, पैरोल, शिक्षा का अधिकार इत्यादि विषयों पर जागरूक किया। विश्व मानवाधिकार दिवस के उपलक्ष्य में केन्द्रीय कारागृह उदयपुर एवं महिला जेल में निरुद्ध महिला व पुरुष बंदीजन को चीफ़ लीगल एड डिफेंस कॉन्सिल गोविंद वैष्णव ने उनके अधिकार बताते हुए लीगल एड डिफेंस काउंसलिंग स्कीम की जानकारी दी। अधिवक्ता गोविंद वैष्णव ने विचाराधीन एवं सजायाब बंदियों को निःशुल्क विधिक सहायता के बारे में भी बताया।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, शुक्रवार, 22 सितम्बर 2023

अंतरराष्ट्रीय शांति दिवस पर संगोष्ठी



उदयपुर. अंतरराष्ट्रीय शांति दिवस के अवसर पर शांतिपीठ संस्थान के तत्वावधान में संस्थान के सभागार में संगोष्ठी आयोजित हुई। मुख्य अतिथि मो.सु. कुलपति प्रो. सुनिता मिश्रा ने कहा कि हम सब एक ही मानवता के हिस्से हैं। जाति, सम्प्रदाय, क्षेत्र, रंग, भाषा आदि से ऊपर हमारी सबकी मौलिक पहचान मानवता है और हम एक साथ मिलकर ही विश्वशान्ति का लक्ष्य हासिल कर सकते हैं। गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए पंजाब व सिक्किम सरकार के पूर्व सलाहकार मोहनसिंह कोठारी ने बदले परिवेश में विटो पॉवर को अलोकतांत्रिक बताते हुए कहा कि आज दुनिया का हर राष्ट्र सैन्य शक्ति बढ़ा रहा है और दुर्भाग्य से इसके दुष्परिणाम आत्मघाती भी हो सकते हैं। संगोष्ठी में शान्तिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी, मोसुविवि में भौतिक शास्त्र के विभागाध्यक्ष प्रो. केबी जोशी, बी.एन.विश्वविद्यालय में अंग्रेजी साहित्य की विभागाध्यक्ष डॉ.जयश्री सिंह, प्रो.एल.एन.दशोरा, संजीव भारद्वाज, प्रो. विमल शर्मा, डॉ. पुखराज सुखलेचा आदि ने अपने विचार रखे।

दैनिक नवज्योति
NAVAJYOTI
उदयपुर, शुक्रवार, 22 सितंबर 2023



विकास की ओर जाने वाला निरापद मार्ग ही शांति का : प्रो. मिश्रा

ब्यूरो नवज्योति/उदयपुर। विकास की ओर जाने वाला निरापद मार्ग शांति का मार्ग ही है। इसी से किसी भी राष्ट्र का विकास संभव हो पाता है। ये विचार अंतरराष्ट्रीय शांति दिवस के अवसर पर शांतिपीठ संस्थान के तत्वावधान में संस्थान के सभागार में आयोजित संगोष्ठी में सुखाड़िया विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो.सुनिता मिश्रा ने व्यक्त किए। बतौर मुख्य अतिथि उन्होंने कहा कि हम सब एक ही मानवता के हिस्से हैं। जाति, संप्रदाय, क्षेत्र, रंग, भाषा आदि से ऊपर हमारी सबकी मौलिक पहचान मानवता है और हम एक साथ मिलकर ही विश्व शांति का लक्ष्य हासिल कर सकते हैं। अध्यक्षता करते हुए पंजाब व सिक्किम सरकार के पूर्व सलाहकार मोहनसिंह कोठारी ने बदले परिवेश में वीटो पावर को अलोकतांत्रिक बताते हुए कहा कि आज दुनिया का हर राष्ट्र सैन्य शक्ति बढ़ा रहा है और दुर्भाग्य से इसके दुष्परिणाम आत्मघाती भी हो सकते हैं। जरूरत है विश्वास का माहौल निर्मित कर मानव मूल्यों का सशक्तिकरण एवं विस्तार किया जाए।शांतिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने वैश्विक समुदाय की समझ पैदा करने के लिए शिक्षा की महत्ता पर जोर दिया।इस मौके पर सुखाड़िया विश्वविद्यालय में भौतिक शास्त्र के विभागाध्यक्ष प्रो. केबी जोशी, बीएन विश्वविद्यालय में अंग्रेजी साहित्य की विभागाध्यक्ष डॉ. जयश्री सिंह, प्रो.एलएन दशोरा, संजीव भारद्वाज, प्रो. विमल शर्मा, डॉ. पुखराज सुखलेचा आदि ने भी अपने मंतव्य प्रकट किये।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, रविवार, 13 अगस्त 2023

विकास और विनाश साथ चलते हैं : बोहरा



ब्यूरो नवज्योति/उदयपुर। आज पूरी दुनिया विकास को सकारात्मक दिशा देने के लिए जूझ रही है। एहसास किया जा रहा है कि हम विकास से अधिक विनाश को साथ लेकर चल पड़े। अब जरूरत महसूस की जा रही है कि आशावादी बदलाव के लिए युवा आगे आएं। ये विचार अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर शांतिपीठ संस्थान के तत्वावधान में पीठ के सभागार में 'युवाओं के लिए हरित कौशलः एक सतत विश्व की ओर' विषयक संगोष्ठी में व्यक्त किए गए। प्रमुख वक्ता पूर्व जिला कलक्टर सुमति लाल बोहरा ने कहा कि विकास और विनाश साथ चलते हैं, आवश्यकता विवेकपूर्ण निर्णय की है। शांतिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने युवा समुदाय को आव्हान किया कि वे दृढ़निश्चय व प्रतिबद्धता के साथ बदलाव के सारथी बनें। इस मौके पर जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी के पूर्व मुख्य अभियंता निर्मल चितौड़ा, उच्च न्यायालय के अधिवक्ता उमेशचंद्र शर्मा, नेहरू युवा केंद्र के पूर्व राष्ट्रीय निदेशक श्याम सिंह राजपुरोहित, महाराणा प्रताप कृषि एवं तकनीकि विश्व विद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. उमाशंकर शर्मा ने भी विचार व्यक्त किए।

पत्रिका {सिटी बुक}
CITY BOOK
SUNDAY
राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, रविवार, 13 अगस्त, 2023

पढ़ें ज्यादा खबरें, देखें फोटो/
#Readers Connect Udaipur
facebook.com/groups/udaipurmycit

#youthDay अन्तरराष्ट्रीय युवा दिवस पर विविध आयोजन

बदलाव के लिए आगे आएं आशावादी युव

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

उदयपुर. आज पूरी दुनिया विकास को सकारात्मक दिशा देने के लिए जूझ रही है। एहसास किया जा रहा है कि हम विकास से अधिक विनाश को साथ लेकर चल पड़े। अब जरूरत महसूस की जा रही है कि आशावादी बदलाव के लिए युवा आगे आएं। आवश्यकता है युवाओं के साथ खड़े होकर सहयोग किया जाए, जिससे यह यौवन की प्रचण्ड ऊर्जा आदर्श, योग्यता, ज्ञान और कौशल से दुनिया का नवनिर्माण कर सके।

ये विचार अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस के मौके पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में पीठ के सभागार में 'युवाओं के लिए हरित कौशल: एक सतत विश्व की ओर' विषयक संगोष्ठी में व्यक्त किए गए। मुख्य वक्ता पूर्व कलक्टर सुमतिलाल बोहरा ने संबोधित किया। संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी, पीएचइडी के पूर्व मुख्य अभियंता निर्मल चितौड़ा, उच्च न्यायालय के अधिवक्ता उमेशचन्द्र शर्मा ने विचार व्यक्त किए। अध्यक्षीय उद्बोधन में एमपीयूएटी के पूर्व कुलपति डॉ. उमाशंकर शर्मा ने देश में हरित आंदोलन, श्वेता आंदोलन के उदाहरण पेश किए। कैलाश पालीवाल ने आभार जताया।



अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस के मौके पर शांतिपीठ संस्थान की ओर से आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन अतिथि।

कर्तव्य बोध से युक्त हो युवा: बीएन विवि एनएसएस इकाइयों की ओर से युवा संवाद हुआ। समन्यक डॉ. ज्योतिरादित्य सिंह भाटी ने स्वागत किया। मुख्य वक्ता गुजरात केन्द्रीय विवि के सहआचार्य डॉ. बालूदान बारहठ ने कहा कि हमें भारत के वास्तविक स्वरूप को पहचानने की जरुरत है। मुख्यअतिथि विधायक दीप्ति किरण माहेश्वरी, विशिष्ट अतिथि एमजी कॉलेज इतिहास विभाग के सहायक आचार्य डॉ. सुदर्शनसिंह राठौड़, डॉ. रेणु राठौड़, डॉ. गिरधरपाल सिंह, डॉ. सृष्टिराज सिंह चूण्डावत ने विचार व्यक्त किए।

इधर, बीएन विवि कन्या इकाई में एंटी रैगिंग दिवस और अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस पर एंटी रैगिंग कमेटी तथा चित्रकला विभाग की ओर से पोस्टर मेकिंग तथा स्लोगन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। अधिष्ठाता डॉ. देवेंद्रसिंह सिसोदिया, छात्र कल्याण् अधिष्ठाता डॉ. म राठौड़ ने विचार रखे। निर्णायक प्रमिला शक्तावत, डॉ. मनोज डॉ. अनिल मेनारिया थे।

यहां भी हुए आयोज

ब्रह्माकुमारीज मोतीमगरी स्की सेवा केन्द्र पर विश्व युवा दिवस मनाया गया। बीके युवाओं ने आध्यात्मिक जीवन के अनुभव साझा किए। विशेष कुमारी हीना एवं कुमारी निकिता ने बताया कि राजयोग के अभ्यास से जीवन में बहुत सकारात्मकता आती है। प्रोफेशनल एवं फैमिली लाइफ भी संतुलन बनाकर चल सकते सीसीएफ आरके जैन, मोतीमग स्कीम विकास समिति अध्यक्ष ने विचार रखे। संचालिका बीके रीत दीदी ने संबोधित किया।

क्यूआर कोड स्कैन कर विस्तृत खबर पढ़ें...

प्रातःकाल
उदयपुर, रविवार 13 अगस्त, 2023

आशावादी बदलाव के लिए युवा आगे आएं

उदयपुर (वि)। आज पूरी दुनिया विकास को सकारात्मक दिशा देने के लिए जूझ रही है। अहसास किया जा रहा है कि हम विकास से अधिक विनाश को साथ लेकर चल पड़े। अब जरूरत महसूस की जा रही है कि आशावादी बदलाव के लिए युवा आगे आएं। दुनिया की आधी आबादी तीस वर्ष या इससे कम उम्र की है। आवश्यकता है युवाओं के साथ खड़े होकर सहयोग किया जाए जिससे यह यौवन की प्रचण्ड ऊर्जा अपने आदर्श, योग्यता, ज्ञान और कौशल से दुनियाँ का नव-निर्माण कर सके। यह विचार आज अन्तरराष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में पीठ के सभागार में 'युवाओं के लिए हरित कौशल: एक सतत् विश्व की ओर' विषयक संगोष्ठी में व्यक्त किए गए। संगोष्ठी में नगर की चुनिंदा कॉलेजों के छात्र-छात्राएँ सम्मिलित हुए। प्रमुख वक्ता पूर्व जिला कलक्टर सुमति लाल बोहरा ने कहा कि विकास और विनाश साथ चलते है, आवश्यकता विवेकपूर्ण निर्णय की है। शुरूआत घर से करने



की है कि मैं अपने आस-पड़ौस व समाज को क्या योगदान कर सकता हूं। उन्होंने चिंता व्यक्त की कि पहाड़ बनने में लाखों करोड़ों वर्ष लगते है जबकि उसको नष्ट करने में कुछ ही समय लगता है। उन्होंने स्थानीय पर्यावरण के संरक्षण के लिए संकल्प शक्ति की आवश्यकता है प्रतिपादित की। बोहरा ने देश में नये सकारात्मक बदलाव के लिए नीति आयोग पर विस्तार से प्रकाश डाला। शान्तिपीठ संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने युवा समुदाय को आह्वान किया कि वे दृढ़निश्चय व प्रतिबद्धता के साथ बदलाव के सारथी बने। जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी के पूर्व मुख्य अभियंता निर्मल चितौड़ा ने कहा कि 'इन्फ्रास्ट्रक्चर' का निर्माण विकास नहीं है।

उच्च न्यायालय के अधिवक्ता उमेश चन्द्र शर्मा ने चिंता व्यक्त की कि आज विकास मानो हमारे जीवन की आवश्यक बुराई बन चुका है। उन्होंने कहा युवाओं को जोड़े बिना परिवर्तन असंभव है। नेहरू युवा केन्द्र के पूर्व राष्ट्रीय निदेशक श्याम सिंह राजपुरोहित ने आत्मबल और अकेले चलने की हिम्मत जुटाने की बात करते हुए कहा कि युवाओं के संकल्प के सामने सारी समस्याएँ बोनी होने लग जाती हैं। अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए पूर्व कुलपति डॉ. उमाशंकर शर्मा ने देश में हरित आंदोलन, श्वेता आंदोलन के उदाहरणों से बताया कि किस तरह देश ने नये परिवर्तन से सतत् विकास के उदाहरण प्रस्तुत किये। उन्होंने प्लास्टीसाईज के अधिक इस्तेमाल पर चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि दुनियाँ में आज देशी गाय के महत्व को समझकर उसे अपनाया जाने लगा है। कैलाश पालीवाल ने आभार व्यक्त किया।

राजस्थान पत्रिका patrika.com
उदयपुर, सोमवार, 12 दिसम्बर 2022

नागरिक पारस्परिक व समाज के प्रति हों उत्तरदायी

पत्रिका plus रिपोर्टर

उदयपुर. वैश्वीकरण के दौर में भी सामाजिक विषमताएं, अधिग्रहण की लालसाएं, शोषण को जिन्दा रखने की साजिशें, वीभत्स हिंसा, आतंक और प्रकृति के प्रतिकूल आचरण के चलते मानवाधिकारों की व्याख्या को सार्वभौमिक कल्याण के संदर्भों में समझना होगा, जहां नागरिक पारस्परिक व समाज के प्रति उत्तरदायी हों। सत्ताएं जवाबदेह हों तभी मानव की गरिमा और इंसानियत को सम्मान मिलेगा। आवश्यकता है आज प्रज्ञाशील नागरिकों के निर्माण की। ये विचार विश्व मानवाधिकार दिवस पर शान्तिपीठ के तत्वावधान में संस्थान परिसर में आयोजित विचार गोष्ठी में व्यक्त किए गए। अध्यक्षता करते हुए पूर्व जिला कलक्टर सुमति लाल बोहरा ने कहा कि जो फसल बोएंगे वही काटनी पड़ेगी, इसलिए जरूरत है शिक्षा संस्थान मानव गरिमा उन्नायक के केन्द्र बनें। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि मानवाधिकार संरक्षण के लिए कृष्ण चरित्र को आत्मसात करना होगा। इस मौके पर प्रो. आर.बी कुमार, उमेश चन्द्र शर्मा, प्रोफेसर पी एल शर्मा, कैलाश पालीवाल आदि ने भी विचार रखे।



संगोष्ठी में मौजूद प्रबुद्धजन। पत्रिका

दैनिक भास्कर
उदयपुर, सोमवार, 12 दिसंबर, 2022

मानव अधिकारों पर शांतिपीठ संस्थान में हुई गोष्ठी, वक्ता बोले-

लिविंग राइट्स को भी मिल रही चुनौती, मानव गरिमा बचाने के लिए युवाओं को आगे आना होगा

उदयपुर। शांतिपीठ संस्थान की मानवाधिकार दिवस को लेकर विचार गोष्ठी हुई। अध्यक्षता करते हुए पूर्व जिला कलेक्टर सुमति लाल बोहरा ने कहा कि जो फसल बोएंगे वही काटनी पड़ेगी, इसलिए जरूरत है शिक्षा संस्थान मानव गरिमा उन्नायक के केंद्र बनें। संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि मानवाधिकार संरक्षण के लिए कृष्ण चरित्र को आत्मसात करना होगा। जीवन जीने के संविधान का मूल मंत्र है कर्तव्य बोध और लोक संग्रह। राजनीति शास्त्र के प्रो. आरबी कुमार ने कहा कि राज्यों की शिथिलता से समाज में वीभत्स अपराधों ने मानवता को शर्मसार किया है, ऐसे में लिविंग राइट्स को भी चुनौती मिल रही है। उच्च न्यायालय के अधिवक्ता उमेश चंद्र शर्मा ने कहा कि संवेदनशील नागरिकों का दायित्व बनता है कि वे मानव गरिमा की रक्षा के लिए आगे आए। प्रो. पीएल शर्मा, कुश्ती कोच कैलाश पालीवाल आदि ने भी विचार रखे।



गोष्ठी में मौजूद वक्ता।

मासिक संगीत गोष्ठी, पुराने गीतों की महफिल सजी : अर्बुदा कला मंदिर संगीत प्रशिक्षण संस्थान में रविवार को वरिष्ठ नागरिक मासिक संगीत गोष्ठी हुई। इसमें शहर के वरिष्ठ नागरिकों ने पुराने फिल्मी गानों की एक से बढ़कर एक प्रस्तुतियां दी। निदेशक विवेक अग्रवाल ने बताया कि सविता आचार्य ने हमें और जीने की... रमेश चंद्र आचार्य ने प्यार दीवाना होता है... रमेश चंद्र सेन ने मेरा प्यार भी तू है.... सुरेश पोखरा ने यारी है ईमान मेरा..... बृजलाल सोनी ने यह दुनिया यह महफिल... जैसे नगमें पेश किए। वहीं अजय, हरमेश जैन, मंजू गर्ग, नारायण सालवी, पुष्कर गौड़, आनंद सिंह गौड़, ललित कुमार जैन, अब्बास अली, खुशबू जैन, शंकरलाल, महावीर जैन, डॉ. अनीता सिंह, भावना शर्मा, भगवत सिंह हाड़ा, हिम्मत सिंह सिसोदिया, राजेंद्र मिश्रा ने प्रस्तुतियां दी।

राजस्थान पत्रिका patrika.com
उदयपुर, गुरुवार, 27 अक्टूबर 2022

संयुक्त राष्ट्र दिवस की पूर्व संध्या पर संगोष्ठी

आतंकवाद में बदलता जा रहा अतिवाद

उदयपुर. संयुक्त राष्ट्र दिवस की पूर्व संध्या पर शान्तिपीठ के तत्वावधान में संस्थान परिसर में संगोष्ठी हुई। अध्यक्षता करते हुए पूर्व जिला कलक्टर बारां, सुमति लाल बोहरा ने कहा कि संघ को अपनी शक्ति अतिवादी संगठनों पर लगाम लगाने में करनी होगी। कई देशों में विचारधारा पर आधारित अतिवाद आतंकवाद में बदलता जा रहा। यह अतिवादी ही विश्व शांति के बहुत बड़े खतरे बन गए हैं। शांति एवं आणविक निःशस्त्रीकरण अध्ययन के विशेषज्ञ डॉ. बी.आर.कुमार ने कहा कि लीग ऑफ नेशन की तर्ज पर चलने से संयुक्त राष्ट्र कमजोर हुआ है। संघ को बड़ी ताकतों से मुक्त करने की जरूरत है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र प्रकाश पर्व का



संगोष्ठी में विचार व्यक्त करते प्रबुद्धजन। पत्रिका

केन्द्र बने और दुनियाभर को ज्ञान से रोशन करें। उन्होंने वैश्विक चेतना जाग्रत करने के लिए इसे शिक्षा केन्द्र के रूप में विकसित करने की आवश्यकता प्रतिपादित की। इस मौके पर पूर्व देवस्थान आयुक्त दिनेश कोठारी, जिला आबकारी अधिकारी मुकेश कलाल, पूर्व अतिरिक्त वरिष्ठ नगर नियोजक राजस्थान सतीश श्रीमाली, अभियंता अनिरूद्ध सिंह चुण्डावत, पूर्व सिंचाई विभाग प्रमुख रोशन देपुरा ने भी विचार व्यक्त किए। संचालन मनोज गंधर्व ने किया।

महानगर संवाददाता
उदयपुर - 24 अगस्त, 2022

भारत को शांति व सुरक्षा की नई पहल करनी चाहिए : चिंतक



महानगर संवाददाता

उदयपुर। पिछले 77 साल में संयुक्त राष्ट्र संघ ने यह तो साबित कर दिया है कि दुनिया को इसकी सख्त आवश्यकता है। किन्तु बदले वैश्विक परिदृश्य में इस विश्व संस्था को प्रकाश केन्द्र के रूप में रूपान्तरित करने की आवश्यकता है, जिससे यह दुनिया को अतिवाद, आंतकवाद, हिंसा और असुरक्षित भविष्य से न केवल उबार सके बल्कि पूर्वाग्रह मुक्त, उदार, प्रकृति और प्राणी मात्र के सनातन तत्व को आत्मसात करने योग्य विश्व नागरिको का निर्माण कर सके। आज विश्व कुटुम्ब की सनातन विचार धारा को दुनिया में समझा जा रहा है तथा प्रधानमंत्री द्वारा संवाद के विविध आयामों पर सर्वमान्य समाधान सुझाए जा रहे हैं। ऐसे में भारत को शांति व सुरक्षा की नई पहल करनी चाहिए।

यह विचार संयुक्त राष्ट्र दिवस की पूर्व संध्या पर शान्तिपीठ के तत्वावधान में संस्थान परिसर में हुई संगोष्ठी में कई व्यक्ताओं ने व्यक्त किए। अध्यक्षता करते हुए पूर्व जिला कलेक्टर बारां सुमतिलाल बोहरा ने कहा कि संघ को अपनी शक्ति अतिवादी संगठनों पर लगाम लगाने में करनी होगी। कई देशों में विचारधारा पर आधारित अतिवाद आतंकवाद में बदलता जा रहा। यह अतिवादी ही विश्व शांति के बहुत बड़े खतरे बन गये हैं। शांति एवं आणविक निःशस्त्रीकरण अध्ययन के विशेषज्ञ डॉ. बी.आर. कुमार ने कहा कि लीग ऑफ नेशन की तर्ज पर चलने से संयुक्त राष्ट्र कमजोर हुआ है। संघ को बड़ी ताकतों से मुक्त करने की जरूरत है। रूस गंभीर समस्याओं को आमंत्रित करना नहीं चाहेगा। अतः यूक्रेन के युद्ध को आणविक युद्ध में बदलने का कार्यवाही भी नहीं करेगा। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र प्रकाश पर्व का केन्द्र बने और दुनियाभर को ज्ञान से रोशन करें। उन्होंने वैश्विक चेतना जाग्रत करने के लिए इसे शिक्षा केन्द्र के रूप में विकसित करने की आवश्यकता प्रतिपादित की। पूर्व देवस्थान आयुक्त दिनेश कोठारी ने कहा कि भारतीय नागरिकों ने विश्वभर में अपनी प्रतिभा का प्रमाण प्रस्तुत किया है, जहां-जहां भारतीय है वहां संदेह मुक्त वातावरण एवं विश्वास है। जिला आबकारी अधिकारी मुकेश कलाल, पूर्व अतिरिक्त वरिष्ठ नगर नियोजक राजस्थान सतीश श्रीमाली, अभियंता अनिरूद्धसिंह चुण्डावत, पूर्व सिंचाई विभाग प्रमुख रोशन देपुरा ने भी विचार व्यक्त किये। संगोष्ठी का संचालन मनोज गंधर्व ने किया।

दैनिक भास्कर, उदयपुर, गुरुवार, 22 सितंबर, 2

विश्व शांति दिवस : शांतिपीठ की संगोष्ठी में वक्ता बोले-अन्याय ही गरीबी-अशांति का कारण

उदयपुर| विश्व शांति दिवस के मौके पर शांतिपीठ की ओर से संस्थान के सभागार में संगोष्ठी हुई। इसमें अध्यक्षता करते हुए पूर्व कलेक्टर सुमति लाल बोहरा ने कहा कि शांति की पहल हमेशा खुद से शुरू होती है, जो सत्य के रास्ते चलकर व्यापक स्वरूप लेती है। जिसे महात्मा गांधी ने कर दिखाया। उन्होनें नाटो के देशों तथा वर्तमान में रूस-यूक्रेन के बीच चल रहे संघर्ष पर विचार रखे। शांतिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि शांति के आदर्शों को बनाए रखने के लिए सशक्तिकरण जरूरी है, नहीं तो अंतर्विरोध हावी हो सकता है। उन्होंने स्थानीय स्तर पर शांति के निहितार्थ को प्राथमिकता देते हुए मेवाड़ की नैसर्गिक प्रकृति व संस्कृति के संरक्षण की आवश्यकता बताई। कहा कि शौर्य, त्याग, समर्पण और शांति की संस्कृति मेवाड़ का स्वधर्म है। पूर्व अतिरिक्त मुख्य नगर नियोजक सतीश श्रीमाली ने कहा कि हमें विकास और विरासत में समन्वय बैठाकर नियंत्रित विकास की दिशा को अपनाना होगा। शिक्षाविद कैलाश बिहारी वाजपेयी ने कहा कि अहिंसा के रास्ते से ही विश्व में एकता स्थापित हो सकती है। पर्यावरणविद प्रो. महेश शर्मा ने अन्याय व गरीबी को अशांति का कारण बताया। पूर्व वन संरक्षक उंकार लाल मेनारिया, सिंचाई विभाग के पूर्व मुख्य अभियंता रोशन देपुरा, रेसलिंग के अंतरराष्ट्रीय कोच कैलाश पालीवाल ने भी विचार व्यक्त रखे।



विश्व शांति दिवस पर हुई शांतिपीठ की संगोष्ठी में मौजूद वक्ता।

राजस्थान पत्रिका patri
उदयपुर, गुरुवार, 22 सितंबर 2022

शांति की पहल हमेशा स्वयं से शुरू होती है



उदयपुर. विश्व शान्ति दिवस के अवसर पर शान्तिपीठ के तत्वावधान में संस्थान के सभागार में संगोष्ठी हुई। इसमें पूर्व कलक्टर सुमति लाल बोहरा ने कहा कि शांति की पहल हमेशा स्वयं से शुरू होती है और सत्य के रास्ते चलकर व्यापक स्वरूप लेती है, जिसे महात्मा गांधी ने कर दिखाया। उन्होंने नाटो के देशों तथा वर्तमान में रूस व यूक्रेन के बीच चल रहे संघर्ष पर विस्तार से विचार व्यक्त किए। शांतिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि शान्ति जीवन का नैसर्गिक मूल्य है। हमें इसके आदर्शों को गतिशील बनाए रखने के लिए निरंतर सशक्तिकरण करना चाहिए। पूर्व अतिरिक्त मुख्य नगर नियोजक राजस्थान, सतीश श्रीमाली, शिक्षाविद कैलाश बिहारी वाजपेयी, पूर्व वन संरक्षक ऊंकार लाल मेनारिया, सिंचाई विभाग के पूर्व मुख्य अभियंता रोशन देपुरा, कैलाश पालीवाल आदि ने भी विचार व्यक्त किए। संचालन प्रथम चैहान ने किया।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, गुरुवार, 22 सितंबर 2022

शांति की पहल हमेशा स्वयं से शुरू होती है : बोहरा

ब्यूरो/नवज्योति, उदयपुर।



आज विविधता में एकता के दर्शन की चेतना को सार्वभौमिक आयाम देने की जरूरत है। संकीर्णनता के दायरे से व्यापक परिवेश में प्रवेश करने का युग है और इसके लिए जरूरत है विकास तथा नैतिक व आध्यात्मिक उन्नति के बीच आवश्यक संतुलन की। ये विचार विश्व शांति दिवस के अवसर पर शांतिपीठ के तत्वावधान में संस्थान सभागार में आयोजित संगोष्ठी में कई वक्ताओं ने व्यक्त किए। अध्यक्षीय में पूर्व कलक्टर सुमति लाल बोहरा ने कहा कि शांति की पहल हमेशा स्वयं से शुरू होती है और सत्य के रास्ते चलकर व्यापक स्वरूप लेती है, जिसे महात्मा गांधी ने कर दिखाया।

शांतिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि शांति जीवन का नैसर्गिक मूल्य है। इस मौके पर पूर्व अतिरिक्त मुख्य नगर नियोजक राजस्थान, सतीश श्रीमाली, पर्यावरणविद प्रो. महेश शर्मा, पूर्व वन संरक्षक ऊंकार लाल मेनारिया, सिंचाई विभाग के पूर्व मुख्य अभियंता रोशन देपुरा, रेसलिंग के अन्तरराष्ट्रीय कोच कैलाश पालीवाल आदि ने भी विचार व्यक्त किए।

City भास्कर

दैनिक भास्कर उदयपुर, बुधवार 21 सितंबर, 2022

विश्व शांति दिवस आज • सामाजिक अर्थ हिंसा को रोकना ही शांति, लेकिन दार्शनिक अर्थ आर्थिक, पर्यावरण और सांस्कृतिक विकास

मेवाड़ की संस्कृति, पर्यावरण और झीलों में बहती है शांति की धारा, शांत माहौल के लिए इन सभी विरासतों को सहेजना जरूरी

गौरव द्विवेदी | उदयपुर

आज विश्व शांति दिवस है। आमतौर पर शांति का मतलब युद्ध, व्यक्तियों या समूहों के बीच हिंसा के डर से मुक्ति को माना जाता है। लेकिन राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, नोबल विजेता अमर्त्य सेन, जयप्रकाश और विनोबा भावे के दार्शनिक-विचारकों के अनुसार आर्थिक, पर्यावरण और सांस्कृतिक विकास की स्थापना भी शांति स्थापित करने के लिए बहुत जरूरी है। अगर हम इन आयामों से उदयपुर की तुलना करें तो शांति की झलक जरूर दिखती है। लेकिन इसे सहेजकर रखने के लिए पर्यावरण संरक्षण और वनों-पहाड़ों का दोहन रोकना भी उतनी ही बड़ी चुनौती है।

पर्यटन ही हमारा विकास : डेढ़ साल में मिली 8 इंटरनेशनल रैंकिंग

नोबेल पुरस्कार विजेता अमर्त्य सेन जैसे कई अर्थशास्त्रियों ने आर्थिक विकास के लिए हमेशा शांति और समानता पर जोर दिया। शांत बहती झीलें और विकास शहर में एक-दूसरे के पूरक हैं। यहां का हैंडीक्राफ्ट का व्यवसाय विश्व विख्यात है, तो यहां की झीलें पिछले डेढ़ साल में लेकसिटी को 8 इंटरनेशनल रैंकिंग दिला चुकी हैं। ट्रेवल एंड लेजर, अंतरराष्ट्रीय वेडिंग प्लानिंग कंपनी दी नॉट, प्लेनेट डी की ट्रेवल लिस्ट 'द 16 मोस्ट रोमांटिक सिटीज ऑन अर्थ', नेशनल जियोग्राफी और दी वाल स्ट्रीट जर्नल, एमएसएन के बेहतरीन 60 डेस्टिनेशन की लिस्ट, इंटर माइल्स जैसे तमगे इसमें शामिल हैं। अपनी इसी खूबियों के चलते उदयपुर हमेशा दुनिया की नजरों में रहा है। इसिलिए ये शहर जीएसटी काउंसिल मीटिंग हो या अंबानी परिवार सहित कई बॉलीवुड और टॉलीवुड अभिनेता परिवारों की शाही शादियों की मेजबानी कर चुका है।

सौहार्द : पारस्परिक सहयोग ही मेवाड़ की विरासत

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, विनोबा भावे, जयप्रकाश नारायण आदि को विश्व शांति, सर्वधर्म समभाव और मैत्री के विचार के लिए जाना जाता है। वहीं, मध्यकालीन इतिहास यानी करीब सदियों पहले मेवाड़ में सौहार्द की विरासत रही है। त्याग और शौर्य के प्रतीक वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप और हकीम खां सूरी हो या मेवाड़ की गौरवशाली इतिहास की गाथाएं, उसमें सौहार्द की विरासत के कई उदाहरण मिलते हैं। हालही में कन्हैयालाल आतंकी हत्याकांड के बाद मोहर्रम में भी इसकी मिसाल मिली थी।

पहाड़-वादियां : सबसे ज्यादा वन, अवैध खनन चुनौती

बढ़ते वैश्विक तापमान का खतरा आज पूरी दुनिया पर मंडरा रहा है। चिपको आंदोलन के प्रणेता और पर्यावरणविद् सुंदरलाल बहुगुणा ने पारिस्थितिकी यानी इकोलॉजी और आर्थिकी को अलग नहीं करने पर जोर दिया। विचार यह है कि स्थिर अर्थव्यवस्था का आधार स्थिर पारिस्थितिकी है। उदयपुर को झील और पर्यावरण ने वैश्विक पहचान दी है। मास्टर प्लान (2011-31) के अनुसार शहर में 9 फीसदी जलाशय हैं, जबकि जिला सांख्यिकी रिपोर्ट के अनुसार प्रदेश में सबसे ज्यादा 23 फीसदी वन जिले में है। 12 फीसदी पहाड़ी क्षेत्र है।

इस साल की थीम रेसिज्म मिटा शांति कायम करना

वर्ष 1999 से विश्व शांति और पर्यावरण संरक्षण के लिए काम कर रहे शांतिपीठ संस्थान के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने बताया कि संयुक्त राष्ट्र संघ की साधारण सभा ने 1981 में प्रस्ताव पारित कर तय किया कि सितंबर माह के हर तीसरे मंगलवार को अंतरराष्ट्रीय शांति दिवस मनाया जाए। 2001 से 21 सितंबर की तारीख तय की गई। इस दिन पूरी दुनिया में 24 घंटे सीज फायर और अहिंसा की पूरी तरह पालना किए जाने का ध्येय रखा गया। इस साल रेसिज्म समाप्त कर शांति निर्माण की थीम घोषित की गई है।

दैनिक भास्कर
उदयपुर, शनिवार 13 अगस्त, 2022
dainikbhaskar.com

शांतिपीठ, जोनल रेलवे प्रशिक्षण संस्थान के कार्यक्रम में बोले- आईआईएम-यू के निदेशक

संयुक्त परिवार सांस्कृतिक विरासत के साथ आदर सिखाने वाले प्रशिक्षण केंद्र भी





संवाद कार्यक्रम को संबोधित करते आईआईएम-उदयपुर के निदेशक प्रो. अशोक बनर्जी और मौजूद संभागी।

सिटी रिपोर्टर | उदयपुर

आईआईएम-उदयपुर के निदेशक प्रो. अशोक बनर्जी ने संयुक्त परिवार को भारतीय सांस्कृतिक विरासत बताया है। उन्होंने कहा कि एक ही छत के नीचे रहने वाले तीन पीढ़ियों वाले परिवार पारस्परिक आदर के सामूहिक दायित्व का प्रशिक्षण केन्द्र भी हैं।

प्रो. बनर्जी शुक्रवार को अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस पर शान्तिपीठ संस्थान व जोनल रेलवे प्रशिक्षण संस्थान के साझे में अंतर पीढ़िगत एकजुटता : सभी उम्र के लिए एक दुनिया बनाना विषयक संवाद कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। संस्थान के ऑडिटोरियम में हुए इस कार्यक्रम में प्रो. बनर्जी ने कहा कि भावनात्मक व सामाजिक एकजुटता और आर्थिक एकजुटता में संतुलन आवश्यक है। इसके लिए सीएसआर योजना से भी पहल करनी चाहिए। अध्यक्षता कर रहे राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. शिवसिंह सारंगदेवोत ने कहा कि स्वयं में परिवर्तन लाने की प्रतिबद्धता ही सामाजिक परिवर्तन लाने का उपाय है। सनातन मूल्यों के संस्कार यदि बचपन से मिलें तो सामाजिक विखंडन की समस्याएं सामने नहीं आएंगी। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि हर काल खंड में जरूरत पड़ने पर विवेकशील यौवन की प्रचण्ड ऊर्जा ने नए बदलावों को स्थापित किया है। आज फिर जरूरत है कि युवा वर्तमान परिवेश को समझकर नए विश्व निर्माण की पहल करें। आरंभ में रेलवे प्रशिक्षण संस्थान की प्राचार्य मैत्रेयी चारण ने अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि भारत के पास युवा शक्ति है और हमें इस पर पूरा भरोसा करना चाहिए। यही युवा समाज को नई दिशा देने के साथ दशा बदलेंगे।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, शनिवार, 13 अगस्त 2022

संयुक्त परिवार हमारी सांस्कृतिक विरासत : प्रो. बनर्जी



ब्यूरो/नवज्योति, उदयपुर। संयुक्त परिवार हमारी सांस्कृतिक विरासत तो है ही यह पारस्परिक आदर देने की सामूहिक जिम्मेदारी का प्रशिक्षण केंद्र भी है। यह बात अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर शांतिपीठ संस्थान व जोनल रेलवे प्रशिक्षण संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में 'अंतर पीढ़ीगत एक जुटता : सभी उम्र के लिए एक दुनिया बनाना' विषयक आयोजित संवाद कार्यक्रम में आईआईएम उदयपुर के निदेशक प्रो. अशोक बनर्जी ने कही।

अध्यक्षीय में राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के कुलपति कर्नल प्रो. शिवसिंह सारंगदेवोत ने कहा स्वयं में परिवर्तन लाने की प्रतिबद्धता ही सामाजिक परिवर्तन लाने का उपाय है। इस मौके पर शांतिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी, रेलवे प्रशिक्षण संस्थान की प्राचार्या मैत्रेयी चारण, पूर्व वरिष्ठ नगर नियोजक सतीश श्रीमाली आदि भी उपस्थित थे।

दैनिक भास्कर
उदयपुर, रविवार 7 अगस्त, 2022
dainikbhaskar.com

हिरोशिमा दिवस : बाल सम्मेलन में बच्चों ने लिया विश्व शांति का संकल्प

उदयपुर | हिरोशिमा विभीषिका की 77वीं बरसी पर शनिवार को शान्तिपीठ की मेजबानी में नगर निगम के सभागार में बाल शान्ति सम्मेलन हुआ। इसमें सरकारी व गैर-सरकारी स्कूलों के छात्र शान्ति, पर्यावरण, अहिंसा और सद्भावना के स्लोगन लिखी तख्तियां, बैनर, पोस्टर, प्ले कार्ड आदि लेकर शामिल हुए और शांति का संदेश दिया। इस अवसर पर सभा में खड़े होकर आणविक निःशस्त्रीकरण, पर्यावरण संरक्षण, विश्व बन्धुत्व, स्वाधीनता, न्याय, मानवीय मूल्य और विश्व शान्ति के लिए अपनी प्रतिबद्धता का संकल्प लिया।

शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने हिरोशिमा-नागासाकी दुर्घातिकाओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि दुनिया जब तक बारूद के ढेर पर बैठी रहेगी, हिरोशिमा को नहीं भूलाया जा सकेगा। हिरोशिमा विकृत और मानव निर्मित नकारात्मक शक्तियों का प्रतीक है। उन्होंने उपस्थित बाल समुदाय, शिक्षक, अभिभावकों से आह्वान किया कि शिक्षा के साथ ही नई पौध में निजता अर्थात आत्मस्वरूप उपलब्ध करने की दिशा दें। जिससे वे सामाजिक बदलाव का जरिया बन सकें।



हिरोशिमा दिवस पर हुए बाल शांति सम्मेलन में मौजूद अतिथि।



बाल शांति सम्मेलन में बच्चों ने लिया विश्व शांति का लिया संकल्प।

उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति शान्ति की संस्कृति है। वे इसके वैश्विक प्रसारण में अग्रदूत की भूमिका निभाएं। कवि अजात शत्रु ने कहा कि पश्चिम के पास तकनीकी ज्ञान व सुविधा की भले ही भरमार हो, लेकिन भारत के पास शान्ति की शक्ति है। मार्शल आर्ट के राजकुमार मेनारिया, अधिवक्ता भरत कुमावत, एंथोनी स्कूल की अंजली मलिक, चित्रांजलि डामोर, गुरुगोविंद सिंह स्कूल के गजपाल सिंह राव, सेन्ट्रल एकेडमी की चार्ली पालीवाल आदि ने भी विचार व्यक्त किए।

इतिहासकार बोले-त्रासदी को नहीं भुलाया जा सकता

तक्षशिला विद्यापीठ संस्थान एवं एवं ग्लोबल हिस्ट्री फोरम के साझे में शनिवार को हिरोशिमा दिवस पर संगोष्ठी हुई। अध्यक्ष डॉ. जीएल मेनारिया ने कहा कि हिरोशिमा में हुई परमाणु तबाही मानवीय इतिहास के सारे रिश्तों पर कालिख भरा पन्ना है। जो पूरी दुनिया में कभी भुलाया नहीं जा सकता है। संवाद में पुरातत्त्व वेत्ता डॉ. ललित पाण्डे, डॉ. अजातशत्रु सिंह शिवरती आदि ने भी विचार रखे।

पत्रिका {सिटीजन & कनेक्ट}
CITYZEN CONNECT
राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, रविवार, 07 अगस्त, 2022

हिरोशिमा विभीषिका की 77वीं बरसी पर आयोजन

संवाद और समन्वय के माध्यम से बनानी होगी बेहतर दुनिया

पत्रिका
ग्राउंड रिपोर्ट

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

उदयपुर. हिंसा, आंतक और आणविक अस्त्रों से नहीं बल्कि संवाद और समन्वय से बेहतर दुनिया बनाची है और इसे हासिल करने का रास्ता सिर्फ सत्य, अहिंसा और प्रेम का है। हिरोशिमा विभीषिका की 77वीं बरसी पर शान्तिपीठ के तत्तावावधान में नगर निगम के सभागार में आयोजित बाल शान्ति सम्मेलन में उक्त विचारों से बच्चों ने अपनी भावना व्यक्त की। नगर के सरकारी व गैर-सरकारी विद्यालयों के चुनिंदा छात्र-छात्राएं शान्ति, पर्यावरण, अहिंसा और सद्भावना के स्लोगन लिखी तख्तियां, बैनर, पोस्टर, प्ले कार्ड आदि लेकर सभा स्थल पहुंचे। शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि दुनिया जब तक बारूद के ढेर पर बैठी रहेगी, हिरोशिमा विस्मृत नहीं हो पाएगा। कवि अजात शत्रु ने कहा कि पश्चिम के पास तकनीकी ज्ञान व सुविधा के सामान की भले ही भरमार हो, भारत के पास शान्ति की शक्ति है। युवा प्रतिनिधि जादूगर आंचल, राजकुमार मेनारिया, भरत कुमावत, एंथोनी स्कूल की अंजली मलिक, चित्रांजलि डामोर, गुरूगोविन्द सिंह के गजपाल सिंह राव, सेन्ट्रल एकेडमी की चारली पालीवाल आदि ने भी विचार रखे। संचालन डॉ. भूपेन्द्र शर्मा ने किया।



हिरोशिमा विभीषिका की 77वीं बरसी पर शांतिपीठ की ओर से आयोजित कार्यक्रम में मौजूद अतिथि।

तक्षशिला विद्यापीठ संस्थान के निदेशक एवं ग्लोबल हिस्ट्री फोरम के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. जी.एल. मेनारिया ने हिरोशिमा दिवस पर आयोजित संगोष्ठी में कहा कि यह परमाणु तबाही मानवीय इतिहास के सारे रिश्तों पर कालिख भरा पन्ना है, जो पूरी दुनिया में कभी भुलाया नहीं जा सकता है। संवाद में राजस्थान विद्यापीठ के सेवानिवृत्त पुरातत्त्ववेत्ता डॉ. ललित पाण्डे, भीण्डर महाविद्यालय के प्राचार्य इतिहासकार डॉ. जे.के. ओझा, ग्लोबल हिस्ट्री फोरम के सचिव डॉ. अजातशत्रु सिंह शिवरती, राजस्थान विद्यापीठ के सेवानिवृत्त इतिहास विभागाध्यक्ष डॉ. जी.एन. माथुर, तक्षशिला विद्यापीठ की प्राचार्य डॉ. मीनाक्षी मेनारिया, राजस्थान राज्य प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान उदयपुर के डॉ. राजेन्द्रनाथ पुरोहित डॉ. जी.पी. सिंघल इत्यादि ने विचार रखे। संचालन डॉ. नीतू मेनारिया ने किया।

विद्या भवन गांधी शिक्षा अध्ययन संस्थान, रामगिरि में हिरोशिमा दिवस मनाया गया जिसमें वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में संघर्ष एवं शान्ति विषय पर वार्ता रखी गई। महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. भगवती अहीर ने बताया कि मुख्य वक्ता डॉ. विजया दीक्षित विभागाध्यक्ष, राजनीतिविज्ञान, सुविदि ने मानवता को बचाने के लिए भविष्य में इस तरह की घटना का दोहरान न हो, ये एक दु:खद स्मरण है। विशिष्ट अतिथि प्रो. अरूण चतुर्वेदी, विद्या भवन सोसायटी अध्यक्ष अजय मेहत ने भी विचार रखे। संचालन डॉ. निर्मल शर्मा ने किया।

दैनिक भास्कर
उदयपुर, सोमवार, 25 अक्टूबर 2021

वेबिनार : अफगानिस्तान में शांति सेना भिजवाने की जरूरत-वेद प्रताप वैदिक

उदयपुर | संयुक्त राष्ट्र दिवस पर शांतिपीठ की तरफ से संयुक्त राष्ट्र और हमारा भविष्य विषय पर वेबिनार हुआ। कार्यक्रम में वक्ताओं ने कहा कि लीग ऑफ नेशंस की तरह संयुक्त राष्ट्र भी कहीं असफल होने के कगार पर आ जाएं, इसके पहले ही दुनिया के देशों को हालात का अध्ययन कर शांति, सुरक्षा, पारिस्थितिकी एवं समावेशी विकास का नया चार्टर तैयार करते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ को नए स्वरूप में गठित करना चाहिए। मुख्य वक्ता वरिष्ठ पत्रकार डॉ. वेद प्रताप वैदिक ने संयुक्त राष्ट्र से अपील की कि वह अफगानिस्तान में शान्ति सेना भिजवाए, इससे वहां शांति और स्थिरता का वातावरण बने। वहीं पंजाब और सिक्किम सरकार के पूर्व सलाहकार मोहन



सिंह कोठारी ने चिंता कहा कि मानव जाति पर हो नहीं बल्कि सम्पूर्ण पृथ्वी व पारिस्थितिकी के अस्तित्व पर संकट खड़ा है और इससे मुक्ति का मार्ग एक विश्व संगठन ही है, जिसे नए स्वरूप में खड़ा करने की आवश्यकता है। संस्थान संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने विश्व संस्था के रूपांतरण की आवश्यकता प्रतिपादित करते हुए कहा कि 2005 में तत्कालीन संयुक्त राष्ट्र के महासचिव कोफी अन्नान ने अनुशंसा के साथ दुनिया के नेताओं से कहा था कि हम दो राह पर आ चुके हैं। एक रास्ता हिंसा और रक्तरंजित है, जो मनुष्य जाति को खत्म करने की ओर जा रहा है। वहीं दूसरा विकल्प सम्पूर्ण अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था के 'आर्किटेक्चर' की समीक्षा करते हुए 21वीं शताब्दी के अनुसार प्रभावी नूतन संगठन की जो विश्व का संचालन कर सकें। अध्यक्षता करते हुए पायरोटेक इंटरनेशनल और संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ. पी एस तलेसरा ने अस्त्रों की अंधी दौड़ पर अंकुश लगाने की आवश्यकता बताई। पर्यावरणविद् जीपी सोनी और डॉ. भूपेंद्र शर्मा ने भी संबोधित किया।

राजस्थान पत्रिका patrika.com
उदयपुर, सोमवार, 25 अक्टूबर, 2021

अफगानिस्तान में भिजवाई जाए शांति सेना



उदयपुर. संयुक्त राष्ट्र दिवस के अवसर पर शांतिपीठ के तत्वावधान में संयुक्त राष्ट्र और हमारा भविष्य विषयक वेबिनार रविवार को आयोजित किया गया। प्रमुख वक्ता के रूप में बोलते हुए वरिष्ठ पत्रकार डॉ. वेद प्रताप वैदिक ने संयुक्त राष्ट्र से अपील की कि वह अफगानिस्तान में शान्ति सेना भिजवाए जिससे वहां शान्ति और स्थिरता का वातावरण बन पाए और बाद में लोकतांत्रिक ढंग से चुनी गई सरकार शासन करे। पंजाब व सिक्किम सरकार के पूर्व सलाहकार मोहन सिंह कोठारी ने चिंता जताते हुए कहा कि मानव जाति पर ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण पृथ्वी व पारिस्थितिकी के अस्तित्व पर संकट खड़ा है और इससे मुक्ति का मार्ग एक विश्व संगठन ही है जिसे नए स्वरूप में खड़ा करने की आवश्यकता है। संस्थान के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कोफी अन्नान की कही बात कहते हुए कहा कि 21 वीं शताब्दी के अनुरूप प्रभावी नूतन संगठन की आवश्यकता है जो विश्व का संचालन कर सके। इस दिशा में भारत को पहल करनी चाहिए चूंकि भारत के पास अहिंसा और सत्याग्रह का एक लम्बा इतिहास है। इस मौके पर डॉ पीएस तलेसरा, जीपी सोनी, डॉ. भूपेंद्र शर्मा ने भी विचार रखे।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर
सोमवार, 25 अक्टूबर 2021

'दुनिया को शांति, सुरक्षा एवं समावेशी विकास का नया चार्टर तैयार करना चाहि

संयुक्त राष्ट्र दिवस पर हुए कई कार्यक्रम

उदयपुर। शांतिपीठ के तत्वावधान में संयुक्त राष्ट्र दिवस के अवसर पर 'संयुक्त राष्ट्र और हमारा भविष्य' विषयक वेबिनार हुआ। वक्ताओं ने कहा कि लीग ऑफ नेशन्स की तरह संयुक्त राष्ट्र भी कहीं असफल होने के कगार पर आ जाए। इसके पूर्व ही दुनिया के देशों को हालात का अध्ययन कर शांति, सुरक्षा, पारिस्थितिकी एवं समावेशी विकास का नया चार्टर तैयार करते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ को नए स्वरूप में गठित किया जाना चाहिए। प्रमुख वक्ता डॉ वेद प्रताप वैदिक ने संयुक्त राष्ट्र से अपील की कि वह अफगानिस्तान में शांति सेना भिजवाए। पंजाब व सिक्किम सरकार के पूर्व सलाहकार मोहन सिंह कोठारी ने चिंता जताते हुए कहा कि मानव जाति पर ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण पृथ्वी व पारिस्थितिकी के अस्तित्व पर संक है। इस मौके पर संस्थान के संस्थापक गणेश त्रिवेदी, पायरोटेक इंटरनेशनल व के कार्यकारी अध्यक्ष डॉ पीएस त पर्यावरणविद् जीपी सोनी, डॉ भूपेंद्र भी विचार व्यक्त किए। भूपाल बिश्वविद्यालय द्वारा संयुक्त राष्ट्र के दिवस पर गुगल मीट का आयोज गया। वेबिनार के समन्वयक एफओएसएसएच, अंग्रेजी विभ एसोसिएट प्रोफेसर डॉ जयश्री सिंह ने कि मुख्य अतिथि डॉ सहदेव सिंह सचिव, न्याय विभाग, ई-कोर्ट, न्य अध्यक्ष और विशिष्ट अतिथि - प्रो. स टोलोन अजजारिटी, नागरिक ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय और ब्यूनस रहे। उन्होंने निजी कानून में मानव : संरचना और कार्यप्रणाली विषय प विचार रखे।

दैनिक भास्कर उदयपुर, बुधवार 06 अक्टूबर, 2021

'वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ग्राम स्वराज' पर वेबिनार

उदयपुर| गांव एक सांस्कृतिक अवधारणा है, जो सभी को जोड़ती है। गांधी का ग्राम स्वराज 'ग्लोबल विलेज' का पूरक है। जरूरत है गांवों को स्व-सक्षम और शिक्षा स्वास्थ्य एवं रोजगार जैसी समुचित व्यवस्थाओं में आत्मनिर्भर बनाने की। ये विचार मंगलवार को शांतिपीठ संस्थान व जेआरएन राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय की मेजबानी में हुए 'वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ग्राम स्वराज' राष्ट्रीय वेबिनार में वक्ताओं ने व्यक्त किए। मुख्य वक्ता पूर्व अध्यक्ष राजस्थान लोक सेवा आयोग प्रो. बीएम शर्मा ने ग्राम स्वराज व ग्लोबल विलेज को पूरक बताते हुए कहा कि स्थानीय ग्राम पंचायत सच्चे लोकतंत्र की प्रथम मौलिक इकाई है, जिसके आधार पर ही पूर्ण प्रजातंत्र विकसित होता है। जहां चुनावों का कोई महत्व नहीं है, किंतु इससे उलट जो आज हम देख रहे हैं, वह चिंतनीय है। संस्थापक महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी ने स्वागत एवं विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि समावेशी विकास को अपनाने की दुनिया में जरूरत महसूस की जा रही है, किंतु स्थितियां नियंत्रण के बाहर हो चुकी हैं।

राजस्थान पत्रिका patrika.com
उदयपुर, बुधवार, 06 अक्टूबर, 2021

वेबिनार आयोजित

उदयपुर. शान्तिपीठ संस्थान व जेआरएन राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय की ओर से 'वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ग्राम स्वराज' विषयक राष्ट्रीय वेबिनार आयोजित किया गया। मुख्य वक्ता महात्मा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ गवर्नेंस एण्ड सोश्यल साइंसेज के निदेशक प्रो. बी.एम. शर्मा ने कहा कि स्थानीय ग्राम पंचायत सच्चे लोकतंत्र की प्रथम मौलिक इकाई है। गांधीवादी चिंतक राजेन्द्र मोहन शर्मा ने कहा कि स्वराज के सच्चे अर्थों में खादी का पहनावा आजादी का अर्थात स्वराज का पहनावा है जो स्वावलम्बन का ही द्योतक है। विद्यापीठ के कुलपति प्रो. शिवसिंह सारंगदेवोत ने कहा कि आत्मबल से ही स्वराज की कल्पना सिद्ध हो सकती है। संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी, सुविवि के संस्कृत विभागध्यक्ष प्रो. नीरज शर्मा, चिंतक मोहन सिंह कोठारी, विद्यापीठ के पूर्व कुलपति प्रो. बी.आर.भटनागर, प्रो. के.बी.जोशी, एडवोकेट भरत कुमावत आदि ने भी विचार रखे।

राजस्थान पत्रिका patrika.c
उदयपुर, बुधवार, 22 सितम्बर, 2021

संयुक्त राष्ट्र व सुरक्षा परिषद राष्ट्रों के वैमनस्य को करे नियंत्रित



संगोष्ठी में मंचासीन अतिथि। पत्रिका

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

उदयपुर. अंतरराष्ट्रीय शान्ति दिवस के अवसर पर शान्तिपीठ द्वारा 'समावेशी व समतापूर्ण समुन्नत विश्व समाज के निर्माण की दिशा का सशक्तिकरण' विषयक संगोष्ठी हुई। अध्यक्षता महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. उमाशंकर शर्मा ने की। प्रमुख वक्ता के रूप में बोलते हुए चिंतक मोहन सिंह कोठारी ने संयुक्त राष्ट्र व सुरक्षा परिषद द्वारा राष्ट्रों के वैमनस्य को नियंत्रित करने के पुख्ता उपाय करने की आवश्यकता बताई। सुमति लाल बोहरा ने स्वयं को जागृत करने व जिम्मेदारी निभाने की आवश्यकता प्रतिपादित की। संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि शान्ति के लिए सभी को सुखी देखने का भाव जागृत करना परम आवश्यक है - अशांतस्य कुतः सुखम। समावेशी व समतापूर्ण विश्व निर्माण का उद्देश्य मूल्य परक जीवन शैली को बगैर अपनाए सम्भव नहीं हो सकता। इस मौके पर एसके श्रीमाली, कैलाश पालीवाल, गिरधारी कुमावत, भानू प्रताप सिंह कृष्णावत, मोहम्मद रफीक, डॉ. कमल सिंह राठौड़ आदि ने विचार रखे। संचालन भरत कुमावत ने किया।

दैनिक भास्कर
उदयपुर, बुधवार, 22 सितंबर 2021 | 2

विश्व शांति दिवस • संगोष्ठी में बोले वक्ता

खुशहाली का भाव जगाने से ही आएगी वैश्विक शांति-समृद्धि

उदयपुर | विश्व शांति दिवस पर मंगलवार को समावेशी और समतापूर्ण समुन्नत समाज निर्माण की दिशा का सशक्तिकरण विषयक संगोष्ठी हुई। अध्यक्षता एमपीयूएटी के पूर्व कुलपति डॉ. उमाशंकर शर्मा ने की। चिंतक मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि वैश्विक तनाव काल में विश्व शान्ति दिवस की महत्ता बढ़ जाती है। संस्थान के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि शांति के लिए खुशहाली का भाव का जागरण जरूरी है। पूर्व जिला कलेक्टर सुमति लाल बोहरा, पूर्व अतिरिक्त मुख्य नगर नियोजक एसके श्रीमाली, डॉ. कमल सिंह राठौड़ आदि मौजूद रहे। इधर, सुविवि में शिक्षा विभाग में आनंदम कार्यक्रम हुआ। संकाय सदस्यों और विद्यार्थियों ने शांति पाठ किया। मुख्य अतिथि कुलपति प्रो अमेरिका सिंह ने वर्तमान तनावपूर्ण जीवनशैली के लिए शांति स्थापना की जरूरी बताया। विशिष्ट अतिथि प्रो सीआर सुथार, अल्पना सिंह थे। इधर सेवार्थ योग, आयुर्वेद एवं यज्ञ संस्थान की ओर से डॉ. भूपेन्द्र शर्मा ने शान्ति यज्ञ किया गया। महामंत्री प्रीतम सिंह चूंडावत ने शान्ति-बंधुत्व की शपथ दिलवाई। ब्राह्मण हिंदुत्व शक्ति मोच के कार्यक्रम में प्रदेश सचिव जिग्नेश शर्मा, योगाचार्य मनिता शर्मा, संस्का सचिव भूपेंद्र शर्मा, सुनीता शर्मा जिला अध्यक्ष उमेश चंद्र श्रीमाली सज्जन श्रीमाली ने शांति यज्ञ किया।

'बगैर विश्वास, त्याग और प्रेम के विश्व समाज की एकता मुश्किल'

शांतिपीठ द्वारा संगोष्ठी का आयोजन

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, बुधवार, 22 सितम्बर 2021

ब्यूरो/नवज्योति, उदयपुर।

शक्ति संतुलन के सूत्रों के चलते युद्ध न भी हो तो भी स्वार्थी जीवन जीने के अंदाज में बदलाव न आया तो भी विश्व समाज का अस्तित्व संदिग्ध बना रहेगा। बगैर विश्वास, त्याग और प्रेम के विश्व समाज की एकता के स्वप्न साकार नहीं हो सकते। जरूरत है जनता जनार्दन की आवाज को शक्तिशाली बनाया जाए जिससे महाशक्ति संपन्न राष्ट्रों के साथ ही दुनिया भर के राष्ट्र उसे सुन पाएं। ये विचार अंतरराष्ट्रीय शांति दिवस के अवसर पर शांतिपीठ द्वारा समावेशी व समतापूर्ण समुन्नत विश्व समाज के निर्माण की दिशा का सशक्तिकरण विषयक आयोजित संगोष्ठी में व्यक्त किए गए।

अध्यक्षता महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. उमाशंकर शर्मा ने की। प्रमुख वक्ता चिंतक मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि विश्व में राष्ट्रों के अंदर और राष्ट्रों के बीच गुणन संख्या में बढ़ते तनाव और संकटकाल में विश्व शांति दिवस जैसे प्रासंगिक संदर्भों की महत्ता अधिक बढ़ जाती है। पूर्व जिला कलेक्टर सुमति लाल बोहरा ने स्वयं को जागृत करने व जिम्मेदारी निभाने की आवश्यकता प्रतिपादित की।

संस्थान के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि शांति के लिए सभी को सुखी देखने का भाव जागृत करना परम आवश्यक है। पूर्व अतिरिक्त मुख्य नगर नियोजक एसके श्रीमाली ने अपने स्वयं के स्वार्थों को नियंत्रित करने पर बल दिया। बीएन विश्वविद्यालय के डॉ. कमल सिंह राठौड़ ने राम और कृष्ण को आदर्श बताते हुए शांति के लिए शौर्य की आवश्यकता बताई। जादूगर आंचल ने कहा कि नए भारत के निर्माण के लिए युवाओं की सोच में बदलाव लाना होगा। अंतरराष्ट्रीय एथलेटिक कैलाश पालीवाल, गिरधारी कुमावत, भानू प्रताप सिंह कृष्णावत, मोहम्मद रफीक आदि ने विचार व्यक्त किए।

राजस्थान पत्रिका patrika.com
उदयपुर, शुक्रवार, 13 अगस्त, 2021

विश्व एवं मानव के लिए युवाओं का नवाचार विषयक संवाद

'खाने-पीने के परंपरागत तरीकों की ओर फिर लौटना होगा'

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

उदयपुर. शान्तिपीठ के तत्वावधान में अन्तरराष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर 'आहार व्यवस्थाओं में आमूल परिवर्तनः विश्व एवं मानव के लिए युवाओं का नवाचार' विषयक संवाद कार्यक्रम हुआ।

इसमें भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एन.बी.सिंह ने कहा कि दुनिया के वर्तमान हालात ने हमें खाने-पीने की परम्परागत आचार संहिता की ओर पुनः लौटने के लिए प्रेरित किया है, वक्त रहते अगर हमने प्रकृति के संकेतों को समझ लिया तो ही हम आने वाली गंभीर समस्याओं की संभावनाओं से सुरक्षित रह पाएंगे। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र संघ को विश्व में मानव मात्र के लिए खाने की व्यवस्थाओं में बदलाव लाने के लिए युवाओं से नवाचार अपनाये जाने का आह्वान करना पड़ा है। युवाओं को प्राकृतिक विरासत के संरक्षण के लिए संवेदनशील होना होगा।



शांतिपीठ के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में मौजूद अतिथि। पत्रिका

विशिष्ट अतिथि पूर्व जिला कलक्टर सुमति लाल बोहरा, आलोक संस्थान के निदेशक डॉ. प्रदीप कुमावत, जादूगर आंचल, कविराज श्रेणीदान चारण पूर्व अतिरिक्त नगर नियोजक सतीश श्रीमाली, नेहरू युवा केन्द्र के राज्य निदेशक श्याम सिंह राजपुरोहित आदि ने भी विचार रखे।

प्रातःकाल
उदयपुर, शुक्रवार 13 अगस्त, 2021

शांतिपीठ में संवाद कार्यक्रम



उदयपुर (वि.)। दुनिया के वर्तमान हालात ने हमें खाने-पीने की परम्परागत आचार संहिता की ओर पुन: लौटने के लिए प्रेरित किया है, वक्त रहते अगर हमने प्रकृति के संकेतों को समझ लिया तो ही हम आने वाली गंभीर समस्याओं की संभावनाओं से सुरक्षित रह पावेंगे। उक्त बात आज शान्तिपीठ के तत्वावधान में अन्तरर्राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर ''आहार व्यवस्थाओं में आमूल परिवर्तन: विश्व एवं मानव के लिए युवाओं का नवाचार'' विषयक संवाद कार्यक्रम में अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए भूपाल नोबल्स विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एन.बी.सिंह ने कही। उन्होंने कहा आज भारत ने अनाज उत्पादन में बेतहासा प्रगति की है तथा दूध उत्पादन में दुनिया में पहला नम्बर का स्थान अर्जित होने के बावजूद हम कूपोषण के शिकार हैं, खासतौर से पांच वर्ष की उम्र के बच्चों में 40 प्रतिशत और 51 प्रतिशत महिलाएँ कुपोषित है। प्रो. सिंह ने मेवाड़ संभाग की जैव विविधता और प्राकृतिक विरासत को संरक्षित किये जाने के ठोस प्रयासों की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा कि हालात बदतर हो जाने से पहले ही स्थिति को संभाल लेना चाहिए। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने संयुक्त राष्ट्र द्वारा घोषित 'थीम' का स्थानीय और वैश्विक स्तर पर विश्लेषण करते हुए कहा कि हालात का जायजा लेकर संयुक्त राष्ट्र संघ को विश्व में मानव मात्र के लिए खाने की व्यवस्थाओं में बदलाव लाने के लिए युवाओं से नवाचार अपनाये जाने का आह्वान करना पड़ा है। विशिष्ट अतिथि पूर्व जिला कलक्टर सुमति लाल बोहरा थे। आलोक संस्थान के निदेशक डॉ. प्रदीप कुमावत ने चिंता व्यक्त की कि पहाड़ियों के कटने से हमारा नैसर्गिक सौन्दर्य खत्म होता जा रहा है। उन्होंने कहा हमारे संभाग में करीब 200 छोटी-बड़ी झीलें हैं, जिनका संरक्षण प्राथमिकता से किया जाना चाहिए। दूध तलाई से झील के पार पहाड़ियों के नैसर्गिक नजारों के बीच बहुमंजिला होटलों का नवनिर्माण नई चुनौतियाँ खड़ी कर रहा है। जादूगर आंचल ने कहा जो युग का वाहक बने वह युवा है। कवि श्रेणीदान चारण ने वतन की शान और राष्ट्रीय गौरव पर कविताएँ सुनाकर उपस्थित सभी युवाओं का मनोबल ऊँचा उठाया। पूर्व अतिरिक्त नगर नियोजक सतीश श्रीमाली, नेहरू युवा केन्द्र के राज्य निदेशक श्याम सिंह राजपुरोहित 'साइकोमेट्रीश्यन एवं काउंसलर' रणजीत सिंह राणावत, नेहा कुमावत, राज कुमावत आदि ने भी विचार व्यक्त किये।

विश्व युवा दिवस • संस्थाओं ने देश के विकास में युवाओं की भूमिका पर की चर्चा

हम दूध उत्पादन में दुनिया में नंबर वन, फिर भी देश में 5 वर्ष तक के 40 प्रतिशत बच्चे कुपोषित : प्रो. सिंह

कम्युनिटी रिपोर्टर | उदयपुर

विश्व युवा दिवस पर शांति पीठ की ओर से गुरुवार को कार्यक्रम हुआ। जिसमें 'आहार व्यवस्थाओं में आमूल परिवर्तन विश्व एवं मानव के लिए युवाओं का नवाचार' विषय पर व्याख्यान हुआ। विश्व में फैली महामारी सहित वैश्विक समस्याओं पर चिंता व्यक्त करते हुए युवाओं की भूमिका पर जोर दिया गया।

अध्यक्षीय उद्बोधन बीएन यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. एनबी सिंह ने दिया। उन्होंने कहा कि आज देश ने अनाज उत्पादन में अच्छी प्रगति की है। दूध उत्पादन में भी दुनिया में पहला नम्बर हासिल किया है। बावजूद इसके देश कुपोषण की समस्या का शिकार है। खासतौर से पांच वर्ष की उम्र के बच्चों में 40 प्रतिशत कुपोषित हैं। प्रो. सिंह ने कहा कि मेवाड़ संभाग की जैव विविधता और प्राकृतिक विरासत को संरक्षित करने के लिए ठोस प्रयासों की आवश्यकता है। शांतिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र संघ को विश्व में खाने की व्यवस्थाओं में बदलाव लाने के लिए युवाओं से नवाचार अपनाए जाने का आह्वान करना पड़ा है। दुर्भाग्य से हमने अविश्वास, भेदभाव और आंतक को बोया। असली फसलों को रासायनिक खाद देकर पैदा किया, इसका दुष्परिणाम है कि हमें 2019 की त्रासदी झेलनी पड़ी। महामारी के संकट को झेलने के बाद यह जरूरी है कि युवा प्राकृतिक विरासत के संरक्षण के लिए संवेदनशील हों। इसके लिए समयबद्ध कार्यक्रम सुनिश्चित करना पड़ेगा।

ग्लोबल वार्मिंग नई शताब्दी की बड़ी चुनौती : बोहरा



शांति पीठ के कार्यक्रम में पूर्व जिला कलेक्टर सुमति लाल बोहरा ने ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन पर भी गंभीर चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि युवाओं को इसे नई शताब्दी की सबसे बड़ी चुनौती के रूप में लेने की जरूरत है। साथ ही इसका डटकर मुकाबला करें। डॉ. प्रदीप कुमावत ने चिंता व्यक्त कहा कि संभाग में करीब 200 छोटी-बड़ी झीलें हैं। जिनका संरक्षण प्राथमिकता से किया जाना चाहिए। इस दौरान कविराज श्रेणीदान चारण, पूर्व अतिरिक्त नगर नियोजक सतीश श्रीमाली, नेहरू युवा केन्द्र के राज्य निदेशक श्याम सिंह राजपुरोहित, नेहा कुमावत, राज कुमावत आदि ने भी विचार व्यक्त किए। इस दौरान जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी के पूर्व मुख्य अभियंता निर्मल चितौड़ा, एडवोकेट उमेश शर्मा, जितेन्द्र कुमावत, कैलाश पालीवाल, एडवोकेट भरत कुमावत मौजूद रहे।

देश में 65 प्रतिशत युवा, यही तय करेंगे भविष्य



साहित्य संस्थान की विश्व युवा चेतना और मानव कर्तव्य विषय पर संगोष्ठी गुरुवार को हुई। इसमें राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय कुलपति प्रो. एसएस सारंगदेवोत ने कहा कि आज हमारे देश में 65 प्रतिशत युवा है जो देश का भविष्य तय कर सकते हैं। भारतीय चरित्र निर्माण संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष कृष्णगोपाल गोस्वामी ने कहा कि आज के दिन का मकसद युवाओं की योग्यता के अनुरूप शिक्षा व रोजगार मुहैया कराना है। डॉ. कुल शेखर व्यास, डॉ. महेश आमेटा द्वारा समकालीन हिन्दी पुस्तक का विमोचन भी किया गया। डॉ. नारायण पालीवाल, रीना मेनारिया आदि मौजूद थे।

दैनिक भास्कर उदयपुर, शनिवार 07 अगस्त, 2021

हिरोशिमा त्रासदी दिवस • शांतिपीठ के कार्यक्रम में शहर के प्रबुद्धजन ने रखी राय

जैविक और रासायनिक हथियार मानवता के लिए खतरा, सभी को समझनी होगी गंभीरता

कम्युनिटी रिपोर्टर | उदयपुर





हिरोशिमा डे पर कार्यक्रम में मौजूद अतिथि (बाएं) व दुखांतिका के मृतकों को श्रद्धांजलि देते शहरवासी।

हिरोशिमा दुखांतिका की 76वीं वार्षिकी पर शुक्रवार को शांतिपीठ परिसर में शांति सभा हुई। इसमें 12 विद्यालयों-महाविद्यालयों के छात्रों ने भाग लिया। सभी ने शांति एवं आणविक निशस्त्रीकरण के संकल्पों की प्रतिज्ञा करते हुए पर्यावरण एवं विरासत संरक्षण, विश्व बंधुत्व एवं मानवीय मूल्यों के उन्नयन के लिए प्रतिबद्धता जताई।

मुख्य अतिथि महापौर जीएस टांक ने विश्व पर आणविक युद्ध के संकट पर चिंता जताते हुए कहा कि एक की गलती सारे जहां के लिए दुखदायी हो सकती है। जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. एसएस सारंगदेवोत ने कहा कि विचारों की शुद्धि के लिए हृदय परिवर्तन आवश्यक है। इसके बिना वातावरण को सकारात्मक दिशा में नहीं बदला जा सकता। संयुक्त राष्ट्र में 1975 में जैविक हथियारों पर प्रतिबंध के लिए महज 25 देशों ने सहमति जताई थी, लेकिन आज 183 देशों की सहमति के बाद भी हालात चिंताजनक हैं। शांतिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि शांति के द्वार कभी बंद नहीं हो सकते। जो लोग शांति के मार्ग पर आधिपत्य जताना चाहते हैं उनके नापाक इरादे कभी सफल नहीं हो सकते। हिरोशिमा त्रासदी न्यूक्लियर हथियारों से मुक्त होने का संदेश है। यदि हम बदलाव को तैयार नहीं हुए, तो हालात हमें बदलने को बाध्य कर देंगे। इसका सबसे बड़ा उदाहरण कोविड-19 महामारी है। जरूरत है विश्व समाज को अहिंसा और सत्याग्रह से संस्कारित किए जाने की। संचालन करते हुए डॉ. भूपेन्द्र शर्मा ने कहा- जो शक्तियां चेतावनी दे रही हैं, हमारा संदेश उन तक भी पहुंचना चाहिए। सभा में मौजूद सभी लोगों ने खड़े होकर हिरोशिमा त्रासदी और कोविड-19 में दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए दो मिनट का मौन रखकर प्रार्थना की।

विचारों की शुद्धि के लिए हृदय परिवर्तन जरूरी

हिरोशिमा दुखंतिका पर शांति सभा

उदयपुर। हिरोशिमा दुखान्तिका की 76वीं बरसी पर शान्तिपीठ के तत्वावधान मेंशुक्रवार को पीठ परिसर में शान्ति सभा हुई जिसमें नगर के कई सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के छात्र-छात्राएं सम्मिलित हुए। संभागियों ने शान्ति एवं आणविक निःशस्त्रीकरण के संकल्पों की प्रतिज्ञा लेते हुए पर्यावरण एवं विरासत संरक्षण, विश्व बंधुत्व एवं मानवीय मूल्यों के उन्नयन के लिए अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. शिवसिंह सारंगदेवोत ने वैदिक संस्कृति के हवाले से कहा कि विचारों की शुद्धि के लिए हृदय परिवर्तन आवश्यक है। विचारशुद्धि के बिना वातावरण को सकारात्मक दिशा में नहीं बदला जा सकता। उन्होंने जैविक एवं रासायनिक हथियारों पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि यूएनओ में 1975 में जैविक हथियारों पर प्रतिबंध के लिए मात्र 25 देश सहमत थे, किन्तु आज 183 देशों की सहमति के बावजूद हालात चिन्ता जनक हैं। मुख्य अतिथि महापौर गोविन्द सिंह टांक ने विश्व पर आणविक युद्ध के आसन्न संकट पर चिंता करते हुए कहा कि किसी एक की गलती सारे जहां के लिए दुःखदायी हो सकती है। उन्होंने समय रहते इस चेतावनी को गंभीरता से लेते हुए इंसानियत के रास्ते पर चलने का आह्वान किया।

हिंसा की पराकाष्ठा थी हिरोशिमा त्रासदी: विद्या भवन गांधी शिक्षा अध्ययन संस्थान में हिरोशिमा दिवस के उपलक्ष्य में वैश्विक शांति के नए आयाम विषयक वार्ता हुई। मुख्यवक्ता वर्धमान महावीर कोटा खुला विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. नरेश दाधीच ने कहा कि हिंसा की पराकाष्ठा थी हिरोशिमा त्रासदी। युद्ध हमेशा शांति स्थापित करने के लिए होता है। विश्व में शक्तियों का संतुलन होगा, तभी शांति होगी। मनुष्य एवं मानवता का ध्यान रखना बहुत जरूरी है। दूसरे विश्व युद्ध के बाद शांति की अवधारणा को समझने में बहुत अंतर आया है। हमारे मस्तिष्क चेतना एवं विचारों में निरंतर परिवर्तन होता है। शांति भी स्थिर नहीं है। शांति को पैदा नहीं किया जा सकता है। शांति एक साधन है, साध्य नहीं। शांति तक पहुंचने का कोई रास्ता नहीं है। शांति स्वयं एक रास्ता है। शक्तियों में संतुलन के के लिए भय दिखाना बहुत जरूरी है। उन्होंने सिकंदर का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कहा कि हमें प्रकृति के साथ जीना है और प्रकृति पर नियंत्रण करके नहीं। धन्यवाद डॉ. कंवराज सुथार ने ज्ञापित किया।

दैनिक भास्कर
उदयपुर, शुक्रवार, 6 अगस्त, 2021

हिरोशिमा-डे की पूर्व संध्या पर शांतिपीठ में वेबिनार का आयोजन

हिरोशिमा के मेयर मात्सुई काजूमी ने हिरोशिमा के बाद कोविड-19 को बताया वैश्विक त्रासदी



उदयपुर | हिरोशिमा-डे की पूर्व संध्या पर शांतिपीठ की ओर से वेबिनार हुआ। 'हिरोशिमा से कोविड-19 : विश्व शांति के लिए महान सीख और मार्गदर्शक' विषय वेबिनार पर कई वक्ताओं ने विचार व्यक्त किए। दरअसल, 6 अगस्त को हर वर्ष हिरोशिमा दिवस मनाया जाता है।

इस दिन सन् 1945 में द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अमेरिका ने जापान के हिरोशिमा नगर पर 'लिटिल बॉय' नामक यूरेनियम बम गिराया था। इसके प्रभाव से काफी तबाही मची थी। इसके बाद से ही इस दिन विश्व शांति के उद्देश्य से यह दिवस मनाया जाता है। खास बात यह रही कि कार्यक्रम में अंतर्राष्ट्रीय संगठन 'मेयर्स फॉर पीस' के अध्यक्ष और हिरोशिमा के मेयर मात्सुई काजूमी ने भी पत्र के जरिए विचार भेजे। उन्होंने कहा कि संपन्न राष्ट्रों ने आगे बढ़ने की होड़ में विश्व में असंतोष और दूरियों को बढ़ावा दिया है। इन्होंने शांति की अपीलें नजरअंदाज करते हुए स्थितियों को ज्यादा खतरनाक बना दिया है। जिसके चलते कोविड-19 भी झेलना पड़ा। ऐसे प्रतिकूल माहौल में भी मानव समाज ने एकजुट होते हुए वैश्विक समस्या का सामना करने का प्रमाण दिया। 76वीं हिरोशिमा त्रासदी दिवस की पूर्व संध्या पर प्रमुख वक्ता और दर्शन शास्त्र के विशेषज्ञ प्रो. एसआर व्यास ने कहा कि हिरोशिमा जहां वैश्विक संहार का शक्ति प्रदर्शन था, वहीं कोविड-19 विस्फोट वैश्विक संहार का 'अदृश्य' दस्तावेज है। दोनों में मनुष्य के खोखले दम और गैर जिम्मेदारी का एक ही सामान्य सूत्र है। उसनास फाउंडेशन के सीईओ डॉ. अभिनव पण्ड्या ने भी इस पर चिंता जताई। उन्होंने कहा कि संयुक्त राष्ट्र संघ के कमजोर होने से चिंताएं बढ़ी हैं। शांतिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि आइंसटाइन जैसे महान वैज्ञानिकों ने घोषणा की थी कि 'हमारे सामने ज्ञान, विज्ञान और खुशहाली की ओर बढ़ने के लिए खुला मार्ग हैं। मोहनसिंह कोठारी ने भी विचार रखे।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, शुक्रवार, 6 अगस्त 2021

हिरोशिमा व कोविड वैश्विक संहार का अदृश्य दस्तावेज



ब्यूरो नवज्योति, उदयपुर। हिरोशिमा जहां वैश्विक संहार का आणविक शक्ति प्रदर्शन था, वहीं कोविड-19 विस्फोट वैश्विक संहार का अदृश्य दस्तावेज है।

ये विचार हिरोशिमा त्रासदी की 76वीं वार्षिकी की पूर्व संध्या पर शान्तिपीठ के तत्वाधान में हिरोशिमा से कोविड-19 : विश्व शान्ति के लिए महान सीख और मार्ग दर्शक विषयक वेबीनार बोलते हुए कई वक्ताओं ने व्यक्त किए। प्रमुख वक्ता दर्शन शास्त्र के प्रो. एसआर व्यास ने कहा कि हिरोशिमा से कोविड-19 तक की वैश्विक त्रासदी, मानवता की वैश्विक गैर जिम्मेदारी का व्यापकतम उदाहरण है। अंतरराष्ट्रीय संगठन मेयर्स फॉर पीस के अध्यक्ष एवं हिरोशिमा के मेयर मात्सुई काजूमी ने भी विचार व्यक्त किए। प्रमुख वक्ता उसनास फाउण्डेशन के सीईओ डॉ. अभिनव पण्ड्या ने संयुक्त राष्ट्र संघ के कमजोर होने पर चिन्ता व्यक्त करते हुए कहा कि कोविड-19 ने मानवाधिकारों की चुनौतियां बढ़ा दी हैं, लोकतंत्र को दबाया जा रहा है और आंतकवाद के कारण मानवता पर संकट बढ़ा है।

शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि महामारी और महा त्रासदी से सबक लेने में जितनी देरी होती जाएगी मानवता पर संकट बढ़ता जाएगा। अध्यक्षता चिंतक मोहन सिंह कोठारी ने की। राजकोट विद्यापीठ, गांधीनगर की डॉ. अर्चना भट्ट ने भी संबोधित किया। संचालन डॉ. भूपेन्द्र शर्मा ने किया।

राजस्थान पत्रिका patrika.com
उदयपुर, शुक्रवार, 06 अगस्त, 2021

'हिरोशिमा से कोविड-19 विश्व शान्ति के लि महान सीख और मार्ग दर्शक'

उदयपुर. हिरोशिमा त्रासदी की 76वीं वार्षिकी की पूर्व संध्या पर शान्तिपीठ के तत्वाधान में 'हिरोशिमा से कोविड-19 विश्व शान्ति के लिए महान सीख और मार्ग दर्शक' विषयक संगोष्ठी आयोजित हुई। प्रमुख वक्ता प्रो. एस. आर. व्यास ने कहा कि हिरोशिमा से कोविड-19 तक की वैश्विक त्रासदी, मानवता की वैश्विक गैर जिम्मेदारी का व्यापकतम उदाहरण है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने क महामारी और महा त्रासदी से लेने में जितनी देरी होती मानवता पर संकट बढ़ता चिंतक मोहन सिंह कोठारी ने हिरोशिमा हो या वर्तमान क अटैक ' यह विज्ञान का दुरूप उन्होनें कहा यदि मानव भूमण्डल पर बचाना है तो और विज्ञान को साथ चलन संचालन डॉ. भूपेन्द्र शर्मा ने

दैनिक भास्कर, उदयपुर, शनिवार, 11 दिसंबर, 2021

मानवाधिकार आयोगों की शक्तियां सीमित, सिर्फ सुझाव का हक : झाला



उदयपुर | मानवीय संवेदना, प्रेम और कर्तव्यनिष्ठा के रास्ते पर चलकर ही मानवाधिकारों की रक्षा संभव है। अधिकार ग्रहण की लालसा ने सत्ताओं को निरंकुश बना दिया है। ये विचार शुक्रवार को विश्व मानवाधिकार दिवस के अवसर पर शान्तिपीठ संस्थान की मेजबानी में पीठ परिसर में हुए संवाद कार्यक्रम में वक्ताओं ने व्यक्त किए। अध्यक्षता करते हुए उच्च न्यायालय जोधपुर के पूर्व न्यायाधीश रामचन्द्र सिंह झाला ने मानवाधिकारों की संवैधानिक स्थिति की विवेचना करते हुए कहा- मानवाधिकार आयोगों की शक्तियां सीमित हैं। यह मात्र रिपोर्ट एवं सुझाव पेश कर सकती हैं। मानवाधिकारों की अदालतें जिला स्तर पर बननी चाहिए और यहां तक की तहसील स्तर पर भी समितियां बननी चाहिए, जिससे गरीब एवं ग्रामीण जनता को अधिकारों व उपचारों की व्यापक जानकारी मिल सके। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने बढ़ती सामाजिक असुरक्षा और संकुचित सोच को भविष्य के लिए संकटपूर्ण बताते हुए कहा कि अधिकारों के अधिग्रहण की दौड़ में मानवीय मूल्य गौण हो चुके हैं। अंतरराष्ट्रीय मामलों के विशेषज्ञ डॉ. बीआर कुमार ने कहा कि वैश्विक स्तर पर भी मानव अधिकार मात्र घोषणा ही है, इनका कानूनी पक्ष अत्यंत लचर है।

मनोरम हुआ शहर

राजस्थान पत्रिका .उदयपुर . 07.08.2015



गत सप्ताह शहर में हुई बरसात से शहर की झीलें लबालब हो गईं हैं। अरावली उपत्यकाएं हरितिमा की चादर ओढ़े पर्यटकों को चारों दिशाओं से लुभाती दिखाई दे रही हैं। यूं भले ही कुछ दिनों से आसमान में छाए बादल मुंह चिढ़ाकर बिन बरसे ही लुप्त होकर उमस बढ़ा रहे हैं,लेकिन वातावरण में घुला सावन का सुरूर हर किसी को मदहोश कर रहा है।

राकेश शर्मा राजदीप

हिरोशिमा दुखान्तिका पर शांति मार्च

उदयपुर. हिरोशिमा दुखान्तिका की वर्षगांठ पर 6 अगस्त को शान्तिपीठ द्वारा नगर में शान्ति मार्च एवं सभा का आयोजन किया जाएगा। इसमें कई शिक्षण संस्थाओं के छात्र एवं शिक्षक सम्मिलित होंगे। छात्र अपनी संस्थाओं से रैली के रूप में राजकीय गुरु गोविन्द सिंह स्कूल के सभागार में पहुंचेंगे। गुमानिया वाला स्थित शान्तिपीठ संस्थान से प्रमुख रैली सुबह 9.10 बजे रवाना होगी, जिसमें आसपास के विद्यालयों के छात्र-छात्राएं सम्मिलित होंगे। शान्ति सभा की अध्यक्षता महापौर करेंगे। 6-8-2015 पृ

हिरोशिमा दिवस पर हुई सभा व निकाली रैली : विद्यार्थियों ने लिया विश्व शांति का संकल्प

आणविक आयुधों के आविष्कार से हो सकता है समूची पृथ्वी का विनाश

plus रिपोर्टर
plusreporter@patrika.com

उदयपुर. आणविक युग में हम विकास और विनाश के बीच मौलिक अन्तर न कर पाने की आत्मघाती विडम्बना में जा फंसे हैं। कम विकसित समाज के दौर में हम अधिक सुरक्षित थे, किन्तु वर्तमान के आणविक आयुधों के आविष्कार तथा उत्तरोत्तर बढ़ती गुणवत्ता व मात्रा का भण्डारण विज्ञान व तकनीकी की ऐसे भयानक उपलब्धियां हैं, जिनसे सर्वनाश की विभीषिका खड़ी हो सकती है।

यह बात गुरुवार को हिरोशिमा दुखान्तिका की 70वीं बरसी पर शान्तिपीठ संस्थान द्वारा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय गुरु गोविन्द सिंह सभागार में आयोजित शान्ति सभा में वक्ताओं ने कही।



सभा में नगर की कई सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के छात्र व छात्राएं शान्ति मार्च करते पहुंचे। मुख्य रैली की शुरुआत शान्तिपीठ संस्थान से सुबह 9.15 बजे पूर्व प्रशासनिक अधिकारी सुमति लाल बोहरा, वरिष्ठ शिक्षाविद् कैलाश बिहारी वाजपेयी व राउमावि, रेलवे ट्रेनिंग स्कूल की प्रधानाध्यापिका ने शान्ति मार्च से की। इसमें कई विद्यालयों के सैकड़ों छात्र सम्मिलित थे। वे शान्ति, आणविक निःशस्त्रीकरण, पृथ्वी संरक्षण तथा विश्व एकता जैसे मुख्य मुद्दों को लेकर बैनर, तख्तियां, चार्ट, पोस्टर आदि लेकर चल रहे थे। रैली के बाद सभा में दो मिनट का मौन रखकर हिरोशिमा-नागासाकी में मारे गए निर्दोष लोगों की आत्मा की शान्ति के लिए श्रद्धांजलि दी गई। संचालन भरत कुमावत ने किया।

बलीचा स्थित एसकेबी ग्लोबल स्कूल के विद्यार्थियों ने न सिर्फ अपने आस-पास, बल्कि संपूर्ण विश्व में शांति स्थापित करने के लिए प्रयासरत रहने की शपथ ली। प्रधानाध्यापिका कुसुम भटनागर ने बताया कि विश्व शांति दिवस पर बालकों को हिरोशिमा और नागासाकी पर हुए परमाणु बम हमलों और उसके दुष्परिणामों की जानकारी दी गई। छात्रों को शांति का महत्व बताया गया। संचालन शीतल राठौड़ ने किया।

'नैतिकता विहीन ज्ञान विध्वंसक'

उदयपुर. विद्या भवन गांधी शान्ति प्रतिष्ठान केन्द्र रामगिरी उदयपुर में हिरोशिमा दिवस पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता उदय मेहता ने हिरोशिमा दिवस को एक ऐसे दिन के रूप में याद किया, जब नैतिकता विहीन ज्ञान विश्व का विध्वंस कर सकता है। मेहता ने दैनिक जीवन में धैर्य व अहिंसा को अपनाते हुए समस्त कार्यों को पूर्ण करते हुए शान्ति को अपनाने का आग्रह किया। कार्यक्रम में अतिथियों द्वारा गांधी शान्ति प्रतिष्ठान के पिछले 50 वर्ष में किए गए कार्यों के प्रतिवेदन का विमोचन किया गया। महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. सुगन शर्मा ने बताया कि कार्यक्रम के दौरान विद्या भवन सोसायटी के अध्यक्ष अजय मेहता, विद्या भवन गांधी शिक्षा अध्ययन संस्थान एवं विद्या भवन उच्च माध्यमिक विद्यालय रामगिरी के समस्त सदस्य व विद्यार्थी उपस्थित थे। संचालन अरुणा माथुर ने किया।

City भास्कर

वीर योद्धाओं को श्रद्धांजलि • समाज-संगठनों ने मोमबत्ती जलाकर और शांति यज्ञ कर सीडीएस रावत व अन्य सैन्य अफसरों को किया नमन

अजेय साहस और शौर्य के धनी थे रावत, उन्होंने तीनों सेना को नए आयाम पर पहुंचाया, वे राष्ट्र के हृदय में सदैव अमर रहेंगे

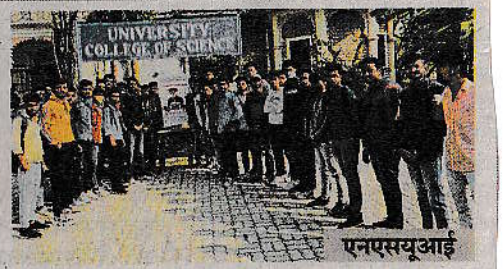
सिटी रिपोर्टर | उदयपुर

हेलीकॉप्टर हादसे में देश के पहले चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) जनरल बिपिन रावत, उनकी पत्नी मधुलिका रावत सहित अन्य सैन्य अधिकारियों के निधन पर गुरुवार शहर के विभिन्न समाज-संगठनों ने श्रद्धांजलि दी। शान्तिपीठ संस्थान में श्रद्धांजलि सभा हुई। इसमें शान्तिपीठ के अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि अजेय साहस और शौर्य के धनी रावत राष्ट्र के हृदय में अमर रहेंगे। चिंतक मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि वे साहसी, स्वाभिमानी और दृढ़ प्रतिज्ञ योद्धा थे। उन्होंने तीनों सेनाओं को नया आयाम दिया। प्रो. एसआर व्यास ने कहा कि हम इस अनहोनी पर स्तब्ध हैं। डॉ. ललित पांण्डेय ने कहा कि यह अपूरणीय क्षति है। इंद्रदेव जोशी, कुमार दुष्यन्त आदि ने श्रद्धांजलि दी। सेवार्थ योग, आयुर्वेद एवं यज्ञ संस्थान ने सेक्टर-6 स्थित आश्रम शिवालय में शांति यज्ञ कर अधिकारियों को श्रद्धांजलि दी। नरेश पूर्बिया, प्रीतम सिंह चुंडावत, मौजूद थे। विद्या निकेतन बालिका माध्यमिक स्कूल, सेक्टर 4 में शिक्षकों और छात्रों ने श्रद्धांजलि दी। दी उदयपुर ट्रांसपोर्ट ऑर्गेनाइजेशन ने शोक व्यक्त करते हुए रावत के निधन को राष्ट्रीय क्षति बताया। संरक्षक पुष्पराज मेहता, लक्ष्मीनारायण गौड़, नवनीत अरोड़ा, शंभू जैन, चंचल कुमार अग्रवाल, नरेन्द्रसिंह राणावत, ललित झंवर मौजूद थे। विज्ञान कॉलेज छात्रसंघ कार्यकारिणी ने भी श्रद्धांजलि अर्पित की। छात्रसंघ अध्यक्ष चिराग चौधरी, अंशुल सालवी, दुर्गेश तेली, गिरीश पाटीदार मौजूद थे। देहात जिला कांग्रेस कमेटी कार्यालय पर लालसिंह झाला, मोड़सिंह सिसोदिया, किशन वधवानी, दिनेश नागदा, कमल चौधरी आदि ने श्रद्धांजलि दी।

भाजपा बोली- जांबाज सैन्य अधिकारी का निधन, यह देश के लिए बड़ा नुकसान


नाकोड़ा नगर विकास समिति


मालदास स्ट्रीट व्यापार संघ



एनएसयूआई

विधानसभा के नेता प्रतिपक्ष गुलाबचंद कटारिया ने कहा कि आज सारा देश शोकमग्न है, क्योंकि हमारी सेना का नायक हमारे बीच से चला गया है। भाजपा शहर जिलाध्यक्ष रवींद्र श्रीमाली ने कहा कि जनरल रावत ने अप्रतिम रणकौशल से सशस्त्र बलों और सुरक्षा तंत्र को मजबूती दी थी। पार्टी के राष्ट्रीय परिषद सदस्य ताराचंद जैन, अनुसूचित जाति मोर्चा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष चुनीलाल गरासिया, सांसद अर्जुनलाल मीणा, ग्रामीण विधायक फूल सिंह मीणा, महिला मोर्चा प्रदेशाध्यक्ष डॉ. अलका मूंदड़ा, प्रदेश कार्यसमिति सदस्य प्रमोद सामर, दिनेश भट्ट, युधिष्ठिर कुमावत, महापौर गोविंद सिंह टांक, उप महापौर पारस सिंघवी, जिला प्रमुख ममता कुंवर पंवार, उप जिला प्रमुख पुष्कर तेली आदि ने दिवंगत सीडीएस को श्रद्धांजलि दी। इधर, भाजपा शहर जिला उपाध्यक्ष प्रेम सिंह शक्तावत, तखत सिंह शक्तावत, खूबीलाल पालीवाल, वंदना मीणा ने भी देश के पहले सीडीएस रावत और उनके साथ दिवंगत हुए जवानों को श्रद्धांजलि अर्पित की। मंडल अध्यक्ष देवी लाल सालवी, सिद्धार्थ शर्मा, विजय आहूजा, विभिन्न मोर्चों के जिलाध्यक्ष सनी पोखरना कविता जोशी प्रभु लाल प्रजापत, अख्तर अली सिद्दीकी, हीरालाल डांगी, सत्यनारायण मोची, रमेश डामोर ने कहा कि एक जांबाज सैन्य अधिकारी का निधन देश को बड़ा नुकसान है। मीडिया प्रकोष्ठ के संभाग प्रभारी चंचल कुमार अग्रवाल, संभाग आईटी संयोजक वैशवंत मंडावरा ने भी जनरल रावत, उनकी पत्नी व सैन्य अधिकारियों को श्रद्धांजलि दी।

शहीद स्मारक पर दो मिनट का मौन रखकर दी श्रद्धांजलि


कांग्रेस मीडिया सेंटर


शांति यज्ञ

शहीद स्मारक पर कांग्रेस मीडिया सेंटर अध्यक्ष पंकज कुमार शर्मा, संदीप गर्ग, भावेंद्र सियोल, अनिल राजपुरोहित, कैलाश विश्नोई ने दो मिनिट का मौन रखकर कर श्रद्धांजलि दी। नाकोड़ा नगर विकास समिति व मालदास स्ट्रीट व्यापार संघ ने श्रद्धांजलि दी। लश्करी अग्रवाल पंचायत के अध्यक्ष रामचंद्र अग्रवाल, उपाध्यक्ष सत्यनारायण, दिनेश, सचिव शिव प्रकाश, कोषाध्यक्ष जयेश ने श्रद्धांजलि दी।

आज सूरजपोल पर श्रद्धांजलि सभा : वात्सल्य सेवा समिति की ओर से सूरजपोल चौराहे पर शुक्रवार शाम 5 बजे श्रद्धांजलि सभा होगी। इसमें रावत सहित अन्य अधिकारियों को श्रद्धांजलि दी जाएगी।

दैनिक भास्कर शनिवार 24 अक्टूबर, 2020

शांतिपीठ की वेबिनार में बोले राजस्थान हाईकोर्ट के न्यायाधीश

सवाल उठाने नहीं, संयुक्त राष्ट्र को मजबूत करने की जरूरत : भाटी

उदयपुर | राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश डॉ. पुष्पेंद्रसिंह भाटी ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र संघ की प्रासंगिकता पर ही प्रश्न चिह्न लगाने की जरूरत नहीं है, बल्कि आज इसे और मजबूत बनाने की ज्यादा जरूरत है। भारत इसकी पहल करे।

न्यायाधीश भाटी शुक्रवार को संयुक्त राष्ट्र के 75वें स्थापना दिवस की पूर्व संध्या पर शांतिपीठ की वेबिनार का संबोधित कर रहे थे। 'संयुक्त राष्ट्र संघ की चुनौतियां और नए भारत की भूमिका' विषय पर इस वेबिनार में विशिष्ट अतिथि राजस्थान उच्च न्यायालय, जयपुर के वरिष्ठ अधिवक्ता राजेंद्र नारायण माथुर ने रासायनिक कचरा और जैविक अस्त्र पर चिंता व्यक्त की। वक्ताओं ने दो महायुद्धों की त्रासदी से सबक लेकर बने संयुक्त राष्ट्र संघ के 75 वर्षों के उतार-चढ़ाव और अस्तित्व पर विचार रखे। कहा कि इसकी प्रासंगिकता पर प्रश्न चिह्न लगाना ही अप्रासंगिक है। इसमें संदेह नहीं कि सात दशक बाद अब मौजूदा परिस्थितियों के अनुकूल बुनियादी बदलावों के साथ यूएन को अधिक सशक्त किए जाने की आवश्यकता है और इसमें भारत को अग्रणी भूमिका निभानी चाहिए। शांतिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र जनचेतना का मंच बनें और यह तभी संभव होगा, जब इसमें विशेष अधिकार का प्रयोग ताकत से नहीं नैतिक सिद्धांत आधारित हो।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, शनिवार, 24 अक्टूबर 2020

संयुक्त राष्ट्र संघ की प्रासंगिता पर प्रश्न चिह्न लगाना अप्रासंगिक

ब्यूरो/नवज्योति, उदयपुर। दो महायुद्धों की त्रासदी से सबक लेकर बना संयुक्त राष्ट्र संघ गत 75 वर्षों के कई उतार-चढ़ाव देखने के बाद भी अपने अस्तित्व में कायम है। इसकी प्रासंगिकता पर प्रश्न चिह्न लगाना ही अप्रांसगिक है। उक्त विचार शनिवार को संयुक्त राष्ट्र के 75वें स्थापना दिवस की पूर्व संध्या पर शान्तिपीठ की ओर से संयुक्त राष्ट्र संघ की चुनौतियां और नए भारत की भूमिका विषयक पर वेबिनार में वक्ताओं ने व्यक्त किए। प्रमुख अतिथि राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश डॉ. पुष्पेन्द्र सिंह भाटी ने भारत ने विभिन्नता में एकता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि अनेकों जातियां, सम्प्रदाय, भाषाएं, कलाएं, संगीत साहित्य, रेगिस्तान और पहाड़ों की संस्कृति जैसी अनेकताओं के साथ एकता और शान्ति की मिसाल कायम की है। विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ अधिवक्ता राजेन्द्र नारायण माथुर ने रासायनिक कचरा व जैविक अस्त्रों पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि संयुक्त राष्ट्र संघ इन समस्याओं को कैसे नियंत्रित कर पाएं, यह गम्भीर विषय है। उसनास फाउण्डेशन के सीईओ अभिनव पाण्ड्या, पुरातत्व विद् डॉ. ललित पाण्डे ने भी विचार रखे। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि संयुक्त राष्ट्र जनचेतना का मंच बने। डॉ. कमल सिंह राठौड़ ने आभार व्यक्त किया।

प्रातःकाल
उदयपुर, शनिवार 24 अक्टूबर, 2020

संयुक्त राष्ट्र संघ की चुनौतियां और नये भारत की भूमिका पर वेबिनार

उदयपुर (वि.)। संयुक्त राष्ट्र के 75 वें स्थापना दिवस की पूर्व संध्या पर शान्तिपीठ द्वारा 'संयुक्त राष्ट्र संघ की चुनौतियाँ और नये भारत की भूमिका' विषय पर वेबिनार का आयोजन किया गया। वेबिनार में प्रमुख अतिथि राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश डॉ. पुष्पेन्द्र सिंह भाटी ने कहा कि भारत में जातियाँ, सम्प्रदाय, भाषाएँ, कलाएँ, संगीत साहित्य, रेगिस्तान और पहाड़ों की संस्कृति जैसी अनेकताओं को साथ लेकर जो एकता और शान्ति की मिसाल कायम की है इसे अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर पुनः समझने की जरूरत है। विशिष्ट अतिथि राजस्थान उच्च न्यायालय जयपुर के वरिष्ठ अधिवक्ता राजेन्द्र नारायण माथुर ने रासायनिक कचरा व जैविक अस्त्रों पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि संयुक्त राष्ट्र संघ इन समस्याओं को कैसे नियंत्रित कर पाएँ, यह गम्भीर विषय है। गोष्ठी में उसनास फाउण्डेशन के सी.ई.ओ. अभिनव पाण्ड्या लीग ऑफ नेशन्स की असफलता के कारणों को बताते हुए कहा कि वर्तमान में यह संगठन प्रभावी तरीके से मानव समुदाय की सुरक्षा करने में सक्षम है। पुरातत्व विद् डॉ. ललित पाण्डे ने कहा कि इस संकट की घड़ी में जब विश्व चीन के अधिनायकवाद से त्रस्त हो स्वसुरक्षा के लिए प्रयत्नशील है ऐसे में देश का वर्तमान नेतृत्व विदेश नीति को दक्षिण एशिया और इण्डो पेसिफिक क्षेत्र को संगठित कर एशिया में शक्ति संतुलन बनाने के लिए प्रभावी भूमिका निर्वाह कर रहा है।



शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि संयुक्त राष्ट्र जनचेतना का मंच बने और यह तभी संभव हो सकता है जब इसमें विशेष अधिकार का प्रयोग ताकत से नहीं नैतिक सिद्धांत आधारित हो। अध्यक्षता चिंतक मोहन सिंह कोठारी ने की। डॉ. कमल सिंह राठौड़ ने आभार व्यक्त किया।

राजस्थान पत्रिका
patrika.com
उदयपुर, शनिवार, 15 अगस्त, 2020

शान्तिपीठ संस्थान में आयोजन

'विश्व को विश्वास, धैर्य और शांति की है जरूरत'

'श्री कृष्ण और युवा विश्व : आधार और आयाम' विषयक संगोष्ठी

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

उदयपुर. आज विश्व को विश्वास, धैर्य और शांति की महत्ती आवश्यकता है। उपस्थित विद्रुपताओं, विषमताओं, चिंताओं और नाना व्याधियों का मुकाबले करने का राजमार्ग कृष्ण से तादात्म्य स्थापित कर प्राप्त किया जा सकता है। कृष्ण अद्वित्य हैं, उन्हें प्रीति से ही प्राप्त किया जा सकता है। जरूरत है आज का युवा कृष्ण चरित्र को आत्मसात करे और समत्व योग में स्थित होकर अपनी ऊर्जा को विवेकशील शक्ति में रूपान्तरित करते हुए राष्ट्र और विश्व को नई दिशा दे।

यह विचार अन्तरराष्ट्रीय युवा दिवस पर शान्तिपीठ संस्थान परिसर में 'श्री कृष्ण और युवा विश्व : आधार और आयाम' विषयक संगोष्ठी में वक्ताओं ने व्यक्त किए। प्रमुख वक्ता सुखाड़िया विश्वविद्यालय में संस्कृत विभाग के प्रो. नीरज शर्मा ने युवाओं को आह्वान किया कि वे श्री कृष्ण और ऊर्जावान अर्जुन के अभाज्य स्वरूप को आत्मसात् कर जीवन संग्राम में विजयी हों। उन्होंने ज्ञानार्जन और शिक्षा प्राप्ति में समन्वय स्थापित करते हुए कृष्ण की तरह धीरता और प्रसन्नता के भाव से चुनौतियों का मुकाबला करने की जरूरत पर बल दिया। संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि हम स्वयं के साक्षी बने तो स्वयं के सारथी बन जाएंगे। सारथी चेतना को उन्नत करता है और अवनत होने से बचाता है। स्वयं के प्रकाश में चलकर युवा अपना रास्ता स्वयं खोज सकते हैं। उन्होंने 'एनलाइटन्ड सिटीजनशिप' प्रज्ञाशील विश्व नागरिकता की आवश्यकता प्रतिपादित की। संगोष्ठी में श्याम सुन्दर चौबीसा, पूर्व वन संरक्षक ओंकारलाल मेनारिया, डॉ. कमल सिंह राठौड़, मार्शल आर्ट के राजकुमार मेनारिया, वैभव आमेटा, अधिवक्ता भरत, शुभबाला राधास्वामी ने भी विचार रखे। संगीत शिक्षक मोहम्मद रफीक ने आत्मचिंतन से आत्मपरिवर्तन और इससे विश्व परिवर्तन का गीत प्रस्तुत किया। डॉ. भूपेन्द्र शर्मा ने वेदोक्त शांतिमंत्र का पाठ किया।

राजस्थान पत्रिका
patrika.com
उदयपुर, शुक्रवार, 02 अक्टूबर, 2020

अहिंसा मानव सभ्यता व संस्कृति का मूलाधार

'शिक्षा की मुकुटमणि: अहिंसा' विषयक वेबिनार आयोजन

उदयपुर. अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस की पूर्व संध्या पर शान्तिपीठ की ओर से 'शिक्षा की मुकुटमणि: अहिंसा' विषयक वेबिनार में पुरातत्वविद् डॉ. ललित पाण्डे ने कहा कि अहिंसा मानव सभ्यता व संस्कृति का मूलाधार है जिस पर भारतीय दर्शन व धर्म की समस्त धाराओं ने बल दिया है। चिंतक मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि हमारे सांस्कृतिक मूल्यों में अहिंसा अग्रणी मूल्य है और इसको धारण करने की शक्ति शिक्षा से ही विकसित हो सकती है। मेलबर्न से गांधीवादी सुनील ठक्कर ने कहा कि अहिंसा सबको जोड़ने का महामंत्र है और यह मार्ग सत्य से सांक्षात्कार कराने वाला है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश ने कहा कि आज हमें गांधी के रचनात्मक प्रतिरोध को पुनः समझने की जरूरत है और तभी हम संपुष्टिकारक न्याय को उपलब्ध कर सकते हैं। इस मौके पर दर्शन शास्त्री प्रो. एसआर व्यास, पूर्व कलक्टर, बारां सुमति लाल बोहरा, जे.आर.नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के डॉ. चन्द्रेश ने भी विचार व्यक्त किए। संयोजन डॉ. कमल सिंह राठौड़ ने किया।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, शुक्रवार, 2 अक्टूबर 2020

अहिंसा मानव सभ्यता और संस्कृति का मूल आधार

उदयपुर/सुसंस्कृत समाज निर्माण की अवधारणा अहिंसा जैसे मूल्यों को आत्मसात किये बिना संभव नहीं हो सकती। राग - द्वेष में जीना, अधिग्रहण की लालसा रखना और हिंसात्मक प्रतिरोध करना समाज के पतन का कारण बनते जा रहे हैं। आवश्यकता है अहिंसा के मूल्यों को समझ पाने की क्षमता विकसित करने की और यह शिक्षा से ही संभव हो सकता है। उक्त विचार गुरुवार को अन्तरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस की पूर्व संध्या शान्तिपीठ की ओर से 'शिक्षा की मुकुटमणि: अहिंसा' विषयक वेबिनार में बोलते हुए कई वक्ताओं ने व्यक्त किये।

प्रमुख वक्ता डॉ. ललित पाण्डे ने कहा कि अहिंसा मानव सभ्यता व संस्कृति का मूलाधार है। चिंतक मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि हमारे सांस्कृतिक मूल्यों में अहिंसा अग्रणी है और इसको धारण करने की शक्ति शिक्षा से ही विकसित हो सकती है। विशिष्ट अतिथि मेलबोर्न से गांधीवादी सुनील ठक्कर ने कहा कि अहिंसा सबको जोड़ने का महामंत्र है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश ने कहा कि हमें गांधी के रचनात्मक प्रतिरोध को पुनः समझने की जरूरत है। प्रो. एस.आर. व्यास ने कहा कि शिक्षा मनुष्य का आभूषण है किन्तु शिक्षा का आभूषण अहिंसा है। सुमति लाल बोहरा ने कहा अहिंसा भाव से ही सर्वजनहिताय की कल्पना साकार हो सकती है। डॉ. चन्द्रेश ने भी विचार व्यक्त किये।

राजस्थान पत्रिका
patrika.com
उदयपुर, मंगलवार, 22 सितंबर, 2020

शाश्वत व सनातन मूल्यों की ओर लौटें युवा : सारंगदेवोत

उदयपुर. अंतरराष्ट्रीय शांति दिवस के अवसर पर शान्तिपीठ के तत्वावधान में 'चुनौतियों भरा वर्तमानः गांधी मार्ग समाधान' विषयक राष्ट्रीय वेबिनार आयोजित किया गया। अध्यक्षता करते हुए जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. शिवसिंह सारंगदेवोत ने युवा वर्ग का आह्वान किया कि पाश्चात्य शैली से प्रभावित युवाओं को शाश्वत व सनातन मूल्यों की ओर लौटते हुए गांधीजी के रचनात्मक विचारों को आत्मसात करना चाहिए।

विशिष्ट अतिथि पंजाब सरकार के पूर्व मुख्य सलाहकार एवं चिंतक मोहन सिंह कोठारी ने गांधीजी द्वारा बताए जीवन के पांच शाश्वत सिद्धांतों को वैश्विक विस्तार दिये जाने की आवश्यकता प्रतिपादित की।

शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने विषय की प्रासंगिकता का विवेचन करते हुए कहा कि जीवन में सत्य के परीक्षणों के द्वारा गांधीजी ने मानवीय समस्याओं का समुचित निदान खोज लिया, जिसे हमें आज अपनाने की जरूरत है। पुरातत्वविद् डॉ. एल.एन पाण्डे, तक्षशिला विद्यापीठ के निदेशक डॉ. जी.एल मेनारिया, पायरोटेक इन्टरनेशनल के पी.एस.तलेसरा, डॉ. आर.बी.कुमार, डॉ. पी.आर.व्यास, निरमा विश्वविद्यालय अहमदाबाद के प्रो. उदय पालीवाल, प्रो. एस.आर.व्यास, मेवाड़ विश्वविद्यालय के डॉ. रामकृष्ण घोष, बी.एन.विश्वविद्यालय के डॉ. कमल सिंह राठौड़ आदि ने भी विचार व्यक्त किए।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, बुधवार, 23 सितंबर 2020

महात्मा गांधी के सिद्धांतों से जीवन में शांति संभव

ब्यूरो/नवज्योति, उदयपुर। आज परिवर्तन का चक्र घूम रहा है। बाहरी जगत में विकास की पराकाष्ठा कर ली किन्तु आंतरिक रूप से हम टूटते चले गए। यह असंतुलन जितना बढ़ता गया, हम शान्ति से दूर होते चले गए। जनभागीदारी से शान्ति सृजन के सभी आयाम उपनिषदों में समाहित हैं। महात्मा गांधी द्वारा बताए गए जीवन के पांच शाश्वत सिद्धांत हमें शान्ति की दिशा में ले जाते हैं। करुणा, प्रेम और उल्लास का वातावरण निर्मित करने के लिए जीवन में शाश्वत मूल्यों की फिर से स्थापना की आवश्यकता है। इसके लिए जीवन शैली में आवश्यक बदलाव के साथ जिम्मेदारी युवा वर्ग को सौंपी जाए। उक्त विचार सोमवार को अन्तरराष्ट्रीय शान्ति दिवस के अवसर पर शान्तिपीठ के तत्वावधान में आयोजित



'चुनौतियों भरा वर्तमानः गांधी मार्ग समाधान" विषयक राष्ट्रीय वेबिनार में प्रतिभागिता करते हुए वक्ताओं ने व्यक्त किये।

सेमिनार की अध्यक्षता करते हुए जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. शिवसिंह सारंगदेवोत ने युवा वर्ग का आह्वान किया कि वे शान्ति सृजन की नई पहल शुरू करें और इसके लिए आवश्यक जीवन मूल्यों को आत्मसात करें। पाश्चात्य शैली से प्रभावित युवाओं को शाश्वत व सनातन मूल्यों की ओर लौटते हुए गांधीजी के रचनात्मक विचारों को आत्मसात करना चाहिए। विशिष्ट अतिथि चिंतक मोहन सिंह कोठारी ने महात्मा गांधी द्वारा बताये जीवन के पांच शाश्वत सिद्धांतों को वैश्विक विस्तार देने की जरूरत प्रतिपादित की।

शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा जीवन में सत्य के परीक्षणों द्वारा महात्मा गांधी ने मानवीय समस्याओं का समुचित निदान खोज लिया, जिसे हमें आज अपनाने की जरूरत है।

तक्षशिला विद्यापीठ के निदेशक डॉ. जी.एल मेनारिया, पुरातत्वविद् डॉ. एल.एन पाण्डे, पायरोटेक इन्टरनेशनल के पी.एस.तलेसरा, डॉ. आर.बी.कुमार, डॉ. पी.आर.व्यास, निरमा विश्वविद्यालय अहमदाबाद के प्रो. उदय पालीवाल, प्रो. एस.आर.व्यास, मेवाड़ विश्वविद्यालय के डॉ. रामकृष्ण घोष, बी.एन. विश्वविद्यालय के डॉ. कमल सिंह राठौड़, प्रो. विकास नोटियाल, डॉ. मीनाक्षी मेनारिया आदि ने भी विचार व्यक्त किए।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, गुरुवार, 13 अगस्त 2020

आज विश्व में धैर्य और शांति की महत्ती आवश्यकता

ब्यूरो नवज्योति/उदयपुर। आज विश्व को विश्वास, धैर्य और शांति की महत्ती आवश्यकता है। कृष्ण अनित्य हैं, उन्हें प्रीति से ही प्राप्त किया जा सकता है। उक्त विचार अन्तरराष्ट्रीय युवा दिवस पर शान्तिपीठ के तत्वावधान में संस्थान परिसर में श्री कृष्ण और युवा विश्वः आधार और आयाम विषयक संगोष्ठी में वक्ताओं ने व्यक्त किये। प्रमुख वक्ता सुविवि में संस्कृत विभाग के प्रो. नीरज शर्मा, संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी, श्याम सुन्दर चौबीसा, पूर्व वन संरक्षक ऊंकारलाल मेनारिया, डॉ. कमल सिंह राठौड़, राजकुमार मेनारिया, वैभव आमेटा ने भी विचार व्यक्त किये।

राजस्थान पत्रिका
patrika.com
उदयपुर, सोमवार, 01 जून, 2020

'कोविड-19' संगोष्ठी में चर्चा

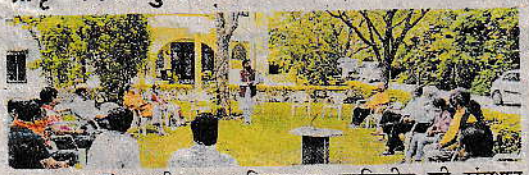
पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

उदयपुर . शांतिपीठ की ओर से 'कोविड-19 विपदा और उसके बाद का विश्व' विषय पर ऑनलाइन विचार संगोष्ठी का आयोजन रविवार को किया गया। अध्यक्षता चिंतक मोहनसिंह कोठारी ने की। संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि वैश्विक विपदा हमें जीवन शैली में बदलाव के लिए प्रेरित करती है। अहिंसा का मार्ग ही है जो प्राणी मात्र में एकता कायम कर सकती है। नाथद्वारा के श्याम बाबा, डॉ. गोविंद मेनारिया, डॉ. ललित पांडे, केबी वाजपेयी, ओंकार मेनारिया, भरत कुमावत, इंद्र जोशी की भी भागीदारी रही।

दैनिक भास्कर उदयपुर, गुरुवार 13 अगस्त, 2020

आपकी खबरें :- धर्म, समाज, क्लब, एसोसिएशन और संस्थाओं के आयोजन

श्रीकृष्ण और युवा विश्व : आधार, आयाम पर चर्चा



उदयपुर। अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस पर शान्तिपीठ की संस्थान परिसर में श्रीकृष्ण और युवा विश्व : आधार और आयाम विषय पर संगोष्ठी बुधवार को हुई। इसमें सुविवि संस्कृत विभाग के प्रो. नीरज शर्मा ने परम सत्ता से हमारा संबंध शाश्वत है, इसे जान लेना चाहिए। सारा संसार ही कृष्ण का प्रथम अवतार है। इसे जानने के बाद कई कोई भेद शेष नहीं रह जाता है। अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि हम स्वयं के साक्षी बने तो स्वयं के सारथी बन जायेंगे। श्याम सुन्दर चौबिसा, पूर्व वन संरक्षक उंकारलाल मेनारिया, डॉ. कमल सिंह राठौड़ आदि ने भी विचार रखे।

दैनिक भास्कर, उदयपुर, बुधवार, 03 जून, 2020

कोविड-19 विपदा और उसके बाद का विश्व विषय पर ऑनलाइन संगोष्ठी हुई, एडवाईजरी की पालना पर चर्चा

उदयपुर | शांति पीठ की कोविड-19 विपदा और उसके बाद का विश्व विषय पर ऑनलाइन संगोष्ठी रविवार को हुई। इसमें चिंतक मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि महामारी का कोई निश्चित समाधान प्राप्त नहीं हुआ है। लेकिन समझ लेना चाहिए कि हमें इसके साथ जीना पड़ेगा। जो अनुशासन बताए गए हैं उनका पालन कर योगदान देना होगा। हमें विवेकपूर्ण जीवन शैली अपनानी पड़ेगी। शांतिपीठ संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि अहिंसा का मार्ग ही है, जो प्राणी मात्र में एकता कायम कर सकता है। इतिहासविद डॉ. गोविंद मेनारिया, प्रो. पीआर व्यास, डॉ. ललित पांडे ने भी विचार रखे।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, शुक्रवार, 7 अगस्त 2020

हिरोशिमा त्रासदी से नुकसान की भरपाई नामुमकिन



उदयपुर। हिरोशिमा दुखान्तिका की 75वीं वार्षिकी पर शान्तिपीठ के तत्वावधान में सभ्यता का ध्वंस सरल, निर्माण कठिनः हिरोशिमा की सीख और कोविड-19 की गवाही विषयक वेबिनार हुआ। वेबिनार में पूर्व केन्द्रीय मंत्री, वेदान्तविद् डॉ. कर्ण सिंह ने चिन्ता जताई कि हिरोशिमा पर गिराये परमाणु बम से हजारों गुना अधिक शक्ति का भण्डारण विश्व में मौजूद है। विशिष्ट अतिथि भारतीय विदेश नीति परिषद के अध्यक्ष डॉ. वेदप्रताप वैदिक ने कहा कि हिरोशिमा त्रासदी में मानवता को जो नुकसान हुआ, उसकी भरपाई होना नामुमकिन है। अध्यक्षता करते पंजाब सरकार के पूर्व मुख्य सलाहकार मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि शान्ति प्रयास जितने भी हों होने चाहिए। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि हिरोशिमा नागासाकी से हम सबक ले पाये अथवा नहीं, लेकिन कोविड आपदा ने यह बता दिया है कि सहयोग, सामंजस्य, प्रेम और एकता को व्यवहार में लाये बिना सुरक्षित भविष्य का स्वप्न पूरा नहीं हो सकता। डॉ. आर.एस.ठाकुर, डॉ. बी.पी.भटनागर, प्रो. पी.आर.व्यास, ए.के.झा, डॉ. कमल सिंह राठौड़, डॉ रेणु वर्मा, डॉ. भूपेन्द्र शर्मा, एड्वोकेट भरत, भाविन त्रिवेदी, विद्यालयी छात्रा प्रशस्ति अरोडा व भूमि अरोडा आदि ने विचार व्यक्त किए।

राजस्थान पत्रिका
patrika.com
05
उदयपुर, शुक्रवार, 07 अगस्त, 2020

सभी को करना होगा आणविक अस्त्रों का विरोध

उदयपुर. हिरोशिमा दुखान्तिका की 75वीं वार्षिकी के पर शान्तिपीठ के तत्वावधान में 'सभ्यता का ध्वंस सरल, निर्माण कठिनः हिरोशिमा की सीख और कोविड-19 की गवाही' विषयक कार्यक्रम हुआ। पूर्व केंद्रीय मंत्री, वेदान्तविद् डॉ. कर्ण सिंह ने कहा कि हिरोशिमा पर गिराए परमाणु बम से हजारों गुना अधिक शक्ति का भण्डारण विश्व में मौजूद है, हमें ऐसे में ईश्वर सर्व भूतानाम के विचार को साकार करना है। भारतीय विदेश नीति परिषद के अध्यक्ष डॉ. वेदप्रताप वैदिक ने कहा कि त्रासदी में मानवता को जो नुकसान हुआ, उसकी भरपाई नामुमकिन है। दुनिया को आणविक अस्त्रों का विरोध करना चाहिए। पंजाब के पूर्व मुख्य सलाहकार मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि शान्ति प्रयास जितने हों होने चाहिए किन्तु समझाना चाहिए कि संस्कृति के बिना सभ्यताएं सुरक्षित नहीं। हिरोशिमा से मेयर फॉर पीस के अध्यक्ष मत्सुई काजुमी, नागासाकी के तोमीहिसा ताउ ने पूर्ण आणविक निशस्त्रीकरण में सशक्तिकरण किए जाने का आह्वान किया। अनन्त गणेश त्रिवेदी ने विषय प्रवर्तन किया। डॉ. आर.एस.ठाकुर ने द्वितीय विश्व युद्ध के हालात की समीक्षा की। डॉ. बी.पी.भटनागर, प्रो. पी.आर.व्यास, ए.के.झा, डॉ. कमल सिंह राठौड़, डॉ रेणु वर्मा आदि ने भी विचार व्यक्त किए।

प्रातःकाल उदयपुर, शुक्रवार 7 अगस्त, 2020

विश्व शान्ति के लिए विषपान की क्षमता होनी चाहिए : डॉ. कर्ण सिं

उदयपुर (वि)। सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः जैसे विचार और व्यवहार से बढ़कर क्या समाजवाद होगा। यही राम राज्य है। हमें इस नित नूतन विचार से नये समाज का निर्माण करना है। यह विचार हिरोशिमा दुखान्तिका की 75वीं वार्षिकी पर शान्तिपीठ के तत्वावधान में 'सभ्यता का ध्वंस सरल, निर्माण कठिनः हिरोशिमा की सीख और कोविड-19 की गवाही' विषयक आयोजित वेबिनार में मुख्य उद्बोधन देते हुए पूर्व केन्द्रिय मंत्री, वेदान्तविद् डॉ. कर्ण सिंह ने व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि आज कोविड आपदा से पूरा विश्व त्रस्त है। समुद्र मंथन में अमृत और गरल दोनों उत्पन्न हुए। भगवान शंकर ने गरल पी लिया, आज गरल कौन पीये। विश्व शान्ति के लिए विष पान की क्षमता चाहिए। उन्होंने चिन्ता व्यक्त की कि हिरोशिमा पर गिराये परमाणु बम से हजारों गुना अधिक शक्ति का भण्डारण विश्व में मौजूद हैं, हमें ऐसे में ईश्वरः सर्व भूतानाम के विचार को साकार करना है।

विशिष्ट अतिथि भारतीय विदेश नीति परिषद के अध्यक्ष डॉ. वेदप्रताप वैदिक ने कहा कि हिरोशिमा त्रासदी में मानवता को जो नुकसान हुआ, उसकी भरपाई होना नामुमकिन है। दुनिया के सारे राष्ट्रों को आणविक अस्त्रों का विरोध करना चाहिए। परमाणु हथियारों को अवैध घोषित किया जाना चाहिए। विश्व बिरादरी में परमाणु हथियार सम्पन्न राष्ट्रों को अन्तरराष्ट्रीय अछूत माना जाना चाहिए। आज परमाणु अस्त्रों को नष्ट करना भी आसान नहीं है। परमाणु बम रखने की बातें अब 20वीं सदी की है, वर्तमान की सदी उज्जवल भविष्य की होनी चाहिए। अ

ध्यक्षता करते पंजाब सरकार के पूर्व मुख्य सलाहकार मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि शान्ति प्रयास जितने भी हों, होने चाहिए किन्तु इस बात को समझाना चाहिए कि संस्कृति के बिना सभ्यताएँ सुरक्षित नहीं है। हिरोशिमा से 'नो मोर हिरोशिमा, नो मोर नागासाकी'



उदयपुर। हिरोशिमा दिवस पर शांतिपीठ परिसर में विश्व शांति का संदेश देते बच्चे।

विषयक भेजे गए संक्षिप्त संवाद में मेयर फॉर पीस के अध्यक्ष मत्सुई काजुमी, नागासाकी के मेयर तोमीहिसा ताउ ने पूर्ण आणविक निशस्त्रीकरण की दिशा में सशक्तिकरण किये जाने का आह्वान किया। विभीषिका में बचे हुए लोगों (हिबाकुश) में से योशिरोयामावाकी तथा संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रतिनिधि के साथ ही कई देशों के महापौर, उपमहापौर, निदेशको आदि करीब 20 से अधिक व्यक्तियों ने विचार व्यक्त किये। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने विषय प्रवर्तन करते हुए अन्तरराष्ट्रीय शान्ति वर्ष 1986 से निरंतर किये जा रहे प्रयासों से इतिहास की जानकारी दी व कहा कि हिरोशिमा नागासाकी से हम सबक ले पाये अथवा नहीं, लेकिन कोविड आपदा ने यह बता दिया है कि सहय सामंजस्य, प्रेम और एकता को व्यवहार में लाये सुरक्षित भविष्य का स्वप्न पूरा नहीं हो सकता। आर.एस.ठाकुर ने द्वितीय विश्व युद्ध के हालात समीक्षा की। डॉ. बी.पी.भटनागर, प्रो. पी.आर.व्य ए.के.झा, डॉ. कमल सिंह राठौड़, डॉ रेणु वर्मा, भूपेन्द्र शर्मा, एड़वोकेट भरत, महाविद्यालयी भाविन त्रिवेदी, विद्यालयी छात्रा प्रशस्ति अरोडा व अरोडा, जगदीप सिंह आदि ने भी विचार व्यक्त कि अन्त में 2 मिनट का मौन रखकर त्रासदी में दि लोगों को श्रद्धांजलि दी गई तथा राष्ट्रगान के समापन हुआ।

दैनिक भास्कर उदयपुर, शुक्रवार 07 अगस्त, 2020

हिरोशिमा त्रासदी से मानवता को हुए नुकसान की भरपाई कर पाना नामुमकिन : डॉ. वेदप्रताप वैदिक

उदयपुर | हिरोशिमा स्मृति दिवस की 75वीं बरसी पर शान्तिपीठ संस्था की तरफ से 'सभ्यता का ध्वंस सरल, निर्माण कठिनः हिरोशिमा की सीख और कोविड-19 की गवाही' विषय पर वेबिनार हुआ।

विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ पत्रकार और भारतीय विदेश नीति परिषद के अध्यक्ष डॉ. वेदप्रताप वैदिक ने कहा कि हिरोशिमा त्रासदी से मानवता को जो नुकसान हुआ, उसकी भरपाई करना नामुमकिन है। दुनिया के सारे राष्ट्रों को आणविक अस्त्रों का विरोध करना चाहिए। विश्व बिरादरी में परमाणु हथियार संपन्न राष्ट्रों को अंतरराष्ट्रीय अछूत माना जाना चाहिए। इस दौरान पंजाब सरकार के पूर्व मुख्य सलाहकार मोहन सिंह कोठारी ने भी विचार रखे। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय शांति वर्ष पर 1986 से निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। पूर्व केंद्रीय मंत्री डॉ. कर्ण सिंह ने विचार रखे। समापन पर 2 मिनट का मौन रखा गया।

उभरती परमाणु शक्तियां और गांधी विचार पर चर्चा

विद्या भवन गांधी शिक्षा अध्ययन संस्थान में हिरोशिमा दिवस पर उभरती परमाणु शक्तियां और गांधी विचार विषय पर गुरुवार को ऑनलाइन वार्ता हुई। मुख्य वक्ता डॉ. नेमीचंद गोलिया ने गांधी के दर्शन की वर्तमान प्रासंगिकता के बारे में बताया। विद्या भवन सोसायटी अध्यक्ष एवं मुख्य संचालक अजय मेहता, अनुराग, डॉ. यतीन कुमार चौबीसा ने भी विचार रखे।

दैनिक भास्कर, उदयपुर, शुक्रवार, 11 दिसंबर, 2020

मानवाधिकार दिवस मनाया : वक्ताओं ने बच्चों, महिलाओं और कैदियों के अधिकारों पर की चर्चा

उदयपुर | अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस पर गुरुवार को ऑनलाइन कार्यक्रम हुए। बीएन यूनिवर्सिटी में मानवाधिकार सरंक्षण में भारत की भूमिका विषय पर वेबिनार हुआ।

इसमें मुख्य वक्ता एनएम पटेल ने बच्चों, महिलाओं और कैदियों के अधिकारों की जानकारी दी। डॉ. राजेश व्यास, पल्लवी भटनागर, पदम् कृष्णावत, हर्षवर्धन सिंह ने भी विचार रखे। इधर, विकल्प महिला हेल्पलाइन और सपोर्ट सेंटर पर स्टैंड अप फॉर वीमेन राइट्स थीम पर कार्यक्रम हुआ। इसमें महिलाओं को श्रम योजनाओं की जानकारी दी। भगवान दास ने बेहतर स्वास्थ्य के बारे में बताया। शमीना बानू, लक्ष्मी नागदा मौजूद थीं। शान्तिपीठ की श्रेष्ठतर प्रत्युद्धरण के लिए मानवाधिकारों का अवलम्बन विषय पर गोष्ठी हुई। इसमें वैज्ञानिक चिंतक मोहनसिंह कोठारी ने चर्चा की। डॉ. पीएस तलेसरा ने कहा कि अधिकार कर्तव्यों के प्रति जनचेतना विकसित किए जाने के साथ ही व्यापक हितों को समझने की आवश्यकता है। पुरातत्वविद् डॉ. ललित पांडे ने कहा कि हमारा राष्ट्र अनादिकाल से सर्वे भवंतु सुखिन पर चर्चा की। संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि समय और परिस्थिति के अनुसार मानवाधिकारों के संघर्ष का स्वरूप बदलता गया है। पूर्व बारां कलेक्टर सुमतिलाल बोहरा ने कहा कि इस समय यह हमारा प्रथम और अनिवार्य कर्तव्य होना चाहिए कि हम शासन द्वारा निर्देशित नियमों की पालना स्वयं से अधिक पड़ौसी के जीवन की रक्षार्थ के लिए करें। इतिहासविद् डॉ. जी.एल. मेनारिया, प्रो. उमाशंकर शर्मा ने भी विचार रखे।



उदयपुर. विकल्प महिला हेल्पलाइन का कार्यक्रम हुआ।

राजस्थान पत्रिका patrika.com
उदयपुर, शनिवार, 24 अक्टूबर, 2020

संयुक्त राष्ट्र की चुनौतियों पर की चर्चा

उदयपुर. संयुक्त राष्ट्र के 75 वें स्थापना दिवस की पूर्व संध्या पर शान्तिपीठ की ओर से संयुक्त राष्ट्र संघ की चुनौतियां और नए भारत की भूमिका विषयक संगोष्ठी हुई। इसमें राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधीश डॉ. पुष्पेन्द्र सिंह भाटी ने कहा कि आज कोरोना से 12 लाख लोग असमय काल के ग्रास बन चुके हैं और सभी राष्ट्र इसके निराकरण के लिए पर्यन्तशील हैं। ऐसे में संयुक्त राष्ट्र संघ ही सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना की शक्ति से विश्व को सुरक्षित कर सकता है। राजस्थान उच्च न्यायालय जयपुर के वरिष्ठ अधिवक्ता राजेन्द्र नारायण माथुर ने रासायनिक कचरा व जैविक अस्त्रों पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि संयुक्त राष्ट्र संघ इन समस्याओं को कैसे नियंत्रित कर पाएं, यह गम्भीर विषय है। गोष्ठी में पुरातत्व विद् डॉ. ललित पाण्डे, शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ,चिंतक मोहन सिंह कोठारी आदि ने भी विचार रखे।

उदयपुर, शुक्रवार, 25 अक्टूबर, 2019, राजस्थान पत्रिका .

'संयुक्त राष्ट्र एवं वर्तमान चुनौतियां' संगोष्ठी

उदयपुर . संयुक्त राष्ट्र दिवस पर शान्तिपीठ संस्थान की ओर से 'संयुक्त राष्ट्र एवं वर्तमान चुनौतियां' विषयक गोष्ठी का आयोजन किया गया। प्रमुख वक्ता राजनीति शास्त्र के प्रो. आर.बी. कुमार ने कहा कि शीत युद्ध का खात्मा, विश्व का द्विपक्षीय से बहुपक्षीय बनना और विश्व युद्ध का पुनः न होना संगठन की सार्थकता सिद्ध करता है। उन्होंने कहा 1991 में शीत युद्ध खत्म हो गया, किन्तु इसकी अवहेलना भी शुरू हो गई। आज संगठन आंतरिक तौर पर स्वयं के अस्तित्व की लड़ाई से जूझ रहा है।



शान्तिपीठ संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र की उपलब्धियों को कोई नकार नहीं सकता, चाहे वह उपनिवेशवाद के खात्मे की बात हो, शरणार्थियों के पुनर्स्थापन की अथवा आपदा प्रबंधन की। प्रो. एस.आर. व्यास, पूर्व देवस्थान अति. आयुक्त दिनेश कोठारी, कैलाश बिहारी वाजपेयी, भरत कुमावत, कीर्ति दुग्गड़, काव्य जैन ने भी विचार व्यक्त किए। भूपेन्द्र शर्मा ने संचालन किया। डॉ. परितोषचन्द्र दुग्गड़ ने आभार जताया।

दैनिक भास्कर, उदयपुर, शुक्रवार 25 अक्टूबर, 2019

उग्र राष्ट्रवाद विश्व शान्ति के लिए बाधक है : त्रिवेदी



उदयपुर | संयुक्त राष्ट्र दिवस पर गुरुवार को शान्तिपीठ संस्थान की 'संयुक्त राष्ट्र एवं वर्तमान चुनौतियां' विषय पर गोष्ठी हुई। प्रमुख वक्ता राजनीति शास्त्र के प्रो. आर.बी. कुमार ने कहा कि शीत युद्ध का खात्मा, विश्व का द्विपक्षीय से बहुपक्षीय बनना और विश्व युद्ध का दोबारा नहीं होना संगठन की सार्थकता सिद्ध करता है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि उग्र राष्ट्रवाद विश्व शान्ति में बाधक है। संयुक्त राष्ट्र की उपलब्धियों को कोई नकार नहीं सकता, चाहे वह उपनिवेशवाद के खात्मे की बात हो या शरणार्थियों के पुनर्स्थापना की। प्रो. एस.आर. व्यास, पूर्व देवस्थान आयुक्त दिनेश कोठारी, कैलाश बिहारी वाजपेयी, एडवोकेट भरत कुमावत, कीर्ति दुग्गड़, काव्य जैन ने भी विचार रखे। संचालन भूपेन्द्र शर्मा ने किया।

राजस्थान पत्रिका
patrika.com
उदयपुर, रविवार 06 अक्टूबर, 2019

कृतियों को ऑनलाइन भेजा जापान

उदयपुर. अंतरराष्ट्रीय शांति दिवस पर मेयर्स फोर पीस जापान की ओर से प्रस्तावित पीस फूल टाउन्स थीम पर नगर निगम व शांति पीठ संस्थान के साझे में हुई कलाकृति प्रतियोगिता की श्रेष्ठ 5-5 कृतियों का चयन कर ऑनलाइन जापान भिजवाया गया है।

जूनियर श्रेणी में सेन्ट एन्थनी सीनियर सैकण्डरी स्कूल की प्रशस्ती अरोड़ा, गीत सुहालका, सेन्ट्रल अकेडमी के मीत जैन, सेन्ट पॉल से आर्चिसा वाजपेयी तथा सेन्ट एन्थनी की चाहना जैन की कृतियां चुनी गई। वहीं सीनियर श्रेणी में सेन्ट्रल अकेडमी की पंखुरी शर्मा, उम्मे सलमा, सेन्टपॉल के हकीमुद्दीन किफायत अली, स्कॉलर एरेना से कनिष्का कुशवाहा तथा सेन्टपॉल से देवांश वाजपेयी की कृतियों को चुना गया।

दैनिक भास्कर, उदयपुर, रविवार 6 अक्टूबर, 2019

शांति दिवस पर पीसफुल टाउन्स थीम पर हुई कलाकृति प्रतियोगिता

उदयपुर |नगर निगम और शान्तिपीठ संस्थान के साझे में अंतरराष्ट्रीय शांति दिवस पर मेयर्स फॉर पीस, जापान की प्रस्तावित पीसफुल टाउन्स थीम पर नगर में कलाकृति प्रतियोगिता हुई। श्रेष्ठ 5-5 कृतियों को चुनकर जापान ऑनलाइन भेजा गया। जूनियर श्रेणी में सेन्ट एंथनी सीनियर सेकंडरी स्कूल की प्रशस्ति अरोड़ा, गीत सुहालका, सेंट्रल अकेडमी के मीत जैन, सेन्ट पॉल से आर्चिसा वाजपेयी और सेन्ट एंथनी की चाहना जैन की कृतियां चुनी गई। जबकि सीनियर श्रेणी में सेन्ट्रल अकेडमी की पंखुरी शर्मा, उम्मे सलमा, सेंटपॉल के हकीमुद्दीन किफायत अली, स्कॉलर्स एरिना से कनिष्का कुशवाहा तथा सेंटपॉल से देवांश वाजपेयी की कृतियों को चुना गया। निर्णायक मंडल में कलाविद् प्रो. रघुनाथ शर्मा और दिनेश कोठारी शामिल थे।

दैनिक भास्कर उदयपुर, शनिवार 21 सितंबर 2019

अंतरराष्ट्रीय शान्ति दिवस • शान्तिपीठ और निगम के संवाद कार्यक्रम में बोले वक्ता

विकास के नाम पर जलवायु को प्रदूषित कर विश्व को विनाश की ओर ले जा रहे हैं कई देश

भास्कर न्यूज | उदयपुर

जलवायु परिवर्तन शान्ति और सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरा बनता जा रहा है। विश्व में इसका युद्ध स्तर पर मुकाबला किया जाना बेहद जरूरी है। जिन राष्ट्रों ने विकास के नाम पर जलवायु को विकृत किया और विश्व को विनाश की ओर धकेला है वे आज प्रदूषण खात्मे की बात तो कर रहे हैं, मगर आधे-अधूरे मन से और समस्याएं बढ़ जाती हैं। यह बात शान्तिपीठ संस्थान और उदयपुर नगर निगम के अंतरराष्ट्रीय शान्ति दिवस पर हुए संवाद कार्यक्रम में कई वक्ताओं ने कहे। मेयर्स फॉन पीस, हिरोशिमा, जापान के प्रस्ताव पर नगर के दो दर्जन छात्र-छात्राओं द्वारा 'पीसफूल टाउन्स' थीम पर कलाकृतियों



की प्रदर्शनी लगाई गई, इस मौके पर उनका अवलोकन और मूल्यांकन के बाद संवाद कार्यक्रम रखा गया। महापौर चन्द्रसिंह कोठारी ने कहा कि कुछ राष्ट्र प्रदूषण को लगातार बढ़ाते हुए खतरनाक स्थिति पर ले आए हैं, आज उन्हीं देशों को शान्ति के पाठ को आत्मसात करने की कहीं ज्यादा जरूरत है। निगम आयुक्त अंकित कुमार सिंह ने कह कि अब 'राइट टू पीस' पूरी संवेदनशीलता के साथ आगे बढ़ाया जाना चाहिए। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि भारतीय मनीषा विश्व शान्ति का आह्वान है। 'पीसफूल टाउन्स' के निहितार्थ हमें विरासत में मिले हैं और हमें इसके मूल्यों को नया विस्तार देना चाहिए जो पूर्णता बोधक हो। कलाकृतियों का मूल्यांकन पूर्व देवस्थान आयुक्त दिनेश कोठारी और प्रो. रघुनाथ शर्मा ने किया। 10 श्रेष्ठ कलाकृतियों को जापान भेजा जाएगा। संवाद में स्कूलों से आए छात्र-छात्राओं ने भी विचार व्यक्त किए। संगोष्ठी में डॉ. परितोष दुग्गड़, प्रो. श्रीनिवास अय्यर, डॉ. सम्पत राज ने भी अपनी बात कही।

दैनिक नवज्योति

उदयपुर, शनिवार, 21 सितंबर 2019

जलवायु परिवर्तन शांति और सुरक्षा के लिए खतरा

ब्यूरो नवज्योति/उदयपुर।



जलवायु परिवर्तन, शांति और सुरक्षा के लिए सबसे बड़ा खतरा बनता जा रहा है, इसलिए विश्व में इसका युद्ध स्तर पर मुकाबला किया जाना अति आवश्यक माना जा रहा है। जिन राष्ट्रों ने विकास के नाम पर जलवायु को विकृत किया और विश्व को विनाश की ओर धकेला वे आज प्रदूषण खात्मे की बात तो कर रहें हैं, किन्तु आधे अधूरे मन से। समस्याएं निरन्तर बढ़ती जा रही हैं। ये विचार शुक्रवार को शांतिपीठ संस्थान और नगर निगम द्वारा निगम के कॉन्फ्रेंस हॉल में अंतरराष्ट्रीय शांति दिवस के उपलक्ष में आयोजित संवाद कार्यक्रम में कई वक्ताओं ने व्यक्त किए। मेयर्स फॉन पीस, हिरोशिमा, जापान के प्रस्ताव पर नगर के दो दर्जन छात्र-छात्राओं द्वारा पीसफुल टाउंस थीम पर कलाकृतियों की प्रदर्शनी लगाई गई जिसका अवलोकन एवं मूल्यांकन के बाद संवाद कार्यक्रम रखा गया। अध्यक्षता करते हुए महापौर चंद्रसिंह कोठारी ने कहा कि पर-उपदेश में कुशलता की नहीं आचरण में कुशलता लाने की आज खास जरूरत है। निगम आयुक्त अंकित कुमार सिंह ने कहा कि अब राइट टू पीस पूर्ण संवेदनशीलता के साथ आगे बढ़ाया जाना चाहिए। इस अवसर पर शांतिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी, पूर्व देवस्थान आयुक्त दिनेश कोठारी, प्रो. रघुनाथ शर्मा, डॉ. परितोष दुग्गड़, प्रो. श्रीनिवास अय्यर, डॉ. सम्पत राज आदि उपस्थित थे।

प्रातःकाल

उदयपुर, गुरूवार 19 दिसम्बर, 2019





किसी चीज को निष्ठापूर्वक स्वीकारें तभी परिवर्तन संभव : सारंगदेवोत

उदयपुर (वि)। 'समकालीन चुनौतियों का गाँधीवादी समाधान' विषय पर शान्तिपीठ संस्थान ओ.टी.सी. व राजस्थान विद्यापीठ के साझे में हरिशचन्द्र माथुर लोक प्रशासन के सभागार में राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई, जिसमें देश के विभिन्न हिस्सों से आए गाँधीवादी एवं विषय विशेषज्ञों ने गहन एवं विषद चर्चा की।

सेमीनार के प्रमुख वक्ता गाँधी शान्ति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली के अध्यक्ष, कुमार प्रशान्त ने गाँधीजी से सम्बन्धित कई आयामों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि कैसे एक साधारण गुजराती गीत भाषा की दीवारों को तोड़ते हुए निश्चल व्यक्ति के निर्माण में सहायक हुआ संदर्भ की महत्ता बताते हुए उन्होंने स्पष्ट किया की गाँधी जी ने जंगलों के बजाय लोगों के बीच रहते हुए आश्रम बनाये और अपने प्रयोगों से आजादी की लड़ाई को जन-जन तक पहुँचानें में सफ्ल हुए। नागरिकता को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि ये संविधान प्रदत्त है। शान्ति का सामाजिक संदर्भ न हो तो यह हासिल नहीं होती। सभी अपनी मर्यादा में रहेंगे तो शान्ति रहेगी।

मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए मेवाड़ विश्वविद्यालय के चेयरमेन डॉ. अशोक कुमार गदिया ने अपने उद्बोधन में गाँधी जी की दक्षिण अफ्रीका की यात्रा संदर्भ देते हुए कहा कैसे एक शर्मिला युवक गाँधी एक निर्भीक योद्धा बनकर देश लौटा और भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन को जन आन्दोलन में तब्दिल करने में क्रांतिकारी भूमिका निभाई। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति प्रो. शिव सिंह सारंगदेवात ने बताया कि परिवर्तन तभी संभव है जब किसी चीज को हम निष्ठापूर्वक खुले मन से स्वीकार करें। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि गाँधी जी 20वीं शताब्दी का ज्योति पुंज 21वीं शताब्दी को प्रकाशित कर रहा है और इस प्रकाश से चलकर हम इसे उल्लास की शताब्दी बना सकते हैं। उन्होंने गाँधी जी में प्रवृति ओर निवृति का अद्भूत समन्वय बताते हुए कहा कि आत्म शुद्धि प्रक्रिया के बिना हम गाँधीजी को आत्मसात् नहीं कर सकते हैं।

प्रारम्भ में सेमीनार को ऑर्गेनाइजिंग सेक्रेटरी डॉ. परितोष दुग्गड़ ने संगोष्ठी की भूमिका प्रस्तुत की। सेन्ट्रल एकेडमी के विद्यार्थियों ने शिक्षकों के साथ वैष्णवजन तो तैने कहिए भजन प्रस्तुत किया। देहली पब्लिक स्कूल के दो बालकों ने गाँधी जी पर अभिव्यक्ति प्रस्तुत की। समापन सत्र की अध्यक्षता भारतीय लोक मण्डल के उपाध्यक्ष व गाँधीवादी चिन्तक रियाज तहसीन ने की एवं मुख्य अतिथि वेदान्ता ग्रुप के पूर्व अध्यक्ष अखिलेश जोशी थे। सेमीनार की संक्षिप्त रिपोर्ट डॉ. आर.बी.कुमार ने प्रस्तुत की। धन्यवाद ज्ञापन प्रो. एस.सी.श्रीमाली ने किया। मंच संचालन डॉ. भूपेन्द्र शर्मा व डॉ. कमल सिंह राठौड़ ने किया।

राजस्थान पत्रिका . उदयपुर, गुरुवार, 19 दिसम्बर, 2019
patrika.com

'गांधीवादी समाधान' विषयक सेमिनार

गांधी विचारों पर हुआ मंथन



हरिशचन्द्र माथुर लोक प्रशासन सभागार में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में विचार व्यक्त करते वक्ता। पत्रिका

उदयपुर . शान्तिपीठ संस्थान, ओटीसी और राजस्थान विद्यापीठ के साझे में हरिशचन्द्र माथुर लोक प्रशासन सभागार में राष्ट्रीय संगोष्ठी हुई। गांधीवादी एवं विषय विशेषज्ञों ने चर्चा की। संगोष्ठी का विषय 'समकालीन चुनौतियों का गांधीवादी समाधान' था।

प्रमुख वक्ता गांधी शान्ति प्रतिष्ठान नई दिल्ली के अध्यक्ष कुमार प्रशान्त, मुख्य अतिथि मेवाड़ विवि के चेयरमेन डॉ. अशोक कुमार गदिया, अध्यक्षता करते हुए राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति प्रो. एसएस. सारंगदेवात, शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी, आयोजन सचिव डॉ. परितोष दुग्गड़, प्रो. पी.आर. व्यास, प्रो. एस.आर. व्यास, डीयू के प्रो. बजरंग तिवारी, डॉ. रामकृष्ण घोष, डॉ. प्रेमदान भारतीय, डॉ. कल्पना जैन, डॉ. गायत्री तिवारी, डॉ. जोरावर सिंह राणावत, डॉ. विकास नोटियाल ने विचार व्यक्त किए।

दैनिक भास्कर, उदयपुर, गुरुवार, 19 दिसंबर, 2019

हमारी समझ को चुनौती दे रहे हैं गांधीजी के 150 वर्ष : प्रशांत

'समकालीन चुनौतियों का गांधीवादी समाधान' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी



उदयपुर | शान्तिपीठ संस्थान, ओटीसी और राजस्थान विद्यापीठ के साझे में समकालीन चुनौतियों का गांधीवादी समाधान विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी हरिश्चंद्र माथुर लोक प्रशासन के सभागार में बुधवार को हुई। प्रमुख वक्ता गांधी शान्ति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली के अध्यक्ष कुमार प्रशान्त ने कहा कि गांधी जी ने जंगलों के बजाय लोगों के बीच रहते हुए आश्रम बनाए और अपने प्रयोगों से आजादी की लड़ाई को जन-जन तक पहुंचाने में सफल हुए। नागरिकता को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि ये संविधान प्रदत्त है। शान्ति का सामाजिक संदर्भ न हो तो यह हासिल नहीं होती। सभी अपनी मर्यादा में रहेंगे तो शान्ति रहेगी। गांधी जी के 150 वर्ष हमारी समझ को चुनौती देते हैं। गांधी जी ने चुनौतियों को स्वीकार किया, इसलिए उन्होंने गोली खाई। मुख्य अतिथि मेवाड़ विश्वविद्यालय के चेयरमैन डॉ. अशोक कुमार गदिया ने कहा कि कैसे एक शर्मिला युवक गांधी एक निर्भीक योद्धा बनकर देश लौटा और भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन को जन आन्दोलन में तब्दिल करने में क्रांतिकारी भूमिका निभाई। अध्यक्षता राजस्थान विद्यापीठ के कुलपति प्रो. शिव सिंह सारंगदेवात ने की। मेवाड़ विश्वविद्यालय के डॉ. विजय वैद्य, शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी, डॉ. परितोष दुग्गड़, प्रो. पी.आर.व्यास, प्रो. एस.आर.व्यास, प्रो. बजरंग तिवारी, डॉ. रामकृष्ण घोष, डॉ. प्रेमदान भारतीय आदि ने भी विचार रखे। भारतीय लोक मण्डल के उपाध्यक्ष रियाज तहसीन, आर.बी. कुमार, प्रो. एस.सी.श्रीमाली मौजूद थे।

82 उदयपुर, बुधवार, 7 अगस्त 2019 dainiknavajyoti.com दैनिक नवज्योति

अहिंसा और सत्याग्रह से ही बनेगा आदर्श विश्व : रियाज तहसीन

हिरोशिमा दुखान्तिका की 74वीं वर्षगांठ पर निकाली रैली



ब्यूरो/नवज्योति, उदयपुर

हिरोशिमा दुखान्तिका की 74वीं बरसी पर शान्तिपीठ की ओर से राजकीय कन्या उ.मा.वि. रेजीडेन्सी के सभागार में आयोजित शान्तिसभा में गांधीवादी रियाज तहसीन ने कहा कि आज विश्व को ऐसी व्यवस्था निर्मित करने की आवश्यकता है जिससे न केवल महायुद्ध के पार जाया जा सके अपितु आदर्श विश्व की ओर जाने का मार्ग प्रशस्त हो सके। ऐसे में कोई रास्ता नजर आता है तो अहिंसा और सत्याग्रह के आंदोलन का मार्ग है जो विश्व मानवता को न केवल आत्मघात के भंवर में फंसने से बचा सकता है बल्कि प्रेम और सौहार्द्र का वातावरण पैदा कर मनुष्य मात्र के अस्तित्व में छिपे दिव्यता को साकार कर सकता है।

महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. परमेन्द्र दशोरा ने कहा कि आज का युवक विश्वसनीयता के कृष्ण की भूमिका में खड़ा हो तो समस्याओं का शमन होना निश्चित है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने युवा समुदाय से आव्हान किया कि सत्याग्रह और अहिंसा का मार्ग अपनाकर वे आत्मप्रज्ञ विश्व नागरिक बने। कार्यक्रम में कवि अजातशत्रु, रेजीडेन्सी की प्राचार्या उर्मिला त्रिवेदी तथा सेंट एन्थोनी, आलोक, सेंट मेरिज आदि की छात्राओं ने भी विचार व्यक्त किये। कुछ विद्यालयों की टीमों ने शान्ति गीत प्रस्तुत किये। सभी ने खड़े होकर न्याय, एकता, अणु आयुध मुक्त विश्व, पर्यावरण संरक्षण एवं विश्व शान्ति के लिए प्रतिबद्धता के संकल्प लिये। दो मिनट का मौन रखकर परमाणु विभिषिका में मारे गये निर्दोष लोगों को श्रद्धांजलि दी गई। राष्ट्रगान के साथ विसर्जन हुआ। संचालन भरत कुमावत ने किया।

इसके पूर्व एक दर्जन से अधिक चुनिंदा सरकारी व गैर-सरकारी विद्यालयों के छात्र-छात्राएं, शिक्षक आदि टाउन हॉल प्रांगण में एकत्रित हुए। यहां से शान्ति मार्च का नेतृत्व नगर निगम महापौर चन्द्रसिंह कोठारी ने कलेक्ट्रेट तक किया। शान्ति मार्च बापू बाजार, देहलीगेट, चेटक सर्कल होते हुए रेजीडेन्सी पहुंचा।

दैनिक भास्कर
उदयपुर, गुरुवार, 15 अगस्त 2019

शिक्षा सिर्फ डिग्री नहीं, यह समाज में सकारात्मक बदलाव लाती है : प्रो. सुथ

अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस उपलक्ष्य में संगोष्ठी

उदयपुर | युग परिवर्तन के साथ शिक्षा में भी परिवर्तन होते आए हैं, लेकिन आज के दौर में दुनिया जिस मुकाम पर है वहां लोग न केवल भय, आतंक, हताशा और भविष्य के प्रति निराशा से ग्रसित है बल्कि गैर इंसानी ताकतों का शिकार हो रहे हैं। यह बात शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कही। वे शांतिपीठ और सुखाड़िया विश्वविद्यालय की ओर से शिक्षा विभाग संकाय में अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस उपलक्ष्य में हुई संगोष्ठी में सम्बोधित कर रहे थे। यूएन की तरफ से घोषित "शिक्षा में रूपांतरण" थीम को लेकर त्रिवेदी ने कहा कि शिक्षा रूपान्तरण आदर्शों की उपलब्धि की ओर इशारा करती है। अध्यक्षता करते हुए प्रो. सी.आर. सुथार ने कहा कि शिक्षा समाज में सकारात्मक बदलाव लाती है यह सिर्फ एक डिग्री मात्र नहीं, बल्कि व्यावहारिक जीवन को बदलती है। विद्युत अधीक्षण अभियन्ता एके झा ने कहा कि हमारी शिक्षा का उद्देश्य चैतन्य जागरण करने की जगह सूचनाओं का एकत्रीकरण मात्र रह गया है। कवि श्रेणीदान चारण ने राष्ट्रीय एकता व संवेदनशीलता विषय पर कविता पाठ किया। ललित पटेल ने कश्मीर समस्या का संसद द्वारा समाधान खोजने पर कविता प्रस्तुत की। डॉ.



परितोष दुग्गड़ और गजेंद्र सिंह ने भी विचार व्यक्त कि

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, बुधवार, 14 अगस्त 2019

आज स्वतंत्रचेता जिम्मेदार विश्व नागरिकों की जरूरत

अन्तरराष्ट्रीय युवा दिवस संगोष्ठी

उदयपुर। युग परिवर्तन के साथ ही शिक्षा में भी परिवर्तन होते आये हैं, किन्तु आज के दौर में दुनिया जिस मुकाम पर पहुंच चुकी है वहां लोग भय, आतंक, हताशा और भविष्य के प्रति निराशा से ग्रसित ही नहीं गैर इंसानी ताकतों का शिकार हो रहे हैं। ऐसे में संयुक्त राष्ट्र संघ का स्वप्न कि शिक्षा में रूपान्तरण के साथ ही आज का युवा नवजागरण की चेतना के साथ जिम्मेदार नागरिक बन सके और सकारात्मक रास्ता चुन सके, यह कितना चरितार्थ हो पाएगा, यह और बात है। किन्तु शिक्षा में रूपान्तरण की दिशा में कदम उठाने का आग्रह निःसन्देह स्वागत योग्य है। आज जरूरत है स्वतंत्रचेता जिम्मेदार विश्व नागरिकों की जिससे मानवता सौन्दर्य बोध के साथ ही चिरायु होने का उल्लास पुनः प्राप्त करे। यह विचार मंगलवार को शान्तिपीठ के विस्तार कार्यक्रम एवं सुविवि



के शिक्षा विभाग के साझे में विभाग के सेमिनार हॉल में अन्तरराष्ट्रीय युवा दिवस के संदर्भ में आयोजित संगोष्ठी में वक्ताओं ने व्यक्त किये। शान्तिपीठ द्वारा सोमवार को युवा दिवस युवा समूहों में संवाद तथा अमरखजी में श्रमदान के रूप में आयोजित किया गया था। संगोष्ठी में शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी, डॉ. परितोष दुग्गड़, प्रो. सी.आर. सुथार, विद्युत अधिशाषी अभियन्ता ए.के झा, कवि श्रेणीदान चारण ने भी विचार रखे।





अहिंसा-सत्याग्रह के मार्ग ही आत्मघात से बचा सकते हैं

उदयपुर (वि)। आज विश्व को ऐसी व्यवस्था निर्मित करने की आवश्यकता है जिससे न केवल महायुद्ध के पार जाया जा सके अपितु आदर्श विश्व की ओर जाने का मार्ग प्रशस्त हो सके। ऐसे में कोई रास्ता नजर आता है तो अहिंसा और सत्याग्रह के आंदोलन का मार्ग है जो विश्व मानवता को न केवल आत्मघात के भंवर में फंसने से बचा सकता है बल्कि प्रेम और सौहार्द्र का वातावरण पैदा कर मनुष्य मात्र के अस्तीत्व में छिपे दिव्यता को साकार कर सकता है। उक्त विचार आज हिरोशिमा दुखान्तिका की 74वीं बरसी पर शान्तिपीठ द्वारा राजकीय कन्या उ.मा.वि. रेजीडेन्सी के सभागार में आयोजित शान्ति सभा में कई वक्ताओं ने व्यक्त किये। सभा की अध्यक्षता करते हुए गांधीवादी रियाज तहसीन ने कहा कि भारतीय संस्कृति विश्व शान्ति की भावना से ओत-प्रोत है। उन्होंने युद्ध सामग्री के निर्माण और प्रयोगों पर गंभीर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि इससे धरती के पर्यावरण पर सर्वाधिक क्षति हुई है। महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. परमेन्द्र दशोरा ने कहा कि शक्तिमान द्वारा दिया गया शान्ति का संदेश सबके कानों तक पहुंचता है। उन्होनें वर्तमान में भारतीय संसद में शान्तिपूर्वक किये गये बदलाव को ऐतिहासिक बताते हुए कहा कि आज का युवक विश्वसनीयता के कृष्ण की भूमिका में खड़ा हो तो समस्याओं का शमन होना निश्चित है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने युवा समुदाय को आह्वान किया की सत्याग्रह और अहिंसा का मार्ग अपनाकर वे आत्मप्रज्ञ विश्व नागरिक बने। उन्होंने कहा भारतीय राष्ट्रीयता की सीमाएं संकुचित नहीं हैं, राष्ट्र बोध में विश्व कुटुम्ब की अवधारणा समाहित है। इसके आन्दोलनात्मक विस्तार दिये जाने से विश्वात्मा को नया बल प्राप्त होगा। उन्होंने गांधी को 21वीं शताब्दी का संदेश बताते हुए कहा कि यह भारतीय मनीषा के जीने का मार्ग है, जरूरत है त्याग और आत्म शुद्धि की। कवि अजातशत्रु ने कहा कि शान्ति और क्रांति के बीच फैली भ्रांति को मिटाना होगा। रेजीडेन्सी स्कूल की प्राचार्या उर्मिला त्रिवेदी ने कहा कि विषम हालात में भी जो जीवन का संतुलन बना सके, वह शिक्षा है। सभा में सेंट एन्थोनी, आलोक विद्यालय, सेंट मेरिज आदि की छात्राओं ने भी विचार व्यक्त किये तथा कुछ विद्यालयों की टीमों ने शान्ति गीत प्रस्तुत किये। 2 मिनट का मौन रखकर परमाणु विभिषिका में मारे गये निर्दोष लोगों को श्रद्धांजलि दी गई। राष्ट्रगान के साथ विसर्जन हुआ।

सभा का संचालन भरत कुमावत ने किया। इसके पूर्व एक दर्जन से अधिक चुनिंदा सरकारी व गैर-सरकारी विद्यालयों के छात्र-छात्राएँ, शिक्षक आदि टाऊन हॉल प्रांगण में एकत्रित हुए। यहाँ से शान्ति मार्च का नेतृत्व नगर निगम महापौर चन्द्रसिंह कोठारी ने कलेक्ट्रेट तक मार्च करते हुए किया। शान्ति मार्च बापु बाजार, देहलीगेट, चेटक सर्कल होते हुए रेजीडेन्सी पहुँचा।

दैनिक भास्कर बुधवार 7 अगस्त, 2019

शांति मार्च से दिया विश्व शांति, मैत्री और मानवीय आदर्शों का संदेश

हिरोशिमा दुखांतिका की 74वीं बरसी पर शान्तिपीठ ने शांति मार्च निकाला

उदयपुर | हिरोशिमा दुखांतिका की 74वीं बरसी पर मंगलवार को शान्तिपीठ ने शांति मार्च निकाला। स्कूली छात्रों ने विश्व शांति, मैत्री और मानवीय आदर्शों का संदेश दिया।

मार्च टाउन हॉल से शुरू हुआ जो बापू बाजार, देहलीगेट, चेटक सर्कल होते हुए राजकीय कन्या उच्च माध्यमिक स्कूल, रेजीडेन्सी पहुंचा। शांति सभा में रियाज तहसीन ने कहा कि भारतीय संस्कृति विश्व शान्ति की भावना से ओत-प्रोत है। एमपीयूएटी के पूर्व कुलपति प्रो. परमेन्द्र दशोरा ने संसद में शान्तिपूर्वक किए बदलाव को ऐतिहासिक बताते हुए कहा कि आज का युवक विश्वसनीयता के कृष्ण की भूमिका में खड़ा हो तो समस्याओं का शमन होना निश्चित है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने युवा समुदाय को आह्वान किया कि सत्याग्रह और अहिंसा का मार्ग अपनाकर वे आत्मप्रज्ञ विश्व नागरिक बनें। कवि अजातशत्रु ने कहा कि शान्ति और क्रांति के बीच फैली भ्रांति को मिटाना होगा। रेजीडेन्सी स्कूल की प्राचार्या उर्मिला त्रिवेदी ने कहा कि विषम हालात में भी जो जीवन का संतुलन बना सके, वह शिक्षा है। दो मिनट का मौन रखकर परमाणु विभीषिका में मारे गये निर्दोष लोगों को श्रद्धांजलि दी गई। मौके पर मेयर चंद्रसिंह कोठारी, भरत कुमावत सहित कई शह[illegible] शामिल हुए।



हिरोशिमा दुखांतिका की 74वीं बरसी पर शांति मार्च निकाला।

राजस्थान पत्रिका . उदयपुर, गुरुवार, 08 अगस्त, 2019
patrika.com

शांति मार्च से दिया शांति संदेश

उदयपुर@पत्रिका . हिरोशिमा दुःखान्तिका की 74वीं बरसी पर शांतिपीठ संस्थान की ओर से मंगलवार को राजकीय कन्या उमावि रेजीडेंसी सभागार में शांति सभा का आयोजन हुआ। कार्यक्रम को रियाज तहसीन, पूर्व कुलपति परमेंद्र दशोरा, शान्तिपीठ संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी, कवि अजातशत्रु, स्कूल प्राचार्य उर्मिला त्रिवेदी एवं अन्य ने विचार व्यक्त किए। मौके पर 2 मिनट का मौन रखकर परमाणु विभिषिका में मारे गए निर्दोष लोगों को श्रद्धांजलि दी गई। इससे पहले टाउन हॉल परिसर से शांति मार्च रवाना हुई, जिसका नेतृत्व महापौर चंद्रसिंह कोठारी ने किया। मार्च कई मार्गों से होता हुआ स्कूल पहुंचा।

दैनिक भास्कर
dainikbhaskar.com
उदयपुर, मंगलवार, 23 अप्रैल, 2019 | 11

आतंकी घटना में मारे गए निर्दोषों को श्रद्धांजलि दी

उदयपुर | शान्तिपीठ में सोमवार को श्रद्धांजलि सभा हुई। इसमें श्रीलंका में आंतकवादी घटना में मारे गए निर्दोष लोगों को श्रद्धांजलि दी गई। संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी, डॉ. ललित पाण्डे आदि मौजूद थे।

राजस्थान पत्रिका
23 अप्रैल, 2019

मृतकों को किया नमन

उदयपुर . श्रीलंका में हुई आतंकी घटना में मारे गए लोगों को शान्तिपीठ में श्रद्धांजलि दी गई। मोहनसिंह कोठारी, संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने घटना की निंदा की गई। डॉ. ललित पाण्डे, एड.एम.एस. राणावत मौजूद थे।

सच्चा हमसफर
दैनिक नवज्योति
उदयपुर, मंगलवार, 23 अप्रैल 2019

आंतकवादी घटना में मारे गए लोगों को श्रद्धांजलि

उदयपुर। श्रीलंका में आंतकवादी घटना में मारे गये निर्दोष लोगों को यहां शान्तिपीठ में श्रद्धांजलि दी गई। चिंतक मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि किसी भी प्रकार के आंतकवाद के खिलाफ सख्त से सख्त कदम उठाये जाने चाहिये। शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि जब तक मानवीय आदर्शों के लिए भी राष्ट्रों का दौहरा व्यवहार बना रहेगा तब तक मानवता कुंचली जाती रहेगी। डॉ. ललित पाण्डे, एड. एम.एस.राणावत भी उपस्थित थे।

दैनिक भास्कर
उदयपुर, बुधवार, 11 दिसंबर, 2019

विश्व मानवाधिकार दिवस : कॉलेजों-संस्थाओं में हुए कार्यक्रम, विशेषज्ञों ने अधिकार और न्याय पर दिया जोर

निरंकुश सत्ताएं हैं हिंसा का कारण, मानव अधिकारों को खत्म किया जा रहा, यह लोकतंत्र के लिए घातक

सिटी रिपोर्टर | उदयपुर

आर्ट्स कॉलेज में सहायक अधिष्ठाता छात्र कल्याण और छात्र संघ के साझे में मंगलवार को अंतरराष्ट्रीय विश्व मानवाधिकार दिवस मनाया गया। सहायक अधिष्ठाता छात्र कल्याण गिरिराज सिंह चौहान ने कहा कि वर्तमान हालातों को देखते मानव अधिकारों की रक्षा और उनके समर्थन की जरूरत है। पिछले कुछ समय से महिलाओं से संबंधित मानव अधिकारों का हनन बढ़ता जा रहा है। इस पर गंभीर चिंतन करने की जरूरत है। राजनीति विज्ञान के प्रोफेसर संजय लोढ़ा ने कहा कि वर्तमान समय में कुछ सवाल बहुत महत्वपूर्ण हैं जो हमारे अस्तित्व से जुड़े हैं। उन्होंने कहा कि हमारा राजस्थान कई महत्वपूर्ण अधिकारों के नियम देने में अग्रणी रहा है। इसमें सूचना का अधिकार, रोजगार गारंटी अधिनियम, भोजन का अधिकार, लोक सेवाओं की डिलीवरी की गारंटी का अधिकार और स्वास्थ्य का अधिकार आदि शामिल हैं।

कानून का राज खत्म हो जाएगा तो देश में अराजकता की स्थिति फैल जाएगी : डॉ. दीक्षित

इस दौरान प्रोफेसर डॉ. विजया दीक्षित ने हैदराबाद रेप-हत्या-एनकाउंटर मामले को लेकर कहा कि देश में कानून का राज रहना चाहिए। अगर यह खत्म हो गया तो अराजकता की स्थिति पैदा हो जाएगी। जो लोकतांत्रिक देश के लिए ठीक नहीं है। डॉ. गरिमा मिश्रा ने महिलाओं के अधिकारों के बारे में बताया। अर्थशास्त्र विभाग की डॉ. नेहा पालीवाल ने कहा कि जब तक जीवन जीने की आधारभूत आवश्यकता की पूर्ति नहीं होगी तब तक मानव अधिकारों की बात करना बेमानी होगी। हमें सामाजिक और आर्थिक अधिकारों पर जोर देना चाहिए। इस दौरान डॉ सतीश अग्रवाल, छात्रसंघ अध्यक्ष भूपेंद्र सिंह देवड़ा, पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष मोहित नायक, जीतेश खटीक, भाग्योदय सोनी आदि मौजूद थे।



मानवीय अधिकारों को भारत ने खोजा, आज विश्व में इसे कर रहे खत्म : त्रिवेदी

विश्व मानवाधिकार दिवस पर शान्तिपीठ में संवाद कार्यक्रम हुआ। संस्थान के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि मानवीय गरिमा और उत्कर्ष का रास्ता भारतीय मनीषियों ने खोजा है और सत्ताओं पर अंकुश का कार्य किया है। लेकिन इससे उलट आज विश्व में सत्ताएं निरंकुश होकर हिंसा का कारण बन चुकी हैं। ऐसे में अहिंसा के रास्ते चलकर ही इसे दूर कर सकते हैं। एमजी कॉलेज में मानवाधिकार दिवस पर व्याख्यान हुआ। छात्राओं ने मानव अधिकार पर लघु नाटक प्रस्तुत किया। सीवरेज श्रमिकों ने भी मानवाधिकार दिवस मनाया। कनिष्ठ अभियंता अनिल पाटीदार, सामुदायिक अधिकारी योगेश आत्रेय मौजूद थे। राजस्थान विद्यापीठ में कुलपति प्रो. एस.एस. सारंगदेवोत ने कहा कि हमें अधिकारों के साथ हमारे कर्तव्यों का भी निर्वाह करना चाहिए।

प्रातःकाल



सच्चा हमसफर
दैनिक नवज्योति
उदयपुर, शनिवार, 22 सितंबर 2018

संस्कारित जीवन से ही शांति की स्थापना संभव



उदयपुर। संस्कारित जीवन ही समाज में शान्ति की स्थापना कर सकता है। संस्कार पोषित शिक्षा केन्द्रों का अभाव विश्व मानव मंगल के स्वप्न को साकार नहीं कर सकता। आवश्यकता है विश्व एकता को यथार्थ में परिणिति देने हेतु हम में से हर एक अपने नैतिक दायित्व को समझे। यह विचार अंतरराष्ट्रीय शान्ति दिवस के मौके पर शांतिपीठ द्वारा आयोजित संवाद कार्यक्रम में वक्ताओं ने व्यक्त किए। अध्यक्षता महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. उमाशंकर शर्मा ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप देवस्थान अतिरिक्त आयुक्त दिनेश कोठारी थे। शांतिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी, पूर्व प्रशासनिक अधिकारी सुमतिलाल बोहरा, प्रो. प्रितोष दुग्गड़ ने शान्ति शिक्षा पर प्रकाश डाला। शिक्षाविद् कैलाश बिहारी वाजपेयी ने राष्ट्र को सभी तरह से सामर्थ्यवान बनने की जरूरत पर बल दिया। अंतरराष्ट्रीय संबंधों के विशेषज्ञ डॉ. आर.बी.कुमार, डॉ. गोविंद भारद्वाज, कुमार विनोद, ए.के.झा. प्रो. एल.एन.दशोरा ने भी विचार व्यक्त किए।

शांति दिवस पर संवाद का आयोजन

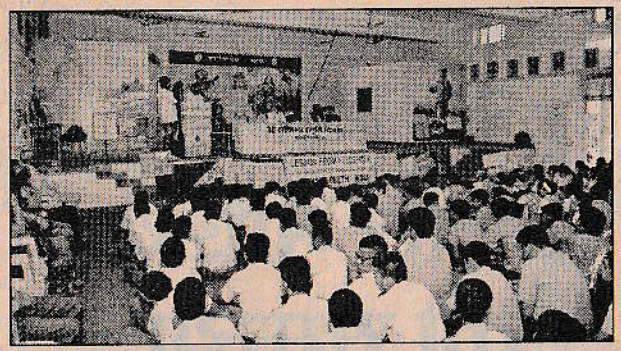
उदयपुर। संस्कारित जीवन ही समाज में शान्ति की स्थापना कर सकता है। उक्त विचार आज अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति दिवस के अवसर पर शान्तिपीठ द्वारा आयोजित 'संवाद' कार्यक्रम में बोलते हुए कई वक्ताओं ने व्यक्त किये।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. उमाशंकर शर्मा ने कहा कि उच्च मानवीय लक्ष्यों को अर्जित करते हुए हमें मर्यादित जीवन शैली को अपनाना पड़ेगा, जिसका कोई विकल्प नहीं हो सकता।

शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि शक्ति संतुलन से प्राप्त शान्ति चिरंजीवी नहीं हो सकती, इसके लिए पारस्परिक विश्वास और एकात्म भाव को विकसित करने के लिए निरन्तर प्रशैक्षिक प्रयास होने चाहिये। पूर्व प्रशासनिक अधिकारी सुमतिलाल बोहरा ने शान्ति के संस्कार बालक के प्रारम्भिक काल से दिये जाने की आवश्यकता बतायी तथा उन्होंने व्यक्तिगत सदाचारी जीवन की आवश्यकता प्रतिपादित की। प्रो. प्रितोष दुग्गड़ ने शान्ति शिक्षा पर प्रकाश डाला जबकि शिक्षाविद् कैलाश बिहारी वाजपेयी ने राष्ट्र को सभी तरह से सामर्थ्यवान बनने की जरूरत पर बल दिया। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के विशेषज्ञ डॉ. आर.बी.कुमार, डॉ. गोविन्द भारद्वाज, कुमार विनोद, ए.के.झा. प्रो. एल.एन.दशोरा, मनोज गंधर्व ने भी विचार व्यक्त किये।

प्रातःकाल उदयपुर, मंगलवार 7 अगस्त, 2018 5

विनाशकारी जखीरों से शक्ति संतुलन से शांति संभव नहीं



उदयपुर। जब तक दुनियाँ में आणविक अस्त्र रहेंगे, हिरोशिमाओं के खतरे बरकरार रहेंगे। विनाशकारी जखीरों से शक्ति सन्तुलन शान्ति का निरापद मार्ग कभी नहीं हो सकता। सर्वनाश के खतरों से मुक्ति 21वीं शताब्दी का सबसे बड़ा सवाल है और इसका जवाब केवल इंसानियत और सच्चे लोकतंत्र की ताकत का विश्व व्यापी विस्तार ही हो सकता है न की आतंकवाद को पनाह। उक्त विचार सोमवार को हिरोशिमा स्मृति दिवस के अवसर पर स्वैच्छिक संस्थान शान्तिपीठ के तत्वावधान में राजकीय गुरू गोविन्द सिंह स्कूल के सभागार में आयोजित शान्ति सभा में बोलते हुए कई वक्ताओं ने व्यक्त किये।

शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने सार्वभौमिक एकता व समरसता की आवश्यकता प्रतिपादित करते हुए कहा कि शिक्षा ही शान्ति का द्वार है। उन्होंने कहा कि विज्ञान की उत्तरोतर उन्नति संसार को विनाश से बचा सकती है।

प्रो. गोविन्द सिंह भारद्वाज ने कहा कि हृदय स्थल पर शान्ति की स्थापना से ही विश्व शान्ति के लक्ष्य अर्जित हो सकते है। उन्होंने 6 अगस्त को शान्ति के संकल्प हेतु एकता दिवस कहा। आयुर्वेदाचार्य खुबीलाल शर्मा, सेन्ट मेरिज की निरल व रितिका, जयदीप विद्यालय के चिराग रावल, सेन्ट एंथनीज के चिराग मंसानी ने भी विचार व्यक्त किये, सेन्ट्रल एकेडमी के छात्र ईशान जैन ने सोलों गीत प्रस्तुत किया। इसके पूर्व शान्तिपीठ परिसर से मौन शान्ति मार्च का शुभारंभ ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा व शिक्षाविद् कैलाश बिहारी वाजपेयी ने रैली का नेतृत्व करते हुए किया।रैली मीरा गर्ल्स कॉलेज, मोहता पार्क, चेतक सर्कल होते हुए गुरू गोविन्द सिंह स्कूल पहुँची। प्रतिभागियों ने अपने हाथों में अणु आयुधों से मुक्ति, धरती व इसके पर्यावरण का संरक्षण तथा नैतिक मूल्यों से सम्बन्धित चार्ट, तख्ती, पोस्टर आदि ले रखे थे। प्रारम्भ में सेन्ट्रल एकेडमी के संगीत शिक्षक रफीक अहमद व कुसुम शाह के निर्देशन में छात्रों ने शान्तिगीत प्रस्तुत किया।संचालन भरत कुमावत ने किया जबकि डॉ. इन्द्रदेव जोशी ने आभार व्यक्त किया। राष्ट्रगान के साथ समापन हुआ।

सच्चा हमसफर
दैनिक नवज्योति
उदयपुर, मंगलवार, 7 अगस्त 2018

सार्वभौमिक एकता व समरसता की आवश्यकता



हिरोशिमा स्मृति दिवस पर शांतिसभा

उदयपुर। जब तक दुनियां में आणविक अस्त्र रहेंगे, हिरोशिमाओं के खतरे बरकरार रहेंगे। विनाशकारी जखीरों से शक्ति सन्तुलन शान्ति का निरापद मार्ग कभी नहीं हो सकता। यह विचार वक्ताओं ने सोमवार हिरोशिमा स्मृति दिवस के अवसर पर शान्तिपीठ के तत्वावधान में राजकीय गुरू गोविन्द सिंह स्कूल के सभागार में आयोजित शान्ति सभा में वक्ताओं ने व्यक्त किए। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने सार्वभौमिक एकता व समरसता की आवश्यकता प्रतिपादित करते हुए कहा कि शिक्षा ही शान्ति का द्वार है। प्रो. गोविन्द सिंह भारद्वाज, आयुवेर्दाचार्य खुबीलाल शर्मा, सेन्ट मेरिज की निरल व रितिका, जयदीप विद्यालय के चिराग रावल, सेन्ट एंथनीज के चिराग मंसानी ने भी विचार व्यक्त किये, सेन्ट्रल एकेडमी के छात्र ईशान जैन ने सोलों गीत प्रस्तुत किया।

इसके पूर्व शान्तिपीठ परिसर से मौन शान्ति मार्च का नेतृत्व ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा व शिक्षाविद् कैलाश बिहारी वाजपेयी ने किया। रैली मीरा गर्ल्स कॉलेज, मोहता पार्क, चेतक सर्कल होते हुए गुरू गोविन्द सिंह स्कूल पहुंची।

प्रतिभागियों ने अपने हाथों में चार्ट, तख्ती, पोस्टर आदि ले रखे थे। प्रारम्भ में सेन्ट्रल एकेडमी के संगीत शिक्षक रफीक अहमद व कुसुम शाह के निर्देशन में छात्रों ने शान्तिगीत प्रस्तुत किया। 2 मिनट का मौन रखकर निर्दोश दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि दी। संचालन भरत कुमावत ने किया।

राजस्थान पत्रिका . उदयपुर, मंगलवार, 11 दिसम्बर, 2018
patrika.com

मानवाधिकार दिवस मनाया

सनातन गुण अपनाने की जरुरत

पत्रिका धर्म समाज

शहर में कई जगहों पर हुए आयोजन

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

उदयपुर . मानवाधिकारों की रक्षा की दिशा में विश्व ने प्रगति की है, लेकिन जीवन के सनातन गुणों को नकारे जाने से व्यापक रूप से मानवाधिकारों का संरक्षण संभव नहीं हो पाया है।

ये विचार मानवाधिकार दिवस पर शान्तिपीठ की ओर से 'मानवाधिकारों की दशा और दिशा' विषयक आयोजित संगोष्ठी में वक्ताओं ने व्यक्त किए। मुख्य वक्ता राजनीति शास्त्र के प्रो. राजेन्द्र जोशी थे। अध्यक्षीय उद्बोधन पंजाब-सिक्किम के पूर्व सलाहकार मोहनसिंह कोठारी ने दिया। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी, पूर्व जिला कलक्टर सुमतिलाल बोहरा, डॉ. आर.बी. कुमार, अधीक्षण अभियन्ता एके झा, डॉ. अरविन्दर सिंह, रोशन देपुरा, सरदार मोहम्मद, नूर मोहम्मद ने विचार रखे। अनन्त, हरीश गोस्वामी, डॉ. परितोष दुग्गड़ मौजूद थे।

मांगी विश्व शांति की दुआ

धर्मगुरु को सफेद स्कार्फ किए भेंट

तिब्बतियन लोगों ने मनाया विश्व मानवाधिकार दिवस



तिब्बती बाजार में धर्मगुरु दलाई लामा की तस्वीर पर स्कार्फ चढ़ाते।

उदयपुर. विश्व शांति और मानवाधिकार दिवस तिब्बती बाजार में सोमवार को मनाया गया। इस दौरान समोर बाग स्थित तिब्बतियन बाजार में पूजा-अर्चना की गई। धर्मगुरु को स्कार्फ चढ़ाकर विश्व शांति की दुआ मांगी।

तिब्बतियन मार्केट एसोसिएशन की ओर से सुबह सात बजे विशेष अनुष्ठान हुआ। इसमें धूप के साथ ही शांति के विशेष मंत्रों के बीच चावल का आटा समर्पित किया गया। बाद में व्यवसायियों ने धर्मगुरु दलाई लामा की तस्वीर पर सफ़ेद स्कार्फ चढ़ाकर विश्व शांति के साथ उम्रदराज, दीर्घायु की कामना की। इस अवसर पर बाजार में विशेष सभा हुई जिसके मुख्य अतिथि शांतिपीठ के अनंत गणेश त्रिवेदी थे। एसोसिएशन के अध्यक्ष शाओ धोंडूप, टीगावा, कुंचोक दोर्जी, थ्रींग धोंडूप मौजूद थे।

जेल में बंदियों को दी जानकारी

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की ओर से केंद्रीय कारागृह में बंदियों को मानवाधिकार दिवस की जानकारी दी गई। एडीजे रिद्धिमा शर्मा के निर्देशन में एडवोकेट प्रवीण गदिया, श्वेता जैन, पैरालीगल वालंटियर विक्रमसिंह भटनागर आदि ने विचार रखे।

वाद-विवाद स्पर्धा

ऐश्वर्या महाविद्यालय में मानवाधिकार दिवस पर वाद-विवाद प्रतियोगिता हुई। मुख्य अतिथि स्नेहा शर्मा थी। प्रतियोगिता में विधि बाबेल, शिवदत्त, मानसी, हुसैना, प्रियदर्शन ने श्रेष्ठ स्थान पाया। संचालन मूमल चौहान ने किया।

पिलाया काढ़ा

भारतीय मानवाधिकार न्याय सुरक्षा परिषद नई दिल्ली राजस्थान कार्यकारिणी की ओर से आयोजन हुआ। मौसमी बीमारियों की रोकथान को लेकर काढ़ा वितरण किया गया। प्रदेश उपाध्यक्ष पवन कुमार जैन, प्रभारी पंकज कुमार गोराणिया, विधी प्रकोष्ठ सचिव शहजाद खान, प्रवक्ता अशोक जैन, सम्भागीय उपाध्यक्ष श्यामलाल पंवार आदि मौजूद थे।

दैनिक भास्कर उदयपुर, मंगलवार 11 दिसंबर, 2018

मानवाधिकार की मूल भावना मानवता और उसकी अभिव्यक्ति करना है : प्रो. जोशी



उदयपुर | मानवाधिकार दिवस पर सोमवार को शान्तिपीठ संस्थान सभागार में 'मानवाधिकारों की दशा और दिशा' विषय पर संगोष्ठी हुई। मुख्य वक्ता प्रो. राजेंद्र जोशी ने कहा कि मानवाधिकारों के पीछे मूल भावना मानवता और उसकी अभिव्यक्ति है। पंजाब व सिक्किम सरकार के पूर्व सलाहकार मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह जैसे शाश्वत मूल्यों को अपनाकर ही कर्तव्यों और अधिकारों में संतुलन कायम रह सकते हैं। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी, पूर्व जिला कलेक्टर सुमति लाल बोहरा, डॉ. आर.बी. कुमार, विद्युत अधीक्षण अभियन्ता ऐ.के.झा, डॉ. अरविन्दर सिंह, हाजी सरदार मोहम्मद आदि ने भी विचार रखे। इधर, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के पैनल एडवोकेट प्रवीण गदिया, महिला पैनल एडवोकेट श्वेता जैन, पैरा लीगल वालंटियर विक्रम सिंह भटनागर ने केंद्रीय कारागृह में बंदियों को मानव अधिकार दिवस का महत्व, अधिकार आदि की जानकारी दी।

दैनिक भास्कर
उदयपुर, गुरुवार, 25 अक्टूबर, 2018

संयुक्त राष्ट्र, चुनौतियां और गांधी पर परिसंवाद

उदयपुर | संयुक्त राष्ट्र दिवस पर गुरुवार को शांतिपीठ संस्थान की संयुक्त राष्ट्र, चुनौतियां और गांधी विषय पर परिसंवाद हुआ। इसमें डॉ. आर.बी. कुमार ने कहा कि शक्तिशाली राष्ट्रों के दबाव से मुक्त होकर ही संयुक्त राष्ट्र अपने घोषित उद्देश्यों को उपलब्ध कर सकता है। शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि गांधी के बताए मार्ग पर चल कर संयुक्त राष्ट्र में बुनियादी बदलाव संभव है। जरूरत है उस चेतना के उन्नयन की, जिससे गांधी का विश्वात्मा दर्शन आत्मसात हो सके। अध्यक्षता भंवर व्यास ने की। पूर्व अतिरिक्त जिला कलेक्टर हीरालाल कुणावत, एसआईईआरटी के डॉ. सुभाष शर्मा, रोशन देपुरा, डॉ. सुरेश श्रीमाली, अजीत प्रताप सिंह, डॉ. बालगोपाल ने भी विचार रखे।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, गुरुवार, 25 अक्टूबर, 2018



सत्य और अहिंसा पर चलकर राष्ट्र, संयुक्त राष्ट्र संघ के स्वरूप में बदलाव संभव

उदयपुर। सत्य और अहिंसा के बुनियादी रास्ते पर चलकर सदस्य राष्ट्र, संयुक्त राष्ट्र संघ के स्वरूप में बदलाव ला सकते हैं, जिससे यह विश्व संगठन नई चुनौतियों का मुकाबला करते हुए मानव मात्र के परित्राण को आश्वस्त कर सके। उक्त विचार बुधवार को संयुक्त राष्ट्र दिवस के अवसर पर शान्तिपीठ की ओर से संस्थान परिसर में संयुक्त राष्ट्र, चुनौतियां और गांधी विषयक आयोजित परिसंवाद में वक्ताओं ने व्यक्त किये। प्रमुख वक्ता अन्तरराष्ट्रीय संबंधों के विशेषज्ञ डॉ. आर.बी. कुमार ने कहा कि शक्तिशाली राष्ट्रों के दबाव से मुक्त होकर ही संयुक्त राष्ट्र अपने घोषित उद्देश्यों को उपलब्ध कर सकता है। उन्होंने वर्तमान हालात में सांस्कृतिक एकता को विस्तार दिये जाने की आवश्यकता प्रतिपादित की। कर्नल गुमानसिंह राव ने कहा कि राष्ट्र को आज विषमताएं समाप्त कर समन्वय का रास्ता अपनाते हुए अधिक सशक्त होने की आवश्कता है जिससे यह विश्व शांति की दिशा में ज्यादा योगदान कर पाये। शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनंतगणेश त्रिवेदी ने कहा कि गांधी के बताए मार्ग पर चल कर संयुक्त राष्ट्र में बुनियादी बदलाव संभव है, जरूरत है परिसंवाद की अध्यक्षता करते हुए एडवोकेट भंवर व्यास ने शान्ति के संस्कारों की आवश्यकता प्रतिपादित की। पूर्व अतिरिक्त जिला कलेक्टर हीरालाल कुणावत, एसआईईआरटी के डॉ. सुभाष शर्मा, रोशन देपुरा, डॉ. सुरेश श्रीमाली, कुंवर अजीतप्रताप सिंह, डॉ. बालगोपाल आदि ने भी विचार व्यक्त किए। मनोज गंधर्व ने आभार व्यक्त किया।

दैनिक भास्कर, उदयपुर, शनिवार 22 सितंबर, 2018

संस्कारित जीवन ही समाज में शांति की स्थापना करता है

उदयपुर |संस्कारित जीवन ही समाज में शांति की स्थापना कर सकता है। संस्कार पोषित शिक्षा केन्द्रों का अभाव विश्व मानव मंगल के स्वप्न को साकार नहीं कर सकता। उक्त विचार शुक्रवार को अंतर्राष्ट्रीय शांति दिवस के अवसर पर शान्तिपीठ की मेजबानी में हुए 'संवाद' कार्यक्रम में बोलते हुए वक्ताओं ने कही। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. उमाशंकर शर्मा ने कहा कि उच्च मानवीय लक्ष्यों को अर्जित करते हुए हमें मर्यादित जीवन



शैली को अपनाना पड़ेगा, जिसका कोई विकल्प नहीं हो सकता। देवस्थान अतिरिक्त आयुक्त दिनेश कोठारी ने कहा कि संघर्ष के साथ ही धैर्य जैसे मूल्यों को जीवन में बरकरार रखने से अंततोगत्वा विजय शांति की ही होती हैं।

राजस्थान पत्रिका . शनिवार, 22 सितम्बर, 2018
patrika.com

संवाद कार्यक्रम में बोले वक्ता

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

उदयपुर. अंतरराष्ट्रीय शांति दिवस पर शांति पीठ की ओर से शुक्रवार को संवाद कार्यक्रम का आयोजन हुआ। बतौर वक्ता एमपीयूएटी कुलपति उमाशंकर शर्मा, देवस्थान विभाग के अतिरिक्त आयुक्त दिनेश कोठारी, शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी , सुमतिलाल बोहरा, प्रितोष दुग्गड, कैलाश बिहारी वाजपेयी ने विचार व्यक्त किए।

सच्चा हमसफर
दैनिक नवज्योति
उदयपुर, सोमवार, 13 अगस्त 2018

विचारों में शुद्धता से युवा कर सकता है अखंड विश्व के आदर्शों को चरितार्थ

अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस पर शांतिपीठ में संगोष्ठी



उदयपुर। अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस पर रविवार को शांतिपीठ द्वारा आयोजित संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी सुमतिलाल बोहरा ने कहा कि आज का युवा यदि अपने विचारों में शुद्धता को अमल में लाए तो आंतरिक ऊर्जा स्रोत से स्वतः जुड़ सकता है और वह न केवल राष्ट्र के नव निर्माण की ताकत बन सकता है बल्कि अखण्ड विश्व के आदर्शों को चरितार्थ भी कर सकता है। विडम्बना यह है कि अच्छे लोग अधिसंख्यक होकर भी हिंसा और अनाचार का मुकाबला नहीं कर रहे हैं। जरूरत है ऐसे अवसरों को निर्मित किए जाने की जिससे युवा स्वतंत्र सोच के साथ निर्णय लेने की क्षमता विकसित कर पाए ।

अतिरिक्त कलक्टर मुकेश ने कहा कि जो ऊर्जा हालात का रूख सकारात्मक कर दे वह युवा है। व्यक्ति के आंतरिक व्यवस्था का वैज्ञानिक प्रबंधन से रूपान्तरण की ओर चला जा सकता है और इससे बड़ा बदलाव संभव है। उन्होंने युवाओं की चकाचौंध-पसन्दगी पर चिंता व्यक्त की। आई.सी.ई.आर.टी. के निदेशक एवं देवस्थान अतिरिक्त आयुक्त दिनेश कोठारी ने कहा कि विवेकानंद नित नूतन प्रासंगिक हैं, जिसके चरित्र से जीवन को सही दिशा दी जा सकती है। उन्होंने अफसोस व्यक्त किया कि समाज में बहुत कुछ अवांछित घटित हो रहा है, सही दिशा के लिए सकारात्मक क्रान्ति की आवश्यकता है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि युवा अवसरों को स्वयं निर्मित करें और युग-क्रान्ति धर्मा बनें। उन्होंने वैयक्तिक चेतना का विकास अपेक्षित बड़े बदलाव का जरिया बताते हुए राष्ट्रीय चरित्र को प्राथमिकता दिए जाने की आवश्यकता प्रतिपादित की। अंतरराष्ट्रीय संबंधों के विशेषज्ञ प्रो. आर.बी. कुमार ने कहा कि ज्ञान की परम्परा चिर-सनातन है । उन्होंने कहा कि स्वयं के विचारों में स्मार्टनेस पैदा करके ही क्रियाशील राष्ट्र का निर्माण संभव है ।

प्रेम कुमार व आर.सी. चौबीसा ने भी विचार व्यक्त किए । एडवोकेट प्रकाश पानेरी ने आभार व्यक्त किया। संचालन भरत कुमावत ने किया।

प्रातःकाल
उदयपुर, सोमवार 13 अगस्त, 2018

युवा विचारों में शुद्धता लाएं तो राष्ट्र नवनिर्माण की ताकत बन सकता है



उदयपुर। आज का युवा यदि अपने विचारों में शुद्धता को अमल में लाए तो आंतरिक ऊर्जा स्त्रोत से स्वतः जुड़ सकता है और वह न केवल राष्ट्र के नव निर्माण की ताकत बन सकता है बल्कि अखण्ड विश्व के आदर्शों को चरितार्थ भी कर सकता है। विडम्बना यह है कि अच्छे लोग अधिसंख्यक होकर भी हिंसा और अनाचार का मुकाबला नहीं कर रहे हैं। जरूरत है ऐसे अवसरों को निर्मित किए जाने की जिससे युवा स्वतंत्र सोच के साथ निर्णय लेने की क्षमता विकसित कर पाए। उक्त विचार आज अन्तर्राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर शान्तिपीठ द्वारा संस्थान परिसर में आयोजित संगोष्ठी में बोलते हुए कई वक्ताओं ने व्यक्त किए। संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी सुमतिलाल बोहरा ने कहा कि मां प्रथम शिक्षक और परिवार प्रथम विद्यालय है जहां से संस्कार निर्माण की प्रक्रिया संचालित होती है उन्होंने कहा हमारे सभी परिसंवादों को सकारात्मक दिशा दी जानी चाहिए। जिला परिषद के अतिरिक्त अधिकारी एवं अतिरिक्त कलक्टर मुकेश ने कहा कि जो ऊर्जा हालात का रूख सकारात्मक कर दे वह युवा है। उन्होंने युवाओं की चकाचौंध-पसन्दगी पर चिंता व्यक्त की।

आई.सी.ई.आर.टी. के निदेशक एवं देवस्थान अतिरिक्त आयुक्त दिनेश कोठारी ने कहा कि विवेकानंद जैसे युवा नित नूतन प्रासंगिक है, जिसके चरित्र से जीवन को सही दिशा दी जा सकती है। उन्होंने अफसोस व्यक्त किया कि समाज में बहुत कुछ अवांछित घटित हो रहा है, सही दिशा के लिए सकारात्मक क्रान्ति की आवश्यकता है । विषय प्रवर्तन करते हुए शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि युवा अवसरों को स्वयं निर्मित करें और युग-क्रान्ति धर्मा बनें। अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के विशेषज्ञ प्रो. आर.बी. कुमार ने कहा कि ज्ञान की परम्परा चिर-सनातन है । एडवोकेट प्रकाश पानेरी ने आभार व्यक्त किया जबकि संगोष्ठी का संचालन भरत कुमावत ने किया।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर ■ गुरुवार ■ 11 जनवरी, 2018

तिबेतन यूथ कांग्रेस सदस्यों ने शांति पीठ संस्थापक से भेंट की



उदयपुर। भारत जागरण यात्रा पर निकले तिबेतन यूथ कांग्रेस के सदस्यों ने शांति पीठ पहुंच कर संस्थान के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी से भेंट की। यात्रा समूह में शामिल सूचना सचिव छवांग डोलमा ने यात्रा के उद्देश्यों को बताते हुए जागरण अभियान में योगदान देने का आग्रह किया। इस अवसर पर शांतिपीठ के अनन्त गणेश त्रिवेदी ने समूह के उत्साह व प्रतिबद्धता की सराहना करते हुए कहा कि अतिथि को देवता समझने का भाव हमें विरासत में मिला है। समूह में तिब्बती बाजार के अध्यक्ष के साथ ही अन्य सदस्य भी उपस्थित थे।

प्रातःकाल
उदयपुर, गुरुवार 11 जनवरी, 2018

काठारा,

तिब्बतियन यूथ कांग्रेस

उदयपुर। भारत जागरण यात्रा पर निकले तिबेतन यूथ कांग्रेस के सदस्यों ने बुधवार को शान्तिपीठ पहुंच कर संस्थापक अनन्तगणेश त्रिवेदी से भेंट की और धर्म व शान्ति का प्रतीक सफेद स्कार्फ भेंट किया। यात्रा समूह में शामिल सूचना सचिव छवांग डोलमा ने यात्रा के उद्देश्यों को बताते हुए जागरण अभियान में योगदान देने का आग्रह किया। इस अवसर पर शान्तिपीठ के अनन्तगणेश त्रिवेदी ने समूह के उत्साह व प्रतिबद्धता की सराहना करते हुए कहा कि अतिथि को देवता समझने का भाव हमें विरासत में मिला है, जिसमें परहित को हमेशा प्राथमिकता दी गई है। उन्होंने कहा कि पिछले करीब 6 दशकों से यहां के नागरिकों व सरकारों ने न्याय, स्वायत्तता व मानवाधिकारों का दृढ़ समर्थन किया है।

राजस्थान पत्रिका. उदयपुर. गुरुवार. 11.01.2018

अतिथि को सम्मान देना भारतीय विरासत

उदयपुर. भारत जागरण यात्रा पर निकले तिब्बतियन यूथ कांग्रेस के सदस्यों ने शान्तिपीठ पहुंच कर संस्थान के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी से भेंट की। दल के सदस्यों ने धर्म व शान्ति का प्रतीक सफेद स्कार्फ भेंट किया। यात्रा समूह में शामिल सूचना सचिव छवांग डोलमा ने यात्रा के उद्देश्यों को बताते हुए जागरण अभियान में योगदान देने का आग्रह किया। इस अवसर पर शान्तिपीठ के अनन्त गणेश त्रिवेदी ने समूह के उत्साह व प्रतिबद्धता की सराहना करते हुए कहा कि अतिथि को देवता समझने का भाव हमें विरासत में मिला है। समूह में तिब्बती बाजार के अध्यक्ष शाओ के साथ ही अन्य सदस्य भी उपस्थित थे।

राष्ट्रदूत उदयपुर, 11 दिसम्बर, 2018

'भोगवादी मनोदशा से अधिकार सुरक्षित नहीं रह सकते'



उदयपुर में मानवाधिकार की दशा और दिशा संगोष्ठी को राजनीति शास्त्र के ईमेरिटस प्रो. राजेन्द्र जोशी ने संबोधित किया।

■ मानवाधिकार की दशा और दिशा संगोष्ठी आयोजित

उदयपुर, (कासं)। 'मानवाधिकारों की रक्षा की दिशा में विश्व ने प्रगति अवश्य की है किन्तु जीवन के सनातन गुणों को नकारे जाने से व्यापक रूप से मानवाधिकारों का संरक्षण संभव नहीं हो पाया है। मानव चेतना विकास के क्रम में उन मूल्यों के संरक्षण की आवश्यकता है जिससे व्यक्ति के आत्म स्वाभिमान व गरीमा का संरक्षण हो न की अंहकार का। चिंता इस बात की है कि आज जीवन जीने का तरीका ही नैसर्गिक अधिकारों से वंचित कर रहा है। भोगवादी मनोदशा से अधिकार सुरक्षित नहीं रह सकते, आवश्यकता है अधिकार-कर्त्तव्यों की सही समझ के लिए परिवार प्रथम पाठशाला बने और विश्व नागरिकता का बोध हो।

उक्त विचार मानवाधिकार दिवस पर शान्तिपीठ द्वारा संस्थान के सभागार में 'मानवाधिकारों की दशा और दिशा' विषयक आयोजित संगोष्ठी में कई व्यक्ताओं ने व्यक्त किये। राजनीति शास्त्र के ईमेरिटस प्रो. राजेन्द्र जोशी ने कहा कि मानवाधिकारों के पीछे मूल भावना मानवता और उसी की अभिव्यक्ति है। उन्होंने हालात पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि शुद्ध हवा, पानी, भोजन से भी वंचित स्थिति में अधिकारों को फिर से नये अंदाज में देखना होगा। उन्होंने विश्व नागरिकता की आवश्यकता प्रतिपादित की। पंजाब व सिक्किम सरकार के पूर्व सलाहकार मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि सत्य, अंहिसा, अपरिग्रह जैसे शाश्वत मूल्यों को अपनाकर ही कर्त्तव्यों व अधिकारों में संतुलन कायम रह सकता है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि गत शताब्दी में महात्मा गांधी ने मानवाधिकारों के संरक्षण का विश्व में उदाहरण प्रस्तुत किया। गांधी ने स्पष्ट किया था कि निरक्षर किन्तु प्रबुद्ध उनकी माता से उन्होंने कर्त्तव्य की प्राथमिक आवश्यकता का पाठ सीखा। उनकी मान्यता थी कि कर्त्तव्यों का सही संपादन का परिणाम ही अधिकारों को सुरक्षित करता है। आज आवश्यकता है कर्त्तव्य को आचरण में पुनः प्रतिष्ठित किया जाये।

उदयपुर एक्सप्रेस उदयपुर, मंगलवार 11 दिसम्बर 2018

आज जीवन जीने का तरीका नैसर्गिक अधिकारों से कर रहा वंचित

उदयपुर। मानवाधिकारों की रक्षा की दिशा में विश्व ने प्रगति अवश्य की है किन्तु जीवन के सनातन गुणों को नकारे जाने से व्यापक रूप से मानवाधिकारों का संरक्षण संभव नहीं हो पाया है। मानव चेतना विकास के क्रम में उन मूल्यों के संरक्षण की आवश्यकता है जिससे व्यक्ति के आत्म स्वाभिमान व गरीमा का संरक्षण हो न की अंहकार का। चिंता इस बात की है कि आज जीवन जीने का तरीका ही नैसर्गिक अधिकारों से वंचित कर रहा है। उक्त विचार मानवाधिकार दिवस पर शान्तिपीठ द्वारा संस्थान के सभागार में 'मानवाधिकारों की दशा और दिशा' विषयक आयोजित संगोष्ठी में कई व्यक्ताओं ने व्यक्त किये।

मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए राजनीति शास्त्र के ईमेरिटस प्रो. राजेन्द्र जोशी ने कहा कि मानवाधिकारों के पीछे मूल भावना मानवता और उसी की अभिव्यक्ति है। उन्होंने हालात पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि शुद्ध हवा, पानी, भोजन से भी वंचित स्थिति में अधिकारों को फिर से नये अंदाज में देखना होगा। उन्होंने विश्व नागरिकता की आवश्यकता प्रतिपादित की।

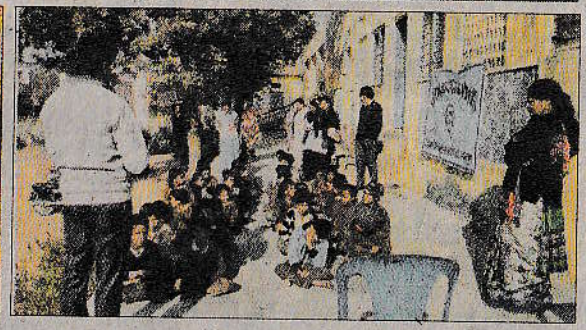
अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए पंजाब व सिक्किम सरकार के पूर्व सलाहकार मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि सत्य, अंहिसा, अपरिग्रह जैसे शाश्वत मूल्यों को अपनाकर ही कर्तव्यों व अधिकारों में संतुलन कायम रह सकता है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि गत शताब्दी में महात्मा गांधी ने मानवाधिकारों के संरक्षण का विश्व में उदाहरण प्रस्तुत किया। पूर्व जिला कलक्टर सुमतिलाल बोहरा ने कहा कि अन्य के अधिकारों की रक्षा ही स्वंय के अधिकारों की रक्षा है। अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्धों के विशेषज्ञ डॉ. आर.बी. कुमार की मान्यता थी कि अधिकार व नागरिकता के मध्य बनी खाई को पाटना मुश्किल कार्य बन चुका है।

उदयपुर, मंगलवार, 11 दिसंबर 2018 dainiknavajyoti.in दैनिक नवज्योति

नैसर्गिक अधिकारों से वंचित कर रहा है जीवन जीने का तरीका

मानवाधिकार दिवस पर विविध आयोजन





उदयपुर। मानवाधिकारों की रक्षा की दिशा में विश्व ने प्रगति अवश्य की है किन्तु जीवन के सनातन गुणों को नकारे जाने से व्यापक रूप से मानवाधिकारों का संरक्षण संभव नहीं हो पाया है। चिंता इस बात की है कि आज जीवन जीने का तरीका ही नैसर्गिक अधिकारों से वंचित कर रहा है।

यह विचार मानवाधिकार दिवस पर शान्तिपीठ की ओर से संस्थान के सभागार में मानवाधिकारों की दशा और दिशा विषयक संगोष्ठी में कई वक्ताओं ने व्यक्त किए। मुख्य वक्ता राजनीति शास्त्र के प्रो. राजेन्द्र जोशी ने कहा कि मानवाधिकारों के पीछे मूल भावना मानवता और उसी की अभिव्यक्ति है।

अध्यक्षीय संबोधन में पंजाब व सिक्किम सरकार के पूर्व सलाहकार मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि सत्य, अंहिसा, अपरिग्रह जैसे शाश्वत मूल्यों को अपनाकर ही कर्तव्यों व अधिकारों में संतुलन कायम रह सकता है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि गत शताब्दी में महात्मा गांधी ने मानवाधिकारों के संरक्षण का विश्व में उदाहरण प्रस्तुत किया। गांधी ने स्पष्ट किया था कि निरक्षर किन्तु प्रबुद्ध उनकी माता से उन्होंने कर्तव्य की प्राथमिक आवश्यकता का पाठ सीखा। आज आवश्यकता है कर्तव्य को आचरण में पुनः प्रतिष्ठित किया जाए। पूर्व जिला कलक्टर सुमति लाल बोहरा ने कहा कि अन्य के अधिकारों की रक्षा ही स्वयं के अधिकारों की रक्षा है। अन्तरराष्ट्रीय सम्बन्धों के विशेषज्ञ डॉ. आर.बी. कुमार की मान्यता थी कि अधिकार व नागरिकता के मध्य बनी खाई को पाटना मुश्किल कार्य बन चुका है। विद्युत अधीक्षण अभियन्ता ए.के.झा ने शासन व्यवस्था का गठन ही मानवाधिकारों की रक्षा के लिए है। अर्थ ड्राइग्नोसिस के डॉ. अरविन्दर सिंह, स्वास्थ्य अभियांत्रिकी के पूर्व मुख्य अधिकारी रोशन देपुरा, सरदार मोहम्मद, नूर मोहम्मद, सेंट मेरिज के छात्र अनन्त व हरीश गोस्वामी ने भी विचार व्यक्त किए। डॉ. परितोष दुग्गड़ के मानवाधिकारों की सुन्दर अभिव्यक्ति जनित अंग्रेजी लघु कहानी सुनाई।

छह स्थानों पर विधिक साक्षरता शिविर : जिला विधिक सेवा प्राधिकरण नालसा योजना के अंतर्गत 6 स्थानों पर विधिक साक्षरता शिविर लगाए गए। पैरा लीगल वॉलंटियर गोविंदलाल ओड़, राष्ट्रभाषा हिंदी लेखन प्रभारी डॉ. कांतिलाल यादव, विधि की छात्रा तनिष्का तीरगर ने रामावि गोरेला, सीसारमा, रामपुरा चौराहा, कालबेलिया बस्ती, राप्रावि रामपुरा, राबाउप्रावि किशनपोल, पारस चौराया एवं राजस्थान कृषि विज्ञान केंद्र बड़गांव में श्रमिकों एवं विद्यार्थियों को स्वच्छता के प्रति जागरूक एवं नशा नहीं करने सलाह दी। अपने अधिकारों की रक्षा के लिए निरंतर मानवाधिकार कानून, विधिक सेवा प्राधिकरण में संपर्क करना आदि विषय पर जानकारी दी।

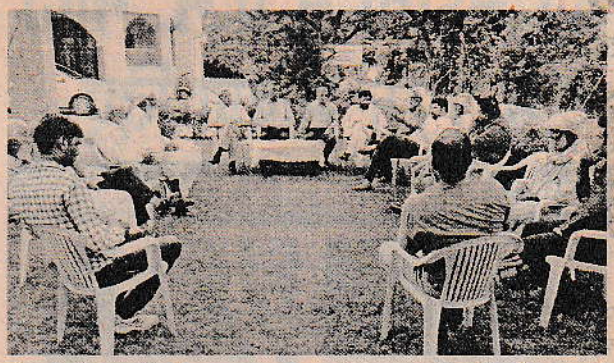
अधिवक्ताओं ने पिलाया काढ़ा : भारतीय मानवाधिकार न्याय सुरक्षा परिषद प्रदेश उपाध्यक्ष पवन कुमार जैन, प्रदेश प्रभारी पकंजकुमार गौराणीया, सचिव विधि प्रकोष्ठ शहजाद खान, प्रवक्ता अशोक जैन, सम्भागीय उपाध्यक्ष श्याम लाल पंवार, सम्भागीय महासचिव प्रवीण सिसोदिया, सम्भागीय महामंत्री गौरव जैन आदि ने जिला एवं सेशन न्यायालय मुख्य द्वार पर काढ़ा वितरण किया। कार्यक्रम में बीसीआर सदस्य राव रतनसिंह, बार अध्यक्ष अध्यक्ष राम कृपा शर्मा, पूर्व अध्यक्ष प्रवीण खंडेलवाल, भरत जोशी, गजेन्द्र सोलंकी, हरीश शर्मा आदि मौजूद थे।

एडीजे रिद्धिमा शर्मा के निर्देशन में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के पैनल एडवोकेट प्रवीण गदिया, महिला पैनल एडवोकेट श्वेता जैन, पैरा लीगल वालंटियर विक्रम सिंह भटनागर ने केंद्रीय कारागृह में बंदी जन को मानव अधिकार दिवस व उनके अधिकारों की जानकारियां दी। कार्यक्रम में अधीक्षक जेल सुरेंद्र सिंह शेखावत एवं उप अधीक्षक ओम प्रकाश वर्मा ने भी कई जानकारियां दी।

विकल्प संस्थान की ओर से मल्ला तलाई, एकलव्य कॉलोनी, सामुदायिक भवन में 16 दिवसीय अभियान के तहत महिलाओं और लड़कियों के साथ होने वाली हिंसा, बाल विवाह, शिक्षा, लड़कियों व लड़कों में भेदभाव, सरकारी योजनाओं, स्वास्थ्य, रोजगार को लेकर कार्यशाला हुई। इसमें महिलाओं एवं लड़कियों ने अपने मुद्दों को पहचाना एवं उनको चार्ट के माध्यम से समझा। साथ ही महिला हिंसा पर एक खेल खेलाया गया, जिसका उद्देश्य था कि महिलाएं स्वयं रोजमर्रा की जिंदगी में कितनी हिंसा का सामना करती हैं पर उससे वह अनजान है, इस पर चर्चा की गई। इस कार्यशाला में विकल्प कार्यकर्ता शमीना, अफरोज, शान्ता और वॉलंटियर सविता आहारी, माया, भारती ने भाग लिया।

उदयपुर, बुधवार 25 अक्टूबर, 2017 प्रातःकाल

संयुक्त राष्ट्र स्थापना दिवस पर विचार गोष्ठी



उदयपुर। संयुक्त राष्ट्र संघ गतिशील विश्व संस्था है जिसने शैक्षिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि कई आयामों पर प्रशंसनीय कार्य किए हैं किन्तु आवश्यकता इस बात की है कि स्थापना के 70 वर्ष बाद के बदले हुए परिदृश्य एवं आंतकित करते हालात पर काबू पाने हेतु संस्थान के बुनियादी स्वरूप में बदलाव लाना होगा और इस दिशा में भारत को नैतिक ताकत के रूप में आगे आकर अहम योगदान देना होगा। यह विचार संयुक्त राष्ट्र स्थापना दिवस पर के अवसर पर शान्तिपीठ द्वारा संस्थान परिसर में आयोजित विचारगोष्ठी में बोलते हुए कई वक्ताओं ने वक्त किए।

मुख्य वक्ता मो.सु.वि.विद्यालय में राजनीति शास्त्र के प्रो. संजय लोढ़ा ने कहा कि विस्तारवादी मानसिकता से ऊपर उठकर समता के आदर्शों को व्यवहार में लाना होगा तभी अशांति के मूल कारण समझ में आ सकेंगे। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने विषय प्रवर्तन करते हुए कहा कि आध्यात्मिक-वैज्ञानिक नवचेतना से संयुक्त राष्ट्र को ज्योतिर्मय बनाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि भारत को शांति व आणविक निःशस्त्रीकरण की हर पहल का स्वागत करते हुए अपनी मौलिक विरासत के बूते संयुक्त राष्ट्र के नव सृजन में अहम भूमिका निभानी चाहिए। भूगर्भ वैज्ञानिक डॉ. गोविन्द सिंह भारद्वाज ने प्राकृतिक संसाधनों के अद्वितीय शोषण पर विस्तार से विचार व्यक्त करते हुए उनकी सीमित उपलब्धता पर स्पष्ट नीतियों की आवश्यकता बताई। अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए एड. भंवर व्यास ने 'अशान्तस्य कुतः सुखम' की व्याख्या करते हुए मानावोचित शक्ति को विस्तार दिये जाने की आवश्यकता प्रतिपादित की।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर ■ बुधवार ■ 25अक्टूबर, 2017

संयुक्त राष्ट्र संघ का स्थापना दिवस मनाया



उदयपुर। संयुक्त राष्ट्र संघ के स्थापना दिवस पर मंगलवार को शांतिपीठ में विचार गोष्ठी आयोजित हुई। मुख्य वक्ता सुविवि में राजनीति शास्त्र के प्रो. संजय लोढा थे। शांतिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि आध्यात्मिक-वैज्ञानिक नवचेतना से संयुक्त राष्ट्र को ज्योतिर्मय बनाया जा सकता है। भूगर्भ वैज्ञानिक डॉ. गोविन्द सिंह भारद्वाज, कर्नल गुमान सिंह राव, विद्युत निगम के अभियन्ता ए.के. झा, प्रतीक चौधरी, भंवर व्यास, डॉ. कमल सिंह राठौड़, रोशन देपुरा, हाजी सरदार मोहम्मद, उमेश नागदा आदि ने विचार व्यक्त किए।

राजस्थान पत्रिका . उदयपुर . बुधवार . 25.10.2017

नवचेतना से हो संयुक्त राष्ट्र का निर्माण

उदयपुर शांतिपीठ संस्थान की ओर से संयुक्त राष्ट्र स्थापना दिवस पर विचार गोष्ठी हुई। अध्यक्षता भंवर व्यास ने की। मुख्य वक्ता सुविवि के प्रो. संजय लोढ़ा ने कहा कि विस्तारवादी मानसिकता से ऊपर उठकर समता के आदर्शों को व्यवहार में लाना होगा। संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि आध्यात्मिक-वैज्ञानिक नवचेतना से संयुक्त राष्ट्र ज्योतिर्मय बन सकता है।

जय राजस्थान
उदयपुर, मंगलवार
3 अक्टूबर, 2017

अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस पर शान्तिपीठ द्वारा विचारगोष्ठी आयोजित

उदयपुर, 2 अक्टूबर। अहिंसा और सत्य के मार्ग पर चलकर ही 21वीं शताब्दी की सुरक्षा को आश्वस्त किया जा सकता है, बशर्ते हमारा राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय सामुदायिक जीवन अहिंसा के आदर्शों को जीवन में अपनाने के रचनात्मक प्रयासों से सक्रिय हो। उक्त विचार आज अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस पर शान्तिपीठ द्वारा आयोजित विचारगोष्ठी में कई वक्ताओं ने व्यक्त किए।

महात्मा गांधी व लाल बहादुर शास्त्री को श्रद्धासुमन अर्पित करने के बाद विचारगोष्ठी का प्रवर्तन करते हुए शान्तिपीठ के अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि गांधी 20वीं शताब्दी की नैतिक ऊ र्जा का विस्फोट है, जिससे 21वीं शताब्दी को रोशन किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि गांधी त्रणमूल से जुड़े व्यक्ति की अस्मिता है तो वह युग प्रहरी भी।

गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए चिन्तक मोहन सिंह कोठारी ने अन्तर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय स्तर पर ही अपितु गली-गली व घर-घर में व्याप्त अविश्वास व हिंसायुक्त वातावरण पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा कि धर्मान्धता हिंसा को प्रबल बनाती है। उन्होंने वर्तमान हालत पर गंभीर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि शान्ति के प्रयासों को अधिक सक्रिय नहीं किया गया तो पृथ्वी नरख बन सकती है।

प्रातःकाल
उदयपुर, मंगलवार 3 अक्टूबर, 2017

शान्तिपीठ में संगोष्ठी में अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि अहिंसा और सत्य के मार्ग पर चलकर ही 21वीं शताब्दी की सुरक्षा को आश्वस्त किया जा सकता है। अध्यक्षता चिन्तक मोहन सिंह कोठारी ने की। मोती सिंह राणावत, इन्द्रदेव जोशी आदि ने भी विचार व्यक्त किए।

rajasthanpatrika.com
राजस्थान पत्रिका . उदयपुर . शुक्रवार . 22.09.2017

अन्तरराष्ट्रीय शान्ति दिवस पर संगोष्ठी

उदयपुर. बदलते विश्व परिदृश्य में शान्ति की अवधारणा अर्थ बदलती जान पडती हैं। हालात बदतर हो इसके पहले ही शक्ति और शान्ति का विवेक सम्मत सामंजस्य ही हालात को नियंत्रित कर सकता है। जरूरत ऐसी जिम्मेदाराना विश्व व्यवस्था की है जिसमें मानव मात्र की आवाज को सुना जा सके।

उक्त विचार गुरुवार को अन्तरराष्ट्रीय शान्ति दिवस के अवसर पर शान्तिपीठ संस्थान सभागार में आयोजित संगोष्ठी के दौरान वक्ताओं ने अभिव्यक्त किये। राजनीतिशास्त्र प्रो. अरुण चतुर्वेदी ने कहा कि 1945 के बाद आज तमाम अन्तरराष्ट्रीय संगठन शक्ति के इर्दगिर्द सीमित होकर रह गए हैं। महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय के प्रो. गोविन्द भारद्वाज ने चिंता जताई की कि प्राकृतिक स्त्रोतों के अंधाधुध शोषण ने विश्व शान्ति पर प्रश्न खडा कर दिया है। ऐसे में राजनेता राजधर्म से विमुख नजर आते हैं। शान्तिपीठ के संस्थापक अनंतगणेश त्रिवेदी ने कहा कि जीवन के आदर्शो को नकार कर शांति और विकास की स्थापना नहीं की जा सकती है। गोष्ठी में डॉ. बी. आर. कुमार, पूर्व प्रशासनिक अधिकारी सुमति लाल बोहरा, हीरालाल कुमावत, एडवोकेट एम.एस.राणावत, रोशन देवपुरा, प्रो. पी.एल.शमां, स्वामी सागरानन्द सरस्वती और एस.एल. माहेश्वरी ने भी विचार रखे। अध्यक्षता शिक्षाविद् कैलास बिहारी वाजपेयी ने की।

दैनिक भास्कर, उदयपुर, शुक्रवार, 22 सितंबर,

अंतरराष्ट्रीय शांति दिवस पर संगोष्ठी हुई

अंतरराष्ट्रीय शांति दिवस पर गुरुवार को शांति पीठ की संस्थान सभागार में संगोष्ठी हुई। इसमें राजनीतिशास्त्र प्रो. अरूण चतुर्वेदी ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय संगठन शक्ति के इर्द गिर्द सीमित हैं। एमपीयूएटी प्रो. गोविंद भारद्वाज ने कहा कि प्राकृतिक स्त्रोतों के अंधाधुन शोषण ने शांति पर अद्वितीय प्रश्न खड़ा कर दिया है। शांतिपीठ के संस्थापक अनंतगणेश त्रिवेदी ने कहा कि जीवन के आदर्शों को नकार, कर शांति और विकास की स्थापना नहीं की जा सकती है। डॉ. बीआर कुमार, सुमति लाल बोहरा, हीरालाल कुमावत आदि ने भी विचार रखे।

जय राजस्थान
दिनांक : 22 सितम्बर, 2017 वार : शुक्रवार

अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति दिवस के अवसर पर संगोष्ठी आयोजित

उदयपुर, 21 सितम्बर। बदलते विश्व परिदृश्य में शान्ति की अवधारणा अर्थ बदलती जान पडती हैं। हालात बदतर हो इसके पहले ही शक्ति और शान्ति का विवेक सम्मत सामंजस्य ही हालात को नियंत्रित कर सकता है। जरूरत ऐसी जिम्मेदाराना विश्व व्यवस्था की है जिसमें मानव मात्र की आवाज को सुना जा सके। उक्त विचार आज अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति दिवस के अवसर पर शान्तिपीठ द्वारा संस्थान के सभागार में आयोजित संगोष्ठी में वक्ताओं ने व्यक्त किये।

राजनीतिशास्त्र प्रो. अरूण चतुर्वेदी ने कहा कि 1945 के बाद अब 2017 चिंता का विषय हैं उन्होने कहा कि अन्तर्राष्ट्रीय संगठन शक्ति के इर्दगिर्द सीमित हैं। महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय के प्रो. गोविन्द भारद्वाज ने चिंता व्यक्त की कि प्राकृतिक स्त्रोतों के अंधाधुध शोषण ने शान्ति पर अद्वितीय प्रश्न खडा कर दिया हैं। उन्होंने अफसोस व्यक्त किया कि राजनेता राजधर्म से %युत हो चुके हैं।

शान्तिपीठ के संस्थापक अनंतगणेश त्रिवेदी ने कहा कि जीवन के आदर्शों को नकार कर शांति और विकास की स्थापना नहीं की जा सकती है। गोष्ठी में डॉ. बी. आर. कुमार पूर्व प्रशासनिक अधिकारी, सुमति लाल बोहरा, हिरालाल कुमावत, एडवोकेट एम.एस.राणावत, रोशन देवपुरा, प्रो. पी.एल.शर्मा, स्वामी सागरानन्द सरस्वती और एस.एल. महेश्वरी ने भी विचार व्यक्त किये।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर
रविवार, 13 अगस्त 2017
7

देश को आगे बढ़ाने का जिम्मा युवाओं का : मीणा



उदयपुर। देश को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी युवाओं की है। वे देश की रक्षा के लिए शहीदों के त्याग से प्रेरणा लेकर राष्ट्र के नवनिर्माण में आगे आएं। दूसरों से अपेक्षा न कर स्वयं संकल्पवान बने। यह विचार अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस पर शांतिपीठ के विस्तार कार्यक्रम एवं श्रमजीवी महाविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए उदयपुर ग्रामीण विधायक फूल सिंह मीणा ने व्यक्त किए। उन्होंने कहा विनम्र व्यक्ति बड़ा होता है। विद्या से विवेक की प्राप्ति करें और विवेक से विनम्रता। मीणा ने कहा कि बाढ़ में कठोर टूट जाता है किन्तु विनम्र अगर पौधा भी है तो सुरक्षित रह जाता है। प्रमुख वक्ता शांतिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने युवाओं से आह्वान किया कि वे राष्ट्र को आत्मसात करें और विश्व में बदलाव का जरिया बनें। अगर युवा एक हो जाएं तो दुनिया में समस्याएं आधी रह जाएंगी। उन्होंने कहा कि भारत की राष्ट्र की अवधारणा में विश्वात्मा का दर्शन है और इसी लिए यहां वसुधैव कुटुम्बकम के स्वर स्वतः स्फूर्त हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि संस्कार विहीन शिक्षा समाज में हिंसा और आक्रामकता का वातावरण बनाती है, जबकि जरूरत है आत्मप्रग व संवेदनशील नागरिक की जो संस्कारयुक्त शिक्षा से ही संभव है।

जिला मुख्य आयोजना अधिकारी पुनित शर्मा ने कहा कि युवा लक्ष्य से विचलित न हों, अनुकूलता की अपेक्षा न करें, बल्कि मुश्किलों को आमंत्रित करें चूंकि निरन्तर संघर्ष ही जीवन है। महाविद्यालय के संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. धीरज प्रकाश जोशी ने स्वागत भाषण देते हुए युवाओं को एकता के आदर्शों को अपनाने और अंतकरण की बात सुनने की क्षमता हासिल करने की आवश्यकता प्रतिपादित की।

प्रातःकाल
उदयपुर, रविवार 13 अगस्त, 2017

युवा दूसरों से अपेक्षा न कर स्वयं संकल्पवान बनें



उदयपुर। देश को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी आज के युवाओं की है। वे देश की रक्षा के लिए शहीदों के त्याग से प्रेरणा लेकर राष्ट्र के नवनिर्माण में आगे आएं, दूसरों से अपेक्षा न कर स्वयं संकल्पवान बने। ये विचार अन्तर्राष्ट्रीय युवा दिवस पर शान्तिपीठ के विस्तार कार्यक्रम एवं माणिक्यलाल वर्मा श्रमजीवी महाविद्यालय, ज.ना. राजस्थान विद्यापीठ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए उदयपुर ग्रामीण विधायक फूल सिंह मीणा ने व्यक्त किये। उन्होंने कहा विनम्र व्यक्ति बड़ा होता है। विद्या से विवेक की प्राप्ति करें और विवेक से विनम्रता।

प्रमुख वक्ता के रूप में बोलते हुए शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने युवाओं को आह्वान किया कि वे राष्ट्र को आत्मसात करें और विश्व में बदलाव का जरिया बनें। अगर युवा एक हो जाएं तो दुनिया में समस्याएं आधी रह जाएगी।

जिला मुख्य आयोजना अधिकारी पुनित शर्मा ने कहा कि युवा लक्ष्य से विचलित न हो, अनुकूलता की अपेक्षा न करें, बल्कि मुश्किलों को आमंत्रित करें चूंकि निरन्तर संघर्ष ही जीवन है। महाविद्यालय के संस्कृत विभागाध्यक्ष डॉ. धीरज प्रकाश जोशी ने स्वागत भाषण देते हुए युवाओं को एकता के आदर्शों को अपनाने और अंत:करण की बात सुनने की क्षमता हासिल करने की आवश्यकता प्रतिपादित की। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय की डीन डॉ. कुसुम पामेचा ने की। संवाद-संगोष्ठी का संचालन निलेश भट्ट ने किया। प्रारंभ में अतिथियों द्वारा परिसर में पौधारोपण भी किया गया।

उदयपुर, रविवार, 6 अगस्त 2017 dainiknavajyoti.com दैनिक नवज्योति

'जीयो और जीने दो के सिद्धांत से ही दुनिया में शांति संभव'

हिरोशिमा स्मृति दिवस पर युवा शांति सम्मेलन

ब्यूरो नवज्योति/उदयपुर

जीयो और जीने दो के सिद्धांत को अमल में लाकर ही दुनिया में शांति लाई जा सकती है। शांति में जो आनंद है वह किसी और में नहीं। ये विचार शनिवार को हिरोशिमा स्मृति दिवस की पूर्व संध्या पर शांतिपीठ द्वारा गुरु गोविंद सिंह स्कूल के सभागार में आयोजित युवा शांति सम्मेलन में गृहमंत्री गुलाब चंद कटारिया ने व्यक्त किए। कार्यक्रम में डेढ़ दर्जन से अधिक सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के छात्र-छात्राओं, शिक्षको व कई क्षेत्रों से जुड़े सामाजिक कार्यकर्ता उपस्थित हुए।

कटारिया ने कहा कि वर्तमान हालात में ताकतवर होना अनिवार्य है। कमजोर को हर कोई दबाता है, किन्तु जरूरत इस बात की है ताकत का सदुपयोग हो अन्यथा हादसे पैदा होते हैं। इस अवसर पर उन्होंने शिक्षाविदों डॉ. डी.एस. कोठारी, मोहन सिंह मेहता व पं. जनार्दन राय नागर की दर्शक दीर्घा में मूर्तियां स्थापित किए जाने की बात कही।



उदयपुर। गुरु गोविंद सिंह स्कूल में आयोजित हिरोशिमा स्मृति दिवस के अवसर पर उपस्थित अतिथि।

शांतिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि वर्तमान हालात में विवेक मूलक आचरण ही विश्व-शांति को आश्वस्त कर सकता है। आणविक अस्त्र भंडारण की होड़ मानवता को अंधकार में ही धकेल रही है। हमें शांति के लिए दिव्य रास्ते की ओर ही चलना होगा। महाराणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ उमाशंकर शर्मा ने हिरोशिमा-नागासाक दुखांतिकाओं पर कहा कि वे अमानवी हादसे थे, जिसके दुष्परिणाम पीढ़ि तक भुगतने पड़े। महापौर चंद्र सिं कोठारी ने भी अपने विचार प्रस्तु किए। कार्यक्रम में कई विद्यालयों के छात्र समूहों ने सेंट्रल अकादमी के रफीक अहमद व कुसुम शाह के निर्देशन शांति गीत प्रस्तुत किए। सेंट एंथनी क भूमि अरोड़ा, रेजीडेंसी की जानव्ह व जेनब आदि ने विचार व्यक्त किए कार्यक्रम से विद्यालय से शांति रैल को विधायक फूलसिंह मीणा ने ह झंडी दिखाकर रवाना किया। संचाल भूपेंद्र शर्मा ने किया तथा गुरु गोविन सिंह स्कूल के प्राचार्य भैरूलाल तेल ने आभार व्यक्त किया।

दैनिक भास्कर, उदयपुर, रविवार, 06 अगस्त, 2017

देश को ताकत दिखाना जरूरी, वरना होती रहेगी हिरोशिमा जैसी घटना : कटारिया



उदयपुर. गुरुगोविंद स्कूल सभागार में हिरोशिमा स्मृति दिवस पर कार्यक्रम।

सिटी रिपोर्टर | उदयपुर

हिरोशिमा स्मृति दिवस की पूर्व संध्या पर शांतिपीठ का गुरू गोविंद सिंह स्कूल सभागार में युवा शांति सम्मेलन हुआ। इसमें आणविक अस्त्रों के खतरों के दुष्परिणाम बताए और शांति के लिए गीत गाए गए। सम्मेलन को संबोधित करते हुए गृहमंत्री गुलाब चंद कटारिया ने कहा कि वर्तमान हालात में ताकतवर होना अनिवार्य है। कमजोर को हर कोई दबाता है। जरूरत है कि हर देश अपनी ताकत का एहसास कराए वरना हिरोशिमा जैसी घटनाएं होती रहेंगी। उन्होंने कहा हिरोशिमा दिवस का अर्थ ही सबक लेना है कि किसी कीमत पर भी दोबारा ऐसी घटना ना हो पाए। शांतिपीठ संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि विश्व-शांति मानवीय दृष्टिकोण और विवेक से काम करना जरूरी है। महाराणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. उमाशंकर शर्मा ने हिरोशिमा-नागासाकी दुखांतिकाओं की विस्तृत जानकारी देकर पीढ़ियों तक होने वो दुष्परिणामों के बारे में बताया। कार्यक्रम में नगर निगम के विधायक फूल सिंह मीणा, महापौर चंद्र सिंह कोठारी सहित अन्य अतिथि और स्कूलों के छात्र-छात्राएं शामिल हुए। छात्रों ने कार्यक्रम में शांति गीत भी गाए।

शांति गीत गाया और रैली निकाली

कार्यक्रम से पहले विधायक फूलसिंह मीणा ने छात्रों को प्रोत्साहित कर शांति रैली रवाना की। प्रतिभागियों ने जलवायु परिवर्तन, आणविक अस्त्रों के खतरों आदि से सावचेत होने की तख्ती, पोस्टर, बैनर आदि से शहर में जागरूकता फैलाई। रैली चेतक सर्कल, हाथीपोल, लोहा बाजार से होकर वापस गुरू गोविंद सिंह स्कूल परिसर पहुंची।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर . रविवार
06.08.2017

ANCHOR

हिरोशिमा स्मृति दिवस की पूर्व संध्या पर कार्यक्रम

शांति का आनंद अशांति में नहीं : कटारिया

उदयपुर . जियो और जीने दो के सिद्धांत को अमल में लाकर ही दुनिया में शान्ति लाई जा सकती है। शान्ति में जो आनन्द है, वह किसी ओर में नहीं।

ये विचार शनिवार को हिरोशिमा स्मृति दिवस की पूर्व संध्या पर शान्तिपीठ की ओर से गुरु गोविन्द सिंह स्कूल सभागार में हुए युवा शान्ति सम्मेलन में गृहमंत्री गुलाबचन्द कटारिया ने व्यक्त किए।

आयोजन में सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के छात्र-छात्राओं, शिक्षकों सहित कई सामाजिक कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। कटारिया ने शान्तिपीठ के



विश्व शान्ति को लेकर बरसों से चल रहे जन जागरण की सराहना की। उन्होंने महान शिक्षाविद् डॉ. डीएस कोठारी, मोहन सिंह मेहता व पं. जनार्दन राय नागर की दर्शक दीर्घा में मूर्तियां स्थापित करने की घोषणा की। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि वर्तमान में विवेक मूलक आचरण ही विश्व-शान्ति को आश्वस्त कर सकता है। महाराणा प्रताप कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. उमाशंकर शर्मा ने हिरोशिमा-नागासाकी दुखान्तिकाओं पर कहा कि वे अमानवीय हादसे थे जिसके दुष्परिणाम पीढ़ियों तक भुगतने पड़े।

इस अवसर पर नगर निगम के महापौर चन्द्र सिंह कोठारी ने विश्व शान्ति और मानव मंगल के लिए प्रतिज्ञा कराई। विद्यालयों के छात्र समूहों ने शान्ति गीत प्रस्तुत किए। प्रारंभ में विधायक फूलसिंह मीणा ने शान्ति व पर्यावरण की तख्ती दिखाकर विद्यालय से शान्ति मार्च को रवाना किया।

प्रातःकाल
उदयपुर, रविवार 6 अगस्त, 2017



उदयपुर। हिरोशिमा दिवस की पूर्व संध्या पर संकल्प शांति संकल्प लेते अतिथि तथा उपस्थित छात्र-छात्राएं।

शांति में जो आनंद, किसी में नहीं : कटारिया

हिरोशिमा स्मृति दिवस की पूर्व संध्या पर युवा शांति सम्मेलन

उदयपुर। जीओ और जीने दो के सिद्धांत को अमल में लाकर ही दुनिया में शान्ति लाई जा सकती है। शान्ति में जो आनन्द है वह किसी ओर में नहीं। ये विचार हिरोशिमा स्मृति दिवस की पूर्व संध्या पर शान्तिपीठ द्वारा गुरू गोविन्द सिंह स्कूल के सभागार में आयोजित युवा शान्ति सम्मेलन में बोलते हुए गृहमंत्री गुलाब चन्द कटारिया ने व्यक्त किये। सभागार में डेढ़ दर्जन से अधिक सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के छात्र-छात्राओं, शिक्षकों व कई क्षेत्रों से जुड़े सामाजिक कार्यकर्ता मौजूद थे। उन्होंने कहा कि हिरोशिमा दिवस का अर्थ ही सबक लेना है कि किसी कीमत पर भी दुबारा ऐसी घटना ना हो पाए। इस अवसर पर उन्होंने महान शिक्षाविदों डॉ. डी.एस. कोठारी, मोहन सिंह मेहता व पं. जनार्दन राय नागर की दर्शक दीर्घा में मूर्तियां स्थापित किये जाने की बात कही।

शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि वर्तमान हालात में विवेक मूलक आचरण ही विश्व-शान्ति को आश्वस्त कर सकता है। महाराणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. उमाशंकर शर्मा ने हिरोशिमा-नागासाकी दुखान्तिकाओं पर विस्तार से विचार प्रकट करते हुए कहा कि वे अमानवीय हादसे थे जिसके दुष्परिणाम पीढ़ियों तक भुगतने पड़े। आणविक नि:शस्त्रीकरण का रास्ता दुनिया के लिए परमावश्यक रास्ता है।

उदयपुर नगर निगम के महापौर चन्द्र सिंह कोठारी ने विश्व शान्ति और मानव मंगल हेतु प्रतिज्ञा कराई। कार्यक्रम में कई विद्यालयों के छात्र समूहों ने सेन्ट्रल अकादमी के रफीक अहमद व कुसुम शाह के निर्देशन में शान्ति गीत प्रस्तुत किये। सेंट एंथनी की भूमि अरोड़ा, रेजीडेन्सी की जानह्वी व जेनब आदि ने विचार व्यक्त किये। सम्मेलन का संचालन भूपेन्द्र शर्मा ने किया तथा गुरू गोविन्द सिंह स्कूल के प्राचार्य भेरूलाल तेली ने आभार व्यक्त किया।

निकाली शांति रैली

प्रारंभ में विद्यालय से शान्ति रैली को विधायक फूलसिंह मीणा ने शान्ति व पर्यावरण की तख्ती लेकर शान्ति मार्च करते हुए रवाना किया। प्रतिभागी जलवायु परिवर्तन, आणविक अस्त्रों के खतरों आदि से सावचेत होने की तख्ती, पोस्टर, बेनर आदि हाथों में लेकर चल रहे थे। चेतक सर्कल, हाथीपोल, लोहा बाजार से होकर रैली पुन: विद्यालय परिसर में पहुँची। रास्ते में ट्राफिक पुलिस व्यवस्था न होने से कुछ बाधाएँ अवश्य आयी। कार्यक्रम विश्व शान्ति की दिशा में एक पुख्ता संदेश था।

राजस्थान पत्रिका . उदयपुर . गुरुवार . 22.09.2016

शांति के लिए आतंकवाद का खात्मा होगा जरूरी

उदयपुर. आतंकवाद के खिलाफ सख्त कार्रवाई के बगैर दुनिया की शान्ति खतरे में पड़ सकती है। इस नासूर के नियंत्रण से बाहर होने के पूर्व ही विश्व के राष्ट्रों को इसके खात्मे का सुनिश्चित कार्यक्रम तय करते हुए अविलम्ब कार्रवाई करनी चाहिए और संयुक्त राष्ट्र संघ को शक्तिशाली नियामक के रूप में स्थापित किया जाना चाहिए। यह विचार अन्तरराष्ट्रीय शान्ति दिवस पर बुधवार को शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में संगोष्ठी में उभर कर आए। अध्यक्षता करते हुए शिक्षाविद् कैलाश बिहारी वाजपेयी ने कहा कि पाकिस्तान का उद्भव ही नफरत, द्वेष, ईर्ष्या व दुश्मनी से हुआ है। पूर्व प्रशासनिक अधिकारी सुमति लाल बोहरा ने कहा कि पाकिस्तान का पिछले 6 दशकों का इतिहास हिंसा व अलगाव का रहा है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि आतंकवाद के चलते विश्व शान्ति का स्वप्न साकार नहीं किया जा सकता। पूर्व देवस्थान आयुक्त एस.एल.नागदा, रोशन देपुरा, मुस्लिम महासंघ के संस्थापक अध्यक्ष हाजी मोहम्मद बक्ष, हाजी सरदार मोहम्मद ने भी विचार व्यक्त किए। प्रो. महेश शर्मा ने कहा कि युद्ध शान्ति नहीं है। अशान्ति का मूल नफरत है। हाजी मंजूर अहमद ने आभार व्यक्त किया। श्रीरामचन्द्र मिशन ध्यान केन्द्र व हार्टफुलनेस संस्थान के समन्वयक डॉ. राकेश दशोरा ने बताया कि विश्व में शान्ति की कामना को लेकर केन्द्र पर भी प्रार्थना की गई। इस दौरान प्रशिक्षक मोहन बोराणा, मधु मेहता आदि मौजूद थे।

दैनिक भास्कर

उदयपुर, गुरुवार 22 सितंबर, 2016

आतंकवाद के रहते विश्व शांति नहीं : त्रिवेदी

उदयपुर। शांति पीठ संस्थान की अंतरराष्ट्रीय शांति दिवस पर बुधवार को संगोष्ठी हुई। इसमें शिक्षाविद कैलाश बिहारी वाजपेयी ने कहा कि आतंकवाद के खिलाफ विश्व व्यापी कठोर कार्रवाई होनी चाहिए। पूर्व प्रशासनिक अधिकारी सुमति लाल बोहरा ने कहा कि पाकिस्तानी आतंकी पिछले 6 दशकों से हिंसा की आग उगल रहे हैं। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि आतंकवाद के रहते विश्व शांति का सपना साकार नहीं हो सकता है। पूर्व देवस्थान आयुक्त एसएल नागदा, रोशन देपुरा, मुस्लिम महासंघ के संस्थापक अध्यक्ष हाजी मोहम्मद बक्श, प्रो. महेश शर्मा, हाजी सरदार मोहम्मद आदि ने विचार व्यक्त किए।

प्रातःकाल

उदयपुर, गुरूवार 22 सितम्बर, 2016

आतंकवाद के खिलाफ वैश्विक कठोरता जरूरी

उदयपुर। आंतकवाद के खिलाफ विश्व व्यापी कठोर कार्यवाही के बिना दुनिया की शान्ति खतरें में पड़ सकती है। पाकिस्तान की बुनियाद ही नफरत और अलगाव पर रखी गई है। पाकिस्तान को पूरे विश्व में राजनीतिक तौर पर अलग-थलग करने से समाधान का रास्ता निकल सकता है।

यह बात अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति दिवस पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में आयोजित संगोष्ठी में अध्यक्षता करते हुए शिक्षाविद् कैलाश बिहारी वाजपेयी ने व्यक्त किए। पूर्व प्रशासनिक अधिकारी सुमति लाल बोहरा ने कहा कि पाकिस्तान का पिछले 6 दशकों का इतिहास हिंसा व अलगाव का रहा है। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि आंतकवाद के चलते विश्व शान्ति का स्वप्न साकार नही किया जा सकता। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र को शक्तिशाली बनाये जाने एवं दबाव से मुक्त रखे जाने की आवश्यकता प्रतिपादित की।

पूर्व देवस्थान आयुक्त एस.एल. नागदा, रोशन दवेपुरा, मुस्लिम महासंघ के संस्थापक अध्यक्ष हाजी मौहम्मद बक्ष, हाजी सरदार मोहम्मद ने भी विचार व्यक्त किये। विषय प्रवर्तन करते हुए प्रो. महेश शर्मा ने कहा कि युद्ध शान्ति नहीं है। हाजी मंजूर अहमद ने आभार व्यक्त किया।

विद्या भवन गांधी शिक्षा अध्ययन संस्थान एवं गांधी शांति प्रतिष्ठान उदयपुर के संयुक्त तत्वावधान में संयुक्त राष्ट्र अंतरराष्ट्रीय शांति दिवस पर संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता ब्रह्मकुमारी केन्द्र की मुख्य संचालिका सिस्टर रीटा ने कहा कि शांति की स्थापना मन के विचारों को सही दिशा प्रदान कर दी जा सकती है। आभार ज्ञापन प्राचार्य डॉ. सुगन शर्मा एवं संचालन अरुणा माथुर ने किया।

युद्ध नहीं, शक्ति और संवाद है आतंकवाद का हल

दैनिक नवज्योति

उदयपुर, गुरुवार, 22 सितंबर

ब्यूरो नवज्योति/उदयपुर

अंतरराष्ट्रीय शांति दिवस के अवसर पर शांतिपीठ संस्थान की ओर से आयोजित संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए शिक्षाविद् कैलाश बिहारी वाजपेयी ने कहा कि आतंकवाद के खिलाफ विश्व व्यापि कठोर कार्रवाई के बगैर दुनिया की शांति खतरे में पड़ सकती है। इस नासूर के नियंत्रण से बाहर होने के पूर्व ही विश्व के राष्ट्रों को इसके खात्मे का सुनिश्चित कार्यक्रम तय करते हुए अविलंब कार्रवाई करनी चाहिए और संयुक्त राष्ट्र संघ को शक्तिशाली नियामक के रूप में स्थापित किया जाना चाहिए। पाकिस्तान को पूरे विश्व में राजनीतिक तौर पर अलग-थलक करने से समाधान का रास्ता निकल सकता है। इतिहास साक्षी है कि युद्ध इसका हल नहीं है। आवश्यकता है शक्ति और संवाद की।

वाजपेयी ने कहा कि नफरत फैलाने वाले तानाशाह खुद नफरत का शिकार हुए हैं। पूर्व प्रशासनिक अधिकारी सुमति लाल बोहरा ने कहा कि पाकिस्तान का पिछले 6 दशकों का इतिहास हिंसा व अलगाव का रहा है। संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि आतंकवाद के चलते विश्व शांति का स्वप्न साकार नहीं किया जा सकता। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र को शक्तिशाली बनाए जाने एवं दबाव से मुक्त रखे जाने की आवश्यकता प्रतिपादित की। पूर्व देवस्थान आयुक्त एसएल नागदा, रोशन देपुरा, मुस्लिम महासंघ के संस्थापक अध्यक्ष हाजी मोहम्मद बक्ष, हाजी सरदार मोहम्मद ने भी विचार व्यक्त किए। विषय प्रवर्तन करते हुए प्रो. महेश शर्मा ने कहा कि युद्ध शांति नहीं है।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर ■ मंगलवार ■ 25 अक्टूबर, 2016

आज विश्व शांति को सुनिश्चित करने की आवश्यकता

शान्तिपीठ के तत्वावधान में विचार गोष्ठी

उदयपुर। आज विश्व समाज को एक ऐसे संस्थान की जरूरत हैं, जो क्षमता, स्वतंत्रता, न्याय, पारिस्थितिकी और विश्व शांति को सुनिश्चित कर पाए। और वह संस्था संयुक्त राष्ट्र संघ ही हो सकता है, बशर्ते उसे वर्तमान के अन्तर्राष्ट्रीय परिवेश के अनुसार बगैर पूर्वाग्रह के पुनर्गठित किया जाए। आंतकवाद के मुद्दे पर संयुक्त राष्ट्र की सार्थक भूमिका को अभी तक रेखांकित नहीं किया जा सका है किन्तु इसकी उपादेयता को नकारा भी नहीं जा सकता। शान्तिपीठ के तत्वावधान में आयोजित संयुक्त राष्ट्र दिवस पर रखी विचार गोष्ठी में उक्त तथ्य उभर कर सामने आए।



शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने विषय प्रवर्तन करते हुए संयुक्त राष्ट्र के आने वाले नये महासचिव से उम्मीद जताई की वे विश्व शान्ति व सुरक्षा को स्थापित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। प्रो. अरूण चतुर्वेदी ने कहा कि वैश्विक स्तर पर विभिन्न देशों में शान्ति स्थापना के लिए यू.एन. को आऊट सोर्सिंग व्यवस्था करनी पड़ती है तथा अमेरिका के कमजोर होने से यू.एन. भी कमजोर हुआ है।

प्रो. एल.एल. शर्मा, प्रो. राजमल लोढ़ा, प्रो. सुधा चौधरी, डॉ. धीरज जोशी, रोशनलाल देपुरा, एच.एल. कुणावत, एस.एल. बोहरा, कैलाश बिहारी वाजपेयी, भंवरलाल व्यास ने भी विचार रखे। अध्यक्षता करते हुए मोसुविवि के कुलपति प्रो. उमाशंकर शर्मा ने आशा व्यक्त की कि आने वाले समय में सुरक्षा परिषद् का विस्तार होगा तथा चीन भारत के पक्ष में आएगा। संचालन प्रो. महेश शर्मा ने व मनोज गन्धर्व ने आभार व्यक्त किया।

rajasthanpatrika.com
राजस्थान पत्रिका . उदयपुर . मंगलवार. 25.10.2016

संयुक्त राष्ट्र दिवस पर विचार गोष्ठी का आयोजन

उदयपुर @ पत्रिका संयुक्त राष्ट्र दिवस के मौके पर सोमवार को शान्तिपीठ की ओर से विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। वक्ताओं ने कहा कि आज विश्व समाज को ऐसे संस्थान की जरूरत है, जो क्षमता, स्वतंत्रता, न्याय, पारिस्थितिकी और विश्व शांति सुनिश्चित कर पाए। वह संस्था संयुक्त राष्ट्र संघ ही हो सकती है। बशर्ते उसे वर्तमान के अन्तरराष्ट्रीय परिवेश के अनुसार पुनर्गठित किया जाए। संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी, प्रो. अरूण चतुर्वेदी, प्रो. एलएल. शर्मा, प्रो. राजमल लोढ़ा, प्रो. सुधा चौधरी, डॉ. धीरज जोशी, रोशनलाल देपुरा, एच.एल. कुणावत, कैलाश बिहारी वाजपेयी, भंवरलाल व्यास ने विचार रखे। अध्यक्षता एमपीयूएटी वीसी प्रो. उमाशंकर शर्मा ने की। संचालन महेश शर्मा ने किया। मनोज गन्धर्व ने आभार जताया।

दैनिक भास्कर : उदयपुर : मंगलवार 25 अक्टूबर, 2016

संयुक्त राष्ट्र दिवस पर विचार गोष्ठी

शान्तिपीठ की संयुक्त राष्ट्र दिवस पर सोमवार को विचार गोष्ठी हुई। इसमें शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि विश्व समाज को एक ऐसे संस्थान की जरूरत हैं, जो क्षमता, स्वतंत्रता, न्याय, पारिस्थितिकी, विश्व शांति को सुनिश्चित कर पाए और वह संस्था संयुक्त राष्ट्र संघ ही हो सकता है। प्रो. एलएल शर्मा, प्रो. राजमल लोढ़ा, प्रो. सुधा चौधरी, डॉ. धीरज जोशी, रोशनलाल देपुरा, एचएल कुणावत, एसएल बोहरा, कैलाश बिहारी वाजपेयी आदि ने भी विचार रखे।

प्रातःकाल
उदयपुर, मंगलवार 25 अक्टूबर, 2016

संयुक्त राष्ट्र दिवस पर गोष्ठ

उदयपुर। विश्व समाज को एक ऐसे संस्थान की जरूरत हैं, जो क्षम स्वतंत्रता, न्याय, पारिस्थितिकी और विश्व शांति को सुनिश्चित कर पाये अ वह संस्था संयुक्त राष्ट्र संघ ही हो सकता है, बशर्ते उसे वर्तमान अन्तरराष्ट्रीय परिवेश के अनुसार बगैर पूर्वाग्रह के पुनर्गठित किया जा आज शान्तिपीठ के तत्वावधान में आयोजित संयुक्त राष्ट्र दिवस पर र विचार गोष्ठी में यह विचार उभरकर आए।

शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने विषय प्रवर्तन करते ह संयुक्त राष्ट्र के आने वाले नये महासचिव से उम्मीद जताई कि वे वि शान्ति व सुरक्षा को स्थापित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाएं प्रो. अरूण चतुर्वेदी ने कहा कि वैश्विक स्तर पर विभिन्न देशों में शा स्थापना के लिए यू.एन. को आऊट सोर्सिंग व्यवस्था करनी पड़ती है त अमेरिका के कमजोर होने से यू.एन. भी कमजोर हुआ है। प एल.एल.शर्मा, प्रो. राजमल लोढ़ा, प्रो. सुधा चौधरी, डॉ. धीरज जोश रोशनलाल देपुरा, एच.एल.कुणावत, एस.एल.बोहरा ने एक स्वर में क कि यू.एन. को वैश्विक आंतकवाद को खत्म करने के लिए सार्थक पह करनी चाहिए अध्यक्षता एमपीयूएटी के कुलपति प्रो. उमाशंकर शर्मा ने विचार व्यक्त किए।

प्रातःकाल
उदयपुर, रविवार 7 अगस्त, 2016

जरूरत से ज्यादा महात्वाकांक्षा बनती है जंग का कारण



उदयपुर। ना तो आतंक का जवाब आतंक से दिया जा सकता ना ही बुराई का विनाश बुराई से किया जा सकता है। आंख के बदले आंख निकालने पर पूरा विश्व अंधा हो जाएगा। युद्ध न तो शान्ति का विकल्प है ना ही न्याय प्रिय समाधान है, और ना ही सर्वोत्तम हल है क्योंकि आणविक युग में कोई भी युद्ध अन्तिम विजय नहीं दिला सकता है। दुखान्तिका की 71वीं वार्षिकी के अवसर पर शान्तिपीठ संस्थान द्वारा रेजीडेन्सी स्कूल के सभागार में आयोजित कार्यक्रम में बोलते हुए विभिन्न छात्र-छात्राओं तथा वक्ताओं ने उक्त विचार व्यक्त किए। अध्यक्षीय उद्बोधन में कोठारी ने कहा कि भारत की हमेशा से शान्ति संदेश देने में विश्व में अग्रणी भूमिका रही है इसमें संदेह नहीं किन्तु राष्ट्र का कठोर अनुभव यह भी रहा है कि शक्तिमान की सभी सुनते हैं कमजोर की आवाज का उपहास होता है। इस अवसर पर शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि एक साथ कई दुखान्तिकाओं का जखीरा ढोते हुए सुखद भविष्य आश्वस्त नही किया जा सकता। आज मानव जाति ऐतिहासिक मोड़ पर खड़ी है, तय एक रास्ता करना है - अहिंसा मूलक समाज अथवा सामूहिक आत्मघात। रेजीडेन्सी स्कूल की प्राचार्या डॉ. मधु शर्मा ने कहा कि आज लोगों की जरूरत से ज्यादा महत्वाकांक्षाओं ने मानव को मानव का दुश्मन बना दिया है। हमें संयम व सहनशीलता रखनी होगी ताकि हमारी छोटी-छोटी गलतियां जंग का कारण नही बने। कार्यक्रम के दौरान रेजीडेन्सी एवं सेन्ट्रल एकेडमी के विद्यार्थियों ने डॉ. कुसुमलता शाह व रफीक मोहम्मद के निर्देशन में शान्ति गीत प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का संचालन करते हुए प्रो. महेश शर्मा ने कहा कि आज जब विश्व पर पुनः युद्ध के बादल मण्डरा रहे है तब विश्व को अटल बिहारी वाजपेयी जैसे नेतृत्व की जरूरत है जिन्होंने युद्ध को कभी भी सर्वोत्तम हल नहीं माना केवल विकल्प मानते हुए हर हाल में उसे टालने की कोशिश करते रहे। पायरोटेक इन्टरनेशनल के चेयरमेन तथा संस्थान के कार्यकारी अध्यक्ष पी.एस.तलेसरा ने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि शान्तिपीठ विश्व में शान्ति स्थापित करने की दिशा में नई पौध की आवाज बन चुकी है। अंत में 2 मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्माओं के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई। विद्या भवन गाँधी शिक्षा अध्ययन संस्थान एवं गाँधी शान्ति प्रतिष्ठान उदयपुर के सयुंक्त तत्वावधान में दिनाँक 06.08.2016 को हिरोशिमा दिवस पर मारे गये नागरिकों को श्रद्धाजंलि अर्पित की गई ।

प्राचार्य डॉ. सुगन शर्मा ने अतिथियों का परिचय दिया तथा कार्यक्रम के प्रारम्भ में हिरोशिमा दिवस से सम्बन्धित मार्मिक दृश्य प्रस्तुत करते हुये भावी छात्राध्यापकों को सम्बोधित किया । अध्यक्षीय उद्बोधन में विद्या भवन सोसायटी के श्री अजय मेहता ने कहा कि युद्ध के परिणामों को अन्तर्राष्ट्रीय परिपेक्ष्य में सोच कर अपने स्तर पर शान्ति कायम करने के कार्यो को करना जरुरी बताया । कार्यक्रम में मुख्य वक्ता लेफ्टिनेंट कर्नल गुमान सिंह राव, जिला कल्याण अधिकारी उदयपुर संभाग ने हिरोशिमा नागासाकी के विनाश की घटना के समय का भौगोलिक राजनैतिक परिदृश्य मानचित्र द्वारा प्रस्तुत किया । विद्या भवन सोसायटी के पूर्व अध्यक्ष श्रीमान् रियाज तहसीन ने लियो टॉल्सटॉय के चार शब्दों 'आप किसी को मारेंगे नहीं' समझाते हुये कहा कि अंहिसा ही विश्व शान्ति को स्थापित करने में एकमात्र कारक है ।

rajasthanpatrika.com
राजस्थान पत्रिका . उदयपुर . सोमवार . 08.08.2016

खुशहाली के लिए आणविक शक्ति का उपयोग हो: कोठारी



शान्तिपीठ - भारत
उदयपुर (राज.)

हिरोशिमा दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन अतिथि।

हिरोशिमा दुखान्तिका की 71वीं वार्षिकी के मौके पर आयोजन

पत्रिका न्यूज़ नेटवर्क
rajasthanpatrika.com

उदयपुर. महापौर चन्द्रसिंह कोठारी ने कहा कि भारत की हमेशा से शान्ति संदेश देने की भूमिका रही है, इसमें संदेह नहीं, लेकिन राष्ट्र का अनुभव यह भी रहा है कि शक्तिमान की सभी सुनते हैं, कमजोर की आवाज का उपहास होता है। विश्व में न्यूक्लियर पावर को शान्ति, खुशहाली एवं विकास के लिए काम लेना चाहिए। भारत आणविक शक्ति होने के बाद भी बन्धुत्व और सहनशीलता के सिद्धांतों पर चल रहा है। इसे हमारी कमजोरी नहीं समझना चाहिए। महापौर कोठारी हिरोशिमा दुखान्तिका की 71वीं वार्षिकी के मौके पर शान्तिपीठ संस्थान की ओर से आयोजित समारोह में बोल रहे थे।

रेजीडेन्सी स्कूल में हुए कार्यक्रम में स्कूली बच्चों की भागीदारी रही। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि कई दुखान्तिकाओं का जखीरा ढोते हुए सुखद भविष्य आश्वस्त नहीं किया जा सकता। प्राचार्य डॉ. मधु शर्मा, सेन्ट एंथनी की ईशा राघव तथा साक्षी तोषनीवाल, महिला मण्डल की मनीषा गवारी तथा निकिता सोनी ने विचार रखे। सेन्ट्रल एकेडमी के विद्यार्थियों ने डॉ. कुसुमलता शाह व रफीक मोहम्मद के निर्देशन में गीत प्रस्तुत किए। संचालन प्रो. महेश शर्मा ने किया।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, रविवार, 7 अगस्त 2016 | 6



शान्तिपीठ - भारत
उदयपुर (राज.)

गरीबी, भुखमरी, बीमारियों व प्रदूषण से मिलकर लड़ना होगा

उदयपुर। ना तो आतंक का जवाब आतंक से दिया जा सकता है ना ही बुराई का विनाश बुराई से किया जा सकता है। आँख के बदले आँख निकालने पर पूरा विश्व अंधा हो जायेगा। युद्ध ना तो शान्ति का विकल्प है ना ही न्याय प्रिय समाधान है, और ना ही सर्वोत्तम हल है क्योंकि आणविक युग में कोई भी युद्ध अन्तिम विजय नहीं दिला सकता है। वैश्वीकरण के बाद आत्म निर्भरता अन्तर्निरभता में बदल चुकी है। आज गरीबी, भूखमरी, बीमारियों व प्रदूषण से मिलकर लड़ना होगा। अब चुनौतियां सांझी हैं। कोई भी अकेला राष्ट्र शान्त, समृद्ध व सुरक्षित नहीं रह सकता क्योंकि स्वतंत्रता अब अन्तर्निभरता में बदल गई है। यह सार हिरोशिमा दुखान्तिका की 71वीं वार्षिकी पर शान्तिपीठ संस्थान द्वारा रेजीडेन्सी स्कूल के सभागार में आयोजित कार्यक्रम में निकल कर सामने आ
अध्यक्षता करते हुए महापौर चन्द्रसि
कोठारी ने कहा कि भारत की हमे
से शान्ति संदेश देने में विश्व में अग्र
भूमिका रही है। शान्तिपीठ के संस्थाप
अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि ए
साथ कई दुखान्तिकाओं का जख
ढोते हुए सुखद भविष्य आश्वस्त न
किया जा सकता। रेजीडेन्सी स्कू
की प्राचार्या डॉ. मधु शर्मा ने कहा
आज लोगों की जरूरत से ज्य
महत्वाकांक्षाओं ने मानव को मान
का दुश्मन बना दिया है। संचालन क
हुए प्रो. महेश शर्मा ने कहा कि अ
जब विश्व पर पुनः युद्ध के बाद
मण्डरा रहे है तब विश्व को अट
विहारी वाजपेयी जैसे नेतृत्व
जरूरत है। संस्थान के कार्यकारी अध्य
पी.एस. तलेसरा ने आभार व्य
किया।

rajasthanpatrika.com
राजस्थान पत्रिका . उदयपुर . मंगलवार . 02.08.2016

महापौर मेयर्स फॉर पीस के सदस्य बने

पत्रिका PLUS रिपोर्टर

उदयपुर ● महापौर चंद्रसिंह कोठारी ने सोमवार को 'मेयर्स फॉर पीस' संगठन की सदस्यता ग्रहण की। आवश्यक दस्तावेज पर हस्ताक्षर कर वे इस अंतरराष्ट्रीय संगठन में सम्मिलित हो गए। इस अवसर पर शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी, प्रो. एचआर त्यागी, देवेन्द्र साहू, डॉ. पीएल शर्मा, हेमेन्द्र श्रीमाली मौजूद थे। मेयर्स फॉर पीस संगठन के अध्यक्ष हिरोशिमा और उपाध्यक्ष नागासाकी के महापौर हैं। संगठन दोनों शहरों के महापौरों ने मिलकर 1982 में बनाया था। दुनिया में 7 हजार से अधिक नगरों के महापौर इस संगठन के सदस्य हैं।

दैनिक भास्कर, उदयपुर, मंगलवार, 2 अगस्त, 2016

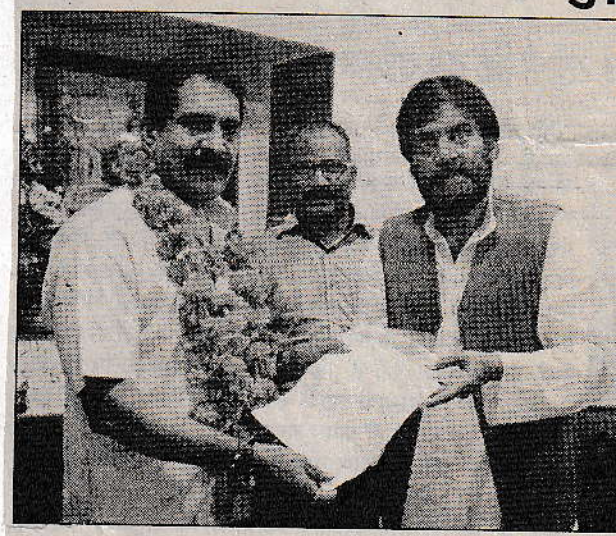
मेयर कोठारी ने मेयर्स फॉर पीस की सदस्यता ली



महापौर चंद्र सिंह कोठारी ने सोमवार को '' मेयर्स फॉर पीस'' संगठन की सदस्यता ग्रहण की। वर्तमान में विश्व में 7 हजार से अधिक नगरों के महापौर इस संगठन के सदस्य है। संगठन का संकल्प है कि 2020 तक दुनिया में आणविक अस्त्रों का खात्मा हो।

प्रातःकाल
उदयपुर, मंगलवार 2 अगस्त, 2016

महापौर मेयर्स फॉर पीस से जुड़े



उदयपुर। उदयपुर के महापौर चंद्र सिह कोठारी ने आज '' मेयर्स फॉर पीस'' संगठन की सदस्यता ग्रहण की। प्रातः 10.30 बजे आवश्यक दस्तावेज पर हस्ताक्षर कर वे इस अंतराष्ट्रीय संगठन में सम्मिलित हो गये। इस अवसर पर शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी, प्रो. एच. आर. त्यागी, देवेन्द्र साहु, डा. पी. एल. शर्मा, हेमेन्द्र श्रीमाली आदि उपस्थित थे। मैयर्स फार पीस संगठन के अध्यक्ष हिरोशिमा के महापौर हैं तथा उपाध्यक्ष नागासाकी के महापौर। यह संगठन हिरोशिमा व नागासाकी के महापौरों ने मिलकर 1982 में बनाया था।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर ■ मंगलवार, 2 अगस्त, 2016

महापौर ने मेयर्स फॉर पीस की सदस्यता ग्रहण की



उदयपुर। महापौर चंद्र सिंह कोठारी ने सोमवार को मेयर्स फॉर पीस संगठन की सदस्यता ग्रहण की। इस अवसर पर शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी, प्रो. एच. आर. त्यागी, देवेन्द्र साहु, डा. पी. एल. शर्मा, हेमेन्द्र श्रीमाली आदि उपस्थित थे। मैयर्स फार पीस संगठन के अध्यक्ष हिरोशिमा के महापौर हैं तथा उपाध्यक्ष नागासाकी के महापौर।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, रविवार, 25 अक्टूबर 2015

संयुक्त राष्ट्र संघ का जनतांत्रिक आधार पर पुनर्गठन हो



उदयपुर। एक विश्व समुदाय परिकल्पना की व्यवहारिक परिणति में संयुक्त राष्ट्र की भूमिका कारगर सिद्ध हो सकती है, बशर्ते 70 वर्ष के बाद विश्व में आ चुके बदलाव के अनुरूप संयुक्त राष्ट्र संघ का जनतांत्रिक आधार पर पुनर्गठन हो। उक्त विचार शनिवार को संयुक्त राष्ट्र स्थापना दिवस के अवसर पर शान्तिपीठ संस्थान में आयोजित विचार गोष्ठी में कई व्यक्ताओं ने व्यक्त किये।

राजनीति शास्त्र के डॉ. अरूण चतुर्वेदी ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र वंचित और गरीब देशों की आवाज बनना चाहिए। शिक्षाविद् कैलाश बिहारी वाजपेयी ने कहा आज के राजनेता शिक्षा नीति को बदलना नहीं चाहते हैं। उन्होंने कहा आज आवश्यकता है शिक्षा नीति में राष्ट्र संस्कृति का समावेश हो। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने आशा व्यक्त की कि संयुक्त राष्ट्र के रूपान्तरण में योग विज्ञान और अहिंसा के मूल्य सार्थक सिद्ध होंगे। पूर्व प्रशासनिक अधिकारी सुमति लाल बोहरा, एडवोकेट एम.एस.राणावत, हेमेन्द्र श्रीमाली, प्रकाश भारती गोस्वामी, प्रो. महेश शर्मा, भरत कुमावत आदि ने भी विचार व्यक्त किए।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर . रविवार . 25.10.2015

संयुक्त राष्ट्र का हो पुनर्गठन



उदयपुर. 'एक विश्व समुदाय' परिकल्पना की व्यवहारिक परिणति में संयुक्त राष्ट्र की भूमिका कारगर सिद्ध हो सकती है, बशर्ते 70 वर्ष के बाद विश्व में आ चुके बदलाव के अनुरूप संयुक्त राष्ट्र संघ का जनतांत्रिक आधार पर पुनर्गठन हो। यह विचार शनिवार को संयुक्त राष्ट्र स्थापना दिवस के अवसर पर शान्तिपीठ संस्थान में आयोजित विचार गोष्ठी में कई वक्ताओं ने व्यक्त किए। प्रमुख वक्ता राजनीति शास्त्री डॉ. अरुण चतुर्वेदी ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र वंचित और गरीब देशों की आवाज बने। अध्यक्षीय उद्बोधन शिक्षाविद् कैलाश बिहारी वाजपेयी ने दिया। शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने आशा व्यक्त की कि संयुक्त राष्ट्र के रूपान्तरण में योग विज्ञान और अहिंसा के मूल्य सार्थक सिद्ध होंगे। पूर्व प्रशासनिक अधिकारी सुमति लाल बोहरा, एडवोकेट एम.एस. राणावत, हेमेन्द्र श्रीमाली व प्रकाश भारती गोस्वामी ने विचार व्यक्त किए।

मनोरम हुआ शहर

राजस्थान पत्रिका .उदयपुर . 07.08.2015



गत सप्ताह शहर में हुई बरसात से शहर की झीलें लबालब हो गईं हैं। अरावली उपत्यकाएं हरितिमा की चादर ओढ़े पर्यटकों को चारों दिशाओं से लुभाती दिखाई दे रही हैं। यूं भले ही कुछ दिनों से आसमान में छाए बादल मुंह चिढ़ाकर बिन बरसे ही लुप्त होकर उमस बढ़ा रहे हैं,लेकिन वातावरण में घुला सावन का सुरूर हर किसी को मदहोश कर रहा है।

राकेश शर्मा राजदीप

हिरोशिमा दुखान्तिका पर शांति मार्च

उदयपुर. हिरोशिमा दुखान्तिका की वर्षगांठ पर 6 अगस्त को शान्तिपीठ द्वारा नगर में शान्ति मार्च एवं सभा का आयोजन किया जाएगा। इसमें कई शिक्षण संस्थाओं के छात्र एवं शिक्षक सम्मिलित होंगे। छात्र अपनी संस्थाओं से रैली के रूप में राजकीय गुरु गोविन्द सिंह स्कूल के सभागार में पहुंचेंगे। गुमानिया वाला स्थित शान्तिपीठ संस्थान से प्रमुख रैली सुबह 9.10 बजे रवाना होगी, जिसमें आसपास के विद्यालयों के छात्र-छात्राएं सम्मिलित होंगे। शान्ति सभा की अध्यक्षता महापौर करेंगे। 6-8-2015 पृ

हिरोशिमा दिवस पर हुई सभा व निकाली रैली : विद्यार्थियों ने लिया विश्व शांति का संकल्प

आणविक आयुधों के आविष्कार से हो सकता है समूची पृथ्वी का विनाश

plus रिपोर्टर
plusreporter@patrika.com

उदयपुर. आणविक युग में हम विकास और विनाश के बीच मौलिक अन्तर न कर पाने की आत्मघाती विडम्बना में जा फंसे हैं। कम विकसित समाज के दौर में हम अधिक सुरक्षित थे, किन्तु वर्तमान के आणविक आयुधों के आविष्कार तथा उत्तरोत्तर बढ़ती गुणवत्ता व मात्रा का भण्डारण विज्ञान व तकनीकी की ऐसे भयानक उपलब्धियां हैं, जिनसे सर्वनाश की विभीषिका खड़ी हो सकती है।

यह बात गुरुवार को हिरोशिमा दुखान्तिका की 70वीं बरसी पर शान्तिपीठ संस्थान द्वारा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय गुरु गोविन्द सिंह सभागार में आयोजित शान्ति सभा में वक्ताओं ने कही।



सभा में नगर की कई सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के छात्र व छात्राएं शान्ति मार्च करते पहुंचे। मुख्य रैली की शुरुआत शान्तिपीठ संस्थान से सुबह 9.15 बजे पूर्व प्रशासनिक अधिकारी सुमति लाल बोहरा, वरिष्ठ शिक्षाविद् कैलाश बिहारी वाजपेयी व राउमावि, रेलवे ट्रेनिंग स्कूल की प्रधानाध्यापिका ने शान्ति मार्च से की। इसमें कई विद्यालयों के सैकड़ों छात्र सम्मिलित थे। वे शान्ति, आणविक निःशस्त्रीकरण, पृथ्वी संरक्षण तथा विश्व एकता जैसे मुख्य मुद्दों को लेकर बैनर, तख्तियां, चार्ट, पोस्टर आदि लेकर चल रहे थे। रैली के बाद सभा में दो मिनट का मौन रखकर हिरोशिमा-नागासाकी में मारे गए निर्दोष लोगों की आत्मा की शान्ति के लिए श्रद्धांजलि दी गई। संचालन भरत कुमावत ने किया।

बलीचा स्थित एसकेबी ग्लोबल स्कूल के विद्यार्थियों ने न सिर्फ अपने आस-पास, बल्कि संपूर्ण विश्व में शांति स्थापित करने के लिए प्रयासरत रहने की शपथ ली। प्रधानाध्यापिका कुसुम भटनागर ने बताया कि विश्व शांति दिवस पर बालकों को हिरोशिमा और नागासाकी पर हुए परमाणु बम हमलों और उसके दुष्परिणामों की जानकारी दी गई। छात्रों को शांति का महत्व बताया गया। संचालन शीतल राठौड़ ने किया।

'नैतिकता विहीन ज्ञान विध्वंसक'

उदयपुर. विद्या भवन गांधी शान्ति प्रतिष्ठान केन्द्र रामगिरी उदयपुर में हिरोशिमा दिवस पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता उदय मेहता ने हिरोशिमा दिवस को एक ऐसे दिन के रूप में याद किया, जब नैतिकता विहीन ज्ञान विश्व का विध्वंस कर सकता है। मेहता ने दैनिक जीवन में धैर्य व अहिंसा को अपनाते हुए समस्त कार्यों को पूर्ण करते हुए शान्ति को अपनाने का आग्रह किया। कार्यक्रम में अतिथियों द्वारा गांधी शान्ति प्रतिष्ठान के पिछले 50 वर्ष में किए गए कार्यों के प्रतिवेदन का विमोचन किया गया। महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. सुगन शर्मा ने बताया कि कार्यक्रम के दौरान विद्या भवन सोसायटी के अध्यक्ष अजय मेहता, विद्या भवन गांधी शिक्षा अध्ययन संस्थान एवं विद्या भवन उच्च माध्यमिक विद्यालय रामगिरी के समस्त सदस्य व विद्यार्थी उपस्थित थे। संचालन अरुणा माथुर ने किया।

हिरोशिमा दुखांतिका पर निकाला शांति मार्च

उदयपुर। आणविक युग में हम विकास और विनाश के बीच मौलिक अन्तर न कर पाने की आत्मघाती विडम्बना में जा फँसे हैं। कम विकसित समाज के दौर में हम अधिक सुरक्षित थे किन्तु वर्तमान के आणविक आयुधों के आविष्कार तथा उत्तरोत्तर बढ़ती गुणवत्ता व मात्रा का भण्डारण विज्ञान व तकनीकी की ऐसे भयानक उपलब्धियां हैं, जिनसे सर्वनाश की कई विभीषिकाएं खड़ी हो सकती हैं और समुची पृथ्वी का कई बार विनाश हो सकता है। हमें यही कहना होगा कि हमने अब तक हिरोशिमा से यही सीखा कि हमने कुछ नहीं सीखा।

ये विचार गुरूवार को हिरोशिमा दुखान्तिका की 70वीं बरसी पर शान्तिपीठ संस्थान द्वारा राउमावि गुरू गोविन्द सिंह सभागार में आयोजित शान्ति सभा में कई वक्ताओं ने व्यक्त किये। सभा में नगर की कई सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के छात्र व छात्राएं शान्ति मार्च करते हुए पहुंचे। मुख्य रैली का शुभारम्भ शान्तिपीठ संस्थान से प्रातः 09.15 बजे पूर्व प्रशासनिक अधिकारी सुमति लाल बोहरा, वरिष्ठ शिक्षाविद् कैलाश बिहारी वाजपेयी व रा.उ.मा.वि., रेल्वे ट्रेनिंग स्कूल की प्रधानाध्यापिका ने शान्ति मार्च करते हुए किया, जिसमें कई विद्यालयों के सैकड़ों छात्र सम्मिलित थे। वे रैली में शान्ति, आणविक निःशस्त्रीकरण, पृथ्वी संरक्षण तथा विश्व एकता जैसे मुख्य मुद्दों को लेकर बैनर, तख्तियां, चार्ट, पोस्टर आदि लेकर चल रहे थे। 10 बजे शान्ति सभा के प्रारंभ में सेन्ट्रल एकेडमी के छात्रों द्वारा शान्ति गीत संगीत अध्यापक मोहम्मद रफीक व कुसुम शाह के निर्देशन में प्रस्तुत किया गया।

शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने युवा समुदाय को आह्वान किया कि आणविक अस्त्रों के खात्मे की अपील के साथ ही वे आत्मप्रज्ञ विश्व नागरिक की भूमिका में खड़े हों और सौर ऊर्जा की क्रान्ति को अपना मिशन बनायें। जापान के नगर क्योटो और उदयपुर के सांस्कृतिक संबंधों पर कार्य कर रहे डेविड क्यूबिक ने कहा कि आज आवश्यकता है कि गांधी का देश भारत विश्व शान्ति की पहल करे। सांस्कृतिक संबंधों पर कार्य कर रही रीटा दीक्षित ने शान्ति गान प्रस्तुत किया। सेन्ट टेरेसा के शुभम अग्रवाल व मानसी साहू ने कविता व विचार व्यक्त किये, रेल्वे ट्रेनिंग स्कूल की छात्रा शिवानी सिंह ने साम्प्रदायिक सद्भाव व राष्ट्रीय एकता पर गीत प्रस्तुत किया। सभा में सैफी स्कूल, कस्तुरबा छात्रावास, रेजीडेन्सी व गुरू गोविन्द सिंह आदि स्कूलों के शिक्षकों की उपस्थिति के साथ ही बोहरा समुदाय के अली असगर मगर, मुस्लिम महासभा के हाजी मोहम्मद बक्ष, हाजी सरदार मोहम्मद एवं कई सामाजिक कार्यकर्ता सम्मिलित थे। विद्यालय के प्राचार्य भेरू लाल तेली ने बालकों से कहा कि वे विज्ञान के साथ ही मानवीय मूल्यों को आत्मसात करें और विश्व बन्धुत्व के स्वप्न को साकार करें। सभा में खड़े होकर आणविक अस्त्रों को नष्ट किये जाने, पर्यावरण संरक्षण व विश्व एकता के अविरल प्रयास किये जाने की प्रतिज्ञा की गई। दो मिनिट का मौन रखकर हिरोशिमा-नागासाकी में मारे गये निर्दोष लोगों की आत्मा की शान्ति के लिए श्रद्धांजली दी गई। संचालन भरत कुमावत ने किया, जबकि आभार शान्तिपीठ के इन्द्र देव जोशी ने व्यक्त किया।

विश्व का विध्वंस कर सकता है नैतिकता विहिन ज्ञान : विद्या भवन गाँधी शान्ति प्रतिष्ठान केन्द्र रामगिरी में आयोजित हिरोशिमा दिवस पर आयोजित व्याख्यान के मुख्य वक्ता उदय मेहता ने हिरोशिमा दिवस को एक ऐसे दिन के रुप में याद किया जब नैतिकता विहिन ज्ञान विश्व का विध्वंस कर सकता है । मेहता ने दैनिक जीवन में धैर्य व अंहिसा को अपनाते हुये समस्त कार्यो को पूर्ण करते हुये शान्ति को अपनाने का आग्रह किया । कार्यक्रमों में अतिथियों द्वारा गाँधी शान्ति प्रतिष्ठान के पिछले 50 वर्षो में किये गये कार्यो के प्रतिवेदन का विमोचन किया गया । महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. सुगन शर्मा ने अतिथियों का स्वागत किया । कार्यक्रम के दौरान विद्या भवन सोसायटी के अध्यक्ष अजय मेहता , विद्या भवन गाँधी शिक्षा अध्ययन संस्थान एवम् विद्या भवन उच्च माध्यमिक विद्यालय रामगिरी के समस्त सदस्य एवम् विद्यार्थी उपस्थित थे । संचालक अरुणा माथुर ने हिरोशिमा दिवस के विषय में जानकारी प्रदान की । धन्यवाद डॉ. अशोक श्रीवास्वत के द्वारा ज्ञपित किया गया।



उदयपुर। आणविक अस्त्रों को नष्ट किये जाने, पर्यावरण संरक्षण की प्रतिज्ञा लेते विद्यार्थी।



उदयपुर। प्रतिवेदन का विमोचन करते अतिथि।

हिरोशिमा दिवस ग्रीन डे के रूप में मनाया



उदयपुर। कार्यक्रम में उपस्थित विद्यार्थी।

उदयपुर। गुरूवार को अंजुमन सैकण्डरी स्कूल में हिरोशिमा दिवस ग्रीन डे के रूप में मनाया गया जिसमें प्री प्राइमरी इंगलिश मीडियम स्कूल में बच्चे ग्रीन कलर की ड्रेसों में सजकर विद्यालय पहुंचे, जहां नर्सरी कक्षा के मोहम्मद कैफ को पुरस्कार दिया गया। प्राइमरी से सैकण्डरी स्कूल हिन्दी मीडियम में छात्रों द्वारा हरे रंग की वस्तुएं इकट्ठा करने पर कक्षा दस के रमजान अशरफी को 68 वस्तुएं इकट्ठा करने पर प्रथम, कक्षा नवीं की सिमरन को 62 वस्तुएं इकट्ठा करने पर द्वितीय तथा कक्षा छः की राफिया को 53 वस्तुएं इकट्ठा करने पर तृतीय पुरस्कार दिया गया। पुरस्कार विशिष्ट अतिथि कायनात आरा व खेरून्निसा के द्वारा दिए गए। अध्यक्षता प्रिंसीपल रेखा माली ने की।

प्रातःकाल
शुक्रवार 7 अगस्त, 2015

दैनिक भास्कर, उदयपुर, शुक्रवार, 7 अगस्त, 2015

कम विकसित समाज सुरक्षित था, आज सर्वनाश की कई विभीषिकाएं

हिरोशिमा दुखांतिका की 70वीं बरसी पर शांति सभा और हुए कई आयोजन

सिटी रिपोर्टर | उदयपुर

आणविक युग में हम विकास और विनाश के बीच मौलिक अन्तर न कर पाने की आत्मघाती विडंबना में फंसे हैं। कम विकसित समाज के दौर में हम अधिक सुरक्षित थे, लेकिन आज आइटम बम की मात्रा भण्डारण तथा विज्ञान-तकनीक की ऐसी कई भयानक उपलब्धियां हैं, जिनसे सर्वनाश की कई विभीषिकाएं खड़ी हो सकती हैं। ये बात शान्तिपीठ संस्थान संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कही। वे हिरोशिमा दुखांतिका की 70वीं बरसी पर गुरुवार को गुरुगोविंद सिंह स्कूल में आयोजित शांति सभा में बतौर मुख्यवक्ता संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि हमने अब तक हिरोशिमा से यही सीखा, कि हमने कुछ नहीं सीखा। सभा में स्कूली छात्र-छात्राएं मौजूद थे। इससे पहले रैली निकाली गई। जिसे शान्तिपीठ से सुमति लाल बोहरा ने हरी झंडी दिखाई। रैली में पृथ्वी संरक्षण तथा विश्व एकता पर तख्तियां, पोस्टर थामे छात्र चल रहे थे।



हिरोशिमा विभीषिका की 70 वीं बरसी पर रैली निकालते स्कूली बच्चे।

विज्ञान के साथ मानवीय मूल्यों को भी आत्मसात करें

अध्यक्षता प्राचार्य भेरूलाल तेली ने की। उन्होंने कहा कि विज्ञान के साथ ही मानवीय मूल्यों को आत्मसात करने की जरूरत है। उन्होंने दो मिनिट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दी। जापान के डेविड क्यूबिक ने कहा कि आज आवश्यकता है कि गांधी का देश भारत विश्व शांति की पहल करे। उन्होंने जापान के लोगों के बीच भी पहुंचने की इच्छा जताई। इस अवसर पर बच्चों ने "सीमा रहित धरती माता" "साम्प्रदायिक सदभाव' व "राष्ट्रीय एकता' पर गीत प्रस्तुत किए।

यहां भी हुए आयोजन

बलीचा स्थित एसकेबी ग्लोबल स्कूल में प्रधानाध्यापिका कुसुम भटनागर ने बताया कि बच्चों को हिरोशिमा और नागासाकी पर हुए परमाणु बम हमलों और उसके दुष्परिणामों की जानकारी दी। इधर, विद्याभवन गांधी शांति प्रतिष्ठान केन्द्र रामगिरी में व्याख्यान कार्यक्रम हुआ। मुख्य वक्ता उदय मेहता ने दैनिक जीवन में धैर्य व अहिंसा को अपनाते हुए शांति का आग्रह किया। इसके अलावा पायोनियर पब्लिक स्कूल एवं अंजुमन माध्यमिक स्कूल में भी कार्यक्रम हुए।

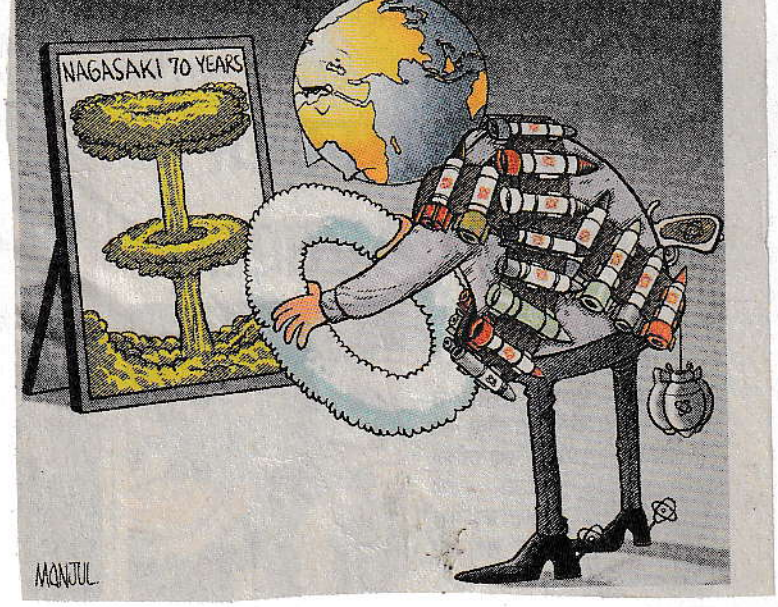
दैनिक नवज्योति
शुक्रवार
7 अगस्त 2015

विकास, विनाश के बीच मौलिक अन्तर समझना जरूरी



उदयपुर। आणविक युग में हम विकास और विनाश के बीच मौलिक अन्तर न कर पाने की आत्मघाती विडम्बना में जा फंसे हैं। कम विकसित समाज के दौर में हम अधिक सुरक्षित थे, किन्तु वर्तमान के आणविक आयुधों के आविष्कार तथा उत्तरोत्तर बढ़ती गुणवत्ता व मात्रा का भण्डारण विज्ञान व तकनीकी की ऐसे भयानक उपलब्धियां हैं, जिनसे सर्वनाश की कई विभीषिकाएं खड़ी हो सकती हैं। उक्त विचार हिरोशिमा दुखान्तिका की 70वीं बरसी पर शान्तिपीठ संस्थान द्वारा राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय गुरु गोविन्द सिंह सभागार में आयोजित शान्ति सभा में कई वक्ताओं ने व्यक्त किए। सभा में नगर की कई सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के छात्र व छात्राएं शान्ति मार्च करते हुए पहुंचे। मुख्य रैली का शुभारम्भ शान्तिपीठ संस्थान से प्रातः 9.15 बजे पूर्व प्रशासनिक अधिकारी सुमति लाल बोहरा, वरिष्ठ शिक्षाविद् कैलाश बिहारी वाजपेयी ने शान्ति मार्च करते हुए किया। रैली में विद्यार्थी शान्ति, आणविक निःशस्त्रीकरण, पृथ्वी संरक्षण तथा विश्व एकता जैसे मुख्य मुद्दों को लेकर बैनर, तख्तियां, चार्ट, पोस्टर आदि लेकर चल रहे थे। सभा में शान्तिपीठ संस्थान के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी, डेविड क्यूबिक, अशोक जैन, प्राचार्य भेरू लाल तेली, अली असगर मगर, हाजी मोहम्मद बक्ष, हाजी सरदार मोहम्मद तथा विद्यार्थियों ने भी विचार रखे। संचालन भरत कुमावत ने व आभार इन्द्र देव जोशी ने व्यक्त किया। अंजुमन तालीमुल इस्लाम की ओर से अंजुमन सैकेण्डरी स्कूल में ग्रीन दिवस के रूप में मनाया। हिन्दी मीडियम में छात्रों द्वारा हरे रंग की वस्तुएं इकट्ठा करने के टास्क पर रमजान अशरफी प्रथम, सिमरन द्वितीय, राफिया तृतीय रही। अंजुमन मीडिया प्रभारी अशरफ जीलानी ने बताया कि मुख्य अतिथि कायनात आरा व खेरुन्निशा ने पुरस्कार वितरित किए। अध्यक्षता प्रिंसीपल रेखा माली ने की। बलिचा स्थित एसकेबी ग्लोबल स्कूल के विद्यार्थियों ने विश्व में शांति स्थापित करने की शपथ ली। प्रधानाध्यापिका कुसुम भटनागर ने बालकों को हिरोशिमा और नागासाकी पर हुए परमाणु बम हमलों और उसके दुष्परिणामों की जानकारी दी।

Toonpur लाइव



सच्चा हमसफर
दैनिक नवज्योति
उदयपुर, शुक्रवार, 16 जनवरी 2015

लोगों के बीच खाई पैदा कर रहा है आतंकवाद

उदयपुर। पिछड़ापन गरीबी विपन्नता, असमानता तथा मानवाधिकारों का उल्लंघन एवं असमान आर्थिक संरचना जो समाज के लोगों के बीच खाई पैदा कर रही है आतंकवाद के लिए जिम्मेदार है। हथियारों का व्यापार भी जिम्मेदार है आतंक के लिए, पेशावर दुखान्तिका के एक माह पूर्ण होने पर गुरुवार को शांतिपीठ के तत्वावधान में आयोजित बाल शान्ति सम्मेलन में उदयपुर के विभिन्न स्कूलों के बच्चों ने एकत्रित होकर उन्हें श्रद्धांजलि दी व आतंकवाद के लिए जिम्मेदार कारकों को रेखांकित किया।

बच्चों का मानना था कि हम आतंक के खिलाफ सच्ची जीत तभी हासिल कर सकते हैं जब हम गरीबी और असमानता को खत्म करें। बच्चों ने विनम्रता सहनशीलता, प्रेम व भाईचारे पर सर्वाधिक जोर देते हुए कहा कि हिंसा की अनुपस्थिति ही शान्ति नहीं है हमें प्रेम से रहना चाहिये।



उदयपुर। बाल शांति सम्मेलन में विचार व्यक्त करती छात्रा।

संगोष्ठी में सेन्ट ऐन्थोनी के कनिष्ठ चैबिसा, गुरुनानक पब्लिक स्कूल के सोहेलखान, विद्याभवन की गरिमा श्रीमाली, हार्दिक सोसाक्षी, सेन्ट पॉल की हार्दिक सोनी, सेन्ट मैथ्यूस की राज राजेश्वरी चैहान, राजकीय माध्यमिक विद्यालय, चिकलवास की निरमा डांगी, रिजवान अली, जान्हवी चैबिसा, आशीष कौर, भूमिका पंड्या, किरण सैन आदि ने विचार व्यक्त किए। संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने युवा समुदाय से आग्रह किया कि वे जो तत्व इन्सानियत को पोषित करें केवल उन्हें अपनाएं अन्यथा को नकारें। राजनैतिक शास्त्र के प्रो. अरुण चतुर्वेदी, फादर फिलिप, हाज़ी मोहम्मद बक्ष, मार्शल आर्ट के राजकुमार मेनारिया, शिक्षाविद कैलाश बिहारी वाजपेयी, एडवोकेट एम.एस राणावात, विद्याभवन के नारायण आमेटा ने भी विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो. एस. एन. जोशी ने की। संचालन करते हुए प्रो. महेश शर्मा ने कहा कि आतंक जिस कोख से जन्म लेता है उसे ही तबाह कर देता है। भरत कुमावत ने आभार व्यक्त किया। अन्त में दो मिनट का मौन रखकर पेशावर, पेरिस तथा भारत के उत्तर पूर्व में मारे गए श्रद्धांजलि दी गई।

प्रातःकाल
उदयपुर, शुक्रवार 16 जनवरी, 2015

हथियारों का व्यापार भी आतंक के लिए जिम्मेदार

उदयपुर। पिछड़ापन गरीबी विपन्नता, असमानता तथा मानवाधिकारों का उल्लंघन एवं असमान आर्थिक संरचना जो समाज के लोगों के बीच खाई पैदा कर रही है आतंकवाद के लिए जिम्मेदार है।

पेशावर दुखान्तिका के एक माह पूर्ण होने पर आज शान्तिपीठ के तत्वावधान में आयोजित बाल शान्ति सम्मेलन में उदयपुर के विभिन्न स्कूलों के बच्चों ने एकत्रित होकर उन्हें श्रद्धान्जलि दी व आतंकवाद के लिए जिम्मेदार कारकों को रेखांकित किया। बच्चों का मानना था कि हम आतंक के खिलाफ सच्ची जीत तभी हासिल कर सकते हैं जब हम गरीबी और असमानता को खत्म करें। बच्चों ने विनम्रता सहनशीलता, प्रेम व भाईचारे पर सर्वाधिक जोर देते हुए कहा कि हिंसा की अनुपस्थिति ही शान्ति नहीं है। हमें प्रेम से रहना चाहिये।

संगोष्ठी में सेन्ट ऐन्थोनी के कनिष्ठ चौबिसा, गुरुनानक पब्लिक स्कूल के सोहेलखान, विद्याभवन की गरिमा श्रीमाली, हार्दिक सोसाक्षी, सेन्ट पॉल की हार्दिक सोनी, सेन्ट मैथ्यूस की राज राजेश्वरी चौहान, राजकीय माध्यमिक विद्यालय, चिकलवास की निरमा डांगी, रिजवान अली, जान्हवी चौबिसा, आशीष कौर, भूमिका पंड्या, किरण सैन आदि ने विचार व्यक्त किये। बच्चों ने हथियारों के व्यापार को भी आतंक के लिये जिम्मेदार माना।

विषय प्रवर्तन करते हुए शान्तिपीठ के संस्थापक अनन्त गणेश त्रिवेदी ने युवा समुदाय को आह्वान किया कि वे जो तत्व इन्सानियत को पोषित करें केवल उन्हें अपनायें अन्यथा को नकारें।

राजनैतिक शास्त्र के प्रो. अरूण चतुर्वेदी, फादर फिलिप, हाजी मोहम्मद बक्ष, मार्शल आर्ट के राजकुमार मेनारिया, शिक्षाविद कैलाश बिहारी वाजपेयी, एडवोकेट एम.एस राणावात, विद्याभवन के नारायण आमेटा ने भी विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रो एस. एन. जोशी ने की। संचाल करते हुए प्रो. महेश शर्मा ने कहा कि आतंक जिस कोख से जन्म लेता उसे ही तबाह कर देता है।

दैनिक भास्कर
उदयपुर, रविवार, 26 अक्टूबर 2014, 15

'गांधी के सिद्धांतों से समाज की अस्मिता सुरक्षित कर सकता है संयुक्त राष्ट्र'

संयुक्त राष्ट्रसंघ स्थापना दिवस पर शांतिपीठ की ओर से विचार गोष्ठी

उदयपुर. गांधी के बुनियादी सिद्धांतों पर चल कर संयुक्त राष्ट्र अपने उद्देश्यों की सार्थकता सिद्ध कर सकता है। बदलते परिवेश में संयुक्त राष्ट्र को अधिक शक्तिशाली बनने की खास जरूरत है। आज जरूरत इस बात की है कि यह विश्व संस्था लोकतंत्र की सम्प्रभुता के सिद्धांत को चरितार्थ करे तथा नैतिक शक्ति का आस्था केन्द्र बने। ये विचार संयुक्त राष्ट्र संघ के स्थापना दिवस पर शान्तिपीठ संस्थान की ओर से हुई विचार गोष्ठी में वक्ताओं ने व्यक्त किए। अध्यक्षता शिक्षाविद कैलाश विहारी वाजपेयी ने की। प्रो. अरुण चतुर्वेदी, शांति पीठ के संस्थापक महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी तिक मोहन सिंह कोठारी ने संबोधित किया।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर . सोमवार . 27.10.2014

संयुक्त राष्ट्र को अधिक शक्तिशाली बनने की आवश्यकता

उदयपुर गांधी के सिद्धांतों पर चलकर संयुक्त राष्ट्र अपने उद्देश्यों की सार्थकता सिद्ध कर सकता है। वर्तमान के बदलते परिवेश में विश्व की कई शक्तियां संयुक्त राष्ट्र के सामने चुनौतियां खड़ी कर रही हैं ऐसे में संयुक्त राष्ट्र को अधिक शक्तिशाली बनने की खास जरूरत है। उक्त विचार संयुक्त राष्ट्र संघ के स्थापना दिवस के अवसर पर शांतिपीठ संस्थान द्वारा आयोजित विचार गोष्ठी में वक्ताओं ने व्यक्त किए। गोष्ठी की अध्यक्षता शिक्षाविद् कैलाश बिहारी वाजपेयी ने की। समारोह को प्रो. अरुण चतुर्वेदी, शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी, चिंतक मोहन सिंह कोठरी, इतिहासविद् डॉ. जीएल मेनारिया ने संबोधित किया। गिरीश उपाध्याय ने आभार व्यक्त किया।

दैनिक नवज्योति
सच्चा हमसफर
उदयपुर, रविवार, 26 अक्टूबर, 2014

संयुक्त राष्ट्र को अधिक शक्तिशाली बनाने की जरू

शांतिपीठ संस्थान की विचार गोष्ठी

उदयपुर। गांधी के बुनियादी सिद्धान्तों पर चल कर संयुक्त राष्ट्र अपने उद्देश्यों की सार्थकता सिद्ध कर सकता है। वर्तमान के बदलते परिवेश में विश्व की कई शक्तियों ने संयुक्त राष्ट्र के सामने चुनौतियां खड़ी कर रही हैं। ऐसे में संयुक्त राष्ट्र को अधिक शक्तिशाली बनाने की जरूरत है। आज जरूरत इस बात की है कि यह विश्व संस्था लोकतंत्र की सम्प्रभुता के सिद्धान्त को चरितार्थ करे तथा नैतिक शक्ति का आस्था केन्द्र बने। उक्त विचार संयुक्त राष्ट्र संघ के स्थापना दिवस पर शांतिपीठ संस्थान की ओर से आयोजित विचार गोष्ठी में वक्ताओं ने व्यक्त किए।

अध्यक्षता करते हुए शिक्षाविद् कैलाश बिहारी वाजपेयी ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र गांधी के सिद्धान्तों को अमल में लाकर समाज के अंतिम व्यक्ति की अस्मिता की हिफाजत कर सकता है। प्रो. अरूण च ने युद्ध की आशंकाओं को बताते हुए कहा कि गांधी औ एन. का अविर्भाव समकाल तथा इनकी पारस्परिक पूरक व्यवहारीक अंजाम देने से लक्ष्य उपलब्ध किया जा सक

संस्थापक महासचिव गणेश त्रिवेदी ने कहा कि राष्ट्र दिव्य प्रकाश का केन्द्र यह ज्ञान एवं नैतिक शक्ति का बन कर राष्ट्रों को सिमित औ स्वार्थों से उपर उठने कि दि सकता है। चिंतक मोहन कोठारी ने कहा कि आतंकव समस्या का समाधान विश्व को मिल कर कार्य करने सकता है। इतिहासविद् डा. जी मेनारिया ने संयुक्त राष्ट्र की श को विस्तार दिये जाने की आवश प्रतिपादित की। गिरीश उपाध्य आभार व्यक्त किया।

प्रातःकाल

'नई पीढ़ी विकास का सकारात्मक मार्ग चुनें'



उदयपुर। सभा में उपस्थित संभागी।

उदयपुर। हिरोशिमा विभीषिका इतिहास की भीषणतम दुर्घटना मात्र नही है। यह नर संहार मानव जाति के लिये चेतावनी है कि अगर अब नहीं चेते तो युद्ध नहीं विनाश है। आज आवश्यकता है नई पीढी विकास के सकारात्मक मार्ग को चुने और विनाश के लिये निर्मित भूमिका को अपने नैतिक दबाव से मिटा दे और सदैव याद रखे कि शान्ति के विकल्प नहीं हुआ करते।

उक्त विचार बुधवार को हिरोशिमा दुखान्तिका की 69वीं वार्षिकी पर शान्तिपीठ के तत्वावधान में राजकीय गुरू गोविन्द सिंह विद्यालय के सभागार में आयोजित हिरोशिमा स्मृति सभा में कई वक्ताओं ने वक्त किये । मुख्य वक्ता के रूप में बोलते हुए रंग कर्मी भानु भारती ने कहा कि हमें नैतिकता विहीन विज्ञान को अस्वीकार करना चाहिए । उन्होंने उपस्थित युवा समुदाय को आह्वान किया कि वे आश्वस्त भविष्य निर्माण के लिये पूरी दुनिया में नैतिक दबाव बनायें। शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि अविश्वास, दुराग्रह और गैरबराबरी की मानसिकता हिंसा और आतंक की ओर ले जाती है जबकि हमें अंतश्चेतना को विकसित करने की प्रक्रिया में पहुँच कर व्यापक एकता को आत्मसात करना चाहिए।

अध्यक्षीय उदबोधन देते हुए प्रो. अरूण चतुर्वेदी ने कहा कि आज संयुक्त राष्ट्र संघ को अधिक शक्तिशाली बनाने के लिये सभी को ईमानदारी से प्रयास करने चाहिए। विशिष्ठ अतिथि के रूप में गुरू गोविन्द सिंह विद्यालय के प्राचार्य कैलाश पालीवाल, पी.एल. रूंगटा ने भी विचार व्यक्त किये । सभा में सेन्ट एन्थनी स्कूल के शुभम शर्मा ने मूकाभिनय से दुखान्तिका को व्यक्त किया। सेन्ट्रल एकेडमी निलाद्री मुखरजी ने बांग्ला गीत प्रस्तुत किया। प्रारम्भ में सेन्ट्रल एकेडमी के संगीत अध्यापक रफीक अहमद व डॉ. कुसुम शाह के निर्देशन में शान्ति गीत प्रस्तुत किया। कई स्कूल रैली के रूप में आ कर सभा में सम्मिलित हुए तथा सभागार में पोस्टर, पेन्टीग आदि को लगा कर प्रदर्षित किया। सभा का संचालन डॉ. भुपेन्द्र शर्मा ने किया तथा धन्यवाद नेहा माहेश्वरी ने ज्ञापित किया।

इधर डॉ. मोहन सिंह मेहता मेमोरियल ट्रस्ट द्वारा आयोजित हिरोशिमा विध्वंस की वर्षगाँठ पर परिसंवाद आयोजित हुआ। राजनिती शास्त्री प्रो. अरुण चतुर्वेदी ने कहा कि हिरोशिमा दिवस मूलत: चेतावनी का दिन है ये इस बात की चेतावनी है कि अणुशक्ति विनाश की प्रतिक है। ट्रस्ट के सचिव नन्द किशोर शर्मा ने कहा कि यह दुखद है कि भारतीय उपमहाद्वीप सहित सम्पूर्ण विश्व में परमाणु शक्ति संपन्न होना प्रगति का सोपान मान लिया गया है। विद्या भवन पॉलिटेक्निक महाविद्यालय के प्राचार्य अनिल मेहता ने कहा कि गांधी का अहिंसा दर्शन इस विनाशक पहलू को समाप्त करेगा। समाजकर्मी तेज शंकर पालीवाल ने कहा कि भारत की परमाणु शक्ति देश की ऊर्जा आवश्यकता पूर्ति का महत्वपूर्ण साधन है।

दैनिक नवज्योति
उदयपुर, शुक्रवार, 8 अगस्त, 2014



कार्यक्रम में मंचस्थ अतिथि।

'नैतिकता विहीन विज्ञान को अस्वीकार करें'

उदयपुर। हिरोशिमा विभीषिका इतिहास की भीषणतम दुर्घटना मात्र नहीं है। यह नर संहार मानव जाति के लिए चेतावनी है कि अगर अब नहीं चेते तो युद्ध नहीं विनाश है।

यह विचार हिरोशिमा दुखान्तिका की 69वीं वार्षिकी पर शांतिपीठ के तत्वावधान में राजकीय गुरु गोविन्द सिंह विद्यालय में आयोजित स्मृति सभा में वक्ताओं ने व्यक्त किए। रंग कर्मी भानु भारती ने कहा कि हमें नैतिकता विहीन विज्ञान को अस्वीकार करना चाहिए। उन्होंने युवा समुदाय को आह्वान किया कि वे आश्वस्त भविष्य निर्माण के लिए पूरी दुनिया में नैतिक दबाव बनाएं, जिससे विनाशकारी आणविक हथियारों के जखीरों का खात्मा हो सके। शांतिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि अविश्वास, दुराग्रह और गैरबराबरी कि मानसिकता हिंसा और आतंक की ओर ले जाती है, जबकि हमें अंतश्चेतना को विकसित करने की प्रक्रिया में पहुंच कर व्यापक एकता को आत्मसात करना चाहिए। अध्यक्षता करते हुए प्रो. अरुण चतुर्वेदी ने कहा कि आज संयुक्त राष्ट्र संघ को अधिक शक्तिशाली बनाने के लिए सभी को ईमानदारी से प्रयास करने चाहिए। विशिष्ट अतिथि गुरु गोविंद सिंह विद्यालय के प्राचार्य कैलाश पालीवाल, पी.एल. रूंगटा ने भी विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में सेन्ट एन्थनी स्कूल के कनिष्क चौबीसा, सेफी स्कूल की छात्रा मारिया, शांतिपीठ पब्लिक स्कूल, टोकर के कार्तिक पण्ड्या, सेन्ट टेरेसा की मान्सी शेखावत ने भी विचार व्यक्त किए। सेन्ट एन्थनी के सुभम शर्मा ने मुकाभिनय से दुखान्तिका को व्यक्त किया। सेन्ट्रल एकेडमी निलाद्री मुखरजी ने बांग्ला गीत प्रस्तुत किया।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर . गुरुवार . 07.08.2014

हिरोशिमा दिवस पर संवाद

अणुशक्ति विनाश की प्रतीक

plus रिपोर्टर
plusreporter@patrika.com





गुरु गोविंद सिंह सभागार में शांतिपीठ में कार्यक्रम के दौरान मंचासीन अतिथि व उपस्थित विद्यार्थी।

उदयपुर. संवाद व भाईचारे में विश्वास तथा अहिंसा व शांति की संस्कृति ही परमाणु आयुधों से इस विश्व को बचा सकती है। यह विचार डॉ मोहन सिंह मेहता मेमोरियल ट्रस्ट की ओर से आयोजित हिरोशिमा विध्वंश की 70वीं वर्षगांठ पर आयोजित परिसंवाद में वक्ताओं ने व्यक्त किए। राजनीति शास्त्र प्रो. अरुण चतुर्वेदी ने कहा कि हिरोशिमा दिवस इस बात की चेतावनी है कि अणुशक्ति विनाश की प्रतीक है। ट्रस्ट के सचिव नन्द किशोर शर्मा ने कहा कि यह दुखद है कि भारतीय उपमहाद्वीप सहित सम्पूर्ण विश्व में परमाणु शक्ति संपन्न होना प्रगति का सोपान मान लिया गया है। यह विभ्रम नैतिक मूल्यों व शांति के सिद्धांतों से ही टूटेगा। इस अवसर पर विद्या भवन पॉलिटेक्निक महाविद्यालय के प्राचार्य अनिल मेहता, समाजकर्मी तेज शंकर पालीवाल आदि ने भी विचार प्रस्तुत किए। राजकीय गुरु गोविन्द सिंह विद्यालय के सभागार में आयोजित हिरोशिमा स्मृति सभा में रंग कर्मी भानु भारती ने कहा कि हिरोशिमा विभीषिका मानव जाति के लिए चेतावनी है कि अगर अब नहीं चेते तो विनाश तय है। आज आवश्यकता है नई पीढ़ी विकास के सकारात्मक मार्ग को चुने और विनाश के लिए निर्मित भूमिका को अपने नैतिक दबाव से मिटा दे। शान्तिपीठ के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि अविश्वास, दुराग्रह और गैर-बराबरी की मानसिकता हिंसा और आतंक की ओर ले जाती है। प्रो. अरूण चतुर्वेदी, गुरु गोविन्द सिंह विद्यालय के प्राचार्य कैलाश पालीवाल, पी.एल. रूंगटा आदि ने भी विचार व्यक्त किए। महावीर चेसमेन पब्लिक स्कूल में भी हिरोशिमा दिवस पर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया। दूसरी ओर सेन्ट एन्थोनीज विद्यालय में बुधवार को हिरोशिमा दिवस के अवसर पर विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने विभिन्न कार्यक्रम प्रस्तुत किए। प्राचार्य विलियम डिसूजा ने बताया कि इस अवसर पर शांति प्रार्थना का आयोजन भी किया गया।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर . मंगलवार
06.08.2013

हिरोशिमा विभीषिका के 68वें स्मृति दिवस पर शांतिसभा

'भूलकर भी न करें अणु शक्ति का प्रयोग'



पंचवटी स्थित शांतिपीठ में आयोजित शांतिसभा को सम्बोधित करती वक्ता।

उदयपुर

udaipur@patrika.com

भारत-पाकिस्तान सहित परमाणु शक्ति सम्पन्न सभी देशों में यह चेतना जगाने की आवश्यकता है कि वे अणु शक्ति का प्रयोग भूलकर भी नहीं करें। अगर ऐसा हुआ, तो न हम रहेंगे और न ही वे। लड़ाई किसी भी देश के फायदे की नहीं है। यह विचार शांतिपीठ के तत्वावधान में हिरोशिमा विभीषिका के 68वें स्मृति दिवस पर सोमवार को शांतिपीठ परिसर में आयोजित शांतिसभा में वर्द्धमान महावीर खुला विवि कोटा के पूर्व प्रो. अरुण चतुर्वेदी ने व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि किसी भी देश को अणु शक्ति के इस्तेमाल की नहीं, गरीबी, कुपोषण और बेरोजगारी जैसी समस्या को दूर करने की कोशिश करनी चाहिए। अन्नत गणेश चतुर्वेदी ने विद्यार्थियों को सफलता के लिए लक्ष्य निर्धारित कर प्रयास करने का संदेश दिया। विद्याभवन सोसायटी के अध्यक्ष रियाज तहसीन ने कहा कि 80 के दशक के बाद हुए युद्धों में लाखों सैनिक मारे गए। सैनिकों से ज्यादा नागरिक भी शिकार हुए। हम यह मानते हैं कि लड़ाइयों में सैनिक ही मरते हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए रोशनलाल देवपुरा ने कहा कि देश के विकास का पैसा सैन्य सामग्री में जा रहा है। हमें युद्ध के कारणों को खत्म करना चाहिए।

प्रदर्शनी से दिया संदेश

सरकारी व गैरसरकारी स्कूलों के विद्यार्थी व शिक्षक पेंटिंग्स बनाकर लाए। इसमें पर्यावरण प्रदूषण से बचाव, पेड़ लगाने, महिला अत्याचार रोकने आदि के संदेश से जुड़ी पेंटिंग्स शामिल थी। अतिथियों ने उनकी प्रतिभा की सराहना की।

दैनिक भास्कर, उदयपुर
मंगलवार, 6 अगस्त 2013

हिरोशिमा दुखांतिका पर शांतिसभा

अहिंसामूलक समाज की अवधारणा को आत्मसात करने की जरूरत

उदयपुर | मानव जाति को विकास की उच्छृंखल अवधारणाओं से निजात पाते हुए विरासत और विकास के विवेकशील समन्वय को अपनाना होगा। साथ ही अहिंसामूलक समाज निर्माण की वैज्ञानिक अवधारणा को आत्मसात करना होगा। यह विचार सोमवार को हिरोशिमा विभीषिका की 68वीं वार्षिकी की पूर्व संध्या पर शांतिपीठ संस्थान के तत्वावधान में आयोजित शांतिसभा में वक्ताओं ने रखे। सोमवार सुबह दस बजे शांतिपीठ परिसर में कई जागरूक लोग शांति मार्च करते हुए सभा में सम्मिलित हुए। चिंतक रियाज तहसीन ने टॉल्सटॉय का हवाला देते हुए कहा कि सुरक्षा और अस्तित्व नहीं बल्कि सुरक्षा के रास्ते चलना होगा। प्रो. अरुण चतुर्वेदी ने कहा कि अणुशक्ति ने अस्तित्व पर प्रश्न खड़ा किया है। कई देश आज अणुशक्ति का विस्तार स्वास्थ्य के लिए, ऊर्जा के लिए, शांति के लिए कर रहे हैं, किंतु इसके साथ ही अस्तित्व का संकट निरंतर गम्भीर होता जा रहा है। संस्थापक महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी ने हिरोशिमा, नागासाकी दुखांतिका से उत्पन्न हालात व अणु ऊर्जा के गम्भीर खतरों के बारे में बताया। अंत में दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि अर्पित की गई तथा राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

प्रातःकाल
उदयपुर, शुक्रवार, 25 अक्टूबर, 2013

भूख, गरीबी, आर्थिक विषमता परमाणु बमों से ज्यादा घातक

उदयपुर। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद संयुक्त राष्ट्र के माध्यम से एक शान्त व समृद्ध विश्व का विश्वास दिलाया गया था, जहाँ हिंसा व आतंक मुक्त समाज का सपना संजोया गया था। हालांकि इस दौरान तीसरा विश्व युद्ध नहीं हुआ। किन्तु इस दौरान लड़े गये 150 युद्धों में बीस लाख से अधिक लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया। आज जरूरत है कि हम भूख, गरीबी, विपन्नता व बीमारियों को समाप्त कर एक ऐसे शान्त समाज की संरचना करें जिसमें लोग आपस में भाई-चारें के साथ शान्ति से रह सके।''

संयुक्त राष्ट्र दिवस के अवसर पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में आयोजित संगोष्ठी में उपरोक्त विचार उभरकर आए। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए मोहनसिंह कोठारी ने कहा कि आज विश्व विषैले हथियारों के खतरनाक दौर से गुजर रहा हैं, किन्तु अभी तक स्थिति नियंत्रण में चल रही हैं। आज अणु बमों के बाद रासायनिक हथियारों की होड़ घातक स्थिति में पहुंच गई है जिसे रोकने के लिये पूरे विश्व को प्रयत्न करने की आवश्यकता हैं।

शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र की महत्ता को कोई अस्वीकार नहीं कर सकता किन्तु वर्तमान की बदली विश्व व्यवस्था के अनुरूप बुनियादी उद्धेश्यों की कामयाबी तथा मनुष्य मात्र के सुखद भविष्य के लिए संयुक्त राष्ट्र को लोकतंत्र की चेतना के अनुरूप ढालना होगा। प्रो. अरूण चतुर्वेदी ने कहा कि शक्ति से नहीं संवाद से आपसी विवादों को हल किया जा सकता हैं। समाज सेवी घनश्याम सिंह कृष्णावत ने कहा कि पौराणिक काल में भी महाभारत जैसे विश्व युद्ध होते रहे हैं और हजारों वर्ष बीतने के बाद भी हम शान्ति के लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाये हैं।

संगेष्ठी का संचालन करते हुए प्रो. महेश शर्मा ने कहा कि पिछले डेढ़ दशक से संयुक्त राष्ट्र द्वारा सहस्त्राब्दी विकास लक्ष्य के माध्यम से विश्व में शान्ति स्थापना की पहल की है, जिसमें हम बहुत हद तक लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रसर हैं। शर्मा ने कहा कि विश्व के कई देश आज भी जिन्दगी को बचाने की नहीं बल्कि मौत को जिन्दा रखने की कोशिश में लगे हैं। पं. भंवरलाल व्यास, रोशनलाल देपुरा, प्रो. पी. एल. शर्मा व एडवोकेट धर्मराज ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, शुक्रवार
25.10.2013

गरीबी को समाप्त कर शांत समाज की संरचना आज की जरूरत

उदयपुर। वर्तमान परिदृश्य में जरूरत है कि हम भूख, गरीबी, विपन्नता व बीमारियों को समाप्त कर एक ऐसे शांत समाज की संरचना करें जिसमें लोग आपस में भाई-चारे के साथ शांति से रह सके। यह विचार संयुक्त राष्ट्र दिवस के अवसर पर शांतिपीठ संस्थान के तत्वावधान में आयोजित संगोष्ठी में उभरकर आए। संगोष्ठी में बोलते हुए प्रो. अरुण चतुर्वेदी ने कहा कि शक्ति से नहीं संवाद से आपसी विवादों को हल किया जा सकता हैं। युद्ध किसी भी विवाद का हल नहीं हैं, किंतु अभी भी लोकतांत्रिक पद्धति में उन सिद्धांतों का अभाव है जो व्यक्ति को युद्ध नहीं करने के लिए प्रेरित करे। संचालन करते हुए प्रो. महेश शर्मा ने कहा कि पिछले डेढ़ दशक से संयुक्त राष्ट्र द्वारा सहस्त्राब्दी विकास लक्ष्य के माध्यम से विश्व में शांति स्थापना की पहल की है, जिसमें हम बहुत हद तक लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रसर हैं।

सच्चा हमसफर
दैनिक नवज्योति
अजमेर, शनिवार, 26 अक्टूबर 2013

भूख, गरीबी, आर्थिक विषमता व जलवायु परिवर्तन

परमाणु बमों से ज्यादा घातक

न्यूज सर्विस

उदयपुर, 25 अक्टूबर। ''द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद संयुक्त राष्ट्र के माध्यम से एक शान्त व समृद्ध विश्व का विश्वास दिलाया गया था, जहाँ हिंसा व आतंक मुक्त समाज का सपना संजोया गया था। हालांकि इस दौरान तीसरा विश्व युद्ध नहीं हुआ। किन्तु इस दौरान लड़े गये 150 युद्धों में बीस लाख से अधिक लोगों को मौत के घाट उतार दिया गया। आज जरूरत है कि हम भूख, गरीबी, विपन्नता व बीमारियों को समाप्त कर एक ऐसे शान्त समाज की संरचना करें जिसमें लोग आपस में भाई-चारें के साथ शान्ति से रह सके।''

संयुक्त राष्ट्र दिवश के अवसर पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में आयोजित संगोष्ठी में उपरोक्त विचार उभरकर आए। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए मोहनसिंह कोठारी ने कहा कि आज विश्व विषैले हथियारों के खतरनाक दौर से गुजर रहा हैं, किन्तु अभी तक स्थिति नियंत्रण में चल रही हैं। आज अणु बमों के बाद रासायनिक हथियारों की होड़ घातक स्थिति में पहुँच गई है जिसे रोकने के लिये पुरे विश्व को प्रयत्न करने की आवश्यकता हैं। उन्होनें शिक्षा के तंत्र में पुरे विश्व में आमूल-चूल परिवर्तन की बात कही।

शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र की महत्ता को कोई अस्वीकार नहीं कर सकता किन्तु वर्तमान की बदली विश्व व्यवस्था के अनुरूप बुनियादी उद्धेश्यों की कामयाबी तथा मनुष्य मात्र के सुखद भविष्य हेतु संयुक्त राष्ट्र को लोकतंत्र की चेतना के अनुरूप ढालना होगा।

इस अवसर पर बोलते हुए प्रो. अरूण चर्तुवेदी ने कहा कि शक्ति से नहीं संवाद से आपसी विवादों को हल किया जा सकता हैं। युद्ध किसी भी विवाद का हल नहीं हैं, किन्तु अभी भी लोकतान्त्रिक पद्धति में उन सिद्धान्तों का अभाव है जो व्यक्ति को युद्ध नहीं करने के लिए प्रेरित करे।

समाज सेवी घनश्याम सिंह कृष्णावत ने कहा कि पौराणिक काल में भी महाभारत जैसे विश्व युद्ध होते रहे हैं और हजारों वर्ष बितने के बाद भी हम शान्ति के लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाये हैं। आज हमें युद्ध के मूल कारणों को खोजना होगा, जो व्यक्ति के दिमाग में बसते है और युद्ध के लिए प्रेरित करते हैं।

दैनिक भास्कर
उदयपुर • गुरुवार, 25 अक्टूबर, 2012

संयुक्त राष्ट्र को कारगर बनाने की जरूरत

संयुक्त राष्ट्र संघ दिवस पर शान्तिपीठ में संगोष्ठी

नगर संवाददाता | उदयपुर

संयुक्त राष्ट्र की उपादेयता को नकारा नहीं जा सकता। विश्व समाज के बदलते परिवेश में इसे शक्तिशाली और कारगर तंत्र के रूप में विकसित करने की जरूरत है। यह तभी संभव है, जब इसके गठन को प्रजातांत्रिक रूप दिया जाए।

ये विचार संयुक्त राष्ट्र संघ दिवस के अवसर पर बुधवार को शांति पीठ द्वारा संस्थान सभागार में हुई विचार गोष्ठी में वक्ताओं ने रखे। अध्यक्षता शिक्षाविद् कैलाश बिहारी वाजपेयी ने की तथा विशिष्ट अतिथि राजस्थान अनुसूचित जाति आयोग के उपाध्यक्ष दिनेश तरवाड़ी थे। प्रमुख वक्ता तक्षशिला विद्यापीठ निदेशक एवं इतिहासविद डॉ. जी.एन. मेनारिया ने राष्ट्र संघ एवं संयुक्त राष्ट्र संघ के राजनैतिक एवं गैर राजनैतिक कार्यक्रमों पर विचार प्रकट करते हुए कहा कि संयुक्त राष्ट्र मानव जाति के लिखित इतिहास की एक सर्वोच्च व पवित्र संस्था है। इसने शांति, मैत्री और प्रजातांत्रिक सम्प्रभुता मूल्यों को सुदृढ़ किया है। संस्थान के संस्थापक महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि स्वार्थ और अविश्वास के साथ अंतरराष्ट्रीय व्यवहार शांति की स्थापना नहीं कर सकता। जरूरत है मानव मात्र की विजय के लिए सत्य का आश्रय ग्रहण करने की। वाजपेयी ने कहा कि भारतीय विदेश नीति सत्य, अहिंसा, शांति और विश्व बंधुत्व के सिद्धांतों पर आधारित है जो हमारी सनातन संस्कृति की अभिव्यक्ति है। एडवोकेट प्रकाश पानेरी ने संयुक्त राष्ट्र में 'वीटो पावर' पर पांच महाशक्तियों के एकाधिकार को दोषपूर्ण बताया। उनका कहना था कि इसमें नवोदित राष्ट्रों के साथ विश्व जनमत का प्रतिनिधित्व नहीं मिलता। गोष्ठी में एडवोकेट त्रिभुवन नाथ पुरोहित, पूर्व अधिशासी अभियन्ता भूषण देवपुरा, डॉ. सिमलोट, मंजूर अहमद, सामाजिक कार्यकर्ता शांतिलाल भंडारी, डॉ. कैलाश अग्रवाल ने भी विचार व्यक्त किए। आभार ज्ञापन गिरीश उपाध्याय ने किया।



शांतिपीठ की ओर से विचार गोष्ठी में शामिल अतिथि।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर . गुरुवार
25.10.2012

शांतिपीठ की विचार गोष्ठी में मंथन

उदयपुर. शांतिपीठ भारत संस्था की ओर से बुधवार को संस्थान सभागार में 'संयुक्त राष्ट्र' विषय पर विचार गोष्ठी का आयोजन हुआ। इतिहासविद् डॉ. जी.एन. मेनारिया ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र ने विश्व में शान्ति के लिए प्रयास किए। इस अवसर पर मौजूद अनुसूचित जाति आयोग के उपाध्यक्ष दिनेश तरवाड़ी ने विश्व में दलित वर्ग को जागरूक करने के लिए विशेष प्रयास करने पर जोर दिया। महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि अविश्वास और स्वार्थ को त्यागे बिना विश्व शांति की उम्मीद नहीं की जा सकती। इस मौके पर शिक्षाविद् कैलाश बिहारी वाजपेयी ने भी विचार व्यक्त किए।

जय राजस्थान
उदयपुर, मंगलवार
6 अगस्त 2013

अहिंसामूलक समाज की जरूरत





उदयपुर, 05 अगस्त । अस्तित्व के आसन्न संकट को झेल रही मानव जाति को विकास की उच्छृंखल अवधारणाओं से निजात पाते हुए और विरासत और विकास के विवेकशील समन्वय को अपनाते हुए अहिंसामूलक समाज निर्माण की वैज्ञानिक अवधारणा को आत्मसात करना होगा। ये विचार आज हिरोशिमा विभीषिका की 68वीं वार्षिकी की पूर्व संध्या पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में संस्थान परिसर में आयोजित शान्तिसभा को सम्बोधन में वक्ताओं ने रखे।

सोमवार प्रात: 10 बजे शान्तिपीठ परिसर में नगर के कई सरकारी व गैर सरकारी स्कूलों के छात्र-छात्राओं के साथ ही अलावा सभा में शिक्षक, सामाजिक कार्यकर्ता एवं नगर के जागरूक लोग शान्ति मार्च करते हुए सभा में सम्मिलित हुए। सभा में बोलते हुए गाँधीवादी चिन्तक रियाज तहसीन ने टोल्सटोय का हवाला देते हुए कहा कि सुरक्षा और अस्तित्व नहीं बल्कि जन विरोध एवं सुरक्षा के रास्ते चलना होगा। उन्होंने कहा कि आज आवश्यकता है विज्ञान एवं जनतंत्र के मेल से नये समाज का निर्माण किया जाय। प्रो. अरूण चर्तुवेदी ने कहा कि अणुशक्ति ने अस्तित्व पर प्रश्न खड़ा किया है। कई देश आज अणुशक्ति का विस्तार स्वास्थ्य के लिए, ऊर्जा के लिए, शान्ति के लिए कर रहे हैं, किन्तु इसके साथ ही अस्तित्व का संकट निरन्तर गम्भीर होता जा रहा है। आज विश्व एकता और सहअस्तित्व के विस्तार की महती आवश्यकता है । इस अवसर पर शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने हिरोशिमा, नागासाकी दुखान्तिका से उत्पन्न हालात एवं अणु ऊर्जा के गम्भीर खतरों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज विज्ञान और विरासत में समन्वय की आवश्यकता है। उन्होंने अणु ऊर्जा के विकल्पों पर अधिक शोध की आवश्यकता पर बल देते हुए संवेदनशील समाज निर्माण की आवश्यकता प्रतिपादित की। सभा की अध्यक्षता करते हुए सिंचाई विभाग के पूर्व मुख्य अभियन्ता रोशन देपुरा ने प्रतिभागियों से समता, एकता, न्याय व प्राणी मात्र के प्रति कल्याण का भाव रखने के साथ आणविक अस्त्रों एवं आतंक मुक्ति हेतु प्रतिबद्ध रहने का संकल्प कराया। सभा में मार्शल आर्ट विशेषज्ञ आर.के. मेनारिया, सेन्ट टेरेसा की छात्रा सपना चौधरी ने भी विचार व्यक्त किये। प्रारम्भ में सेन्ट्रल एकेडमी के छात्रों ने संगीत अध्यापक रफीक अहमद एवं कुसुम शाह के निर्देशन में शान्तिगीत प्रस्तुत किया। अन्त में दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजली अर्पित की गई तथा राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। नेहा भूतड़ा ने सभा का संचालन किया।

उदयपुर एक्सप्रेस उदयपुर, मंगलवार 6 अगस्त, 2013

अहिंसामूलक समाज की अवधारणा को आत्मसात करने की जरूरत

उदयपुर, 5 अगस्त (कासं)। अस्तित्व के आसन्न संकट को झेल रही मानव जाति को विकास की उच्छृंखल अवधारणाओं से निजात पाते हुए और विरासत और विकास के विवेकशील समन्वय को अपनाते हुए अहिंसामूलक समाज निर्माण की वैज्ञानिक अवधारणा को आत्मसात करना होगा। ये विचार आज हिरोशिमा विभीषिका की 68वीं वार्षिकी की पूर्व संध्या पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में संस्थान परिसर में आयोजित शान्तिसभा को सम्बोधन में वक्ताओं ने रखे।

सोमवार प्रात: 10 बजे शान्तिपीठ परिसर में नगर के कई सरकारी व गैर सरकारी स्कूलों के छात्र-छात्राओं के साथ ही अलावा सभा में शिक्षक, सामाजिक कार्यकर्ता एवं नगर के जागरूक लोग शान्ति मार्च करते हुए सभा में सम्मिलित हुए। सभा में बोलते हुए गाँधीवादी चिन्तक रियाज तहसीन ने टोल्सटोय का हवाला देते हुए कहा कि सुरक्षा और अस्तित्व नहीं बल्कि जन विरोध एवं सुरक्षा के रास्ते चलना होगा। प्रो. अरूण चर्तुवेदी ने कहा कि कई देश आज अणुशक्ति का विस्तार स्वास्थ्य के लिए, ऊर्जा के लिए, शान्ति के लिए कर रहे हैं, किन्तु इसके साथ ही अस्तित्व का संकट निरन्तर गम्भीर होता जा रहा है।

इस अवसर पर शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने हिरोशिमा, नागासाकी दुखान्तिका से उत्पन्न हालात एवं अणु ऊर्जा के गम्भीर खतरों पर प्रकाश डाला। सभा की अध्यक्षता सिंचाई विभाग के पूर्व मुख्य अभियन्ता रोशन देपुरा ने की। सभा में मार्शल आर्ट विशेषज्ञ आर.के. मेनारिया, सेन्ट टेरेसा की छात्रा सपना चौधरी ने भी विचार व्यक्त किये। प्रारम्भ में सेन्ट्रल एकेडमी के छात्रों ने संगीत अध्यापक रफीक अहमद एवं कुसुम शाह के निर्देशन में शान्तिगीत प्रस्तुत किया। अन्त में दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजली अर्पित की गई तथा राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। नेहा भूतड़ा ने सभा का संचालन किया।

प्रातःकाल
उदयपुर, मंगलवार 6 अगस्त, 2013

अहिंसामूलक समाज निर्माण की अवधारणा को करना होगा आत्मसात

उदयपुर। अस्तित्व के आसन्न संकट को झेल रही मानव जाति को विकास की उच्छंखल अवधारणओं से निजात पाना होगा और विरासत और विकास के विवेकशील समन्वय को अपनाते हुए अहिंसामूलक समाज निर्माण की वैज्ञानिक अवधारणा को आत्मसात करना होगा।

यह विचार हिराशिमा विभिषिका की 68वीं वार्षिकी की पूर्व संध्या पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में संस्थान परिसर में आयोजित शान्तिसभा को सम्बोधित करते हुए वक्ताओं ने व्यक्त किये। प्रात: 10 बजे शान्तिपीठ परिसर में नगर के कई सरकारी व गैर सरकारी स्कूलो के छात्र-छात्राएँ अपने विद्यालयों से शान्ति मार्च करते हुए सभा में सम्मिलित हुए।

सभा में बोलते हुए गान्धीवादी चिन्तक रियाज तहसीन ने कहा कि आज आवश्यकता है विज्ञान एवं जनतंत्र के मेल से नये समाज का निर्माण किया जाय। राजनीति शास्त्र के प्रो. अरूण चर्तुवैदी ने कहा कि आज विनाश की यादों से सबक लेने का दिन है। शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने हिरोशिमा, नागासाकी दुखान्तिका से उत्पन्न हालात एवं अणु ऊर्जा के गम्भीर खतरों पर प्रकाश डाला। सभा की अध्यक्षता करते हुए सिंचाई विभाग के पूर्व मुख्य अभियन्ता रोशन देपुरा ने प्रतिभागियों से समता, एकता, न्याय व प्राणी मात्र के प्रति कल्याण का भाव रखने के साथ आणविक अस्त्रो एवं आतंक मुक्ति हेतु प्रतिबद्ध रहने का संकल्प कराया। सभा में मार्शल आर्ट विशेषज्ञ आर.के. मेनारिया, सेन्ट टेरेसा की छात्रा सपना चैधरी ने भी विचार व्यक्त किये। प्रारम्भ में सेन्ट्रल ऐकेडमी के छात्रों ने संगीत अध्यापक रफीक अहमद एवं कुसुम शाह के निर्देशन में शान्तिगीत प्रस्तुत किया। इस अवसर पर एम.डी.एस. स्कूल के छात्रों ने पृथ्वी का मॉडल एवं सेन्ट टेरेसा, रेजीडेन्सी तथा हर्षा पुरोहित ने पोस्टर, चार्ट व बेनर प्रस्तुत किये जिन्हे नागासाकी दिवस 9 अगस्त को सूचना केन्द्र में प्रदर्शित किया जायेगा। अन्त में दो मिनट का मोन रखकर दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजली अर्पित की गई। शान्तिपीठ की नेहा भुतड़ा ने सभा का संचालन किया।



उदयपुर। कार्यक्रम में विचार रखती छात्रा।

दैनिक नवज्योति
अजमेर ■ 6 अगस्त, 2013 ■ मंगलवार

अहिंसामूलक समाज की अवधारणा श्रेष्ठ

उदयपुर, 5 अगस्त। अस्तित्व के आसन्न संकट को झेल रही मानव जाति को विकास की उच्छृंखल अवधारणाओं से निजात पाते हुए और विरासत और विकास के विवेकशील समन्वय को अपनाते हुए अहिंसामूलक समाज निर्माण की वैज्ञानिक अवधारणा को आत्मसात करना होगा। ये विचार आज हिरोशिमा विभीषिका की 68वीं वार्षिकी की पूर्व संध्या पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में संस्थान परिसर में आयोजित शान्तिसभा को सम्बोधन में वक्ताओं ने रखे।

सोमवार प्रातः 10 बजे शान्तिपीठ परिसर में नगर के कई सरकारी व गैर सरकारी स्कूलों के छात्र-छात्राओं के साथ ही अलावा सभा में शिक्षक, सामाजिक कार्यकर्ता एवं नगर के जागरूक लोग शान्ति मार्च करते हुए सभा में सम्मिलित हुए। सभा में बोलते हुए गाँधीवादी चिन्तक रियाज तहसीन ने टोल्सटोय का हवाला देते हुए कहा कि सुरक्षा और अस्तित्व नहीं बल्कि जन विरोध एवं सुरक्षा के रास्ते चलना होगा। उन्होंने कहा कि आज आवश्यकता है विज्ञान एवं जनतंत्र के मेल से नये समाज का निर्माण किया जाय। प्रो. अरूण चर्तुवेदी ने कहा कि अणुशक्ति ने अस्तित्व पर प्रश्न खड़ा किया है। कई देश आज अणुशक्ति का विस्तार स्वास्थ्य के लिए, ऊ र्जा के लिए, शान्ति के लिए कर रहे हैं, किन्तु इसके साथ ही अस्तित्व का संकट निरन्तर गम्भीर होता जा रहा है। आज विश्व एकता और सहअस्तित्व के विस्तार की महती आवश्यकता है।

इस अवसर पर शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने हिरोशिमा, नागासाकी दुखान्तिका से उत्पन्न हालात एवं अणु ऊ र्जा के गम्भीर खतरों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आज विज्ञान और विरासत में समन्वय की आवश्यकता है। उन्होंने अंणु ऊ र्जा के विकल्पों पर अधिक शोध की आवश्यकता पर बल देते हुए संवेदनशील समाज निर्माण की आवश्यकता प्रतिपादित की। सभा की अध्यक्षता करते हुए सिंचाई विभाग के पूर्व मुख्य अभियन्ता रोशन देपुरा ने प्रतिभागियों से समता, एकता, न्याय व प्राणी मात्र के प्रति कल्याण का भाव रखने के साथ आणविक अस्त्रों एवं आतंक मुक्ति हेतु प्रतिबद्ध रहने का संकल्प कराया। सभा में मार्शल आर्ट विशेषज्ञ आर.के. मेनारिया, सेन्ट टेरेसा की छात्रा सपना चौधरी ने भी विचार व्यक्त किये। प्रारम्भ में सेन्ट्रल एकेडमी के छात्रों ने संगीत अध्यापक रफीक अहमद एवं कुसुम शाह के निर्देशन में शान्तिगीत प्रस्तुत किया। अन्त में दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजली अर्पित की गई तथा राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। नेहा भूतड़ा ने सभा का संचालन किया।

दैनिक नवज्योति ■ अजमेर, बुधवार, 8 अगस्त, 2012

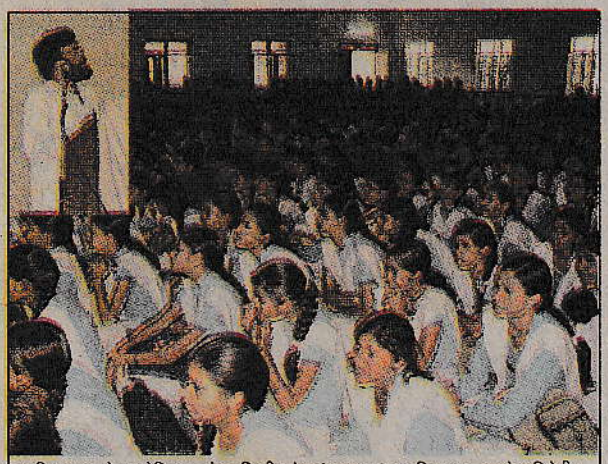
उदयपुर

हर खतरों की गम्भीरता से सतर्क रहें

हिरोशिमा दु:खान्तिका की 67वीं वार्षिकी

न्यूज सर्विस

उदयपुर, 7 अगस्त। आज मानव समाज को ऊर्जा संकट, पर्यावरण विघटन, आर्थिक असंतुलन और आतंकवाद जैसी समस्याओं ने घेर लिया है। इन संकटों से जूझते हुए भी आणविक अस्त्र भण्डारण और इसके व्यापार के खतरों की गम्भीरता को नकारा नहीं जा सकता। दुनिया में जब तक अस्त्र भण्डारण रहेगा, हिरोशिमा इसके खतरों से आगाह करता रहेगा। ये विचार हिरोशिमा दु:खान्तिका की 67वीं वार्षिकी के अवसर पर शान्तिपीठ संस्थान के तत्वावधान में रेजीडेन्सी विद्यालय के सभागार में आयोजित शान्ति सभा में बोलते हुए कई वक्ताओं ने व्यक्त किये। नगर के सरकारी और गैर सरकारी विद्यालयों के छात्र-छात्राएं शिक्षकों के साथ पर्यावरण, आणविक निःशस्त्रीकरण, आतंक मुक्ति एवं हिरोशिमा त्रासदी से सबक संबंधित पोस्टर, चार्ट, बैनर आदि लेकर सभा स्थल पहुंचे। सभा में विद्यार्थी वर्ग के साथ समाज के विभिन्न क्षेत्रों से जुड़े नागरिक सम्मिलित हुए।



शान्ति सभा को सम्बोधित करते शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी। फोटो : नवज्योति

सभा की अध्यक्षता करते हुए उदयपुर नगर परिषद् की सभापति रजनी डांगी ने कहा कि अपने व्यवहार में हम पारस्परिक विश्वास का वातावरण निर्मित करें तो छोटी से छोटी समस्या से लेकर बड़ी समस्याओं से भी निजात पा सकते हैं।

उन्होंने कहा कि नगर का सौन्दर्य तभी बरकरार रह सकता है, जब हम इसे स्वच्छ रखे और हरा-भरा रखे। उन्होंने उपस्थित प्रत्येक प्रतिभागी को कम से कम एक पौधा विकसित कर पेड़ बनाने का आह्वान किया।

शान्ति के लिए क्रान्ति जरूरी

शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि शान्ति के लिये क्रान्ति की आवश्यकता है, जो आत्म जागरण से शुरू होती है, जिसे बुद्ध, महावीर और गांधी ने करके दिखाया। उन्होंने कहा भारत भूमि में जन्म लेने वाला विश्वशान्ति और बन्धुत्व की संवेदना के साथ जन्म लेता है। वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी, आबकारी आयुक्त सुमति लाल बोहरा ने कहा कि व्यक्ति अपने स्तर पर समाज को क्या योगदान दे सके, वह इस भाव से अभिप्रेरित होकर आचरण करे। रेजीडेन्सी विद्यालय की प्राचार्या डॉ. मधु शर्मा ने जीवन में अनुशासन की आवश्यकता प्रतिपादित की।

सेंट पॉल के छात्र चिरायु चपलोत, महिला मण्डल की वन्दना मेघवाल, रेजीडेन्सी स्कूल की क्वीन भटनागर ने भी विचार व्यक्त किये। प्रिंसी भटनागर ने स्वरचित कविता सुनाई। सेंट पॉल के छात्रों ने गीत प्रस्तुत किया। प्रारम्भ में सेन्ट्रल एकेडमी की टीम में रफीक अहमद एवं कुसुम शाह के निर्देशन में शान्ति गीत प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर सभी ने खड़े होकर न्याय, एकता, समता, आतंक मुक्ति, आणविक निःशस्त्रीकरण एवं विश्वबन्धुत्व के लिए एक स्वर में संकल्प व्यक्त किया। विभिषिका में मारे गये निर्दोष लोगों के लिए दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजली अर्पित की गई। वरिष्ठ अधिवक्ता प्रकाश पानेरी, पण्डित भंवर व्यास, चन्द्र गुप्त सिंह चौहान, विजय विपलवी, डॉ. मोहम्मद ईशाक सहित कई प्रबुद्धजन उपस्थित थे। सभा का संचालन डॉ. भूपेन्द्र शर्मा ने किया। अंत में राष्ट्रगान के साथ सभा का विसर्जन हुआ।

दैनिक भास्कर

उदयपुर • गुरुवार, 9 अगस्त, 2012

अस्त्र भंडारण के खतरों से आगाह करता रहेगा हिरोशिमा : त्रिवेदी

उदयपुर | शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि आज मानव समाज को ऊर्जा संकट, पर्यावरण विघटन, आर्थिक असंतुलन और आतंकवाद जैसी समस्याओं ने घेर रखा है। दुनिया में जब तक अस्त्र भंडारण रहेगा, हिरोशिमा इसके खतरों से आगाह करता रहेगा। आवश्यकता है समाज के नैतिक बल के उन्नयन की जिसका कोई भी विकल्प नहीं होता।

हिरोशिमा दु:खांतिका की 67वीं वार्षिकी पर शांति पीठ की ओर से रेजीडेंसी स्कूल में शांति सभा हुई। इसमें सरकारी और गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थी पर्यावरण, आणविक अशस्त्रीकरण, आतंक मुक्ति एवं हिरोशिमा त्रासदी से सबक संबंधित पोस्टर, चार्ट, बैनर लेकर पहुंचे। अध्यक्षता करते हुए सभापति रजनी डांगी ने कहा कि अपने व्यवहार में हम पारस्परिक विश्वास का वातावरण निर्मित करें। इससे छोटी से छोटी समस्या से लेकर बड़ी समस्याओं से भी निजात पा सकते हैं। आबकारी विभाग के अतिरिक्त आयुक्त सुमति लाल बोहरा व प्राचार्या डॉ. मधु शर्मा ने भी विचार रखे। इस अवसर पर सभी ने मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की।



रेजीडेंसी स्कूल में सभा को संबोधित करते अतिथि।

बच्चों ने भी कही अपनी बात

सेंट पॉल के छात्र चिरायु चपलोत, महिला मण्डल की वंदना मेघवाल, रेजीडेन्सी स्कूल की क्वीन भटनागर ने भी विचार व्यक्त किए। प्रिंसी भटनागर ने स्वरचित कविता सुनाई। सेंट पॉल के छात्रों ने गीत प्रस्तुत किया। प्रारंभ में सेन्ट्रल एकेडमी की टीम ने रफीक अहमद एवं कुसुम शाह के निर्देशन में शांति गीत प्रस्तुत किया।

प्रातःकाल
भाद्रपद कृष्णा 5 मंगलवार 7 अगस्त 2012

नैतिक बल के उन्नयन की आवश्यकता

उदयपुर। आज मानव समाज को उर्जा संकट, पर्यावरण विघटन, आर्थिक असंतुलन और आतंकवाद जैसी समस्याओं ने घेर लिया है। इन संकटों से जुझते हुए भी आणविक अस्त्र भण्डारण और इसके व्यापार के खतरों की गंभीरता को नकारा नहीं जा सकता। दुनिया में जब तक अस्त्र भण्डारण रहेगा, हिरोशिमा इसके खतरों से आगाह करता रहेगा। आवश्यकता है समाज के नैतिक बल के उन्नयन की जिसका कोई भी विकल्प नहीं होता।

ये विचार सोमवार को हिरोशिमा दु:खान्तिका की 67वीं वार्षिकी के अवसर पर शांतिपीठ संस्थान के तत्वावधान में रेजीडेंसी विद्यालय के सभागार में आयोजित शांति सभा में बोलते हुए कई वक्ताओं ने व्यक्त किये। नगर के सरकारी और गैर सरकारी विद्यालयों के छात्र-छात्राएं शिक्षकों के साथ पर्यावरण, आणविक नि:शस्त्रीकरण, आतंक मुक्ति एवं हिरोशिमा त्रासदी से सबक संबंधित पोस्टर, चार्ट, बैनर आदि लेकर सभा स्थल पहुंचे।

सभा की अध्यक्षता करते हुए उदयपुर नगर परिषद की सभापति रजनी डांगी ने कहा कि अपने व्यवहार में हम पारस्परिक विश्वास का वातावरण निर्मित करें तो छोटी से छोटी समस्या से लेकर बड़ी समस्याओं से भी निजात पा सकते है। शांतिपीठ के संस्थापक महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी ने स्मृति दिवस की प्रासंगिकता पर वक्तव्य देते हुए कहा कि शांति के लिये क्रांति की आवश्यकता है, जो आत्म जागरण से शुरू होती है, जिसे बुद्ध, महावीर और गांधी ने करके दिखाया।



उदयपुर। हिरोशिमा दिवस पर आतंक मुक्ति एवं विश्व बंधुत्व के लिए संकल्प लेते हुए।

वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी, आबकारी आयुक्त सुमति लाल बोहरा ने कहा कि व्यक्ति अपने स्तर पर समाज को क्या योगदान दे सके, वह इस भाव से अभिप्रेरित होकर आचरण करे। रेजीडेन्सी विद्यालय की प्राचार्या डा. मधु शर्मा ने जीवन में अनुशासन की आवश्यकता प्रतिपादित की। सेंट पॉल के छात्र चिरायु चपलोत, महिला मण्डल की वन्दना मेघवाल, रेजीडेन्सी स्कूल की क्वीन भटनागर ने भी विचार व्यक्त किये। प्रिंसी भटनागर ने स्वरचित कविता सुनाई। सेंट पॉल के छात्रों ने गीत प्रस्तुत किया। प्रारंभ में सेन्ट्रल एकेडमी की टीम में रफीक अहमद एवं कुसुम शाह के निर्देशन में शांति गीत प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर सभी ने खड़े होकर न्याय, एकता, समता, आतंक मुक्ति, आणविक नि:शस्त्रीकरण एवं विश्वबन्धुत्व के लिए एक स्वर में संकल्प व्यक्त किया। वरिष्ठ अधिवक्ता प्रकाश पानेरी, पण्डित भंवर व्यास, चन्द्र गुप्त सिंह चौहान, विजय विपलवी, डा. मोहम्मद ईशाक सहित कई प्रबुद्धजन उपस्थित थे। सभा संचालन डा. भूपेन्द्र शर्मा ने किया।

नगर में खास

6-9-12

हिरोशिमा डे

कहां » रेजीडेंसी सीनियर सैकंडरी स्कूल

कितने बजे » सुबह 9.30 बजे

क्या होगा » नि:शस्त्रीकरण, आतंक मुक्ति और विश्व बंधुत्व जैसे उद्देश्यों को लेकर शांति पीठ की शांति सभा।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर . मंगलवार
07.08.2012

'आज समाज को समस्याओं ने घेर लिया'



उदयपुर. आज भी समाज पर ऊर्जा, पर्यावरण विघटन, आर्थिक व आतंकवाद का संकट घेर रखा है। इन संकटों को देखते हुए आणविक अस्त्र के भण्डार व व्यापार को भी नकारा नहीं जा सकता। यह विचार शांतिपीठ भास्त के तत्वावधान में हिरोशिमा-नागासाकी त्रासदी के 66 वर्ष बीतने पर सोमवार को रेजीडेंसी विद्यालय सभागार में आयोजित श्रद्धांजलि कार्यक्रम वक्ताओं ने व्यक्त किए। श्रद्धांजलि कार्यक्रम में शहरवासियों, छात्र-छात्राओं व शिक्षकों ने शिरकत की। छात्र ने शिक्षकों के नेतृत्व में पर्यावरण, आणविक निश?ीकरण, आतंक मुक्ति, त्रासदी से संबन्धित पोस्टर व चार्ट, बैनर बनाकर त्रासदी में जान गवा चुके लोगों की आत्मा क शांति के लिए कामना की। इस अवस मुख्य अतिथि सभापति रजनी डांगी विचार व्यक्त किए।

समाचार जगत
samachar jagat
जयपुर 25 अक्टूबर , 2011

निहित स्वार्थों के समूह मात्र रहकर वांछित लक्ष्य अर्जित नहीं हो सकते : प्रो. जोशी

उदयपुर, निसं। आज विश्व समाज को ऐसी बुनियादी संस्था की आवश्यकता है जिसमें सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समरसता का पारदर्शी विश्लेषण हो तथा ज्ञान-विज्ञान के समन्वय आधारित विकास के नूतन आयाम निर्मित किये जाने की जीवटता हो। साथ ही जिसमें कुटनीतिक व्यवहार से ऊपर उठ कर संवेदनशील एवं मानव अस्मीता परक उदात्त नेतृत्व दे सकने की क्षमता हो । संयुक्त राष्ट्र संघ का लोक तंत्रात्मक पुनर्गठित रूप इस परिकल्पना को मूर्त रूप देने में सार्थक प्रयास हो सकता हैं और विश्व सरकार कि भूमिका प्रस्तुत कर सकता हैं । उक्त विचार आज सयुंक्त राष्ट्र के स्थापना दिवस के अवसर पर शान्तिपीठ द्वारा आयोजित संगोष्ठी में बोलते हुए कई वक्ताओं ने व्यक्त किये । गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुये प्रो. एसन.एन. जोशी ने कहा कि महा शक्तियों के बदले समीकरण में विश्व में संतुलन बनाए रख पाने में संयुक्त राष्ट्र की महती भूमिका है किन्तु युद्धों को रोक पाने अथवा आणविक परिक्षणों पर नियंत्रण रखने जैसे मुद्दों पर यह कामयाब नही रहा हैं । उन्होने आर्थिक विकास की संस्थाओं के दिवालिया होने पर चिन्ता व्यक्त करते हुये कहा कि निहित स्वार्थो के समुह मात्र रहकर वांछित लक्ष्य अर्जित नहीं किये जा सकते । प्रो. अरूण चतुर्वेदी ने कहा कि वर्तमान में शान्ति के अर्थ और व्याख्या बदल चुकी है और इसी के अनुसार संयुक्त राष्ट्र को बदलना होगा। उन्होंने विश्व की बदली आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये विष्व संगठन के मूल ढ़ाचे में परिवर्तन की आवष्यकता प्रतिपादित की। इस अवसर पर चिन्तक मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि आर्थिक रूप से कमजोर अमरिका के घटते हुये योगदान से अन्य देशों की भूमिका में बढोतरी ही होगी । उन्होने उपस्थित परिस्थितियों में संयुक्त राष्ट्र के नवीनीकरण की आवश्यकता को रेखांकित किया। शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि भारत कि मनिषा में विश्व कल्याण का संकल्प है।

दैनिक भास्कर
उदयपुर • मंगलवार.
25 अक्टूबर, 2011

विश्व समाज को समरसता की जरूरत

उदयपुर | संयुक्त राष्ट्र के स्थापना दिवस पर सोमवार को शांति पीठ में संगोष्ठी हुई। इस मौके पर वक्ताओं ने कहा कि आज विश्व समाज को ऐसी बुनियादी संस्था की आवश्यकता है, जिसमें सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समरसता का पारदर्शी विश्लेषण जरूरी हो गया है।

अध्यक्षता करते हुए प्रो. एस.एन. जोशी, प्रो. अरुण चतुर्वेदी, चिंतक मोहन सिंह कोठारी आदि ने विचार रखे। यह जानकारी राजीव लोढ़ा ने दी।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, मंगलवार
25.10.2011

'युद्ध रोक पाने में संयुक्त राष्ट्र कामयाब नहीं'

उदयपुर

udaipur@patrika.co

महाशक्तियों के बदले समीकरण विश्व में संतुलन बनाए रखने संयुक्त राष्ट्र की महत्ती भूमिका र किन्तु युद्धों को रोक पाने आणविक परीक्षणों पर नियंत्रण रख में यह कामयाब नहीं रहा।

उक्त विचार प्रो. एस.एन. जोश ने सोमवार को संयुक्त राष्ट्र स्थापना दिवस पर शांतिपीठ की अ से आयोजित संगोष्ठी में व्यक्त कि उन्होंने आर्थिक विकास की संस्था के दिवालिया होने पर चिंता व्य करते हुए कहा कि निहित स्वार्थो समूह मात्र बनकर वांछित ल अर्जित नहीं किए जा सकते। अरुण चतुर्वेदी ने कहा कि वर्तम में शान्ति के अर्थ और इसकी व्याख बदल चुकी है। इसके अनुस संयुक्त राष्ट्र को बदलना हो चिंतक मोहनसिंह कोठारी ने क कि आर्थिक रूप कमजोर अमरीका के घटते योगदान से अन्य देशों की भूमिका वृद्धि होगी।

शांतिपीठ के संस्थाप महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी कहा कि भारत के पास अहिंसा अ सत्य आधारित स्वतंत्रता का इतिह है और इसीलिए संयुक्त राष्ट्र को न रूप देने में भारत को पह करनी चाहिए।

दैनिक नवज्योति

अजमेर, रविवार, 7 अगस्त, 2011

अपनाना होगा आत्मवत सर्वभूतेषु का सिद्धान्त

मनाया हिरोशिमा स्मृति दिवस

न्यूज सर्विस

उदयपुर, 6 अगस्त। जब तक विश्व में आणविक अस्त्रों का भंडारण रहेगा हिरोशिमा को भुलाया नहीं जा सकेगा। पिछले 66 वर्षों से आणविक अस्त्रों का भंडारण जिस तेजी से किया गया है, यह गुणवत्ता और संख्या दोनों में हिरोशिमा पर गिराए गए परमाणु बम से कई लाख गुणा अधिक है जिससे दुनिया का कई बार खात्मा किया जा सकता है। इसके साथ ही नई समस्या पृथ्वी और पर्यावरण संरक्षण की उतनी ही गम्भीर है। हमें समय रहते आत्मवत् सर्वभूतेषु के सिद्धान्त को अमल में लाना होगा तभी विश्व शान्ति को सुनिश्चित किया जा सकता है। यह विचार आज हिरोशिमा समृति दिवस के अवसर पर शान्तिपीठ द्वारा आयोजित शान्ति सभा में बोलते हुए कई वक्ताओं ने व्यक्त किए। प्रमुख वक्ता के रूप में बोलते हुए प्रशासनिक अधिकारी सुमतिलाल बोहरा ने उपस्थित युवा प्रतिभागियों को दैनिक जीवन में नैतिक मूल्यों के विविध आयामों पर ध्यान आकर्षित करते हुए कहा कि दुनिया नहीं बदलती खुद को बदलना पड़ता है। अध्यक्षता करते हुए शिक्षाविद् कैलाश बिहारी वाजपेयी ने कहा कि खुदा का हुक्म न मानने से समाज में अशान्ति पनपती है। उन्होंने कहा कि सब मिल कर कुछ ऐसा करें कि मुहब्बत का दरिया बहना शुरू करे। शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि पिछली सदी में हिरोशिमा ने मनुष्य जाति को सावचेत किया था और वर्तमान सदी में फुकुशिमा ने। उन्होंने कहा कि दुनिया को एक होकर आणविक ऊर्जा के भयानक खतरों पर पुनर्विचार करना चाहिए और वैज्ञानिकों को वैकल्पिक ऊर्जा पैदा करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। त्रिवेदी ने कहा कि अविश्वास, लोभ और अहंकार के दुष्परिणाम है हिंसा और आतंक और इससे मुक्ति का रास्ता आत्म जागरण में निहित है जिसे गांधी ने कर दिखाया।

इस अवसर पर सेंटपॉल स्कूल के छात्र पार्थ खमेसरा, झील हितैषी समिति के हाजी सरार मोहम्मद ने भी विचार व्यक्त किए। सेन्ट्रल एकेडमी के छात्रों ने रफीक अहमद एवं कुसुम शाह के निर्देशन में शान्ति गीत प्रस्तुत किया। सभा का संचालन गिरीश उपाध्याय ने किया, जबकि आभार एडवोकेट धर्मराज ने ज्ञापित किया। इसके पूर्व नगर के कई सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के छात्र-छात्राएं शान्ति मार्च करते हुए शान्तिपीठ में पहुंचकर सभा में सम्मिलित हुए छात्रों ने अपने हाथों में आतंक मुक्ति, आणविक अस्त्रों का खात्मा, पॉलीथिन का विरोध तथा आणविक ऊर्जा की सुरक्षा पर दुबारा विचार किए जाने की अपील के साथ तख्ती, बैनर, चार्ट आदि ले रखे थे। सेंटपॉल, सेंट टेरेसा, सेन्ट्रल एकेडमी, राजकीय विद्यालय कृष्णपुरा, गुरुनानक पब्लिक स्कूल, जयदीप माध्यमिक विद्यालय भुवाणा आदि विद्यालयों के सैंकड़ों छात्र, शिक्षक एवं प्रधानाध्यापकों के साथ कई सामाजिक कार्यकर्ता भी सम्मिलित हुए। सभा में सभी ने खड़े होकर न्याय, स्वतंत्रता एवं एकता का संकल्प व्यक्त किया। निर्दोष लोगों की दिवंगत आत्माओं को दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दी गई। अन्त में राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।



उदयपुर। शान्तिपीठ द्वारा आयोजित हिरोशिमा स्मृति दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में मंचासीन अतिथि एवं स्कूली बच्चे। फोटो : नवज्योति

दैनिक भास्कर

उदयपुर, सोमवार, 8 अगस्त 2011

परमाणु बमों से बढ़ता जा रहा दुनिया पर खतरा

उदयपुर | जब तक विश्व में आणविक अस्त्रों का भण्डारण रहेगा हिरोशिमा को भुलाया नहीं जा सकेगा। पिछले 66 वर्षों में हुआ आणविक अस्त्रों का भण्डारण गुणवत्ता और संख्या दोनों में हीरोशिमा पर गिराए गए परमाणु बम से कई लाख गुणा अधिक है, जिससे दुनिया का कई बार खात्मा किया जा सकता है। ये विचार हिरोशिमा स्मृति दिवस के अवसर पर शान्तिपीठ द्वारा आयोजित शांति सभा में कई वक्ताओं ने व्यक्त किए। प्रमुख वक्ता प्रशासनिक अधिकारी सुमतिलाल बोहरा ने कहा कि दुनिया नहीं बदलती खुद को बदलना पड़ता है। अध्यक्षता करते हुए शिक्षाविद् कैलाश विहारी वाजपेयी ने कहा कि खुदा का हुक्म न मानने से समाज में अशांति पनपती है। शान्तिपीठ के संस्थापक महा सचिव अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि पिछली सदी में हिरोशिमा ने मनुष्य जाति को सावचेत किया था और वर्तमान सदी में फुकुशिमा ने। इस अवसर पर सेंटपॉल स्कूल के छात्र पार्थ खमेसरा, झील हितैषी समिति के हाजी सरदार मोहम्मद ने भी विचार व्यक्त किए। सेंट्रल एकेडमी के छात्रों ने रफीक अहमद एवं कुसूम शाह के निर्देशन में शान्ति गीत प्रस्तुत किया। संचालन गिरीश उपाध्याय ने किया।

राजस्थान पत्रिका

उदयपुर, रविवार, 7 अगस्त 2011

हिरोशिमा स्मृति दिवस पर शांतिसभा

उदयपुर, रविवार, 7 अगस्त 2011

उदयपुर। हिरोशिमा स्मृति दिवस पर शान्तिपीठ की ओर से शांतिसभा आयोजित हुई। प्रमुख वक्ता प्रशासनिक अधिकारी सुमतिलाल बोहरा ने युवाओं को दैनिक जीवन में नैतिक मूल्यो को अपनाने का आहवान किया। आर्कषित करते हुये कहा कि दुनिया नही बदलती खुद को बदलना पड़ता हैं ।

अध्यक्षता शिक्षाविद कैलाश बिहारी वाजपेयी ने की। शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी, सेंटपॉल स्कूल के छात्र पार्थ खमेसरा, झील हितैषी समिति के हाजी सरदार मोहम्मद ने विचार व्यक्त किये ।

सेन्ट्रल एकेडमी के छात्रो ने शान्ति गीत प्रस्तुत किया। संचालन गिरीश उपाध्याय ने किया जबकि आभार एडवोकेट धर्मराज ने ज्ञापित किया । इसके पूर्व नगर के कई सरकारी व गैर सरकारी विद्यालायो के छात्र-छात्राए शान्तिमार्च करते हुए शान्तिपीठ पहुंचे।

[हिरोशिमा दिवस पर स्मृति सभा]

हमें खुद को बदलना होगा

उदयपुर. कासं. जब तक विश्व में आणविक अस्त्रों का भण्डारण रहेगा, हिरोशिमा को भुलाया नहीं जा सकेगा। पिछले 66 वर्षों में आणविक अस्त्रों का भण्डारण जिस तेजी से किया गया, वह हिरोशिमा पर गिराए गए परमाणु बम से कई गुना अधिक है। सरदारपुरा स्थित शांतिपीठ संस्था की ओर से शनिवार को हिरोशिमा दिवस पर आयोजित स्मृति सभा में प्रशासनिक अधिकारी सुमतिलाल बोहरा ने यह बात कही। उन्होंने युवाओं को सलाह देते हुए कहा कि दुनिया नहीं बदलती, हमें खुद को बदलना पड़ता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए शिक्षाविद कैलाश बिहारी वाजपेयी ने कहा कि सब मिलकर कुछ ऐसा करें कि शांति और अमन का दरिया बहना शुरू हो जाए। शांतिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि सभी देशों को एक होकर आणविक ऊर्जा के खतरों पर पुनर्विचार करना चाहिए। साथ ही वैज्ञानिकों को वैकल्पिक ऊर्जा पैदा करने के लिए प्रेरित करना चाहिए।

समाचार जगत
जयपुर, 8 अगस्त, 2011

हिरोशिमा स्मृति दिवस मनाया



शान्तिपीठ द्वारा आयोजित हिरोशिमा स्मृति दिवस समारोह में मंचासीन अतिथि एवं स्कूली बच्चे।

उदयपुर, (निसं.)। जब तक विश्व में आणविक अस्त्रों का भंडारण रहेगा हिरोशिमा को भुलाया नहीं जा सकेगा। पिछले 66 वर्षों से आणविक अस्त्रों का भंडारण जिस तेजी से किया गया है, यह गुणवत्ता और संख्या दोनों में हिरोशिमा पर गिराए गए परमाणु बम से कई लाख गुणा अधिक है जिससे दुनिया का कई बार खात्मा किया जा सकता है। इसके साथ ही नई समस्या पृथ्वी और पर्यावरण संरक्षण की उतनी ही गम्भीर है। हमें समय रहते आत्मवत् सर्वभूतेषु के सिद्धान्त को अमल में लाना होगा तभी विश्व शान्ति को सुनिश्चित किया जा सकता है। यह विचार आज हिरोशिमा समृति दिवस के अवसर पर शान्तिपीठ द्वारा आयोजित शान्ति सभा में बोलते हुए कई वक्ताओं ने व्यक्त किए। प्रमुख वक्ता के रूप में बोलते हुए प्रशासनिक अधिकारी सुमतिलाल बोहरा ने उपस्थित युवा प्रतिभागियों को दैनिक जीवन में नैतिक मूल्यों के विविध आयामों पर ध्यान आकर्षित करते हुए कहा कि दुनिया नहीं बदलती खुद को बदलना पड़ता है। अध्यक्षता करते हुए शिक्षाविद् कैलाश बिहारी वाजपेयी ने कहा कि खुदा का हुक्म न मानने से समाज में अशान्ति पनपती है। उन्होंने कहा कि सब मिल कर कुछ ऐसा करें कि मुहब्बत का दरिया बहना शुरू करें। शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि पिछली सदी में हिरोशिमा ने मनुष्य जाति को सावचेत किया था और वर्तमान सदी में फुकुशिमा ने। उन्होंने कहा कि दुनिया को एक होकर आणविक ऊर्जा के भयानक खतरों पर पुनर्विचार करना चाहिए और वैज्ञानिकों को वैकपिक ऊर्जा पैदा करने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। त्रिवेदी ने कहा कि अविश्वास, लोभ और अहंकार के दुष्परिणाम है हिंसा और आतंक और इससे मुक्ति का रास्ता आत्म जागरण में निहित है जिसे गांधी ने कर दिखाया।

दैनिक नवज्योति अजमेर, बुधवार, 16 मार्च, 2011

सुनामी त्रासदी में काल कवलितों को दी श्रद्धांजलि

न्यूज सर्विस

उदयपुर, 15 मार्च। प्राकृतिक विभीषिका से ग्रस्त जापान के साथ हम पूरी सहानुभूति के साथ खड़े हैं। हम तन-मन-धन से पूर्ण सहयोग के लिए उपस्थित हैं। इस सुनामी संकट को हम केवल जापान की ही नहीं विश्व की त्रासदी मानते हैं। हमें विकास के सोच में बदलाव लाना होगा और सकारात्मक रास्ता अख्तियार करना होगा। ये विचार उन बच्चों के हैं जिन्होंने आज शान्तिपीठ संस्थान में पहुंचकर जापान में सुनामी त्रासदी में मारे गए लोगों की दिवंगत आत्माओं के प्रति श्रद्धांजलि देते हुए व्यक्त किए। श्रद्धांजलि सभा में विचार व्यक्त करते हुए शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि 65 वर्ष पूर्व जापान ने परमाणु बम की त्रासदी को झेला और विश्व को आगाह किया था कि आणविक अस्त्रों का जखीरा मात्र विश्व विनाश का सामान है। आज फिर जापान के हालात ने चेताया है कि आणविक भट्टियां भी महाविनाश का कारण बन सकती है। उन्होंने कहा कि हमें ऊर्जा और विकास की अवधारणा पर समग्रता से पुनर्विचार करना चाहिए और ऊर्जा उत्पादन के निरापद मार्ग की खोज करनी चाहिए। सभा की अध्यक्षता करते हुए पूर्व विधायक त्रिलोक पूर्बिया ने कहा कि नैतिक दृष्टि से सारी दुनिया एक और अविभाज्य है। हमें नैतिक बल कायम करते हुए अविनाशकारी विकास के नए आयाम प्रस्तुत करने चाहिए। सभा में सामाजिक कार्यकर्ता दिनेश तरवाड़ी, सेफी स्कूल की अलसिया मोटीवाला, गुरूनानक पब्लिक स्कूल के विशाल नेगानी तथा सेंट्रल एकेडमी के छात्र आयुसेठ ने भी विचार व्यक्त किए। सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के छात्र-छात्राओं के साथ ही शिक्षक गण तथा सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि भी सम्मिलित हुए। सभा का संचालन मनोज गंधर्व ने किया अंत में सभी ने खड़े होकर दो मिनट का मौन रखते हुए त्रासदी में दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि एवं संकट से मुक्त होने की प्रार्थना की गई।



उदयपुर में जापान सुनामी में दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि देते छात्र, अध्यापक एवं नागरिकगण। फोटो : नवज्योति

राजस्थान पत्रिका उदयपुर . बुधवार 16 मार्च, 2011

जापान के मृतकों को श्रद्धांजलि



उदयपुर (कासं). प्राकृतिक विभीषिका से ग्रस्त जापान के साथ हम पूरी सहानुभूति के साथ खड़े हैं और तन, मन, धन से पूर्ण सहयोग के लिए तत्पर हैं। इस सुनामी संकट को हम केवल जापान ही नहीं विश्व की त्रासदी मानते हैं। हमें विकास के सोच में बदलाव लाना होगा और सकारात्मक रास्ता अपनाना होगा। यह विचार मंगलवार को गुमानिया वाला नाला स्थित शांतिपीठ संस्थान में जापान में सुनामी त्रासदी में मारे गए लोगों को दी गई श्रद्धांजलि में बच्चों के बीच से उभर कर आए। सभा में शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि 65 वर्ष पूर्व जापान ने परमाणु बम की त्रासदी को झेला और विश्व को आगाह किया था कि आणविक अस्त्रों का जखीरा मात्र विश्व विनाश का सामान है। अध्यक्षता पूर्व विधायक त्रिलोक पूर्बिया की। सभा में सामाजिक कार्यकर्ता दिनेश तरवाड़ी, सेफी स्कूल की अलसीया मोटीवाला, गुरुनानक पब्लिक स्कूल के विशाल नेगानी तथा सेन्ट्रल एकेडमी के छात्र आयु सेठ ने भी विचार व्यक्त किए। अन्त में सभी ने दो मिनट का मौन रख त्रासदी में दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि एवं संकट से मुक्त होने की प्रार्थना की।

www.pratahkal.com
उदयपुर, बुधवार, 16 मार्च 2011
प्रातःकाल



उदयपुर। सुनामी संकट को लेकर शांतिपीठ संस्थान में आयोजि श्रद्धांजलि समारोह के दौरान जापान त्रासदी में मारे गए लोगों दिवंगत आत्माओं के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित कर 2 मिनट का म रख श्रद्धांजलि देते हुए।

दैनिक भास्कर
उदयपुर • रविवार 11 दिसंबर 2011 • 4

शान्तिपीठ की गोष्ठी

विश्व मानवाधिकार दिवस के अवसर पर शांतिपीठ द्वारा विचार गोष्ठी हुई। शांतिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि मानवाधिकारों को भगवत गीता कि शाश्वत घोषणा के परिप्रेक्ष्य में समझने की जरूरत है। चिंतक मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि सामाजिक चेतना के विकास एवं कल्याण का मूल आधार त्याग और प्रेम है, इनका अभाव मानवाधिकारों की समस्या पैदा करता है।

प्रातःकाल
उदयपुर, रविवार 11 दिसम्बर, 2011

मानवाधिकार का संरक्षण करें

उदयपुर। निम्बार्क शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय में मानवाधिकार दिवस कार्यक्रम शनिवार को आयोजित किया गया। मुख्य वक्ता सपना वेद ने कहा कि मानव के मूल अधिकार ही मानवाधिकार है तथा सामाजिक प्रगति को प्रोत्साहित करने हेतु तथा सबल जनमत जागृत करने में इनका महत्वपूर्ण योगदान है।

महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. सुरेन्द्र द्विवेदी ने मनु स्मृति के श्लोक के आधार पर धैर्य, इन्द्रिय निग्रह, अक्रोध की व्याख्या करते हुए कहा कि मानवाधिकार का संरक्षण करते हुए अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करना चाहिए।

शांतिपीठ द्वारा इस अवसर पर आयोजित गोष्ठी में युवा समुदाय को संबोधित करते हुए शान्तिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र में मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्यों में से है किन्तु इसे भगवत गीता की शाश्वत घोषणा के परिपेक्ष्य में समझने पर इसकी सार्थकता सिद्ध होगी।

दैनिक नवज्योति
अजमेर, शनिवार, 23 जनवरी, 2010



उदयपुर में हैती प्राकृतिक दुखान्तिका के दिवंगतों को श्रद्धांजलि देते स्कूली बच्चे। फोटो : नवज्योति

हैती दुखान्तिका के दिवंगतों को श्रद्धांजलि

न्यूज सर्विस

उदयपुर, 22 जनवरी। हैती प्राकृतिक दुखान्तिका में दिवंगत हुए लोगों को शुक्रवार को शान्तिपीठ में स्कूली छात्र-छात्राओं एवं नगर की संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने श्रद्धांजलि अर्पित की तथा अपनी संवेदना प्रकट की। नगर के सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों से आए चुनिन्दा विद्यार्थियों व शिक्षकों के बीच श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि भूकम्प ने दुनिया के दिलों को प्रकम्पित किया है और त्रासदी से उत्पन्न हालात से निपटने विश्व के कई राष्ट्र एक साथ खड़े हो गए और इसमें भारत की भूमिका भी महत्वपूर्ण रही। उन्होंने कहा कि दुनिया आज महाएकता की ओर चल पड़ी है तथा एकता से ही शान्ति को सुनिश्चित किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि ऐसी त्रासदियां प्रकृति के असंतुलन का परिणाम है। आवश्यकता है प्रकृति के नियमों की परिपालना करते हुए विकास के नए आयाम निर्धारित किए जाए।

श्रद्धांजलि सभा में मेवाड़ मुस्लिम महासभा के उपाध्यक्ष हाजी मोहम्मद बक्ष ने कहा कि दिलों की एकता कायम करने से किसी भी चुनौती का सामना किया जा सकता है। डॉ. सेमुअल ने सर्वधर्म समभाव की जरूरत पर बल दिया। सेंट पॉल के छात्र आनंद माथुर ने कहा कि झगड़े-फसाद अर्थहीन हो चुके है, सिर्फ प्रेम के रास्ते ही शान्ति हो सकती है। सेन्ट्रल एकेडमी, सैफी स्कूल तथा गुरूनानक पब्लिक स्कूल के छात्रों ने भी श्रद्धासुमन अर्पित किए। कुछ क्षण ध्यानावस्था में प्रार्थना की गई तथा अंत में दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि दी गई। सभा का संचालन मनोज गंधर्व ने किया।

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर, शनिवार, 23 जनवरी, 2010



हैती के मृतकों को श्रद्धांजलि

उदयपुर। शांतिपीठ इण्डिया संस्थाना में शुक्रवार को आयोजित कार्यक्रम में नगर की विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधियों व स्कूली विद्यार्थियों ने हैती दुखांतिका में मारे गए लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित की। शांतिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी, मेवाड़ मुस्लिम महासभा के उपाध्यक्ष हाजी मोहम्मद बक्ष, डॉ. सेमुअल ने विचार व्यक्त किए। सेंटपॉल, गुरुनानक पब्लिक स्कूल, सेन्ट्रल एकेडमी, सैफी स्कूल के विद्यार्थियों ने दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि दी।

प्रातःकाल
माघ शुक्ला 8, शनिवार, 23 जनवरी, 2010



उदयपुर। दुःखान्तिका में मरे लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए।

दुःखान्तिका में मरे लोगों को श्रद्धांजलि

उदयपुर, 22 जन. (कासं)। हैती-प्राकृतिक दुःखान्तिका में मरे लोगों को शांतिपीठ में स्कूली छात्र-छात्राओं एवं नगर की संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने श्रद्धांजलि अर्पित की तथा अपनी संवेदना प्रकट की।

इस अवसर पर शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी तथा मेवाड़ मुस्लिम महासभा के उपाध्यक्ष हाजी मोहम्मद बक्ष ने संबोधित किया।

दैनिक नवज्योति
अजमेर, सोमवार, 25 अक्टूबर, 2010

बदलते परिदृश्य में बदलाव की जरूरत

संयुक्तराष्ट्र संघ के स्थापना दिवस पर विचार गोष्ठी संपन्न

न्यूज सर्विस

उदयपुर 24 अक्टूबर। विश्व में 65 वर्षीय संयुक्त राष्ट्र संघ की भूमिका एवं इसकी आवश्यकता को कोई नकार नहीं सकता। पिछली अर्धशताब्दी में उत्पन्न युद्ध के कई आसन्न संकटों का सामना करते हुये सुरक्षित रूप से विश्व को 21 वीं शताब्दी में पहुचाने का श्रेय संयुक्त राष्ट्र संघ को दिया जा सकता है। किन्तु इसमें कोई संदेह नही कि वर्तमान में विश्व के बदले हुये परिदृश्य में इस संस्था में बुनियादी बदलाव की जरूरत है, जिससे 21वीं शताब्दी की चुनौतियों का यह मुकाबला कर सके और न्याय, स्वाधीनता, विश्व एकता और शोषण मुक्त समाज को नया आयाम मिल सके। उक्त विचार रविवार को संयुक्त राष्ट्र संघ के 65 वे स्थापना दिवस के अवसर पर शान्तिपीठ भारत के तत्वाधान में संस्था सभागार में आयोजित विचार गोष्ठी में वक्ताओं ने व्यक्त किये।


उदयपुर में संयुक्त राष्ट्र संघ स्थापना दिवस पर आयोजित विचार गोष्ठी में अतिथिगण। फोटो- नवज्योति

गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुये प्रो. अरूण चतुर्वेदी ने दक्षिणी अफ्रीका के हालात का हवाला देते हुये कहा कि संयुक्त राष्ट्र ने गरीबी, भुखमरी और बीमारी से जो लड़ाई लड़ी है इसका अवदान महत्वपूर्ण है। यह संस्था राष्ट्रों की समानता और व्यक्ति की अस्मिता पर आधारित विश्व संगठन है जिसने कई राष्ट्रों को आत्मविश्वास प्रदान किया है।

गोष्ठी में बोलते हुये अतिरिक्त आबकारी आयुक्त सुमतिलाल बोहरा ने विश्व सामुदायिक एकीकरण की महत्ता प्रतिपादित करते हुये कहा कि किसी भी राष्ट्र को अन्य राष्ट्र के अन्दरूनी मामलात में अनावश्यक दखल देना भी हिंसा है। उन्होंने समता धैर्य और सहिष्णुता की जरूरत बताई।

इस अवसर पर बोलते हुये शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि आणविक अस्त्रों की जमाखोरी एवं इसके व्यापार पर पुख्ता नियन्त्रण के अभाव में अशान्ति की चिनगारी कभी भी दावानल बन सकती है। उन्होंने महर्षि अरविन्द के संयुक्त राष्ट्र को विश्व सरकार में रूपान्तरित किये जाने की परिकल्पना को व्यक्त करते हुये इसे जनमंच का स्वरूप दिये जाने की आवश्यकता प्रतिपादित की। उन्होने आत्मजाग्रत विश्व नागरिकता की आवश्यकता और रूपान्तरित संयुक्त राष्ट्र के लिये इसकी भूमिका पर प्रकाश डाला।

बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष त्रिभुवन नाथ पुरोहित और मनोज गन्धर्व ने कहा कि आतंकवाद के खात्मे के लिए अन्याय एवं शोषण मुक्त समाज की आवश्यकता है। उन्होंने विश्व में आतंकवाद से निजात पाने में संयुक्त राष्ट्र की भूमिका पर चिंता प्रकट की। पशुपालन विभाग के डॉ. शक्तिसिंह तथा प्रो. पी.एल.शर्मा ने शांति एवं विश्वास की यात्रा से प्रारम्भ करने की जरुरत पर बल दिया। गोष्ठी का संचालन प्रो. महेश शर्मा ने किया तथा आभार एडवोकेट धर्मराज ने व्यक्त किया।

प्रातःकाल
श्रावण कृष्णा 12, शनिवार, 7 अगस्त, 2010



उदयपुर। शांति सभा के दौरान मंचासीन अतिथि एवं उपस्थित विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थी। फोटो : कमल कुमावत

''शांति दूत बनकर असमानताओं को दूर क़रें''

उदयपुर। परमाणु बम और इनके परीक्षणों से नहीं बल्कि गरीबी उन्मूलन और शिक्षा-चिकित्सा की समूचित व्यवस्था से ही समाज में शान्ति की स्थापना की जा सकती है। उक्त विचार आज हिरोशिमा दुखान्तिका की 65वीं बरसी पर शान्तिपीठ के तत्वावधान में सूचना केन्द्र के खुले रंगमंच पर आयोजित शान्ति सभा में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए सांसद रघुवीरसिंह मीणा ने कही। उन्होंने कहा कि एक तरफ राष्ट्र आणविक अत्रों के इजाफे की दौड़ में हैं तो कई राष्ट्र गरीबी से संघर्ष कर रहे हैं, ऐसे में हम सब शान्ति के दूत बनकर इन असमानताओं को दूर करें।

शान्ति सभा में अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. इन्द्रवर्धन त्रिवेदी ने कहा कि जो विज्ञान मानवता का विनाश करे वह विज्ञान नहीं है। विज्ञान वह है जो मानव मात्र का मंगल करे। उन्होंने शान्तिपीठ के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि विश्वविद्यालयों को भी इन प्रयासों से जोड़ना चाहिए। उन्होंने कहा कि शिक्षा के उन्नयन के लिए शान्ति पहली जरूरत है। पुलिस महानिरीक्षक टी.एल. मीणा ने कहा कि मानवता टुकड़ों में नहीं बंट सकती, हमें गांधी के रास्ते चलकर विश्व शान्ति के लक्ष्य को हासिल करना चाहिए।

सभा में वक्तव्य देते हुए शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि आणविक निःशस्त्रीकरण की दिशा में गांधी के बताये रास्ते को अपनाते हुये किसी भी राष्ट्र द्वारा एक तरफा चल देना आज कठिन कार्य दिखाई दे रहा है, ऐसे में हमें एक विश्व राष्ट्र के आदर्श की ओर प्रयत्नशील होना चाहिए। उन्होंने उदयपुर को शान्ति का शहर बनाये जाने का आह्वान किया।

प्रारम्भ में सेन्ट्रल अकेडमी के छात्रों ने डॉ. कुसुम शाह एवं रफीक अहमद के निर्देशन में शान्ति गीत प्रस्तुत किया। कवि श्रेणीदान चारण ने राष्ट्र भक्ति का कविता पाठ किया। नन्हें छात्र नीलाद्री मुखर्जी ने शास्त्रीय भजन प्रस्तुत कर रंगमंच के वातावरण को शान्तिमय बना दिया। इससे पूर्व कई सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के छात्र-छात्रायें तख्ती, चार्ट, बैनर आदि थामे अपने-अपने विद्यालयों से शान्ति मार्च करते हुए सभा स्थल पर पहुंचे। सभा में 2 मिनट का मौन रखकर विभिषिका में मारे गये निर्दोष लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। सभा का संचालन डॉ. भूपेश शर्मा ने किया।

दैनिक नवज्योति
अजमेर, शनिवार, 7 अगस्त 2010

हिरोशिमा स्मृति दिवस

परमाणु बम समस्याओं का समाधान नहीं

न्यूज सर्विस

उदयपुर, 6 अगस्त। परमाणु बम और इनके परीक्षणों से नहीं बल्कि गरीबी उन्मूलन और शिक्षा-चिकित्सा की समुचित व्यवस्था से ही समाज में शान्ति की स्थापना की जा रही है। उक्त विचार शुक्रवार को हिरोशिमा दुखान्तिका की 65वीं बरसी पर शान्तिपीठ के तत्वावधान में सूचना केंद्र के खुले रंगमंच पर आयोजित शान्ति सभा में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए सांसद रघुवीर सिंह मीणा ने कही। उन्होंने कहा कि एक तरफ राष्ट्र आणविक अस्त्रों के इजाफे की दौड़ में है तो कई राष्ट्र गरीबी से संघर्ष कर रहे हैं, ऐसे में हम सब शान्ति के दूत बनकर इन असमानताओं को दूर करें।



उदयपुर में हिरोशिमा स्मृति दिवस पर आयोजित शान्ति सभा में मंचासीन अतिथिगण एवं उपस्थित छात्र। फोटो : नवज्योति

शान्ति सभा में अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. इन्द्रवर्धन त्रिवेदी ने कहा कि जो विज्ञान मानवता का विनाश करे वह विज्ञान नहीं है। उन्होंने समाज में विश्वास और सद्भावना कायम करने की आवश्यकता बताते हुए कहा कि कोई धर्म छोटा या बड़ा नहीं होता। उन्होंने शान्तिपीठ के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि विश्वविद्यालयों को भी इन प्रयासों से जोड़ना चाहिए। उन्होंने कहा कि शिक्षा के उन्नयन के लिए शान्ति पहली जरूरत है। ये दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं।

पुलिस महानिरीक्षक टी.एल. मीणा ने कहा कि मानवता टुकड़ों में नहीं बंट सकती, हमें गांधी के रास्ते चलकर विश्व शान्ति के लक्ष्य को हासिल करना चाहिए। सभा में वक्तव्य देते हुए शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि आणविक निशस्त्रीकरण की दिशा में गांधी के बताए रास्ते को अपनाते हुए किसी भी राष्ट्र द्वारा एकतरफा चल देना आज कठिन कार्य दिखाई दे रहा है। ऐसे में हमें एक विश्व राष्ट्र के आदर्श की ओर प्रयत्नशील होना चाहिए।

इससे पूर्व कई सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के छात्र-छात्राएं तख्ती, चार्ट, बैनर आदि थामे अपने-अपने विालयों से शान्ति मार्च करते हुए सभास्थल पर पहुंचे। शिक्षक, सामाजिक कार्यकर्ता एवं प्रबुद्धजन ने युवा समुदाय के साथ ही खड़े होकर जीवन के आदर्शों के साथ चलकर विश्व शान्ति के लिए हाथ उठाकर संकल्प लिया। सभा में दो मिनट का मौन रखकर विभीषिका में मारे गए निर्दोष लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित की।

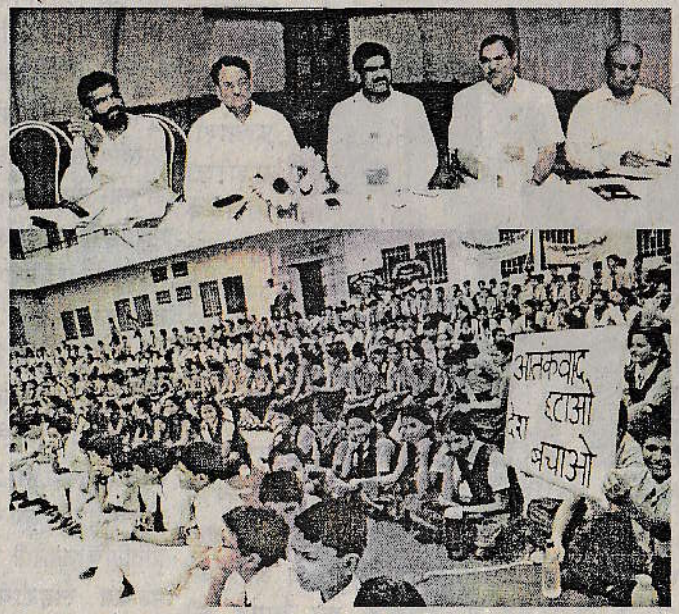
आत्मा की ज्वाला शनिवार, 7 अगस्त 2010

हिरोशिमा स्मृति दिवस

परमाणु बम समस्याओं का समाधान नहीं

उदयपुर, 6 अगस्त। परमाणु बम और इनके परीक्षणों से नहीं बल्कि गरीबी उन्मूलन और शिक्षा-चिकित्सा की समुचित व्यवस्था से ही समाज में शान्ति की स्थापना की जा रही है। उक्त विचार आज हिरोशिमा दुखान्तिका की 65वीं बरसी पर शान्तिपीठ के तत्वावधान में सूचना केंद्र के खुले रंगमंच पर आयोजित शान्ति सभा में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए सांसद रघुवीर सिंह मीणा ने कही। उन्होंने कहा कि एक तरफ राष्ट्र आणविक अस्त्रों के इजाफे की दौड़ में हैं तो कई राष्ट्र गरीबी से संघर्ष कर रहे है, ऐसे में हम सब शान्ति के दूत बनकर इन असमानताओं को दूर करें।

शान्ति सभा में अध्यक्षीय उद्‌बोधन देते हुए मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. इन्द्रवर्धन त्रिवेदी ने कहा कि जो विज्ञान मानवता का विनाश करे वह विज्ञान नहीं है। विज्ञान वह है जो मानव मात्र का मंगल करें। उन्होंने समाज में विश्वास और सद्‌भावना कायम करने की आवश्यकता बताते हुए कहा कि कोई धर्म छोटा या बड़ा नहीं होता। इस प्रकार की सोच धर्म की आत्मा और उसके महत्व को ही नष्ट कर देती है। उन्होंने शान्तिपीठ के प्रयासों की सराहना करते हुए कहा कि विश्वविद्यालयों को भी इन प्रयासों से जोड़ना चाहिए। उन्होंने कहा कि शिक्षा के उन्नयन के लिए शान्ति पहली जरूरत है। ये दोनों एक-दूसरे के पूरक है।



पुलिस महानिरीक्षक टी.एल. मीणा ने कहा कि मानवता टुकड़ों में नहीं बंट सकती, हमें गांधी के रास्ते चलकर विश्व शान्ति के लक्ष्य को हांसिल करना चाहिए। उन्होंने हिरोशिमा नागासाकी हादसे को मानवता पर दाग बताते हुए इसकी विस्तृत विवेचना की। सभा में वक्तव्य देते हुए शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनन्त गणेश त्रिवेदी ने कहा कि आणविक निशस्त्रीकरण की दिशा में गांधी के बताए रास्ते को अपनाते हुए किसी भी राष्ट्र द्वारा एकतरफा चल देना आज कठिन कार्य दिखाई दे रहा है। ऐसे में हमें एक विश्व राष्ट्र के आदर्श की ओर प्रयत्नशील होना चाहिए।

प्रारम्भ में सेन्ट्रल एकेडमी के छात्रों ने डॉ. कुसुम शाह एवं रफीक अहमद के निर्देशन में शान्ति गीत प्रस्तुत किया। कवि श्रेणीदान चारण ने राष्ट्र भक्ति का कविता पाठ किया। नन्हें छात्र नीलाद्री मुखर्जी ने शास्त्रीय भजन प्रस्तुमत कर रंगमंच के वातावरण को शान्तिमय बना दिया। इससे पूर्व कई सरकारी व गैर सरकारी विद्यालयों के छात्र-छात्राएं तख्ती, चार्ट, बैनर आदि थामे अपने-अपने विलयों से शान्ति मार्च करते हुए सभास्थल पर पहुंचे। शिक्षक, सामाजिक कार्यकर्ता एवं प्रबुद्धजन ने युवा समुदाय के साथ ही खड़े होकर जीवन के आदर्शों के साथ चलकर विश्व शान्ति के लिए हाथ उठाकर संकल्प लिया। सभा में दो मिनट का मौन रखकर विभिषिका में मारे गए निर्दोष लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित की। सभा का संचालन डॉ. भूपेश शर्मा ने किया तथा शान्तिपीठ के एम.एस. राणावत ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

उदयपुर एक्सप्रेस • शनिवार, 7 अगस्त, 2010

हिरोशिमा स्मृति दिवस पर सूचना केन्द्र में समारोह

विश्व शांति के प्रयासों पर ध्यान देने की महती जरुरतः सांसद

उदयपुर, 6 अगस्त (कासं)। उदयपुर सांसद रघुवीर सिंह मीणा ने कहा कि जापान के हिरोशिमा पर 6 अगस्त,1945 को गिराये गये परमाणु बम के दुष्परिणाम दुनिया भर ने कई समय तक देखे हैं। उन्होंने प्रतिस्पर्धात्मक युग में सभी को विश्व शांति बनाये रखने के प्रयासों पर ज्यादा ध्यान देने का आव्हान करते हुए शांतिदूत बनने पर जोर दिया।

वे शुक्रवार को हिरोशिमा स्मृति दिवस पर सूचना केन्द्र में शांति पीठ द्वारा आयोजित समारोह में विशिष्ठ अतिथि पद से संबोधित कर रहे थे। समारोह में सुखाड़िया विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.इन्द्रवर्धन त्रिवेदी ने कहा कि लगातार बदल रही परिस्थितियों में लोगों को देश में शांति, बंधुत्व एवं सौहार्द्धपूर्ण वातावरण बनाने का संकल्प लेना होगा। प्रो.त्रिवेदी ने कहा कि उदयपुर देश के मानचित्र पर शैक्षणिक नगर का दर्जा तभी पा सकेगा जब यहां पूर्ण शांति हो और लोग राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के दिये शांति के पाठ को याद करें। इस अवसर पर पुलिस महानिरीक्षक टी.एल.मीणा ने कहा कि कई देशों ने एक दूसरे पर आधिपत्य जमाने के लिए परमाणु बम बना लिए है जो मानवता के लिए खतरा बन गये हैं। उन्होंने कहा कि सभी को सम्मानपूर्वक रहने एवं जीन का अधिकार मिले इसके लिए आवश्यक है कि सभी को भय मुक्त वातावरण निर्माण करने में मन से सहयोग करना होगा। प्रारंभ में शांतिपीठ के संस्थापक अनंत गणेश त्रिवेदी ने सभी का स्वागत करते हुए दिवस की विस्तृत जानकारी दी। इस अवसर पर गणमान्य नागरिकों सहित बड़ी संख्या में छात्र-छात्राएं मौजूद थे। समारोह का संचालन भूपेन्द्र शर्मा ने किया।



हिरोशिमा स्मृति दिवस पर आयोजित शान्ति सभा में मंचासीरन अतिथिगण एवं उपस्थित छात्र

राजस्थान पत्रिका
उदयपुर शनिवार 7 अगस्त, 2010

हिरोशिमा दुखांतिका पर शांतिसभा

उदयपुर (कासं). हिरोशिमा दुखांतिका की 65वीं बरसी पर शुक्रवार को शांतिपीठ के तत्वावधान में सूचना केंद्र के मुक्ताकाशी रंगमंच पर शांतिसभा का आयोजन किया गया। सभा में सांसद रघुवीरसिंह मीणा ने कहा कि परमाणु बम और इनके परीक्षणों से नहीं, बल्कि गरीबी उन्मूलन व शिक्षा-चिकित्सा की समुचित व्यवस्था से समाज में शांति की स्थापना की जा सकती है। मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के कुलपति डा. आई.वी.त्रिवेदी ने कहा कि जो विज्ञान मानवता का विनाश करे, वह विज्ञान नहीं हो सकता है। विज्ञान वह है जो मानव मात्र का मंगल करे। आईजी टी.एल.मीणा ने कहा कि हमें गांधीजी के दिखाए रास्ते पर चलकर विश्व शांति के लक्ष्य को हासिल करना चाहिए। संस्थापक महासचिव ए.वी.त्रिवेदी, श्रेणीदान चारण, डा. भूपेश शर्मा आदि ने भी विचार व्यक्त किए। प्रारंभ में सेंट्रल एकेडमी के विद्यार्थियों ने शांतिगीत प्रस्तुत किया। सभा में दो मिनट का मौन रखकर विभिषिका में मारे गए लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

जयदीप सीनियर सेकण्डरी विद्यालय भुवाणा में आयोजित शांतिपाठ में संस्थापक निदेशक देवेन्द्र कुमावत ने कहा कि मनुष्य भौतिक उन्नति के साथ अपने विनाश की मंजिल को भी तैयार करता जाता है। उसकी खामियां आने वाली पीढ़ी को भुगतनी पड़ती है। विद्यार्थियों ने शांति नारों के साथ रैली निकाली।

उदयपुर एक्सप्रेस • शनिवार, 11 दिसम्बर, 2010

मानवाधिकारों का उन्नयन कर्तव्यों के निर्वहन का परिणाम

उदयपुर, 10 दिसम्बर (वि.)। मानवाधिकारों का उन्नयन कर्तव्यों के सुमचित निर्वहन का परिणाम है। कर्तव्यों की प्रतिबद्धता के अभाव में मानवाधिकार ही नहीं सृजन के सारे अवयव असुरक्षित हो जाते है। कर्तव्यपरायणता सभी के अधिकारों की रक्षा एवं समाज में समता को पोषित करती है। वर्तमान में समाज के सामने आ रही चुनौतियों का मुकाबला वैयक्तिक एवं सामाजिक कर्तव्यों का दायित्व बोध ही हो सकता है। उक्त विचार आज विश्व मानवाधिकार दिवस के अवसर पर शान्तिपीठ संस्थान में आयोजित विचार गोष्ठी में कई वक्ताओं ने व्यक्त किए। गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए प्रो. एस.एन. जोशी ने कहा कि पाश्चात्य विचार में मानवाधिकारों के अर्थ सीमित परिप्रेक्ष्य में है। भारतीय परिकल्पना में इसका विस्तार बहुआयामी है। उन्होंने कहा कि ईश्वर की बनाई सजीव व निर्जीव सारी कृतियों का अपना प्रभाव क्षेत्र है। प्रभाव क्षेत्र में अतिक्रमण करना मानवाधिकारों का हनन है और ऐसा किए जाने का दुष्परिणाम है प्रकृति एवं पर्यावरण का संकट तथा मानव समाज में व्याप्त असमता। गोष्ठी में बोलते हुए चिंतक मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि पाश्विकता से दूर और ईश्वरत्व की ओर अग्रसर होने में मानवाधिकारों के निहितार्थ है। इस अवसर पर शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी ने जिम्मेदार नागरिकता की व्यवहारिकता उपादेयता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि प्रबुद्ध विश्व नागरिकता की समझ वैश्वीकरण के सुखद परिणाम ला सकती है। उन्होंने कहा कि आवश्यकता है विवेकशील नागरिकता को विस्तार देने की, जिससे अधिकार ग्रहण के संकुचित भाव मानवाधिकार आदर्शों के प्रति सम्मान में रूपान्तरित हो सके। त्रिवेदी ने कहा कि व्यक्ति ही नहीं कोई भी राष्ट्र निरंकुश एकाधिकार के भाव से अपना विकास नहीं कर सकता। शान्ति और समृद्धि के लिए हमें सकता के सामाजिक विज्ञान को आत्मसात करना ही होगा। गोष्ठी का संचालन करते हुए विधिवेत्ता एम.एस. राणावत ने कहा कि मानवाधिकारों की संरक्षा में व्यवस्था भी अवरोध बनती है तो इसे बदलना होगा।

अधिकारों के प्रति सजग हों

मानवाधिकार दिवस

कार्यालय संवाददाता @ उदयपुर

मानवाधिकार दिवस पर एनएसयूआई की ओर से शहर जिला कांग्रेस कार्यालय पर विचार गोष्ठी आयोजित की गई। मुख्य अतिथि पूर्व विधायक त्रिलोक पूर्बिया तथा विशिष्ठ अतिथि कांग्रेस शहर जिलाध्यक्ष डा. मधुसूदन शर्मा, यूथ कांग्रेस शहर अध्यक्ष जयप्रकाश निमावत, पार्षद अजय पोरवाल आदि थे। एनएसयूआई जिलाध्यक्ष गौरव भण्डारी ने बताया कि डा. शर्मा ने सूचना के अधिकार पर कार्यकर्ताओं को विस्तार से जानकारी दी।

राजकीय मीरा गर्ल्स महाविद्यालय छात्रसंघ और महिला प्रकोष्ठ के संयुक्त तत्वावधान में मानवाधिकार दिवस मनाया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि एसपी तेजराज सिंह ने नारी सशक्तिकरण व अपने अधिकारों के बारे में जागरूक होने की बात कही। छात्रसंघ अध्यक्ष प्रियंका झाला ने महिलाओं को एकजुट होकर अपने अधिकारों के लिए लड़ने की बात कही। साथ ही महिला आरक्षण लाने के लिए प्रयासरत रहने पर जोर दिया। महिला प्रकोष्ठ की मंजू चतुर्वेदी ने विचार ने व्यक्त किए।

संगोष्ठी : राष्ट्रीय मानव अधिकार परिषद की ओर से मानवाधिकार दिवस पर अमल का कांटा स्थित भवन में संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता राष्ट्रीय मानव अधिकार परिषद के जिलाध्यक्ष भूपेन्द्र चौहान, अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ एवं समाज सेवी मन्जुर राही ने की।

शांतिपीठ संस्थान की ओर से शुक्रवार को मानवाधिकार दिवस पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता प्रो. एसएन जोशी ने की।

कार्यक्रम विस्तार अधिकारी राजीव लोढ़ा ने बताया कि कार्यक्रम में शांतिपीठ के अनंत गणेश त्रिवेदी, विधिवेत्ता एमएस राणावत उपस्थित रहे।

प्रातःकाल
मार्गशीर्ष शुक्ला 6 शनिवार 11 दिसम्बर, 2010

विवेकशील नागरिकता को विस्तार देने की जरूरत

उदयपुर। मानवाधिकारों का उन्नयन कर्तव्यों के समुचित निर्वहन का परिणाम है। कर्तव्यों की प्रतिबद्धता के अभाव में मानवाधिकार की नहीं सृजन के सारे अवयव असुरक्षित हो जाते है। कर्तव्यपरायणता सभी के अधिकारों की रक्षा एवं समाज में समता को पोषित करती है। वर्तमान में समाज के सामने आ रही चुनौतियों का मुकाबला वैयक्तिक एवम सामाजिक कर्तव्यों का दायित्व बोध ही हो सकता है। यह विचार विश्व मानवाधिकार दिवस के अवसर पर शान्तिपीठ संस्थान में आयोजित विचार गोष्ठी में कई वक्ताओं ने व्यक्त किये। गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए प्रो. एस.एन. जोशी ने कहा कि पाश्चात्य विचार में मानवाधिकारों के अर्थ सीमित परिक्षेत्र में है। भारतीय परिकल्पना में इसका विस्तार बहुआयामी है । उन्होंने कहा कि ईश्वर की बनाई सजीव व निर्जीव सारी कृतियों का अपना प्रभाव क्षेत्र है। गोष्ठी में बोलते हुए चिंतक मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि पाश्विकता से दूर और ईश्वरत्व की और अग्रसर होने में मानवाधिकारों के निहितार्थ है।

इस अवसर पर शांतिपीठ के संस्थापक महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी ने जिम्मेदार नागरिकता की व्यवहारिक उपादेयता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आवश्यकता है विवेकशील नागरिकता को विस्तार देने की जिससे अधिकार ग्रहण के संकुचित भाव मानवाधिकार आदर्शों के प्रति सम्मान में रूपान्तरित हो सके। संचालन विधिवेत्ता एम.एस. राणावत ने किया।

दैनिक नवज्योति
अजमेर, शनिवार, 11 दिसम्बर, 2010

शान्तिपीठ की विचार गोष्ठी

उदयपुर, 10 नवम्बर। मानवाधिकारों का उन्नयन कर्तव्यों के सुमचित निर्वहन का परिणाम है। कर्तव्यों की प्रतिबद्धता के अभाव में मानवाधिकार ही नहीं सृजन के सारे अवयव असुरक्षित हो जाते है। कर्तव्यपरायणता सभी के अधिकारों की रक्षा एवं समाज में समता को पोषित करती है। वर्तमान में समाज के सामने आ रही चुनौतियों का मुकाबला वैयक्तिक एवं सामाजिक कर्तव्यों का दायित्व बोध ही हो सकता है। उक्त विचार आज विश्व मानवाधिकार दिवस के अवसर पर शान्तिपीठ संथान में आयोजित विचार गोष्ठी में कई वक्ताओं ने व्यक्त किए। गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए प्रो. एस.एन. जोशी ने कहा कि पाश्चात्य विचार में मानवाधिकारों के अर्थ सीमित परिक्षेत्र में है। भारतीय परिकल्पना में इसका विस्तार बहुआयामी है। उन्होंने कहा कि ईश्वर की बनाई सजीव व निर्जीव सारी कृतियों का अपना प्रभाव क्षेत्र है। गोष्ठी में बोलते हुए चिंतक मोहन सिंह कोठारी ने कहा कि पाश्विकता से दूर और ईश्वरत्व की ओर अग्रसर होने में मानवाधिकारों के निहितार्थ है। इस अवसर पर शान्तिपीठ के संस्थापक महासचिव अनंत गणेश त्रिवेदी ने जिम्मेदार नागरिकता की व्यवहारिकता उपादेयता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि प्रबुद्ध विश्व नागरिकता की समझ वैश्वीकरण के सुखद परिणाम ला सकती है। गोष्ठी का संचालन करते हुए विधिवेत्ता एम.एस. राणावत ने कहा कि मानवाधिकारों की संरक्षा में व्यवस्था भी अवरोध बनती है तो इसे बदलना होगा।